सने १८९७ ना २९ मा आकट मुजब ग्रंथ स्वामीत्वनो इक राख्यो है.

थवा शुद्ध न्यापारने माटे जे समजुती सिवस्तर आपी छे ते पूरेपूरी उपयोगी छे तेने साटे अमे दरेक जैनबंधु आने ते भाग खाम लक्षपूर्वक बांचवानी भलामण करीएछीए. आठमा वतमां प्रमादाचरण अनेक प्रकारना समजान्या छे ते पण ध्यानमां लेवा लायक छे. १०४ था न्याख्यानमां चोमासी छत्यो वतान्या छे. अशाद चतुर्मास- ना प्रारंभमां अवस्य ए न्याख्यान वांचवा योग्य छे.

आ ग्रंथमां चरणकरणानुयोग साथे धर्मकयानुयोग पण एटलो दधी ता-सल करेलो छे के, वंने प्रकारना जीइश्विभोना दिल तम थई शके तेम छे. दरेक ज्याख्यानमां एक कथा तो छेज पण केटलाकमां एकथी वधारे छे. एकदर आ पांच स्थंभोमां १०० उपरांत कथाओ, दष्टांतो ने प्रवंधो छे. ते विषे विशेष वर्णन लखी वांचकवर्णने न रोकतां अनुक्रमणिका वांची जवानीज खास भलाम न करीद छीए. जेथी आ विभागनुं रहस्य तरतज ध्यानमां आवशे.

आ ग्रंथनी प्रतिओं प्राये टबावाळीज मळे छे; परंतु तेनुं मुळ ने ट्या ५ट हो वधो अशुद्ध देखाय छे के तेनुं भाषांतर करवामां पूरा अनुभवीनीज आवस्यक्ता छे आ भाषांतर शास्त्री पासे करावया वाद असल प्रति साथे मेळवीने तेने एट छं वधुं हुर स्त करवामां आव्युं छे के वनता सुधी मुळ रहेवा दीधी नथी. ते छता माति दोषथी अथवा दृष्टि दोषथी कांइ पण मूळ रही गयेळी जणाय तो तेने माटे कारी तरफ लखी मोक्लाववा कृषा करवी, जेथी तेने सुधारवानो योग्य उपाय थई सके.

हते पछीना त्रीजा विभागमां देशविरतिनुं स्वरूप संपूर्ण आवशे. एटले के १० गाथी १४ मा सुधीपांच स्थंभोनुं भाषांतर आपवामां आवशे. प्रयाम विगरेना प्रमा गमां किंमत वास्तवीक रासेली होवाथी जैनवंधुओं विशेष लाभ लेशे एवी आशो छे. गमज बाकीना विभागो पण बनती ताकीदे वहार पाडवानी इच्छा वर्षे छे

ग्रंथकर्ताए लास उपयोगी जाणीने दाखल करेला स्वमत परमतना श्लीको ज्या गायाओ पहेला विभागमां पुरता दाखल करेल नहीं; परंतु आ विभागमा द-रेक श्लोक दाखल करीने तेनी नीचे तेना अर्थ पण आपे ला छे. एम करवाथी आ श्रंथनी उपयोगीता वधारी छे.

मंथकत्तीना चिरत्रने माटे शोव चाके छे. मळी शकशे एटले इवे पछीना वि-भागमां मगट करीशुं.

माहा शुद १५ ) श्रीजैनधर्म प्रसारक सभा-भावनगर संवत १९६० ) चीमनलाल सांकळचंद मारफतीया-मुंबई

# विषयानुक्रमणिकाः

#### **~~~** ~€%€**\***₹%\$~~~~

विषय. पृष्ट, विषय. पृष्ट	
स्थंस ५ मो पृष्ट १ थी ५८ ते उपर हरिवळ माठीनी कथा	Š
व्यक्तिम शासदम्	$\mathcal{I}_{\gamma}$
ानगर हिनक जावान शत पशु केळ १	/رد
( प्रथम व्रत ते उपर मृशापुत्र , लोडीया ) नी कथा २५	رف
व्याल्यान ६२ मुं. व्याल्यान तहस्वमुं.	{
पहेला अणुत्रत विषे १ हिंसा करवाना संकलायी पण यती	1
गुदस्यने अगुवन गृहण करावतां साधु- हानी २०	९
ने त्रसजीवांनी हिंसानी अनुमोदना ते उपर दासीपुत्रनी कथा २९	
लागती नथी २ व्याल्यान अडमहर्मू,	
ते उपर एक शेउना ६ पुत्रनी कथा ३ कुळकमधी बाली आवती हिंसा	}
प्रथम अणुवत उपर कुमारपाळनी कथा ५ त्यज्ञवा विने ३	ž
जळ गळीने वीवा चपर पुराणां ममाण ६ ते खपर कुमारपाळनो मबंध ३	
व्याख्यान त्रेसठमुं. क्रुमारपाळ ने कुपासंदरीनो विवाह ३	
श्रावकने सवाविश्वानी दया होय ८ पोताना वनेवी आनाकराजाने कुमार-	
प्रथम वतना पाच अतिचार ९ पाळे आपेली शिक्षा ३	
कुमारपाळनो प्रबंध १० व्याख्यान अगणोतर्मुं,	7
जीवदयाना संवंधमां पुराणीना ममाण ११ हिंसा करवानुं क्रोधथी वचन पण	
व्याख्यान चोसठमुं. बोलवुं नहीं ३	Q
हिंसाना अभावथी विराति १५ तेथी थता कदुफळ उपर चंद्रा ने सर्गनी	
हिंसाना चार प्रकार १५ कथा ४	lo
स्थावरोमां जीवपणानी सिद्धि १७ व्याख्यान सीतेरमुं,	
	5
	ार
	Ę
कुळक्रमयी चाली आवती हिंसा पण व्याल्यान इकोतेरमुं	*
	14

[-	
विषय. घृष्ट.	विषय. पृष्ट-
त्रग प्रकारनी हिंसा ४५	असत्यत्याग उपर श्रीकांतश्रेष्टीनी कथा६४
अनुवंध हिंसां उपर ब्रह्मदत्तः चक्रीनी	द्रीपदीए सत्य बोछवायी आम्रवृक्षने
कथा ४६	नवपछवीत कर्यानो प्रबंध ६४
· व्याख्यान वोंतेरमुं.	व्याख्यान सितोतेरमुं.
'बिंसक जीवोनी पण हिंमा न करवा	बीजा वतना पांच अतिचार १७
े विष अट	मृपा चपदेश नामना मयम अतिचार
थान्यादिकना घणा जीवोने इणवा	<b>उपर कोशिक तापमनो प्रवंध ६७</b> ०
, करतां एक इाथीने मारवाना	कोईने आळ चढाववा चपर एक ब्राह्म-
े विचार धरावनारानी मल ४८	णीनो प्रवंष ू ६८
ति उपर आर्द्रकुमारनी कथा ४८	मुनिराजना अवर्णवाद बोखवा ( आळ
व्याख्यान तातर्मुं.	चडावबुं) ते उपर येगवतीनी कथा १९
पानि तथा गहरशोने तलना गीमा हिसा	व्याख्यान ईठोतेर्युं.
स्थान ५२	कोईनी ग्रप्त वान प्रगट करवी नहीं ७१
ते उपर एक क्षत्रीयनो प्रवंध ५३	तेथी थयेली हानी उपर पुण्यसारनीं
,, मच्छीमार चोरनो प्रवंध ५४	कया ७१
व्याख्यान चुमोतेरमुं.	परस्परना मर्भ डघाडवा उपर वे सर्पनी
हिंसा ने थहिसानुं फळ ५५	कथा ७३
ते उगर सुरने चंद्रकृमारनी कथा ५५	व्याख्यान ओगण्याप्सीमुं
	सत्यनी प्रश्नेसा ७४.
∓थंभ ह हो. पष्ट ५९ थी ११७	सत्य बोल्डा उपर इंसराजानी कथा ७५
	व्याख्याच र गातुः
व्याख्यान ७५ थ्री ए०	त्रीजा अणुत्रतनुं स्वरुप ७८
( बीजा, त्रीजा, चोथा अणुव्रत विषे )	ते उपर रोहिणी चोरनी कथा ७९
व्यात्व्यान पंचीतेरमुं.	व्याख्यान एकासीमुं.
मृपावाद त्याग (मोटां पांच असत्यनुं	त्रीजा व्रतनी विशेष व्याख्या ८१
वर्णन) ५९	ते रपर कुमारपाळराजानो प्रयंव ८२
खोटी साक्षी पुरवा चपर वसुराजानी	व्याख्यान च्यासीपुं.
••	त्रीजा व्रतना पांच अतिचार ८५
व्याख्यान छोत्रमु.	अन्यायोपाजित द्रव्य चपर वंचक
असत्यना चार प्रकार १३	श्रेष्टीनी कवा ८७

निष्य.		विषय. पृष्ट-
व्याख्यान त्र्यासीमुं.		निरंतर ब्रह्मचर्य पाळवा उपर विजया-
त्रीजुं व्रत न पाळबाथी यती हानीओ		श्रेड ने विजयाराणीनी कथा १११
ते उपर कोइखर चोरनुं इष्टांत	٩.	तदंतर्गत विजयशेंडे कहेलुं विषयनुं
व्याख्यान चोरासीधुं.		स्बरूप ११२
त्रीना नतनी प्रशंसा	९३	व्याख्यान ९० मुं.
ते चपर कक्ष्मीपुंजनी कथा	99	स्त्रीजातिमां रहेला अनेक दोष ११४
व्याख्यान पंचासीमुं.		भर्त्रहरीराजानी कथा ११४
भोथा अणुत्रतनुं स्वरूप	9.5	יים אות פסר פור פופים
तेबी बता साभ उपर नागिकनी कथा	९७	स्यंभे भी. पृष्ट ११८ थी १७६
तंदंतर्गत द्रव्यदीप भावदीपनुं स्वरुप	९८	व्याख्यान ९३ थी १०६
व्यारुपान छासीमुं.		( चोथा व्रतनुं विश्वेष स्वरुप )
श्रीया व्रतनी विशेष मश्रेसा र	•0	व्याख्यान ९१ मुं.
ते उपर कुमार ने देवचंद्र नामना वे		स्रीओने कामनी अतृप्ति ११८
राजकुगारनी कथा ह १	•	ते उपर भीछनी कथा (यासा सासा) १ १८
तदंतर्गत श्रीस्वतीनी कया १		् व्याख्यान् ९२ मुं.
मान ब्रह्मचार्च तथा भारतपर्त स्वरूप		केटसीक उत्तम स्रीओ आपतिमां पण
( मुरूव कयांतर्गत )	101	शीळनुं रसण करे छे १२१
च्याल्यान सत्यासीमुं.		ते जपर अंजना सतीनी कथा १२१
चोया अणुतवना पांच अतिचार १	FO	व्याख्यान ९३ मुं.
भोषा वत चप्रर रोहिणीनी कथा १		स्तीना अंग जोईने मोइ न पामवा विषे १२६
नेणीए राजाने दुक्तिथी आपेसी		दृष्ट स्रीना संबंधमां सुकुमाळिकानी
समजुती १	.8	कथा १२७
जदावर्व संबंधी पुराणोक्त वे कथा १	•4	न्याल्बाम ९४ मुं.
कारमान अक्तामीर्व		स्रीजाति अनेक गुणोनी हानी करेछे १२८
अझर्चर्य पाळवाथी यता गुण १	ø'o	बल्क छचीरी मुनिनो प्रबंध १२९
ने उपर जिनपाननो प्रवंश (रत्नद्वीपे		व्याख्यान २५ में.
जनार ) १		कामांघ पुरुषनो विवेक पण नष्ट थायछे १३३
न्याल्यान ८९ मुं.		ते चपर अढार नातरानी प्रबंध १३३
बोबा व्रतना भंगवी बीजा व्रतीना	-	व्याख्यान ९६ मुं. विषयमां सुख अलप छे, विदंवना
	20	राणां स्रो
	• -	1, Julia 111 111 111 111 111 111 111 111 111 1

र्भिषय. पृष्ट.	चिषय. पृष्ट.
ते उपर मधुर्दिद्वनी कथा १३६	
_	अन्य शास्त्रोना प्रमाण १६७
महासतीतुं लक्षण १३९	चोमासी नियमो पाळवा उपर
ते चपर शीळवतीनी कया १३९	विजयश्री कुमारनी कथा १६८
व्याख्यान ९८ मुं.	पर्वतिधिना कृत्यो १६९
भीळ पाळवाथी छेदाएलां अंगो पण	न्याल्यान <b>१०५ मुं</b> .
पाछां प्रगटे छे १४३	निषय सुखनन्य दुःख अने पापना
ते उपर कळावतीनी कथा १४३	मकारो १७१
व्याख्यान ९९ मृं.	स्त्रीसंगयी प्राप्त यता दुःख उपर मुंज-
तत्वने जाणनारा दंपती संकटमां पण	राजानी कथा १७२
श्रीळने छोडता नयी १४७	
ते उपर चंदनमलयागीरीनी कथा १४७	श्रीळत्रतना चार भेद १७५
<b>च्याख्यान १०० मुं.</b>	
एक रुपदंत स्त्रीनी चणा पुरुषो इच्छा	स्थम ८ मा. पृष्ट ५७७ थ। २२९
करे छे १५०	व्याख्यान १०६ घी १२०
ते उपर इलायचीकुमारनी कथा १५०	(पाचमा, छटा, सातमा व्रतनुं स्वरुप )
व्याख्यान १०१ मु.	न्याख्यान १०६ <b>मुं.</b>
विळ्वतनुं आदरणीयपगुं १५३	पाँचमा अणुत्रननुं स्वरुप १७७
ते चपर श्रीमञ्चिनायजीनी कया १५३	पार्यहनु भगाण कर्वाना आवश्यकता १७८
व्याख्यान १०२  जुं.	त इपर विद्यापातना क्रया (७८
मैयन सेवनयी घणा गुणनी हानी	व्याल्यान १०७ मुं,
राव हरे १६७	पांचमा ब्रनना पांच अतिचार १८०
ते उपर् सत्यिक विद्यायरनी कथा १९७	वा वत ७ तर ५४ इ अविकना क्या १८५
नदं नर्गत सुज्येष्टानो यवंष १९९	न्यार्व्यान रुष्ट मु,
व्याख्यान १०६ जुं	परिग्रहनुं प्रमाण न करवायी प्राप्त यता टोप १८३
स्त्रीचरित्र जाणवामां कोई पण कुबळ	दोप १८३ ते उपर मञ्मणजेटनो प्रवंघ १८४
नयी १६०	कुचिकर्ण, तिलक्षकोठ नवनंदना प्रवंधर८४
	व्याल्यान १०९ मुं.
ते चपर नुपूर पंदितानी कथा १६० व्याल्यान १०४ थुं.	परियहमां व्यायक्त मनुष्यो अनेक पाप
चातुर्मास्यना इत्यो. (चोमासी	करे छे. १८६

	( (	•	
विषय.	7	विषय.	बृष्ट.
ते उपर वे भाईओनी प्रदंध	१८६		500
व्याख्यान ११० मुं.	• •	रात्रीभोजननुं अन्य शास्त्रोना आधा	₹
च्छहा वतनुं स्वरुप	१८९	पूर्विक त्याज्यपणुं.	284
छहुं वत पाळवा उपर सिंहश्रेष्टीनी	•	रात्रीभोजनना संवंधमां त्रण मित्रोन	ी '
	१९०	कथा	380
	1 1 -	व्याख्यान ११८ मुं.	
व्याख्यान १११ मुं. छडा व्रतना पांच अतिचार	202	बाकीना अमुलोनुं वर्णन,	386,
ते उपर कुमारपाळराजानो प्रवंध	5 7 7	द्वीदळ संबंधी विश्वेष व्याख्या.	<b>२</b> २०
व्याख्यान ११२ मुं.	7 24	चलितरस संवंधी विशेष व्याख्या.	२२१
स्रोभनो प्रसार पण छहा वतथी निवृ	<b>a</b>	व्याज्यान ११९ मुं.	. ,
	१९५	वासी अन्नना त्याग उपर गुणसंदरन	_
आ वत न लेवाथी दुःखी थवा उपर	, , .	चमत्कारीक प्रवंध.	477
	१९९	व्याख्यान १२० मुं.	-
व्याल्यान ११३ मुं.		अजाण्युं फळ न खावा विषे (ते ह	_
केटलाएक विकट संकटमां पण आ	- 1	वंकचूळनी कथा)	२३५
• •	१९७	स्थम ९ मो पृष्ट२३० थी ।	
	१९७	व्याख्यान १११ घी १३५	\$
व्याख्यान ११४ मुं.		सातमा तथा आडमा व्रतनुं स्व	रुप_'
सातमा,भोगोपभोग प्रमाणवतनं स्वरुषः	२०२	व्याख्यान १२१ मुं,	
सचित्रनं स्वरुप (चौट नियमोनी		अनंतकायनुं स्वरुप	२३०
व्याख्या )	२०२	मूळा तथा कंदमूळनी त्याच्यता उप	₹ े
तदंतर्गत वीरमभुनो तथौं अंबाड परि		पुराणीना प्रमाण	२३१
वाजकना ७०० शिष्यमी प्रवंध.	२०३	वनस्पातनु प्रमाण	232
verseend	२०५	अनंतकायना त्याग उपर धर्मराचिनी	
व्याख्यान ११५ मुं.	1	क्या	२३ हैं
वावीश अमलोनुं स्वरुप ( चार महा	J	व्याख्यान १२२ मुं.	
विगय.)	२०७	सातमा वतना वीश आतिचार पैकी	
Director of the second of the	२०९	मथमना पांचतुं स्वरुप	२३४
व्याख्यान ११६ मुं.		सातमें वर्त पाळवा उपर धर्मराजानी	t
वाकांना अभक्षोनं वर्णन	<b>२</b> ११	कथा	र३६
मृत्तिकाना संवंधमां विशेष प्रकार. रात्रीभोजन संवंधी विशेष व्याख्यान	285	व्याख्यान १२३ मुं.	
रात्रीभोजन संबंधी विशेष व्याख्यान	282	नानापान सम्या १५ आतजार (प्रा	थमना
	117		335

		विषय.	पृष्ट-
सस वाणिज्यना संवेदमा घृत तथा		एक वादशाहनो प्रवध	२इ४
चर्मना वृंयापारीनी कथा	२४०	त्रण वर्गना द्वींकसंयोगी भांगा	२६६
्व्याख्यान १२४ मुं.		कुमारपाळनो प्रवंध	२६६
,कर्मादान पैकी छेल्ला पांच अतिचार		धनृदत्तश्रेष्टीनो प्रवंध	२६६
फाल्गुन मीस पछी तिछ न राखवान		् व्याख्यान १३० मुं	
ं संवंधमां तिलभट्टनी कथा	२४३	विश्वासघात न करवा विषे	२६८
.ह्याख्यान १२५ मुं		तें चपर "विसेमिरा" नी कथा	३६९
्रपाप व्यापार तुजीने केवा प्रकार द्रव	य	व्याख्यान १३१ मुं.	
् वृद्धि करवी.	२४६	आटमा अनर्थदंड परिहारवतनुं स्व	, इ <i>प</i> ३० इ
् वृद्धि करवी. देवद्रव्यनुं त्याज्यपणुं ानीते न तजवा उपर यशोवमरिराजान	२४६	अन्थेद्डना चार भेट	२७२
ानीते न तजवा उपर यशोवमीराजा	नीं	अपध्यान त्याग ( आर्त्तरीद्रध्यान	<b>ानुं</b>
कुत्रा_	२४७	्र स्वरुप 🕽	२७२
, शुद्ध व्यापारना चार प्रकार	રેજર	राद्रभ्यान उपर कुरुड एकुरुडमुनि	नीं
ृत्याख्यान १२६ मुं		्कथा	२७४
शुद्ध व्यापार् केवी रीते याय ?	३५०	ं व्याख्यान १३२ मुं.	
सासी राखीने द्रव्य आपर्डे.	348	अनर्धदंडना वाकीना भेदोनुं स्व	हप २७५
ते उपर घूर्त वृणिकृनी कथा	२५१	मुमादाचरणनी विशेष व्याख्या.	२७६
ं उपयोगी हित्रिक्षा उपर मुग्ध श्रेष्टी		। स्त्यानद्धि निद्रा उपर पांच दष्टां	
पुत्रनी क्या	- •	निद्राना दोप	२७८
्तदंतर्गत क्रजुन करवाना संवेधमा		व्याख्यान १३३ मुं.	
्भावडश्रेष्टींनो प्रवंध	- 1	विकथानामे पांचमा प्रमाद	२७९
अजिन करवाना संवधमां शिक्षा	२५४	सात मकारनी विकथा	२८०
ं व्याख्यान १२७ मुं.		विक्या उपर रोहिणीनी कथा .	२८१
ूं शुद्ध व्यवहार विषे विशेष हित्रिक्षा	२५६	व्याख्यान १३४ मुं.	
र क्रिप्याता च, करवा उपर व अवय	444	अमादाचरपतु ।वश्यप स्वरुप	५०३
लक्षी ने दारिद्रनो संवाद		स्नान क्यां करतुं ?	२८३
पूर्ण्य पापना चार मुकार	२५९	रसोडा विगरेमां चंदरवा जरूरवां	धवा२८४
व्याख्यान १२८ मुं.		ते जपर मृगसुंदरीनी कथा .	२८४
	२६०		
	२६१	वीजा प्रगादाचरणो	२८५
धर्मवुद्धि पापवुद्धिनी कथा	२६१	अ्विराति मृत्यइयावधनी स्पष्टता	२८७
्च्याख्यान १२९ मुं.		चौदस्थानके समुद्धित उपज्वा वि	वेषे २८८
शुद्धन्यापारं विपे विशेष् हितशिक्षा	२६३	प्रमादाचरणोर्जु विशेष वर्णन .	२८९
िल्णविशीनेपर्रपर वाधा नेपमाडवाबि	रिहर	ि आठमा व्रतना स्वरुपनी संप्	<b>प्</b> ताः

#### ॥ श्री जिनायनमः ॥ ॥ अथ ॥

# ॥ श्री उपदेशप्रामाद भाषान्तर॥ भाग २ जो

स्थंभ ५ मो. वाख्यान ६२ मुं.

प्रथम खंडमां समिकत संबंधी वर्णन कर्युं, ते तत्त्व जाणवाथी प्राप्त थाय छे, अने ते सम्यक् श्रद्धानरूप समिकत जेने होय छे तेने प्राये व्रत पण प्राप्त थाय छे, ए संबंधथी आवेलो व्रतो संबंधी अधिकार आ बीजा खंडमां कहेवामां आवशे.

> अणुत्रतानि पंचैव । ग्रणानां च व्रतित्रकम् ॥ शिक्षावतानि चत्वारि । द्वादशैते भिदा मिताः ॥ १ ॥ व्याख्याः

पांच अणुवत, त्रण गुणवत अने चार विक्षावत-ए प्रमाणे वतना बार भेद् छे. तेमां पांच अणुवतोमांनुं पहेलुं अणुवत स्थूल जीवोनी हिंसानुं निवारण ते गृही आवकोए द्विविध त्रिविध भांगाए ग्रहण करवुं. 'स्थूल जीव' ए शब्दथी द्विद्वियादि त्रस जीवो ग्रहण करवा. आदिशब्दथी निरर्थक स्थावर जीवोनी एण हिसा द्विविध त्रिविध न करवी. ते प्रथम अणुवत गृहस्थ आवकोए हर्षथी ग्रहण करवुं. ते द्विविध त्रिविधनुं स्वरूप आ प्रमाणे छे:—स्थूल जीवोनी हिंसा करवी नहीं प द्विविध, अने मन वचन कायाए करवी नहीं अने कराववी नहीं ए द्विविध, अने मन वचन कायाए करवी नहीं अने कराववी नहीं ए द्विविधतिविध. आदिशब्दथी एकविध एकविध पण थाय छे. औहं हिसादि-कनी विरति करे छे, ते स्थूल जीवनी हिंसा मन वचन कायाए करता नथी अने करावता नथी, पण तेने अनुमोदनानो मतिषेध नथी; कारणके गृहस्थने संतान विगेरे परिग्रह होय छे तेथी तेने अनुमोदनानो संभव छे. आहि कोई शंका करे के, श्रीभगवतीसूत्रमां गृहस्थने पण 'त्रिविध त्रिविध त्रिविध प्रत्याख्यान कहेल छे. ते कथन आगमोक्त होवाथी निदींष होवुं जोईए, माटे ते प्रमाणे अहीं केम नथी कहेता है तेना प्रत्युत्तरमां गुरू कहे छे के, ते प्रमाणे त्रिविध त्रिविध भंगनुं अविश्वेष-पणुं छे, एटले अल्प ढेकाणे तेमनुं व्यापकपणुं छे. ते आ प्रमाणे:—जे पुरुष दीक्षा

हेवाने इच्छतो होय ते अथवा जे अंत्य समुद्रमां रहेला मत्स्यादिकना मांसन्, प्रमुखाण करे के खास धारीने कोई अमुक मकारनी (बीलकुल अगवड विनानी) स्थूल जीविहिसाथी विरित करे ते 'त्रिविधं त्रिविधं त्रिविधंन' एम उत्तरीने नियम ग्रहण करे, पण घणुंकरीने 'द्विविध त्रिविध' भांगे ग्रहण करे. एमां आदिशब्द लीधेलो छे, तेथी 'द्विविध द्विविध' ए बीजो भांगो; 'द्विविध एकविध' ए त्रीजो भांगो. 'एकविध त्रिविध' ए चोथो भांगो. 'एकविध द्विविध' ए पांचमो भांगो अने 'एकविध एकविध ए छहो भांगो. एम छ भांगा पहेला अणुवतमां कहेला छे. तेवी रीते वीजा वतोमां पण छ भांगा जाणी लेवा. पहेला वतमांना जे छ भांगा कर्या तेने साते गुणीने तेमां छ उमेरवाथी अडताळीश भांगा थाय छे. तेवी रीते आगळना वतोना पण थाय छे. एम वारमा वतसुधी जाणी लेवा. एकंदर एक संयोगी, द्विसंयोगी, त्रिसंयोगी, एम वारे वतना परस्पर संयोगी भांगा करतां सर्व भांगानी संख्या तेरसेने चोराशी कोटी, वार लाख, सत्याशी हजार अने बसोनी थाय छे. अहींयां आ विषे घणुं जाणवानुं छे ते "श्रावक वतभंग प्रकरण" तथा "धर्मरत्न" विगेरे गुंथोथी जाणी लेवुं.

अहि शिष्य प्रश्न करे छे के, "जे मुनिओ गृहस्थ तथा राजादिकना अभियोग (आगार) विना स्थूल प्राणीओनी हिंसाथीज निवृत्ति करावे तेमने स्थावर हिंसा संवंधी अनुमतिनो दोप लागे अने तेथी मुनिओने सर्वविरतिपणानी हानिनो प्रसंग आवे, अने गृही श्रावकाने ए प्रकारे पचलाण करतां पोतानी करेली प्रतिहामां आति चार प्राप्त थाय; केमके जे स्थावर जीव छे ते त्रसपणे उत्पन्न थाय छे अने त्रस जीव स्थावरपणे उत्पन्न थाय छे, तो करेलो नियम न सचवायाथी तेमनी प्रतिहानो भंग थाय छे. जेमके कोईए नगरना वासी जनने मारी नाखवो नहीं क्षे एवी जे काले प्रतिहा करी ते काले जे कोई नगरमां होय अने पछी उद्यानमां जाय ते माणसने नगरवासी नहीं गणीने जो ते हणी नाखे तो तेने प्रतिहाा भंग कर्यानो दोष केम नहीं लागे? एम श्रावके त्रसपणामां रहेला जीवने मारवानी निवृत्ति करी, पण ज्यारे ते जीव स्थावरपणाने प्राप्त थयो, त्यारे तेने पारवाथी तो उपर प्रमाणे दोप केम न लागे? अवश्य लागवो जोईए. तेथी पचलाण करनार अने करावनार वंनेनी प्रतिहानो लोप थाय छे". तेना प्रत्युत्तरमां गुरु कहे छे—अरे शिष्य, तने आ शो व्यामोह थयो छे, के जेथी आवो अणसमजभरेलो पक्त करे छे. गृही श्रावको ज्यारे साधु पासे व्रत लेवा आवे छे, त्यारे ते कहे छे के, हे मुनिवर्य!

<sup>\*</sup> अहिं नगरमां होय तेने न मारवो, पण उद्यानमां होय तेने मारवो एवो अर्थ नीकळे छे.

अमे अणगारपणुं (साधुपणुं) छेवाने शक्तिमान् नयी, पण अमे निरपराध त्रस काय जी-वनो वध करवानुं पचलाण पाळवाने शक्तिमान् छीए. आवी धारणा करीने तेओ वतः छे छे, तेथी तेमनी प्रतिज्ञानो भंग थतो नथी. वळी तेओ रायाभियोगेणं विगेरे छ छींडीओ सहित वत अंगिकार करे छे, तेथी राजादिकना अभियोगथी कदी त्रस जीवनो वध करवो एडे, तोपण तेमना वतनो भंग थतो नथी. आ संबंधमां एक क्रथा छे ते आ प्रमाणे—

#### गृहस्थने अणुत्रत ग्रहण करावतां साधुने स्थावर जीवोनी हिंसानी अद्यमोदना लागती नथी ते उपर कथा.

रत्नपुर नामना नगरमां रत्नशोख्य नामे राजा इतो. एक दिवस तेणे पोतानः अंतःपुरनी स्त्रीओने अने नगरना छोकोने स्वेच्छाए क्रीडा करवाने माटे कौमुदी महोत्सव करवानी आझा आपी; अने नगरमां एवी आघोषणा करावी के, राजा विगेरे सर्व पुरुषोए उद्यानमां आववुं, कोईए नगरमां न रहेतुं. आथी सर्वेष तेम कर्युं. ए वस्तते एक विणकना छ पुत्रो क्रयविक्रय विगेरे व्यापारमां व्यम होवाथी नगरमांज रही गया अने राजसेवकोए शहेरना दरवाजा बंध करी दिधा. बधा नीकळी गया पछी राजाए पुररक्षकोने कर्युं के, तपास करो के नगरमां कोइ पुरुष छे के नहीं? तपास करतां ते छ विणक पुत्र तेमना जोवामां आव्या, तेथी तेमने दोरडावडे वांधीने रक्षको राजा पासे छाव्या. राजाए कोप करीने तेमनो वध करवानी आझा करी. कर्युं छे के,—

आज्ञाभंगो नरेंद्राणां। महतां मानमर्दनं ॥ मर्भवाक्यं च लोकाना। मशस्त्रविष्मुच्यते॥ १॥

"राजाओंने आहानी भंग, मोटा छोकोंने अपमान अने छोकोंने मर्मवचन ते। अस्त्र नगरनो वध कहेवाय छे."

राजाए करेला हुकमनी नात सांभळीने ते छ पुत्रोनो पिता शोकाकुल थई राजापासे आनीन कहेना ल्याग्यों के, हे देन! मारा कुळनो क्षय करो नहीं. मारुं सर्व धन लई ल्यो, पण मारा पुत्रोने छोडी मुको तथापि राजाए कोई रीते तेमने छोड्या नहीं. पछी पिताए सर्वनो घात थतो जोई तेमांथी पांच पुत्रोने छोडवानी प्रार्थना करी. राजाए तेम पण कर्यु नहीं. पछी चार पुत्रोने माटे मागणी करी, तो एण राजाए मान्युं नहीं. पछी त्रण, वे अने छेन्टे एक पुत्रने छोडवानी मार्थना

करी. ते वखते सर्व नगरजनोए पण विश्वित करी एटले राजाए सर्वथी ज्येष्ठ पुत्रने छोडी दीधो.

आ दृष्टांतनी योजना एवी छे के, राजा ते समिकतधारी गृहस्थ आवक छे.
ते सर्वथा प्राणातिपातनो त्याग करवाने (छ पुत्रोने छोडवाने) अशक्त छे, तेने छ
काय जीवना पितारूप साधुए ते छोडवानी पेरणा करी, तोपण सर्व विरित करवाने
ते अंगीकार करतो नथी. ए पितारूप मुनि छकाय हिसाथी विरित कराववा इच्छे
छे, पण राजारूप आवक तेने छोडी देवा अशक्त छे. छेवटे एक ज्येष्टपुत्ररूप त्रस
कायवध (स्थूल हिंसा) छोडी शके छे, एटले स्थूल हिसानी विरित ग्रहण करे
छे अने ते प्रमाणे पाळे छे. तेथी पितारूप साधु पोताना आत्माने छतार्थ माने छे.
जेम ते शेटनी कांई पांच पुत्रोने मारवामां अनुज्ञा नथी, तेम साधुने पण पांच स्थावरोनी हिसामां अनुमित लागती नथी, पण आवक वत लईने जेटलो संकल्पवडे स्थूल
जीवोना वधमांथी निवृत्त थाय छे, तेटलाना निमित्त कारण यवाथी ते मुनिनो उलटो
कुशलानुवंध थाय छे.

इवे त्रसजीव एटले द्वींद्रियादि जीवो लेवा. ज्यारे त्रसजीवनुं आयुष्य शीण थाय, तेमज त्रुसपणानी कायस्थिति पण शीण थाय, त्यारे-ते कायस्थिति ज-यन्य अंतर्मृहूर्त्तनी अने उत्कृष्टी वे इजार सागरोपमनी छे. पछी ते त्रस संबंधी आगुष्य पूर्ण करी तेमज वीजा पण त्रस जीवोना कर्मनो त्याग करी एटले त्रस-पणुं त्यजी स्थावरपणामांपाछा आवे छे. तेमज जे स्थावर छे ते स्थावरपणानुं आयुष्य पूरूं करीने अने स्थावरपणानी कायस्थिति पण पूर्ण करीने-स्थावरनी कायस्थिति जयन्य अंतर्मुहूर्तनी अने उत्कृष्टी अनंतकाळनी छे. तेमां असंख्य पुद्गल परावर्त्त थई जाय छे. ते पछी रथावरपणानी कायस्थितिनो अभाव छे, तेथी सामर्थ्यने लीधे ते त्रसपणामां पाछा अवतरे छे. ते त्रसपणामां मत्येक विगेरे नाम कर्मथी युक्त थाय छे. ञसपणामां उत्कृष्टी भवस्थिति ते त्रीस सागरोपमनी छे. ए उपरथी स्थावरोथी त्रसनुं जूदापणुं सिद्ध थाय छे अने एथीज श्रावकोए त्रस जीवोनी हिंसाथी निवृत्ति करेली छे. स्थावर हिसाथी निवृत्ति करेली नथी. वळी आ ठेकाणे नागरिकतुं दृष्टांत पण घटतुं नथी, कारणके जेनामां नगरना धर्म होय ते बहार उद्यानमां रह्यो होय तोपण नागरिक ज छे. ते कादि नगरना धर्मने त्याग करतो नथी; पण जो नगर धर्मनो सर्वथा त्याग करे तो ते नागरिकज न कहेवाय. ते जूदोज कहेवाय. तेम अहि त्रस जीव पण ज्यारे स्थावरपणाने पामे छे, त्यारे ते जूदोज कहेवाय छे, तेथी कदि कोई कारणे तेनी हिंसा यायतो तेथी करी गृही श्रावकने वतनो भंग थतो नथी एथी हे शिष्प! तारो पक्ष अयुक्त छे. आ विषे विशेष जाणवुं होय तो "श्रीसूगडां.

सूत्रनी दीपिकामांथी" जाणी लेवुं. आ वत कुमारवाळे मुख्य भांगाथी स्वीकांधुं इतुं, तेनो अधिकार आ प्रमाणे छे-

(प्रथम अणुत्रत पर कुमारपाळनी कथा.)
धर्मी जीवदयातुल्यो । न कापि जगतितले ॥
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन । कार्या जीवदया नृभिः ॥ १ ॥
गोपो बब्बूलश्रूल्यप्रे । प्रोतयूकोध्य पातकात् ॥
अष्टोत्तरशतवाहान् । श्रुलिकारोपणान्मृतः ॥ २ ॥

एक वस्तते पाटण नगरमां श्रीहेमचंद्राचार्ये राजसभामां कहां के, "आ पृथ्वी उपर जीवद्या जेवो बीजो कोई धर्म नथी, तेथी मनुष्योए सर्व मयत्नथी जीवद्या पाळवी. कोई एक गोपे बावळनी शूळी उपर जू परोवी हती ते पापवडे ते एक सोने आठवार शूळी उपर चडीने मृत्यु पाम्यो हतो." केटलाएक लोको कहे छे के, "जे स्थाने गायो तृषा रहित थाय तेवा नवाण करावनार पोताना सातकुळने तारे छे, तेथी सर्व मयत्नवडे पृथ्वी उपर जलाशयो कराववा." आहं गायोने पाणी पावामां जे दया कही छे ते अन्यमत ममाणे छे, कारणके जलाशय कराववाथी पृथ्वीकाय जीवोनी, अप्पकाय जीवोनी अने पूरा विगेरे अनेक त्रस जीवोनी पण हिंसा थाय छे.

आ प्रमाणे श्रीहेमचंद्राचार्यनो उपदेश सांभळी कुमार्पाळे प्राणातिपात विरमण् वत लई पोताना अढार देशोमां अमारी पलावी तथा बीजा देशोमां मैत्रीवडे तेमज बळवडे अमारी पळावी. वळीपोताना अढार लाख घोडा, अग्यारसो हाथी, ऐंशी हजार गायो अने पचास हजार ऊंटोने गळीने जळपान कराववानी गोठवण करी.

एक वस्तते कुमारपाळ राजा कायोत्सर्गे जभा रहेल तेवामां पगे मंकोडो चोंट्यो. ते वस्तते पासेना सेवकोए तेने उस्तेडवा मांड्यो. पण राजाए मंकोडाने व्याकुलता थती जोई, तीक्ष्ण कातरवडे पोतानी त्वचा उस्तेडी मंकोडाने दूर कर्यो. वळी तेणे एवो नियम लीधो के, वर्षाऋतुना चार महीना पोताना नगरना दरवाजा बहार जबुं नहीं.

एक वसते आचार्ये कुमारपाळने जळने गळीने पीवा विषे पुराण मांहेना ऋोको आ प्रमाणेना कही संभळाच्याः-

त्रैलोक्यमिखलं दत्वा । यत्प्रण्यं वेदपारगे ॥ ततः कोटीग्रणं प्रण्यं । वस्त्रपूतेन वारिणा ॥ १ ॥ श्रामाणां सप्तके दम्धे । यत्पापं जायते किल ॥ तत्पापं जायते राजन् । निरस्यागलिते घटे ॥ २ ॥

#### **( ६** ) श्री उपदेशप्रासाद भाषान्तर-माग २ जो-स्थंभ ५ मो.

संवत्सरेण यत्पापं । कैवर्तस्येह जायते ॥ एकाहेन् तदाष्ट्रोति । अपूतजलसंग्रही ॥ ३ ॥ यः कुर्यात् सर्वकार्याणि । वस्नपूतेन वारिणा । स मुनिः स महासाधुः । स योगी स महावती ॥ ४ ॥ ष्रियंते मिष्टतोयेन । पूतराः क्षारसंभवाः ॥ क्षार तोयेन मिष्टानां । न कुर्यात् सकलं ततः ॥ ५ ॥

" वेदना पारंगत ब्राह्मणने समय बण लोक आपवाथी जेटलूं पुण्य याय छे, तेनाथी कोटीगुणु पुण्य वस्त्रवडे गळीने पाणी पीवाथी थाय छे. वळी सात गाम बाळवाथी जेटलुं पाप थाय छे, तेटलुं पाप अणगळ पाणीनी घडो वाप-रवाथी याय छे. मच्छीमारने एक वर्षमां जेटलुं पाप लागे छे तेटलुं पाप गल्या वगरना जलने संयही राखनारने एक दिवसमां लागे छे. जे गळेला जळथी सर्व कार्य करे, ते मुनि ते महासाधु, ते योगी अने ते महावती कहेवाय छे. खारा पाणीना उत्पन्न थयेला पूरा मीठा पाणीमां मरी जाय छे अने मीठा पाणीना पूरा खारा पाणी

थी मरी जाय छे, तेथी खारूं अने मीडुं पाणी एकडुं करबुं नहीं."

आवा पुराणना श्लोको सांभळीने कुमारपाळे ते श्लोको लखावी तेनापत्र लई लड्ने पोताना सेवकोने पोताना राज्यमां दरेक शहरे शहरे अने गामे गाम जीवदयान माटे मोकलाच्या. वळीराजा कुमारपाळे जीवदयाने माटे ग्रुप्त वातमीदारोने राख्या इता के 'कोई हिंसा करे छे के नहीं"? तेओ ग्रुप्त रीते तेना विशाळ राज्यमां सर्वत्र फरता हता. एक वस्तते एवं वन्युं के, कोई गाममां 'महेश्वर' नामना कोई विणकना केशमांथी तेनी स्तीए एक जु काढीने ते श्रेष्टीना हाथमां मुकी, एटले ते महेश्वर शेंटे तेने मारी नाली. ते राजाना गुप्त चरोना जोवामां आव्युं तेथी तत्काळ ते श्रेष्टीने जुना कलेवर साथे पकडीने पाटण कुमारपाळ पासे लई गया. राजाए पूछ्युं, अरे शेठ, आवी दृष्ट चेष्टा केम करी ? श्रेष्ठीए कहुं, महाराज, आ जु मारा मस्तकमां मार्ग करीने मारू रुधिर भीती इती, ते अन्याययी में तेने मारी छे. कुमारपाळे कहा, अरे दुष्ट, केश तो जुने रहेशानुं स्थान छे. त्यांथी ते जीवने तें स्थान भ्रष्ट कर्यों तेथी तुं पोतेज अन्यायी छूं. कदि तुं जीविंदसायी व्हीनो नहीं, पण शुं मारी आज्ञाथी पण व्हीनो नहीं? एम कही तेनो घणो तिरस्कार कर्यो. पछी ते महेश्वरे जीवितरूप भिक्षा मागी एटले दयाळु राजाए केंद्धं के, जा, तने छोडी प्रुकुं छुं, पण तुं तारूं सर्व द्रव्य खर्चीने आ जुना पापनुं मायश्चित करवा माटे "यूकाविहार" नामे एक प्रासाद कराव्य, के जेने जोईने कोई पण तेवो जीववध न करे. महेश्वर शेठे तेम करवुं स्वीकार्युं. कहुं छे के-

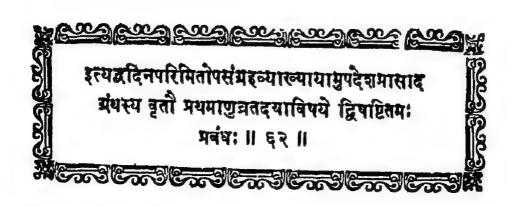
# अमारि कारणं तस्य । वर्ण्यते किमतःपर्र ॥ चुतेपि कोपियन्नोचे । मारीरीत्यक्षरद्वयं ॥ १ ॥

"अहो, कुमारपाळ राजानां अमारी कर्तव्यनुं शुं वर्णन करीए के जेनां राज्यमां द्युतक्रीडामां पण कोई 'मारी' एवा ए वे अक्षर वोली शकतुं नहीं."

एक वस्तते राजा कुमारपाळे सात व्यसनने हिंसाना कारणभूत जाणी मा-टीना सात पुरुषोना रूप बनाव्या. तेमना मुख उपर मधी लगाडी गधेडे बेसाडी ते नी आगळ काइल विगेरे तुच्छ वाजीत्रो वगाडतां तेने पाटण नगरना चोराशी चौ-टामां फेरवी लाकडी तथा मुष्टी विगेरेना ताडन करावी तेने पोताना नगरमांथी अने पोताना देशमांथी पण बहार काढी मुकाव्या. इत्यादि घणां वृत्तांतो श्रीजिनं मंडनसूरिए रचेला कुमारपाळ चरित्रमांथी जाणी लेवा.

श्रीकुमारघरणीभृतःकथां । कथ्यतेऽत्र महिमा प्रमातिगः ॥ यः कृपावतिमहाश्रितः स्वयं।तन्मयं च निखिलं जगदव्यघात्॥१॥

" आ श्रीकुमारपाळ राजानी कथानो माईमा वचनथी अगोचर छे, ते राजाए पोते दयावत छड़ने सर्व जगतने पण दयामय करी दीधुं इतुं. "



#### व्याख्यान ६३ मुं.

इवे गृहस्थ श्रावकोने मुनिथी सवाविश्वा (सवावसा) नी दया होय ते षतावे छे.

आद्यवते गृहस्थानां । सहपादा विशोपकाः । दया हि दार्शिता पुज्यैः । नाधिका तु प्रकाशिता ॥ १ ॥ व्याख्या

"पूज्य पुरुषोए गृहस्य श्रावकोने प्रथम दयाव्रतमां मुनिथी सवावसा दया द्रशावी छे, तथी अधिक दर्शावी नथी."

अहिं सवावसो दया केवीरीते थाय ते उपर प्राचीन सूरिओ आ प्रमाणें कहे छे.

थूला स्हमा जीवा, संकप्पारंभओ भवे दुविहा। सावराह निरवराहा, साविक्ला चेव निविक्लाय ॥

स्थूल अने सूक्ष्म एम वे प्रकारना जीवो संकल्प अने आरंभथी एम वे प्रकार ् हणाय छे. ते जीवो वळी सापराधी अने निरपराधी एम वे प्रकारन होय छे तथा तेनी हिंसा सापेक्ष अने निरपेक्ष एम वे प्रकारे थाय छे.

तेनो भावार्थ एवो छे के, प्राणीओनी हिंसा प्राणीना स्थूल अने सूक्ष्मपणा-थी वे प्रकारे कहेली छे. तेमां स्थूल एटले त्रस जीवो अने सूक्ष्म एटले एकेंद्रिय जीवो जाणवा. तेना पृथ्वीकाय विगेरे पांच भेद छे, पण तेमां ते नहीं के जे सूक्ष्म नामकर्मना उदयथी सर्व लोकमां व्यापी रह्याछे; कारणके तेना वधनो अभाव छे. तेओ तो पोताना आयुष्यना क्षयवंडेज मृत्यु पामे छे, तेथी ते जीवो संवंधी अविरति जन्य पापवंध छे, पण हिंसाजन्य पापवंध नथी. साधुओ ते वंने प्रकारना (स्थूल अने सूक्म जीवना) वधथी निवृत्त छे तेथी तेमनामां विशवसानी दया होय छे अने गृहस्थने मात्र स्थूल जीवना वधथी निवृत्ति छे, कारणके ते पृथ्वी, जल विगेरेनो सदा आ-रंभी छे; तेथी दशवसा ओछा थया. हवे ते स्थूल जीवनो वध पण वे प्रकारे छे. सं-कल्पथी अने आरंभथी. तेमां संकल्पथी एटले े आने हुं मारुं ' एवा मनःसंकल्पथी जे हिंसा थाय ते. तेनाथी गृहस्य निवृत्त थई शके छे. पण आरंभथी ते निवृत्त थई शकतो नथी; कारणके खेती विगेरेना आरंभमां त्रसजीवनो पण घात थाय छे. ते शि वाय पोतानो तथा स्वजननो निर्वाह थई शकतो नथी. एथी दशवसामांथी वळी बांच गया एटले पांच वाकी रहाा. हवे संकल्पथी त्रस जीवनी हिंसामां पण सापरा॰ भी अने निर्पराधी जीव आश्री वे भेद छे. तेमां गृहस्य निर्पराधीनी हिंसाथी

निवृत्त थई शके छे, पण सापराधीने माटे तो तेना अपराधना नाना मोटापणा संबंधी विचार करवो पडे छे; तेथी तेना गुरु अपराधमां तेना वधनो संकल्प पण करे छे. तेथी पांच वसामांथी अदीवसा गया. ते निरपराधीना वधना त्यागमां पण वे प्रकार छं सापेक्ष अने निरपेक्ष. तेमां गृहस्थ निरपेक्ष हिंसाथी निवृत्त थइ शंके छे, पण सापेक्ष हिंसाथी निवृत्त थइ शकतो नथी. एटले निरपराधी एवा पण भारवहन करनारा पाडा, बंळद, घोडा विगेरेने तेमज पढन करवामां प्रमादी एवा पुत्रादिकने सापेक्षपणे वध बंधनादि करे छे; तेथी अदीवसामांथी अर्घ जतां बाकी संवाबसो रहे छे. तेथी गृहस्थ श्रावकने सवा वसो दया कहेली छे.

प प्रमाणे श्रावकनुं पहेलुं अणुवत छे. ते प्रथम अणुवतना पांच अतिचारं त्यागं करवा योग्य छे ते कहे छे.

कोधाद् वंध छविच्छेदोऽ धिकभाराधिरोपणं । प्रहारान्नादि रोधश्चा ऽहिंसायाः परिकीर्त्तिताः ॥

"क्रोधयी आंकरुं वंधन बांधबुं, कर्णादिकनी छेद करवी, अधिक भार मुकबो, महार करवो अने अन तथा जलनो निरोध करवी, ए प्राणातिपात विरमण वतना पांच अतिचार छे."

तेनुं विवेचन करे छेके, रज्जु विगरेथी गाय वा मनुष्यने बांधवा. पोताना पुत्रोने पण विनय शिखंबवा माटे तेवी शिक्षा करवी. तेमां क्रोधयी एटले मबल कषाय थी जे बंधन बांधवुं ते पहेलो अतिचार छे. श्रीरनी त्वचानो अथवा कान विगरेनो क्रोधयी जे छेद करवो ते बीजो अतिचार छे. क्रोधयी वा लोभयी बहन करी शका य नहीं तेटलो (ममाणयी अधिक ) बोजो बूषभ, ऊंट, गधेडा तथा मनुष्यादिकनी पीटपर आरोपण करवो ते त्रीजो अतिचार छे. क्रोधयी निर्दयपणे चाबुकादिवडे महार करवो ते चोथो अतिचार छे. अने क्रोधादिकथी भात पाणीनो या धासचारा नो अटकाव करवो ते पांचमो अतिचार छे.

अहिं शिष्य पश्च करे छे के, "आ वधादि पांच अतिचार शी रिते छागे? कारण के, वत्रवहण करतां ते बंधन, प्रहारादिनों त्याग करे छो नथी, जेथी वतना मछी। नपणानों अभाव छे अने जे वत छी छुं छे ते तो अखंड छे, तेथी तेमां अतिचार शी रिते ऊत्पन्न थाय?" गुरु तेनुं समाघान करे छे के—"मुख्यपणे तो माणातिपातनों जत्याग करे छों के वध बंधनादिनों त्याग करे छों के—"मुख्यपणे तो तेनुं पण पच्छाण करे छुं छे; कारण के ते माणातिपातना हेतु छे. " शिष्य कहे छे के "जो तेम छे तो तो तेवी रिते वत न पाळवाथी व्रतनोज भंग यवो जोइए, अतिचार शा माटे छागे?" गुरु कहे छे के "एम नहीं. वत बेमकारे पळाय छे—अंतर्वृत्तिथी अने बहिर्वृत्तिथीं।

तेमां ज्यारे कोपादिकने वश थइ यथ विगेरेमां (महारादि करवामां) मवर्ते त्यारे निर्देयपणाने लीधे अंतर्वृत्तिथी वतनो भंग थाय छे, पण आयुष्यना वळने लीधे ते जीवना मरण नहीं पामवाथी विह्वृत्तिथी वत पाळ्युं गणाय छे. तेथी कांइक मांग्युं अने कांइक न मांग्युं—ते भंगाभंगरुप अतिचार गणाय छे. ते ऊपर अन्यत्र कह्युं छे के, "मारे जीवनो वध करवो नहीं, एवुं जेने वत छे तेने जीव मृत्यु पाम्या विना अतीचार केम लागे ? एवी आशंकानो उत्तर आपे छे के, जे क्रोध करीने वध विगेरे करे छे, ते समये तेने निर्पेक्षपणुं थइ जाय छे, वत नियम सांभरता नथी. तेवे प्रसंगे जीव मृत्यु न पामवाथी तेनो नियम रहे छे, पण कोपवडे निर्देयपणुं करवाथी तेना वतनो भंग थाय छे. एटले देशयी भंग अने देशयी प्रतिपालन थवाथी पूज्य पुरुषो तेने अतिचार गणे छे. " माटे जेम आ अतिचारो न लागे तेम प्रवर्त्तवुं. आ वत उपर श्रीकुमारपाळनो प्रवंच नीचे प्रमाणेः—

#### श्री कुमारपाळ प्रबंध.

एक वखते ऊदयनमंत्रीए पाटणमां महोत्सव सहीत श्रीहेमचंद्रसूरिने प्रवेश कराव्यो. अन्यदा सूरिए मंत्रीने कह्युं के, तमारे राजाने एकांतमां कहेर्तुं के, आजे तमारे नवी राणीने महोले सुवा न जवुं; कारण के रात्रेत्यां विघ्न थवानुं छे. कदि रा जा तमने पुछे के, तेवुं कोणे कहुं ? तो ते आति आग्रह करे तो तमारे मारुं नाम आपवुं. पछी मंत्रीए तेम कर्युं. राजाए ते वचन मान्य कर्युं. ते रात्रे विद्युत् (वीजळी) पडवाथी ते राणीनो महेल वळी गयो अने राणी मृत्यु पामी. आ चमत्कार जोइराजा-ए मंत्रीने पूछवाथी हेमचंद्राचार्यने त्यां आव्या जाणी तरत वोलाव्या. सूरि सभामां आन्या एटेले राजा आसन छोडी तेमना चरणमां पडीने वोल्यो के, -हे भगवन्! हुं तमने मुख बतावी शकुं तेम नथी केमके, प्रथम तमस्तंभतीर्थ (खंभात, मां मारी रक्षा करी इती, अने अहि पण जीवितदान आप्युं छे माटे हवे मारुं राज्य लड्ने मने अनुणी करो. आचार्य बोल्या के, हे राजन्, अमारे निःसंगने राज्यनुं शुं काम छे? जो तमे कृतज्ञ थइने प्रत्युपकार करवाने इच्छता हो तो तमारुं मन श्री जैनधर्ममां जोडी दो. कहुं छे के, प्राणीने घर, स्त्री, पुत्रो, सेवको, बांधवो, शेहेर, खाण, गाम अने राज्यः संपत्ति विगेरे पगले पगले प्राप्त थाय छे पण विद्वानीए पूजेली निर्मल तत्वज्ञानपर रुचि प्राप्त थती नथी. ते सांभळी राजाए कह्यं, स्वामी तमारे कृपा करी प्रतिदिन सभामां मने प्रतिवोध करवा आववुं, के जेथी अनेक ब्राह्मणादि वर्गे स्थापित करेला पक्षना विनाशथी मारी वृद्धि सम्यग् धर्ममां जोडाय. पछी श्री हेमचंद्रसूरि प्रतिदिन राजसभामां जवा लाग्या अने ब्राह्मणोनी साथे विवाद करीने स्याद्वाद मतनुं स्थापन करवा लाग्या एक दिवस राजाए सभामां पुछ्युं के, सर्व धर्ममां श्रेष्ट धर्म

कयो? सूरि बोल्या-भोजराजानी आगळ सर्स्वतीए आ संवाद विषे ऋोक कह्यो छे ते सांभळवा योग्य छे. तेमां कहुं छे के, " सौगत धर्म करवा योग्य छे, आईत् तथा वैदिक धर्म व्यवहारने माटे ग्रुक्त छ अने शिव धर्म ध्यान करवा योग्य छे. राजाए फरीथी पूछ्युं के भगवन्, वेदमां छखे छेके, "जे औषधीओ, पशुओ, वृक्षो, तिर्थेचो अने पक्षीओ यज्ञने माटे निधन (विनाश) पामे ते पुनः उस्तत पदने पामे छे." आ प्रमाणे वेदोक्त हिंसाने केटलाएक धर्म माने छे ते विषे आप शुं कहो छो ? सूरि बोल्या-राजन्, ए सत्य वचन नथी. स्कंदपुराणना अद्वावनमा अध्यायमां कहुं छे के, "वृक्षोने छेदी, पशुओने इणी, रुधिरनी कादव करी अने अग्रिमां तिल घृतादि बाळी स्वर्ग मेळवे छे ते आश्रय छे. जो यज्ञने माटे प्यु स्रजेला छे एम स्मृति करेती होय तो स्मार्च धर्मीओ तेमनुं मांस भक्षण करनारा राजाओने केम वारता नथी ! वळी जो ब्रह्मा ए यज्ञने माटे पशुओ बनाव्या छे तो वाघ विगेरेना होमथी देवता संतुष्ट केम थता नथी ?" हे राजन्, अहिंसाथी उत्पन्नथनारो धर्म हिंसाथी भी रीते पाप्त थाय? जलथी उत्पन्न थनारा कमलो अधिमांथी केम उत्पन्न थाय? ब्रह्म-पुराणमां पण लखे छे के, " प्राणीनी हिंसा करनारा पुरुषो वेद भणवाथी, दान देवाथी, तप करवाथी के यक्नो करवाथी कदी पण सद्गीत पामता नथी." सांख्य मतवाळा कहे छे के:--

षटित्रंशदंगुलायामं, विंशत्यंगुल विस्तृतं ॥ दृढं गलनकं कार्थ, भूयो जीवान् विशोधयत् ॥ १ ॥

" छत्रीश आंगळ लांबुं अने वीश आंगळ पोहोळुं एवं गरणुं राखवुं अने ते वडे वारंवार जीवोने शोधवा अर्थात् पाणी गळवुं." वळी लिंगपुराणमां कह्युं छे के:-

त्रिंशदंग्रलमानं तु, विंशत्यंग्रल मायतं ॥ तद्वस्नं द्विग्रणी कृत्य, गालियत्वोदकं पिवेत् ॥ १ ॥ तस्मिन् वस्ने स्थितान् जंतुन्, स्थापयेज्ञलमध्यतः ॥ एवं कृत्वा पिवेत्तोयं, स याति परमां गतिम् ॥ २ ॥

"त्रीश आंगळ छांबुं अने वीश आंगळ पोहोळुं वस्त्र बेवडुं करी ते वडे जलने गळीने पछी पीबुं. ते वस्त्रने लागेला जीवोने पाछा जळनी मध्यमां नासवा. एम् करीने जे जळ पीवे ते सद्गतिने पामे छे." उत्तरमीमांसामां पण कह्युं छे के:—

ख्तास्य तंतु गिळते, ये बिंदौ संति जंतवः॥ सूक्ष्मा अमर मानास्ते, नैव माति त्रिविष्टपे॥ १॥ कुसंभ कंकुमांभोव, निचितं सूक्ष्म जंतुभिः॥ तद् हदे नापि वस्रेण, शक्यं नो शोधयेज्ञलं॥ २॥

"करोळीआना मुलमांथी नीकळेला तंतुओथी गळेला जळना विदुओमां जे जंतुओं छे ते एटला बधा सूक्ष्म छे के जो ते दरेकने अमरा जेवडी कायाबाळा करीए तो त्रण जगतमां समाय नहीं." वळी "कसुंवाना तथा कुंकुमना जळनी अंदर रहेला कसुंवा ने कुंकुमनी जेम पाणीमां एवा सूक्ष्म जंतुओ रहेला छे के घाटा चल्ल्यी गळतां छतां पण तेने शोधवुं अशक्य थइ पडे छे. अर्थाद् तेमांथी पण बहार नीकळी आवे छे."

खपर प्रमाणे सर्व धर्म शास्त्रोमां कहेल छे तथी सर्व धर्म द्यामूळ छे, अने एक धर्म प्रमाण छे, मादे हे राजन्! आतिने छोडीने दया धर्ममां स्थिर था. आ प्रमाणना हेमचंद्राचार्यना बचनोथी जैन धर्मने सत्य मानतां राजाए फरीवार पूछ्युं के, हे भगवन्, केटलाएक कहे छे के, जैन लोको वेदवाह्य छे माटे ते नमवा योग्य मथी. ते विषे आप शुं कहो छो? सूरि वोल्या—राजन्, वेद कर्ममार्गना प्रवर्तक छे अने अमे निष्कर्म मार्गी छीए, तथी वेद शी रीते प्रमाण थाय? उत्तरमीमांसामां कहुं छे के, "वेद अवेद छे, लोक अलोक छे अने यह अयह छे" कारण के "वेदमां अविद्या कहेली छे." वळी रुचि प्रजापतिना स्तोत्रमां पुत्रनुं पिताप्रत्ये बचन छे के, "वेदमां कर्ममार्ग छे ते अविद्या छे तो हे पितामह, तमेमने कर्ममार्गनो उपदेश केम करो छो?" जो वेदमां किंचित् पण जीवदया कहेली छे तो सर्व शास्त्र संगत शुद्ध-द्याने पाळनारा अमे वेदवाह्य शी रीते कहेवाइए १ पुराणमां लखे छे के:—

सर्ववेदा न तत्कुर्याः । सर्वे यज्ञा च भारत ॥ सव तीथाभिषेकाश्च । यत्कुर्यात्प्राणीनांद्या ॥ १ ॥

"हे भारत! (युधिष्टिर) जे प्राणिओ पर दया करवाथी थाय ते सर्व वेदोथी, सर्व यज्ञोथी अने सर्व तीर्थाभिषेकथी पण थतुं नथी." वळी हे राजन, "जो वेदमां ह्या न होय तो ते वेद नास्तिकना शास्त्रोनी जेम अमारे प्रमाण नथी." आ प्रमाणेना गुरुमहाराजना वाक्योथी कुमारपाळ राजा वेदोने अमान्य मानतो हवो.

एक वस्तते राजाए सूरिने कहां, भट्टारक, केटलाक एम कहे छे के, जैन स्रोको सूर्य जेवा मत्यक्ष देवने पण मानता नथी." सूरि वोल्या- राजन्, सांभळ. स्केहपुराणे रुद्र प्रणीत कपालमोचन स्तोत्रमां कहां छे के:—

त्वयां सर्विमिदं व्याप्तं । ध्येयोस्ति जगतां रवे ॥ त्विय चास्तिमितेदेवे । आपो रुधिरमुच्यते ॥ त्वत्करे रेव संस्पृष्टा । आपो याति पवित्रता ॥ रे हे सूर्यदेव, तमाराथी आ सर्व जगत् व्याप्त छे, तमेज जगतमां ध्यावा, योग्य छो, ज्यारे तमे अस्त पामो छो त्यारे जळ रुधिर कहेवाय छे; तमारा किरणो वह स्पृष्ट थवाथीज जल पवित्र थाय छे." आवा प्रमाण वाक्योथी रात्रे अस जलने, त्याग करनारा अमेज तत्वथी तो सूर्यने मानीए छीए. वळी कहुं छे के,—

पयोद पटलस्थेन। नाश्रति रवीमंडले॥

अस्तं गते तु भुंजानो । अहोभानोः सुसेवकाः ॥ १ ॥

"ज्यारे मेघना वादलामां सूर्य ढंकाइ गयो होय त्यारे सूर्यभक्तो भोजन करता ' नथी अने सूर्य अस्त पामे छे त्यारे भोजन करे छे तो ते केवा सूर्यभक्त कहेवाय !"

राजाए फरीवार पुछयुं के, केटलाएक कहे छे के, "जैनो विष्णुने मानता नथी तथी तेनी मुक्ति थती नथी, तेनुं शी रीते?" हेमचंद्राचार्य वोल्या के,—"हे राजन, ते सत्य छे परंतु खरेखरा वैष्णव तो जैनमुनिओं ज छे. गीतामां कहुं छे के,—

पृथिव्यामप्यहं पार्थ । वायवग्री जलेप्यहं ॥ वनस्पति गतश्चाहं । सर्वभूतगतोप्यहं ॥ १ ॥ यो मां सर्वगतं ज्ञात्वा । न च हिंसेत्कदाचन ॥ तस्याहं न प्रणस्यामि । यस्य मां न प्रणस्यति ॥ २ ॥

"हे अर्जुन, हुं पृथ्वीमां, वायुमां, अग्निमां; जलमां, वनस्पति अने सर्व भूतोमां रहेलो छुं. तेथी जे मने सर्वव्यापक जाणी हिंसा करशे नहीं तेनो विनाश हुं पण करीश नहीं. अर्थात् जे मने इणशे नहीं तेने हुं पण हणीश नहीं." वळी विष्णुपुराण-मां पारासर ऋषिए कहुं छे के,—

परस्ति परद्रव्येषु । जीवहिंसासु यो मितिः ॥ न करोति पुमान् भूप। तोष्यते तेन केशवः ॥ १ ॥ यस्य रागादि दोषेण। न दुष्टं नृप मानसं ॥ विशुद्धचेतसो विष्णु। स्तोष्यते तेन सर्वथा॥ २॥

"हे राजन, जे पुरुष परस्ती, परधन अने जीवहिसामां बुद्धि करशे नहीं, तेनी उपर विष्णु भगवान संतुष्ट थशे. हे राजा जेनुं मन रागादि दोषथी दृषित थयुं नथी तेवा शुद्ध मनवाळा पुरुष उपर विष्णु संतुष्ट थाय छे." वळी तेज पुराणमां यमराज अने विष्णुना दृतोना संवाद प्रसंगे कह्युं छे के,—"जे पोताना वर्णाश्रम धर्मथी चिलत थतो नथी, शत्रु अने मित्रमां समान दृष्टि राखे छे, जे कोइने मारतो नथी, तेमज कोइनुं हरी छेतो नथी, तेवा स्थिर मनवाळा पुरुषने विष्णुभक्त जाणवो. जेनी

षुद्धि निर्मळ छे, जे मत्सर रहित, प्रशांत, पवित्र आचरणवाळो अने सर्व प्राणीमा-त्रनो मित्र छे, तेमज जेनां वचन प्रिय अने हितकारी छे, तेमज जे मान माया रहित छे तेवा पुरुषना हृदयमां वासुदेव वसे छे."

आ प्रमाण विचारतां तत्ववृत्तिवडे सर्व जीवना रक्षको जैन ज छ, ब्राह्मणो नथी, केमके तेओ तो तेथी विपरीत चालनारा छे. वळी परमार्थरुप नित्य चिद्रूपपणे तथा ज्ञानात्मपणे जे व्यापे ते विष्णु कहेवाय. आवी व्युत्पत्तिथी जिनज विष्णु छे, तेथी तेना भक्तोने मुक्ति प्राप्त थाय प्वो निश्चय छे.

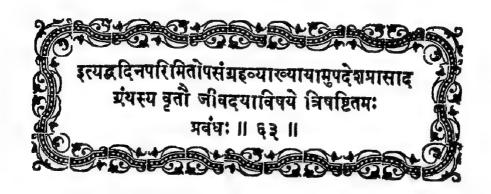
आ प्रमाणे अनेक प्रकारना धर्मोपदेशथी राजाए धर्मनो मर्म जाणीने अहिंसा-दिक बार वत ग्रहण कर्या. पछी तेणे चारे वर्णोमां " पोताने तथा बीजाने माटे जे कोइ जीवींइसा करशे ते राजद्रोही गणाशे." एवी पार्टण शेहेरमां उद्घोषणा क-रावी; एटढुंज नही पण मच्छीमार तथा कसाइ विगेरेनो पण निष्पाप निर्वाह चाले , तेवी गोठवण करी सर्वने दयामय करी दीधा. ते पछी काशी देशमां घणा जीवनी हिंसा थती सांभळीने ते निवारवाने माटे एक चित्रपट तैयार कर्यु. तेमां हिंसा अने अहिंसाना फलरुप स्वर्ग नरकना चित्रो आलेख्या. तेनी वचमां श्रीगुरु ( हेमचंद्र सूरि) नी मूर्ति करावी अने तेमनी आगळ पोतानी नम्न मूर्ति चितरावी. ते चित्र साये ने कोटी सुवर्ण तथा मे इजार जातिनंत अश्व विगेरेनी मोटी भेट आपी पो-ताना मंत्रीने त्यां मोकल्यो. वाणारसीनो राजा ज्यन्दंद्र सातसो योजन भूमि चपर राज्य करतो इतो. तेनी पासे चार इजार हाथी, साट लाख अभ अने त्रीश लाख पेदलनी सेना इती. ते गंगा यमुनाना तीर उलंघी बीजे जइ शकतो नहीं तेथी ते पोताने "पंगुराज" कहेवरावतो इतो. कुमारपाळनो मंत्री चित्रपट विगेरे छइने त्यां गयो. केटलेक दिवसे राजानुं मुख जोवामां आव्युं एटले तेणे चित्रपट वत.च्यो, अने तेनुं यथार्थ स्वरुप जणावतां कहुं के,-"आ मध्ये रहेली मूर्ति अमारा राजगुरुनी छ,ते गुरुए पुण्य पापनुं फल आ चित्रमां वताव्या अनुसार दर्शाव्युं तेथी आ अमारा राजाए जीव दया धर्म स्वीकार्यो छे, अने तेमणे पोताना राज्यमां सर्वत्र अमारी घो पणा करावी छे. वळी अमारा राजानी कुलदेवी प्रतिवर्ष चोविस पाडानुं बलिदान लेती इती तेने पण गुरुनी सहायथी पोताना अहार देशमां जीव हिंसा न थवा देवा माटे तलारस बनावी छे. इमणां अमारा राजानी वैरीणी थवाथी हिंसाने कोई ठेकाणे स्थान मल्युं नहीं, ते तथी आ काशी देशमां आवीने व्यापी रही जणाय छे. तेने निवा-रवाने माटे आ भेटणुं लड्ने मने आहि मोकल्यो छे." आ प्रमाणेना मंत्रीनां वचनो सांभळी पंगुराज संतुष्ट थयो अने बोल्यो के, "तमारो गुर्जर देश विवेकमां वृहस्पति जेवो कहेवाय छे ते घटित छे, कारण के जेमां आवा दयाळु राजा प्रदीप्तमान छे."

ते राजा पोते प्रेरणा करीने मारी पासे दया करावे छे ते छतां जो हुं ते न करुं तो पछी मारी बुद्धि केवी कहेवाय!" आ प्रमाणे कही पोताना देशमांथी एकटी करा-वीने एक हजार लाख माच्छीनी जाळ अने हजारो वीजा हिंसाना साधनो सोलंकी राजाना मंत्रीनी समक्ष बाळी नखाव्या, पोताना बधा देशमां अमारी आघोषणा करावी अने ते मंत्रीने बमणी भेट आपीने पाटण तरफ विदाय कयों.

मंत्रीए पण पाटण आवी चौलुक्यवंशी राजाने सर्व वृत्तांत निवेदन कर्यु.

जेथी ते संतुष्ट थयो.

कुमारपाळे पोताना अदार लाख अश्वोने माटे पलाणदीठ पुंजणी तथा गरणी-भो करावी. आ प्रमाणे बीजा वृत्तांतो पण तेना चरित्रमांथी जाणी लेवा.



## व्याख्यान ६४ मुं. इवे हिंसाना अभावथी विरित थाय छे ते कहे छे.

चतुर्घा द्रव्यभावाभ्यां हिंसा त्याज्या हितेच्छुभिः। ततस्तेषां भवेद्देशविरतिः प्राणिसौख्यदा॥ १॥

व्याख्या.

"आत्महितेच्छु प्राणीओए चार प्रकारे द्रव्यभावथी हिंसानी त्याग करवी। तेथी तेमने प्राणीओने सुख आपनारी देशविरति प्राप्त थाथ छे." आहि विवेचन करे छे के, द्रव्यथी अने भावथी चार प्रकारे हिसा थाय छे तेमां इर्यासमीतिवाळा मुनिने

१ हिंसाना चार प्रकार-१ द्रव्यथी हिंसा, भावथी नहीं. २ भावथी हिंसा, द्रव्यथी नहीं. ३ द्रव्यथी पण हिंसा, भावथी पण हिंसा. ४ द्रव्यथी पण नहीं, भावथी पण नहीं.

द्रव्यथी हिंसा थाय छ, भावथी यती नथी, ते पहेलो मेकार. अने अंगारमदेन नामना आचार्ये महावीर ना कीडा चंपाय छे एवी वृद्धिथी कोयलानुं मर्दन कर्यु ते भावथी हिंसा छे, द्रव्यथी नहीं तेमज मंद प्रकाश छंत सपेनी वृद्धिथी रज्जुने हणवुं ते पण द्रव्यथी नहीं पण भावथी हिसा छे ते वीजो प्रकार. जे मन वचन अने कायाए शुद्ध एवा मुनि छे तेने द्रव्यथी पण हिंसा नहीं अने भावथी पण हिंसा नहीं. ते त्रीजो प्रकार. अने हुं मारुं एवी वृद्धिए पृगनी हिंसा करनार शीकारीने द्रव्यथी अने भावथी वंने प्रकार हिसा थाय छे. ते चोथो प्रकार.

हिंसा शब्दनी व्याख्या विषे तत्वार्थ भाष्यमां श्री उमास्वाती वाचक रुखे छे के, "प्रमादथी प्राणनो त्याग कराववो ते हिंसा." वळी ते विषे कहुं छे के, —

पंचिद्रियाणि त्रिविधं बलं च । उच्छवास निःश्वास मथान्यदायुः॥ प्राणाःदशैते भगवद्भिरुक्ता । स्तेषां वियोगीकरणं तु हिंसा ॥१॥

पांच इंद्रियो, मन वचन काया ए त्रण प्रकारनुं वळ, श्वासोच्छ्वास अने आयुष्य ए दश प्राण कहेवाय छे. ते दश प्राणनो वियोग कराववो ते हिंसा कहे- वाय छे. ते हिसानो त्याग करवाथी अने वीजो कपाय जे अप्रत्याख्यानी तेनी चोकडी कोघ, मान, माया, छोभ, दूर थवाथी पांचमे गुणठाणे रहेल श्रावक देश- विरति कहेवाय छे. आत्महितेच्छ पुरुषोए ते अवश्य करवा योग्य छे.

अहं कोई शंका करे के, गृहस्थाने त्रसजीवनी हिंसा निपिद्ध छे, स्थावरनी हिंसा निषिद्ध नथी, तो तेओए शुं तेनी हिसा यथेच्छ करवी? तेना उत्तरमां कहे छे के, "मोक्षनी इच्छावाळा दयाळु उपासकोए स्थावर जीवोनी हिंसा पण निरर्थक करवी नही." एकळा त्रसजीवनी हिंसा निषिद्ध करवाथी संपूर्णपणे धर्म प्राप्त थाय एम नथी. पण शरीर तथा कुटुंवादिकना मयोजने स्थावर हिंसानी गृहस्थने जरुर पडे छे. पण तेवा प्रयोजन विना स्थावरनी हिंसा करनारानुं वत मिळन थाय छे. एथी श्रावकोए अनिषिद्ध एवी स्थावर हिंसामां पण यतना करवी जोइए. जेम के पाणीनो संखारो सारी रीते जाळवीने तेमां रहेळा जीवो न हणाय तेम योग्य स्थाने (जळाश्यमां) नाखवो अने इंघणा पण थोडा अने सम्यक् प्रकारे शोधीने उपयोगमां छेवा. नहीं तो अनुकंपा न रहेवाथी अतीचार छागे. ते विषे कह्यं छे के, "त्रस जीवना रक्षणने माटे शुद्ध जळ ग्रहण करवुं, अने इंघण तथा धान्यने शोधीने उपयोगमां छेवुं."

वळी पृथ्वी विगेरेमां जीवपणुं आगमने विषे कहुं छे ते आ प्रमाणे:--

अहामलग पमाणे, पढिवकाये इवंति जे जींवा ॥ ते पारेवय मित्ता, जंबुदीवे न मायंति ॥ १ ॥ एगंमि उदगिबंदुमि, जे जीवा जिणवरेहिं पन्नत्ता ॥ ते जइ सरिसविमत्ता, जंबुदीवे न मायंति ॥ २ ॥

भिक्षा आमळा प्रमाण पृथ्वीकायने विषे जेटला जीवो छे तेनुं दरेकनुं शरीर जो पारेवा जेवडुं करीए तो तेओ आ जंबुद्वीपमां समाय नहीं." एक जलना विद्वमां श्रीजिनेंद्रोए जेटला जीवो कहेला छे तेनुं दरेकनुं शरीर जो सरसव जेवडुं करीए तो ते आ जंबुद्वीपमां समाय नहीं. ते पृथ्वीकाय विगेरे पांचे प्रकारना जीवोनी जयन्य ने उत्कृष्ट वंने प्रकारे अवगाहना एक अंगुलना असंख्यातमा भाग जेवडी जाणवी. अने तेवा अनंत जीवोना एकटापणाथी आश्रित एवं एक शरीर ते निगोदं नुं एक सूक्ष्म शरीर थाय. तेवा असंख्य शरीर एकत्र करीए त्यारे एक सूक्ष्म चायुकायनुं शरीर थाय; तेथी असंख्यगुणुं एक सूक्ष्म तेडकायनुं शरीर याय; तेवा असंख्यगुणुं एक सूक्ष्म पृथ्वीश्वरीर थाय; तेथी असंख्यगुणुं एक वादर वायुकायनुं शरीर थाय; तेथी असंख्यगुणुं एक वादर पृथ्वीकाय शरीर अने तेथी असंख्यगुणुं एक वादर निगोदनुं शरीर थाय. अहि वादर पृथ्वीकायना शरीरनी सूक्ष्मता वतावे छे.—

जेम कोइ युवान पुरुष एरण उपर हीरो मुकी ते पर प्रयत्नथी घणनो द्रा करे तो ते हीरानो भंग थतो नथी, पण ते उलटो एरणमां पेशी जाय छे. तेवा ही-राने चल्रवर्तीनी स्त्री (रतन) पोताने हाथे मदन करी तेनुं चूर्ण करीने स्वस्तिक पूरे छे. ते स्त्रीरत्न पण पृथ्वीकायना पींडने एक निसातरा पर मुकी मर्दन करे त्यांटे तेमांना कोइ जीवने पीडा थाय, कोइने बीलकुल पीडा न थाय, कोइनुं मरण थाय अने कोइने अल्प पण दुःख न थाय. एटली वधी पृथ्वीकाय जीवोनी सूक्ष्मता छे.

वळी जेम कोइ मोटा नगरमां कोइना घरमांथी चोरे द्रव्य छुटयुं तो तेनी बार्चा तेना पाडोशी तो जाणे छे पण कोइ तो मूळथी पण जाणता नथी. तेवी रीते खबण विगेरे पृथ्वीकायने माटे जाणी छेवुं.

तेज ममाणे स्थावर एवा वनस्पति कायमां पण सिद्धांतने अनुसारे जीवत्व जाणवुं. तेओ वधे छे, पत्र आवे छे, पुष्पित थाय छे, फल आपे छे, पोता पोताने

१ सूक्ष्म वनस्पतिकाय ते सूक्ष्म निगोद तेनुं. २ साधारण वनस्पति ते बादर निगोद. ते एक शरीरमां अनंता जीवो होय छे.

पत्र, पुष्प, फळ थाववानो काळ जाणे छे, इंद्रियोना अर्थने ग्रहण करे छे, गितादिक्तनी असर थाय छे, वकुळादिना वृक्षोमां तेवुं देखाय छे. वळी तेने जन्म, वृद्धि अने जरा प्राप्त थाय छे, तेथी वनस्पतिने जीवपणुं केम न होय? होयज. ते विषे कहुं छे के, 'वनस्पति' ए जीव छे, कारण के तेमां मनुष्यनी जेम जन्म, जरा अने वृद्धि विगेरे गुणो छे. जळ पण सजीव छे ते भूमिमांथी देडकानी जेम स्वाभाविक रिते प्रगटे छे. अग्रि पण सजीव छे, कारण के वालकनी जेम आहारथी तेनी वृद्धि जोवामां आवे छे. पवन पण सजीव छे, ते गायनी जेम वीजानी परणाथी आडो अथवा नियतपणे गमन करे छे. तेमज वृक्ष पण सजीव छे, जो तेनी सर्व त्वचा छखेडी नाखे तो गर्भनी जेम ते विनाश पामे छे.

आ प्रमाणे आगम वाक्यथी तथा युक्तिथी ते स्थावरनुं जीवपणुं जाणीने तेमज तथाप्रकारे दयारुप धर्मने समजीने स्थावर जीवनी पण निरर्थक हिंसा करवी नहीं-ए तात्पर्यार्थ छे.

> हवे प्रथम वतनी स्तुति करे छे. सर्ववतेष्विदं सुख्यं सर्वज्ञैः परिभाषितम् । पालनीयं प्रयत्नेन सर्वपापापहं नरैः ॥ १ ॥ व्याख्या.

" सर्व वतोमां-सर्वेद्ध प्रमुए ए व्रतने मुख्यव्रत कहे छै. तेथी सर्व पापने नाश्च करनारुं ते व्रत मनुष्योए यत्नवडे पालवुं. आ विषेश्री जिनदास श्रावकनो प्रबंध छै. ते प्राकृत मुनिपति चरित्रमांथी आहें लखीए छीए:—

#### श्री जिनदास श्रावकनी कथा.

चंपा नगरीमां जिनदास नामे श्रावक रहेतो हतो. गुरुमुखथी धर्म देशना सांभळीने तेणे समिकतमूल वार वत ग्रहण कर्यी. एक वखते तेणे दयावडे एक वळ-दने निलीछन (खासी करवा) थी मुकान्यो. कह्युं छे के,

दया विना देवग्ररु क्रमार्चा । स्तपांसी सर्वेदिय यंत्रणानी ॥ दानादि शास्त्राध्यनानि सर्वे । सैन्यं गतस्वामी यथा वृथेव ॥ १॥

"देव गुरुना चरणनी पूजा, तप, सर्व इंद्रियोनुं टमन, टान अने शास्त्राध्ययन ते सर्व दया विना, सैन्य वगरना राजानी जेम वृथा छे." वळी "हाथीना भवमां सळलुं ऊगार्याथी ते मेघ कुमार थयो हतो, मेतार्य मुान क्रौंचपक्षीने ऊगार्याथी मोक्षे गया हता, कपोतने वचाववाथी श्री शांतिनाथ तीर्थकर थया हता अने श्री मुनिस्त्रत स्वामी अश्वने उगारवा साठ योजन गया हता." चाणा क्य नितिमां पण कहां छे के,

# त्यजेद्धर्भ दयाहीनं कियाहीनं गुरुस्त्यजेत् । त्यजेत् कोधमुखी भार्या निःस्नेहा बांधवास्त्यजेत् ॥ ' " दया वगरना धर्मने छोडी देवो, क्रिया वगरना ग्रुक्ते छोडी देवा, क्रोध-

मुखी स्त्रीने छोडी देवी अने स्नेह वगरना बांघवोने छोडी देवा. "

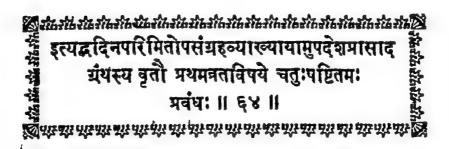
इवे ते वळद इंमेशा श्रेष्टीना मुखथी प्रतिक्रमण शास्त्रादि सांभळीने देशविरति-पणुं पाम्यो तेथी अष्टमी विगेरे पर्वतिथीए ते माशुक तृण जळ शिवाय कांइ स्नातो पीतो नहीं. अने दररोज जिनदासशेढ जे पोताना गुरु इता तेना दर्शन कर्या विना कांइ खाती नहीं.

एक वलते अष्टमीने दिवसे श्रेष्टी शून्य गृहमां रात्रे पोसह लइ कायोत्सर्गे रह्या इता. ते दिवसे तेनी कुलटा स्त्रीए कोइ जारनी साथे ते शून्य गृहमांज रात्रे मल-बानो संकेत कयों इतो. तेथी रात्रे पाया नीचे लोडाना चार खीलावाळा पर्लग सहित जारने लड़ने ते श्री ज्यां शेढ कायोत्सर्गे रह्या इता त्यां आवी. अंधकारमां शेढने त्यां रहेला नहीं जाणती ते कुलटाए ते चार खीलावाळो पलंग तेनी पासेज मुक्यो: दैवयोगे पलंगनो एक पायो ग्रेटना पग उपर आव्या. पछी पलंग स्थिर करवाने माटे. मुद्गरना घा करी पेला चारे खीला जमीनमां नाख्या. तेमांना एक खीलाथी श्रेष्टीनो पग बींघाइ गयो, अने तेनी महा व्यथा थवा लागी. पछी ज्यारे ते जार दंपतीए ते पलंग पर रहीने मैथुन करवा मांडयुं ते वखते विशेष भार पडतां वधारे पीडा उत्पन्नथवाथी ते श्रेटी क्रोध नहीं करतां शेरीर उपर विचार करी मनमां चितववा लाग्या के- "हे जीव, तने स्ववशपणुं घणुं दुर्रुभ छे, ज्यारे तुं घणुं सहन करीश त्यारे तने स्ववश्रपणुं प्राप्त थक्ते. वाकी जे परवशपणुं छे तेमां तारे कांइ पण गुण मानवी नहीं. अयीत् तुं परवशपणे गमे तेटला कष्ट सहन करे तेमां तने कांइ गुण नथी, पण स्ववशपणे सइन करीश तो गुण प्राप्त थशे. तेवी वखत अत्यारे स्वयमेव प्राप्त थयो छे. बळी तुं मृत्युथी ज्ञा माटे वीने छे? ते कांइ भय पामेलाने छोडतुं नयी, पण जे जन्म्युं न होय तेने यहण करी शकतुं नथी. तेथी जन्म छेवो न पडे तेवो यत्न कर्थ. बळी हे प्राणी! सज्जन पुरुषो दोवजालने छे.डी दहने पारका गुणनेज मनमां धारण करे छे. जेम मेघ समुद्रना क्षारपणारूप दोवने छोडी दह मात्र जलनेज ग्रहण करे छे. " एवी रीते श्रेष्टीए पोताना दोपनो विचार कर्यो पण तेना उपर कोप कर्यों नहीं. छेउटे तेज रात्रीए शुभ ध्यानवडे मृत्यु पामी सौधर्म देवलोंक देवता थया.

प्रातःकाळे पोताना स्वामीनुं ते प्रकारे मरण जाणी"अही! आ अकार्य थयुं, इवे हुं कुं करीश ? " एम तेनी स्त्री चिंतामां पडी. एवामां पेलो वळद प्रातःकाळ थवाथी आवश्यक सांभळवा, पचलाण लेवा, तेमज श्रेष्टीना दर्शन करवा त्यां आव्यो. एटल्डे

पेली कुटिल स्त्री श्रेष्टीनुं रुघिर ते बळदना शाँगडा उपर चोपडी वुंवारव करती सती हृदय ताडन करवा लागी. अने कहेवा लागी के, आ बळदे मारा पितने मारी नार्या. ते सांभळी घणा लोको बळदनी निदा करवा लाग्या. कारण के, "जळमां मांछलाना पगला जणाय नहीं, आकाशमां पित्रीना पगला जणाय नहीं, अने स्त्रीना हृद्यों मार्ग जणाय नहीं. ते त्रणे अमार्गमां मार्ग छे." ते वखते लोकोए करेली पोतानी निदा सांभळीने ते बळद मस्तकनी संशायी 'में नथी मार्यों 'एम जणावा लाग्यों। पाली लोको ते वंनेने राजा पासे लई गया. मंत्रीए न्याय कर्यों के, आ वंनेमां जे सत्य होय ते जिव्हावडे तपावेला लोढाना गोळाने चाटे. ते वात वळदे संशायी स्वीका नी, अने तत्काळ तपावीने लावेला लोढाना गोळाने चाटवा लाग्यों. ते जोइ पेली कुलटा स्त्रीनुं मुख स्थाम यह गयुं. तेथी तत्काल राजाए तेने हद पार करी दीधी.

जिनदास श्रेष्टीए तेवुं महा आकरं दुःख पडतां छतां पण पोताना धर्मने मन वचन कायावडे जरा पण छोडयो नहीं. वळी वळदने धर्मवान् कर्यो, अने पोतानी स्त्रीने मोटा अपराधवाळी जोडने मनमां जरा पण तेनी हिंसा चितवी नहीं.



# व्याख्यान ६५ मुं.

हवे कुलकमंथी चाली आवती हिंसाने छोडनारनी स्तुति करे छे.

वंशक्रमागतां हिंसा मिपलजित यो बुधः ॥ स स्याद् हरिवल्स्येव राज्यादिसंपदां पदं ॥ १ ॥ व्याख्याः

" जे प्राप्त पुरुष कुलकमधी चाली आवती हिंसाने पण छोडी दे छे ते हरि षळनी'जेमं राज्यादिकनी संपत्तिनुं स्थान थाय छे." श्री हरिबळमाछीनी कथा.

पवती पुत्री हती. ए गाममां एक हरिवळ नामे मच्छीमार रहेतो हतो. ते एक दिवस पोतानी खीना कलहथी ऊद्रेग पामी जाळ लड़ने नदीने तीरे आव्यो. त्यां एक मुनिने जोई ते तेनी पासे गयो, अने ते मुनि पासेथी तेणे आ ममाणे धर्म देशना सांभळी:— "मेरु पर्वतथी शुं मोदुं छे, समुद्रथी शुं गंभीर छे, आकाशथी विस्तारवाळुं शुं छे, अने आहंसा धर्मथी बीजो धर्म शो छे?" अर्थात् ते चारवानाज मोटा छे. "ज्यांसुधी एटलुं पण जाण्युं नहीं के, बीजाने पीडा करवी नहीं, त्यांसुधी पराळना पुळानी जेवा कोटी अक्षरोना पदने भणी गया तो तथी शुं कोई नहीं." ते विषे महाभार-तमां पण कहां छे के,

योदद्यात्कांचनंमेरु कृत्स्नांचेव वर्सुंघरां। एकस्य जीवितं दद्यात् नच तुल्यं युधिष्ठरः॥

"हे चुषिष्टर, जो कोइ सुवर्णनो मेरु आपे अने समग्र पृथ्वीनुं दान करे तोपण ते एकने जीवितदान आपवा तुल्य थतुं नथी." इत्यादि देशना सांभळी धर्मना
मर्मने जाणीने हरिबळ बोल्यो— हे भगवन् ! रांकने घरे चक्रवर्षीना, भोजननी जेम
मच्छीमारना कुळमां जन्मेला मारा जेवा रांकने हिसा त्याग करवी अशक्य छे. मुनि
बोल्या के—जो तुं अधिक त्याग करी शके नहीं तो 'जे मथम जालमां मत्स आवे तेने
छोडी देनो ' एवो अल्प नियम ग्रहण कर्य. हरिबळे ए नियम ग्रहण कर्यो. पछी
नदीमां जाळ नाखी एटले तेमां एक मोटो मत्स्य आव्यो. फरीवार जाळ नाखतां
पण तेनो ते मत्स्य आव्यो. एटले एंघाणी राखवा सारु तेना कंठमां एक कोडी
बांधीने तेने छोडी मुक्यो. पाछो फरीवार एण तेज आव्यो. एवी रीते संध्याकाळ
सुधी अन्यअन्य स्थाने जइने जाळ नाखी तोपण तेज मच्छ आव्यो अने तेने छोडी
मुक्यो. आवी तेनी दृढताथी कोइ देव मसन्न थयो अने संतुष्ट थइने कह्युं के, '' वरदान माग. " हरिबळे कह्युं, '' आपित्तमां तत्काळ मारी रक्षा करजो. " देव तेनो वर
आपीने अंतर्थान थई गयो. पछी मत्स्य मळ्या नहीं तेथी स्त्रीना भयथी घर नहीं जतां
ते कोइ देवालयमां जइने सुइ रह्यो.

आ अरसामां नगरमां एवं बन्युं के, एक दिवस राजकन्या गोखे वेटी हती. ते हरिबळ नामना कोई गृहस्थना पुत्रने जोइने तेनीपर सरागी थइ. तेथी तेणीए कोइ ऊपायथी हरिबळ श्रेष्टीपुत्रने पोतानी तइफ सरागी कर्यों. देवयोगे तेमणे पर-स्पर ज्यां पेलो हरिबळ मच्छीमार सुतो हतो तेज देवालयमां तेज दिवसे आववानो

संकेत कर्यो. राजकुमारी वसंतश्री तो ते रात्रे पोतानुं सर्वस्व छइ अश्व उपर वेसीने ते देवालयने द्वारे आवी. अहीं श्रेष्टीपुत्रे विचार्यु के, आ काम करबुं गुणीजनोने युक्त नथी. ए कार्य करवाथी कुळनी मिलनता थाय. वळी ते राजपुत्री होवाथी बी-जा पण कष्ट माप्त थाय. आवा विचारथी ते रात्रे घरेज रह्यो. कह्युं छे के, " स्त्री जा-निमां दंभ, विणक जातिमां अत्यंत ब्हीकणपणुं, क्षत्रीय जातिमां रोष अने ब्राह्मण जातिमां लोभ ए स्वाभाविक रहेला छे."

आई पेली राजकुमारीए देवद्वारे आवीने इरिवल! एवा नामथी सांकेतिक श्रेष्टी पुत्रने वोलाव्यों ने कहुं के-स्वामी, चालो आपणे देशांतर जइए. जेथी आपणो मनोरथ सफल थाय. मच्छी इरिवळ कोइ साथे संकेत छे एम जाणी हुंकारो दइने तैयार थयो. वन्ने एकज अश्व उपर वेसी आगळ चाल्या. मार्गमां राजपुत्री वारंबार तेने वोलावे पण ते तो मात्र हुंकारोज आपे. छेवटे राजसुताए खेद पामी विचार्य के, आ कोइ वीजो पुरुष छे. तेम करतां ज्यारे रविनो मकाश थयो त्यारे तो तेनुं रूप जोइ तेणे विचार्यु के, मने धिकार छे, पेला हाथीनी जेम मारी वंने इष्ट वस्तु नष्ट थइ. जेमके-" कोइ हाथीने मीष्म ऋतुमां दाह्यी पीडित थतां घणी तृपा लागी. तेथी कोइ सरोवर जोइने ते खतावळो तेनी पासे जवा चाल्यो; जेवो ते कांटानी नजिक आन्यो तेवामां ते कादवमां एवो खुंची गयो के, दुदैंवयोगे ते तीर अने नीर बंने थी श्रष्ट थयो." आवा निर्भागी दुष्टकुळमां जन्मेला मुर्ख, आनिष्ट पतिना नित्य सं-योग करतां तो एकवार मरवुं सार्क छे. आ प्रमाणे खेद करती राजकुमारीने जोइने इरिवळे विचार्यु के, मने धिकार छे, में कपट करीने आ राजपुत्रीने छेतरी छे. ते वखते तेनी चिंता दूर करवा माटे पेला देवे तेनुं कामदेव जेवुं स्वरूप करी दीधुं अने आकाश वाणी करी के, हे राजपुत्री! आवा पुण्यवान पतिने मेळवीने वीजी शेनी इच्छा करे छे? पछी वनने प्रीति थवाथी ते देवे तेमने गांधर्व विवाह वडे परणाव्या.

त्यांथी तेओ विशाळा नगरीमां आव्या. त्यां एक सुंदर गृह भाडे रालीने तेमां रहाा. केटलेक दिवसे हरिवळ केटलीक भेटो आपीने राजानो मानपात्र थयो. एक दिवस मंत्रीए राजानी पासे वसंतश्रीना रूप लावण्यनुं वर्णन कर्युं. ते सांभळी राजा तेनी उपर लुब्ध थयो. तेथी हरिवळने हणवानी इच्छाथी एक वखते तेणे सभा वचे कह्युं के, मारी सभामां हरिवळ जेवो बीजो कोइ साहसीक नथी के जेमारे घेर आववा माटे लंकापति विभीपणने निमंत्रण करी लावे. हरिवळे पोतानो ऊत्कर्ष सांभळी राजाने कह्युं के—स्वामी, जो तेमने निमंत्रण करवुं हशे तो हुं थोडा दिवसमां ए काम करी आवीश. राजाए आझा आपी एटले त्यांथी ऊठीने हरिवळ पोताने घर आव्यो. अने वसंतश्रीने ए वृत्तांत जणावीने कह्युं के, हुं आवुं त्यांसुधी तुं रुडी रीते शिळ

पाळजे हुं करेली प्रतिज्ञानो निर्वोह करवा माटे जाऊं छुं-नीतिमां कहुं छे के, "कदि मस्तक छेदाय के वधवंधन प्राप्त थाय तथापि ऊत्तम पुरुषोए अंगीकार करेलुं पाळवुं. पछी जे भावी होय ते थाय. " आ प्रमाणे कहीने ते घरेथी चाली नीकल्यो. अनुक्रमे समुद्रने तीरे आवीने विचारवा छाग्यों के, अहो, आकार्यनो निर्वाह शी रीते थशे? पछी पूर्वे वरदान आपनारा देवनुं स्मरण करीने तेणे समुद्रमां झंपापात कर्यो. एटले तत्काळ ते देवे तेने उपाडीने लंकाना ऊपवनमां मुक्यो. त्यां एक रमणीय मेहेल जोइने ' आ मुं ' एम आश्चर्य पामी इरिवळ तेमां पेटो. त्यां एक ओरडामां एक यौव-नवती बाळा अचेतन स्थितिमां पडेली जोवामां आवी. ते जोइने इरिवळ विचारमां पड्यो के, आ शुं आश्चर्य ! त्यां नजीकमां एक अमृतपूर्ण तुंबी तेना जोवामां आवी. तेने जळ जाणीन तेणे ते वाळाना सुर्व अंगपर सिचन कर्युं. जेथी तत्काळ ते कन्या ऊंघमांथी जागे तेम बेठी थइ अने इरिबळने जोइ लज्जा धारण करीने ऊभी रही. पछी तेणीए पुछयुं; के हे स्वामी! अहि केम आव्या छो? हरिबळे आववानुं सर्व वृत्तांत जणाव्युं. पछी तेणे ते बाळानुं स्वरुप पुछ्युं; एटले ते बोली-स्वामी, मारो पिता आ रुंकापतिना देवनो पूजारी छे. एक दिवस मारा पिताए कोइ निमित्तिआने पूछ्युं के, मारी पुत्रीने केवो पति मळशे ? तेणे कह्युं के, तेनो पति राजा थशे. ए सांभळीने राज्यना लोभथी ते मारो पिताज मुर्खपणाथी मने परणवाने इच्छवा लाग्यो. "एवा कोभी पुरुषने धिकार छे, के जे ऊन्मार्गमांज गमन करे छे. रात्र्यंध, दिवांध, जात्यंथ, मायांथ, मानांथ, क्रोधांथ, कामांध अने लोभांध, ए ऊत्तरोत्तर अधिक आधिक अंध गणाय छे. " आथी ते हुं स्वच्छंद रीते न वर्त्ती तेटला माटे मंत्रवडे मने मूर्छित करीने बहार जाय छे. अने पाछो आवी आ अमृतवडे मने सजीवन करे छे. एनी दुर्मितियी सर्व स्वजनोए तेने दूर कर्यों छे. तेना आवा कृत्यथी कोइ वार मारुं मृत्यु थन्ने; माटे हे महाभाग! आ लग्न वेळाएज मारुं पाणीयहण करो के जेथी हुं चिर-काल जीवुं. इरिबळे तत्काळ तेम कर्युं, एटले ते बोली-स्वामी, इवे अहिथी आपणे पलायन करवुं योग्य छे. कारण के मारो पिता आवी चडशे तो विघ्न ऊसक थशे. वळी न बनी शके एवं जे विभिषणने आमंत्रण ते करवानी कांइ जरुर नथी. ते छतां तम अहि आव्या छो तेवी तमारा राजाने प्रतीति कराववा माटे हुं विभिषणनुं चंद्रहास साइग कोइ ऊपाये लावी आपीश. पछी तेनी समातिथी ते स्त्रीए विभिषणनुं चंद्रहास सर्ने गुप्त रीते लावी आप्युं. पछी ते स्तीनी बुद्धिथी चमत्कार पामेली इरिबळ पेली अमृत तुंबी, ते स्त्री अने चंद्रहास खर्ड छड़ छंका नगरीनी बहार नीकळ्यो.

अहि इरिबळना गया पछी राजा गुप्त रीते तेने घेर आव्यो. अने वसंतश्री पासे तेना संगमनी पार्थना करी. ते चतुरा द्वेष अने खेद अंतरमां गोपवीने बोली के, है राजा, मारा पतिनी शुद्धि आवता सुधी राइ जुवी. राजाए कपट वृत्तिए विचार्युं के, " इत्रे आ स्त्री मारे वश्यज थवानी छे अने तेनो पति तो मृत्युज पामवानो छे तेथी थोडा दिवस राह जीवी ठींक छे. " आवं विचारी तेर्नु वाक्य स्वीकारीने ते पाछो राजमहेलमां गयो.

अहि हरिवळ देव सानिध्ये समुद्र ऊतरी कुंसुमश्रीने पोताना नगरना ऊद्या-नमां मुकी गुप्त रीते पोताने घेर आव्यो. त्यां वसंतश्री पातैनी विरह व्यथाथी पी-डाती हती. पछी तेने प्रत्यक्ष मळ्यो वंनेए पोतपीताना वृत्तांत जणाव्या. पछी हरि-षळे राजानी इच्छानुं मर्दन करवा माटे राजानी पासे पोताना खबर मोकलाव्या. पछी तेणे पोते जइने राजाने कहुं के, '' हुं विभिषणने नोतरी तेनी पुत्री परणीने आव्यो छुं. ते स्त्री उपवनमां छे अने विभिषण कुशल छे." आवुं कर्ण कटु वचन सांभळी राजा विस्मय पाम्यो, पण लोकापवादना भयथी तेने प्रिया साथे महोत्सवपूर्वक स्वनगरमां प्रवेश कराव्यो. पछी राजाए तेने वृत्तांत पुछयुं, एटले ते बोल्यो <sup>हे</sup> हे राजन्! हुं आईथी चाली अनुक्रमे दुस्तर सागर पासे गयो. त्यारे समुद्र जोइने मने घणा उद्वेग थयो. तेवामां समुद्रमांथी आवता एक राक्षसने में दीठो. तेने जोइ में निर्भयपणे लंकामां जवानो उपाय पुछयो. एटले तेणे कहुं के, जे पुरुष अहीं काष्ट भक्षण (अग्नि प्रवेश ) करे तेनोज त्यां प्रवेश थाय छे. एम सांभळी 'सेवके स्त्रामी कार्य अवश्य करवुंज जोइए' एवं हृदयमां धारी हुं चितामां पेठो; एटले मारा देहनी -भस्म लइ तेणे विभीषण पासे मूकी अने मार्क वृत्तांत जणाव्युं. पछी विभीपणे मारी स त्विक वृत्तिथी संतुष्ट थइ अमृत छांटीने मने सजीवन कर्यों. अने पोतानी पुत्री पर-णावी. पछी में तेमने तमारुं आमंत्रण जणाव्युं. त्यारे ते वोल्या के, " मोटा माणसे पोताथी न्यून होय तेने घेर जवुं ते मान हानि छे, एथी प्रथम तारा राजाए आहें आववुं योग्य छे, पछी हुं तारा कहेवा प्रमाणे करीश. आ वातनी एंधाणी तरीके हूं मारुं चंद्रहास खर् तने आएं छुं. " एम कही मने खर् आप्यं. पछी तेमणे पोतानी शक्तिथी प्रियासहित मने अहि पोहोचाडी दीथो. "

आवा युक्तिवाला तेना वाक्यने सत्य मानी राजा मंत्रीनी साथे विचारमां पड़्यों के, अहो, आ तो जीवतो आव्यो. माटे हवे फरीवार कांइक छळ करीने तेने दु:खमां पाडीए. कहां छ के, " राजा, सप, पिशुन, चोर, धूद्र देवता, शिकारी प्राणी, शत्रु अने डाकण ते दुष्ट छे तोपण छल विना शुं करी शके, ते शिवाय तेमनी आरंभ निष्फळ याय छे."

एक वखते हंरिवळे भविष्यमां थवाना अनर्थनो विचार कर्या वगर मंत्रीओ सहीत राजाने भोजननुं निमंत्रण कर्युं. राजा जमवा आव्यो त्यारे तेनी बंने सीनुं स्रावण्य जोड़ने अत्यंत काम पीडित थड़ गयो. पछी तेणे मंत्रीने पोतानो अभिमाय जणाव्यो. एटले मंत्रीए कहुं के, हे स्वामी! यमराजाने आमंत्रण करवा जवाने मिषे एने अग्निमां नात्वी दइए, तो आपणुं इच्छित पूर्ण थाय. राजाने ते विचार पसंद पड्यो. अन्यदा राजाए हरिवळने बोलावीने कहुं के, हे सात्विक शिरोमणि! तमारा शिवाय बीजो कोण अग्निमार्गे जड़ने यमराजने मारे घेर तेडी लावे? ते सांभळी हरिवळे विचार्यु के, राजाने आवी बुद्धि मंत्रीथी प्राप्त थड़ छे. पछी ते तो राजानी आज्ञा प्रमाण करीने घेर आव्यो अने विचारवा लाग्यो के, " सल पुरुपोने लपकार करवायी जलटो महादोष जप्तक याय छे, शुं अनुकूल वर्तवायी ( मन गमतुं भोजन खावायी ) रोग अतिशय कोप करता नथी ? करेछे." माटे हवे खळने योग्य शिक्षाज करवी.

पछी राजाए एक चिता रचावी. हरिबळ पण तरत पेला देवने संभारीने त्यां आव्यो अने ज्वलायमान अग्निमां प्रवेश कर्यो. तत्काल तेनी काया सुवर्णवत् देदी-प्यमान थइ अने ते पोताने घेर आव्यो पण कोइए तेने जोयो नहीं. ए समये राजा पण निर्भयपण हरिबळने घर आव्यो अने तेनी स्त्रीओनी पासे कामभोगनी याचना करी. त्यारे ते स्त्रीओ वोली के—"हे स्वामी, आपने सेवकनी स्त्रीओ पासे आवुं वाक्य बोलवुं घटित नथी. कारण के आतो पेहरेगीरोएज चोरी करवी, रसकोएज धा इ पाडवी, जळमांथीज लहाय उत्पन्न थवी अने सूर्यथी उलटो अंधकार उत्पन्न थवा जेवुं छे." आवी रीते अनेक युक्तिथी समजाव्यो तथापि तेणे पोतानो आग्रह मुक्यां नहीं, एटले ते वंने स्त्रीओए मळीने राजाने हढ बंधनथी वांधी लीधो अने तेना अवयव जर्जरीत करी दीधा. पछी दया लावीने तेने छोडी मुक्यो एटले पातःकाळे ते स्त्राची पोताना अंतःपुरमां पेसी गयो.

इवे हरिवळे विचार्यु के, कोइ वार आ दुष्ट मंत्री आवा दंभ करीने मने मारी नाखशे माटे हुंज दंभ करीने तेने यमराजनो अतिथी करूं. कह्युं छे के:—

वर्जात ते मृद्धियः पराभवं, भवंति मायावीषु ये न मायिनः। प्रविश्य ही व्रंति शठास्तथाविधान, संवृतांगान्निशिता इवेषवः ॥१॥

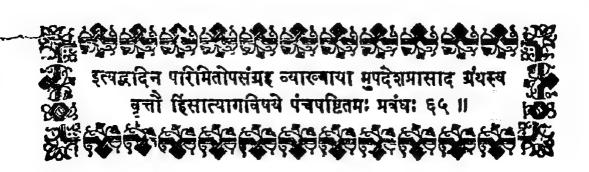
"जे मायावीनी साथे मायावी यतां नथी ते मूढ लोको पराभवने पामे छे. कारण, तेवा शढ लोको कवच वगरना शरीरवाला पुरुपोने जेम तीक्ष्ण बाण पराभव करे छे तेम अंदर पेशिने हेरान करे छे." आ प्रमाणे विचारी हरिवल कोइ पुरुपने यमराजनो छडीदार बनावी तेनी साथे राजसभामां आव्यो. राजा तेने जोइ विस्मय पामी गयो. तेणे हरिबळने यमराजनुं स्वरूप पुछ्युं एटले हरिबळे स्वबुद्धि प्रमाणे तेनुं वर्णन करी वताव्युं. पछी जणाव्युं के, "हे स्वामी, हुं यमराजनुं वर्णन

वचनथी शुं करी शकुं. कारण के मोटा मोटा योगिद्रो पण तेना अयथी योगाम्यास करे छे. वधारे शुं कहुं! त्रणे मुवन तेनी सेवा करे छे. हे राजेंद्र! में ज्यारे सारी युक्तिथी तेने आमंत्रण कर्युं त्यारे तेमणे पोतानो छढीदार मारी साथे आपीने कहुं के, मारी समृद्धि जोवाने माटे तारा राजाना मंत्रीने आनी साथे मोकल पछी हुं तेनी साथे आवीश." हरिवळे आ प्रमाणे कहुं एटले पेला कृत्रीम छढीदारे पण कहुं के, हे मंत्री! सत्वर त्यां पधारो. ते वखते राजा पण ज्यलता आग्रमां प्रवेश करवाने उत्सुक यह गयो. ते जोइ स्वामीद्रोहना भयथी हरिवळे कहुं के, महाराज ! प्रथम तमारा आववाना खवर आपवा मंत्रीने मोकलो पछी आप पधारजो. एटले मंत्री राजानी वधान्मणी देवाने माटे उत्सुक थह सत्वर अग्निमां पत्थो अने भस्मावशेष थह गयो. पछी हरिवले राजाने कहुं के, हे स्वामी, परस्रीना अंगनो संग करवानी बुद्धि छोडी आप चिरकाल दीर्घायु याओ. स्वामीद्रोहनुं महापाप जाणी में आपने मृत्युधी वाज्या छे. हवे फरीवार पापबुद्धि आपनारा ते मंत्रीना दर्शन यशे नहीं. आ प्रमाणे सांभळी खेद करतो सतो राजा पोताना महेलमां गयो. पण राजा तेनं चातुर्य जोइने यणो संतुष्ट थयो तेथी तेनी साथे पोतानी कन्यानो विवाह कर्यो.

अहिं कांचनपुरना राजाए मुसाफरोना मुख्यी पोतानी पुत्रीना तया इरिब. ळना खबर सांभळ्या. तेथी तत्काल तेणे पोताना जामाताने वोलावी पोतानुं राज्य अपण कर्युं. पछी इरिबळ राजाए पोताना राज्यमां अमारीघोषणा करावी. अन्यदा विद्वार करतां करतां तेना धर्मगुरु मुनि महाराजा त्यां पधार्या. तेमने वंदना करी धर्म देशना सांभळी. पछी पोताना देशमांथी साते व्यसनोने दूर कराव्या.

छेवटे पोतानी राजगादी उपर पोताना पुत्रने वेसाडी त्रण राणीओ साथे तेणे दीक्षा लीधी. अनुक्रमे इरिवळ राजींप मुक्तिने प्राप्त थया.

हे भन्यो, आ प्रमाणे इरिवलनुं चरित्र सांभळी आ लोकमां पण पूर्ण फळने आपनारी जीव दयाने विषे महान प्रयत्न करो. आ हरिवळनुं वधारे विस्तारवाळुं चरित्र श्री प्रतिक्रमण सूत्रनी वृहद्वृत्तिथी जाणी लेतुं.



### व्याख्यान ६६ मुं.

हवे जे प्राणी निरंतर छकायनी हिंसा करवामां तत्पर रहे छे तेत्रं फळ बतावे छे.

#### निरपराध जंतूनां कुर्वति वधमन्वहं । असंयता गतघृणा अमंति भवकंदरे ॥ व्याख्याः

" जे प्राणी इंमेशा निर्द्यपणे अने अविरतपणे निरपराधी प्राणीओनी हिंसा करें छे ते आ संसारने विषे परिश्रमण करें छे. " श्री पुष्पमाळानी टिकामां कहुं छे के, " जे जीव प्राणीने वध वंधन करवामां तेमज मारवामां निरंतर तत्पर होय छे अने जीवोने अति दुःल आपनार होय छे ते सृगावतीना पुत्रनी जेम सघळा दुःलना स्थानरुप थाय छे. " आ ढेकाणे वध शब्दे प्राणीने ताडनादि करवावडे पीडा उपजाववानुं समजवुं. वंध शब्दे दोरडा विगेरे सख्त वंधन करवानुं समजवुं अने मारण शब्दवडे प्राणथी वियोग कराववानुं समजवुं. ते वध, वंध तथा मारणमां रक्त अने जुढ़ं आळ देवा विगेरेथी प्राणीने घणुं दुःल ऊत्पन्न करनार प्राणी मृगापुत्रनी जेम समस्त प्रकारना दुःलनुं भाजन थाय छे. ते मृगापुत्रनुं दृष्टांत श्री विपाक सुत्रने अनुसारे अहीं छलीए छीए.

#### श्री मृगापुत्रनी कथा.

श्री विर प्रमु पृथ्वीने पवित्र करता करता अन्यदा मृग नामना गामना कट्यान समोसर्या. पछी प्रथम गणधर श्री इंद्रभूति प्रभूनी आज्ञा छइने मृग गाममां गोचरीए गया. त्यांथी एवणीय असादि छइ पाछा बळतां मार्गमां एक बृद्ध अने अंथ कोढीआने जोयो. तेना मुख उपर माखीओ बणवणी रही इती अने ते पगले पगले स्विलत थतो इतो. एवा दु:खना घररूप तेने जोइ गौतमस्वामीए प्रभुनी पासे आवीने पुछ्युं के "हे भगवन्! आजे में एक एवो महा दु:खी पुरुषने। जोयो छे के तेना जेवो विश्वमां बीजो कोइ ह्वो ?

प्रभु बोल्या— '' हे गौतम ! एने कांइ मोटुं दु:ख नथीं, पण आज गाममां विजया राजानी पत्नी मृगावाति नामे राणी छे तेनो प्रथम पुत्र लोडिआना जेवी आकृतिवाळो छे, तेना दु:खनी आगळ आनुं दु:ख कोण मात्र छे. ए मृगापुत्र मुख, नेत्र अनेदना-सिकादिके रहित छे, तेना देइमांथी दुर्गधी रुधिर अने परुं अन्या करे छे, ते:जन्म सीधा पश्ची सदा भूमिगृहमांज रहे छे." आ प्रमाणे सांभळी,गौतमस्वामी आह- श्र्म पाम्या अने प्रमुनी आहा छइ तेने जोवानी इच्छाए राजाने घर गया. राज-पत्नी मृगावती गणधर महाराजने अचानक आवेला जोइ वोली— हे भगवन्, तमाई दुर्लभ आगमन अकस्मात् केम ययुं छे १ गणधर भगवंत वोल्या— ' मृगावती ! प्र-भुना वचनथी तारा पुत्रने जोवा माटे आव्यो छुं. ' राणीए तरतज पोताना मुंटर आछितिवाळा पुत्रो वताच्या, एटले गणधर वोल्या—हे राजपत्नी, आ शिवाय तारा जे एत्रने भूमिगृहमां राख्यो छे ते वताव. मृगावती वोलिके—भगवन्, मुखे वस्त्र वांश्यो अने क्षणवार राह जुवो के लेथी हुं भूमिगृह उघडावुं, के तेमांथी केटलीक दुर्गध नीकळी जाय. पछी क्षणवारे मृगावती गोतमस्वामीने भूमिगृहमां लइ गइ. गोतम स्वामीए निजक जइने मृगावतीना पुत्रने जोयो. ते पगना अंगुठा, होठ, नासिका, नेत्र, कान अने हाय वगरनो हतो; जन्मथी नपुंसक, विधर अने मुंगो हतो; दुस्सह वटना भोगवतो हतो; जन्मथी मांडीने श्रित्तिनी अंदरनी आठ नाडीमांथी अने यहारनी आठ नाडीमांथी रुधीर तथा पर अव्या करतुं हतुं. जाणे मूर्तिमान् पाप होय तेता ते लोढकाकृति पुत्रने जोइ गणधर वहार नीकळ्या. अने प्रभुनी पासे आवीने पुछ्युं के, हे स्वामी !आ जीव कया कर्मथी नारकीनी जेवुं दुःख भोगवे छे १ प्रमु वोल्या—

शतद्वार नामना नगरमां धनपति नामना राजाने राष्ट्रकूर्ट नामे एक रोवक इतो. ते पांचसो गामनो अधिपति इतो. तेने साते व्यसन सेववामां घणी आ-सिक्त इती. ते घणा आकरा करोथी लोकोने पीडतो इतो. अने कान नेत्र विगेरेने छेदीने लोकोने हेरान करतो इतो. एक समये तेना शरीरमां सोळ रोग उत्पन्न थया. ते आ प्रमाणे-श्वास, खांसी, ज्वर, दाइ, पेटमां शूळ, भगंदर, इरप, अजीर्ण, नेत्र-अम, मुखे सोजा, अन्न पर द्वेप, नेत्र पीडा, खुजली, कर्णव्याधि, जलोदर अने कोड, कहुं छे के.—

दुष्टानां दुर्जनानां च, पापीनां कृर कर्मणां। अनाचार प्रवृत्तानां, पापं फलति तद् भवे॥ १॥

" दुष्ट, दुर्जन, पापी, क्रूरकर्म करनार अने अनाचारमां प्रवर्तनारने तेज भवमां पाप फळे छे." ते राठोडे क्रोध अने लोभने वश्च थइ अनेक पापो कर्या. तेणे पोतानो बधो काळ पाप करवामांज गुमान्यो. एवी रीते अढीशें वर्षनुं आयुष्य भोगवी मरण पामीने पहेली नरके गयो. त्यांथी निकळीने ऑह मृगावतीना पुत्रपणे उत्पक्त थयो छे. तेने मुख न होवाथी तेनी माता राव करीने तेना शारीर उपर रेडे छे. ते आहार रोगना छीद्र-द्वारा अंदर पेसी परु अने रुधिरपणाने पामी पाछो बाहेर नीकळे छे. आवा महा दु:खवडे वत्रीश वर्षनुं आयुष्य पूरुं करी मरण पामीने आज भरतक्षेत्रमां वैता-

२ राठोड कहेवाय छे ते.

द्ध्य समीपे सिंह थको. त्यांथी मरण पार्माने फरीवार पेहेली नरके जको. त्यांथी सर-पोळीया (नोळीया) पणाने पामी बीजी नरके जको; त्यांथी पक्षी थइ त्रीजी नरके जके. एम एक एक भवने आंतरे सातमी नरक सुधी जको, पछी मच्छपणुं पामको. पछी स्थलचर जीवोमां आवको. पछी खेचर—पक्षी जातिमां उपजको, पछी चतुर्तिद्विय, ते-इंद्रिय अने बेइंद्रियमां आवको. पछी पृथिवी विगेरे पांचे थावरमां भमको. एवी रिते चोराशी लाख योनिमां वारंवार भमी अकामनिजिराए लघु कमी थवाथी प्रतिष्ठान-पुरे एक श्रेष्ठीने घेर पुत्र पणे उपजको. त्यां साधुना संगथी धर्म पामी देवता थको. त्यांथी चवी अनुक्रमे सिद्धिपदने पामको.

आ प्रमाणे श्री वीर प्रमुए गौतमस्वामीने छोढकनो संबंध कह्यो. आ कया सांभळी आस्तिक पुरुषोए चराचर जीवोनी हिंसा छोडी देवी अने इंमेशा पोतानुं नित्त अहिंसक करतुं.

इत्यन्दित्परिमितोपदेशमासाद्रमंथस्य वृत्तौ अहिसाविषये पद् पष्टितमः प्रबंधः ॥ ६६ ॥

A Constant of the second constant of the seco

### व्याख्यान ६७ मुं.

जे पुरुष हिंसानो मनोरथ करे ते पोतेज दुःखी थाय छे, ते कहे छे.

यदि संकल्पतो हिंसा मन्यान्तपरि चिंतयेत्। तत्पापेन निजात्मानं, दुःखावनौ च पात्यते॥ १॥ व्याख्याः

" जो कोइ प्राणी संकल्पथी पण बीजानी उपर हिंसानुं चितवन करे, तो ते ते पापथी पोताना आत्मानेज दुःखनी मूमिमां पांडे छे. " आ विषे दासीपुत्रनो प्र-वंध छे. ते नीचे प्रमाणे—

दासीपुत्रनी कथा.

कौंशांबी नामनी नगरीमां महिपाल नामे राजा इतो. ते नगरना जचा-नमां त्रण ज्ञानने धारण करनार ब्रद्त नामे मुनि पथार्थाः तेमणे चतुर्विध संधने आ प्रमाणे धर्मदेशना आपी- " जैनीओ अपराधी अने निरपराधी बंनेनी उपर दया करे छे. जेम चंद्र, राजा अने चांडाळ वंनेना घर उपर सरखी कांति प्रसारे छे तेम "

आ प्रमाणे धर्मदेशना देतां गुरुए अकस्मात् हास्य कर्युं. ते जोइ सम्यजनो विस्मय पामीने बोल्या-भगवान्, प्रवचनमां कहुं छे के हास्य करवाथी सात अथवा आठ प्रकारना कर्मनो बंध थाय छे, तो तमारा जवा मोहने जितनारा पुरुषोने अव सर विना द्वास्य ऊत्पन्न केम थयुं ? मुनि बोल्या-भद्रो, सांभळो, आ लींवडाना वृक्ष चपर समळी नामे पक्षिणी देखाय छे, ते पूर्व भवना वैरथी क्रोब लावी वे पगवहे मने मारी नाखवाने इच्छे छे. ते सांभळी सभ्यजनोए कौतुकथी तेनो पूर्व भव पुछयो-मुनिए ते समळीने प्रतिवोध यवा माटे कहुं के-" आ भरत खंडमां आवेला श्रीपुर नामना नगरमां धन्य नामे श्रेष्टी इतो. तेने सुंद्री नामे स्नी इती. ते व्यभिचारिणी इती एक वखते तेना जारपुरुपे तेने कहुं के, आजयी तारे मारी पासे आववुं नहीं. कारण के हुं तारा स्वामीयी भय पामुं छुं. सुंदरी बोली-प्रियतम, पवुं बोलो नहीं. योडा दिवसमां हुं एवं करीश के आपणे निर्भय यइशुं. अर्थात् मारा पतिने इं मारी नाखीश. एक बखते ते सुंदरीए पतिने मारी नाखवा झेर साथे दुधनो प्यालो 'तैयार कर्यों. पछी पतिने पीरसवा मांटे ते प्यालो लेवाने जेवी ते घरमां गइ तेवामां तेने सर्पे दशी, पटले ते पृथ्वीपर पडीने मृत्यु पामी. धन्यश्रेष्टी तेना पडवानो अवाज सांभळी संभ्रमयी भोजन करतो ऊभो थयो अने 'आने शुं थयुं' १ एम बोलतो तेनीपासे गयो. तत्काळ सुंदरीने मृत्यु पामेळी जोइ तेपरना स्नेइथी तेना दुश्वरित्रने नहीं जाण-नारो ते विलाप करवा लाग्यो सुंदरी मृत्यु पामीने सिंह थइ. धन्यश्रेष्टीए वैराग्य पामीने दीक्षा लीधी.

अन्यदा कोइ वनमां ते धन्य मुनि कायोत्सर्गे रह्या इता. त्यां दैवयोगे पेली सुंदरीनो जीव सिंह आवी चट्यो. तेणे पूर्व भवना वैरयी मुनिने मारी नाल्या. धन्यमुनि मृत्यु पामीने वारमा अच्युत देवलोके देवता थया. अने ते सिंह मरीने चोथी नरके गयो

धन्यमुनिनो जीव बारमा स्वर्गथी चवी चंपा नगरीमां दृत्त नामना श्रेष्टीने घर वरदत्त नामे पुत्र थयो. ते बाल्यवयथीज विवेकी, दातार अने दयाळ थयो. योडा वर्षतमां तेणे समिकत रहा प्राप्त कर्यु. सुंदरीनो जीव चोथी नरकमांथी नीकळी अनेक भवमां भमी वरदत्तने घर कामुका नामे दासीनो पुत्र थयो. ते लोकोमां दासीपुत्र ' एवा नामयी मल्यात थयो. ए दासीपुत्र वरदत्तने घत्रुनी जेम जोवा लाग्यो, तथापि तेने भिति उत्पन्न करवा कांइ कांइ दया पालवा लाग्यो. तेने धर्मिष्ट जाणी संतुष्ट थयेला श्रेष्टीए विचार्यु के, आ मारो धर्मबंधु छे. ते कर्मयोगे निच

कुलमां उत्पन्न थयो छे. पण जैन सिद्धांत प्रमाणे 'परमार्थथी कुलनी प्रधानता जो वाती नथी. ' आवुं विचारी तेणे लोकोनी समक्ष तेने पोताना स्नाता तरीके स्थापन क्यों. त्यारथी लोकोमां पण ते ' श्रेष्टी स्नाता ' एवा नामथी प्रसिद्ध थयो. दा-सीपुत्र उपरथी कपट वृत्तिवंडे भक्ति बतावतो पण अंदरथी गृहनो स्वामी थवा मोटे श्रेष्टीने मारी नाखवा सारु विविध ऊपायो योजतो.

एक वस्ते तेणे शयन समये श्रेष्टीने विषयुक्त नागरंबलनुं पान आप्युं पण वर-दत्ते ते समये घोविहारनुं पचलाण करेला होवाथी ते ओश्रीषे मुकीने सुद्र गयो. प्रातः काले नवकारनुं स्मरण करतो ते देरासरे प्रभुने नमवा गयो. ए समये वरद्त्तनी स्त्रीने ते तांबूलपत्र हाथ आवतां दासीपुत्रने आंगणामां उभेलो जोइ ते बोली के— देवर, आ तांबूल ग्रहण करों, दासीपुत्र तेना रूप तथा कंकणादि अलंकारमां मन लगा-ही तेनी मनोहर वाणीथी मोह पामी प्रसन्न थइ गयो हतो, तेथी ते तांबूल पत्र भ-झण करी गयो. तत्काल विष प्रयोगथी मूनी उपर पडी आर्त्तिध्याने मृत्यु पामी आ समळीरूपे उत्पन्न थयो छे. तेनुं एवं स्वरूप जोइ संसारथी वैराग्य पामी स्वद्रव्यने खत्तम क्षेत्रमां वावी वरदत्ते दीक्षा लीधिते आ हुं छुं अने आ प्रमाणे मारुं पूर्व वृत्तांत छे.

ए बखते ते समळी पोतानो पूर्व भव सांभळी जातिस्मरण क्वान उत्पन्न थवाथी वृक्षथी नीचे उतरी गुरुना चरणमां पडी. अने तेणे पोताना अपराध स्वमाव्या. पछी मुनिना वचनथी अनशन करी मृत्यु पामीने स्वर्गे गइ. ते जोइ राजा विगेरेए अ- गईसा धर्म स्वीकार्यो. मुनि चारित्र पाळीने मोक्ष गया.

आ ममाणे दासीपुत्रना प्रवंधथी हिंसानो संकल्प करवो ते पण अति दु:खदाः यक छे, एम जाणी राग द्वेषवडे थती हिंसाने तजी दइ ते मुनि चिद्वुपलक्ष्मी (मोक्ष रूक्षी) ने प्राप्त थया.

## व्याख्यान ६८ मुं.

कोइक अज्ञानी एम कहे छे के " जे माछी के वागुरिक जातना लोको छे तेओने वोकडा डुकर विगेरेनी हिसा करवी ते तो कुलाचार ममाणे चाली आवे छे. तेथी ते कांइ केवळ पापनो हेतु थती नथीं. कारण के, तेओ कहेशे के, अमने तो इश्वरे आवोज अवतार आप्यो छे अने अमारा पूर्वजोए जे आचर्यु छे ते अमे एण आचरीए छीए तो तेमां कांइ दोष नथीं." आ ममाणे कहेनाराओ मत्ये जे शिक्षा छे, ते नीचे ममाणे छे.—

कुलकमागतां हिंसां, परित्यजति यो बुधः । कुमारपाल वद् ज्ञेयः, स श्रेष्टः श्रावकोत्तमः ॥ १ ॥ व्याख्याः

" जे मांज पुरुष कुलक्रमथी चाली आवती हिंसाने त्यजी दे तेने कुमारपा-स्नी जेवो श्रेष्ट श्रावक समजवो." आ विषे कुमारपालनो मर्वथ छे ते आ ममाणे— श्री कुमारपाळ राजानी कथा.

पाटण नगरमां ज्यारे सिद्धराज जयसिंह मृत्यु पाम्यो त्यारे संवत् ११९९ना वर्षमां कुमारपाळ राजा थयो. कह्युं छे के,

न श्री कुलकमायाति । शासने लिखिता नच । खडगेनाकम्य भूंजित । वीरभोग्या वसुंघरा ॥ १ ॥

" लक्ष्मी कांइ कुलक्रमथी चाली आवती नथी, अने लेखमां लखाती नथी, पण ते तो मात्र खर्मियांन मेळवींने भोगवाय छे, कारण के, पृथ्वी वीर भोग्याज छे. " ते राजाए पचाश वर्ष पर्यंत देशांतरमां फरवाथी मेळवेली निपुणतावडे राजनीति स्थापन करी हती. तेणे दिग्विजय करीने अग्यार लाल घोडा, अग्यारसो हाथी, पचाश ह- जार रथ, वोंतेर सामंत अने अढार लाल पेदल- एटली सममृद्धि एकठी करी हती. तेना दिग्विजयनुं प्रमाण श्री वीर चरित्रमां आ प्रमाणे कहेल छे के—" कुमारपाळ राजा पूर्वमां गंगा सुधी, दक्षिणमां विध्याचळ सुधी, पश्चिममां सिंधु नदी सुधी अने ऊत्तरमां तुरक देश सुधी पोतानी आज्ञा प्रवर्तावशे. एक वखतेराजा कुमारपाळ सभा भरीने वेटो हतो तेवामां श्री हेमचंद्र सूरि तेने प्रतिवोध प्रमाडवा माटे त्यां आव्या. सूरिने आवता जोइ राजाए कभा यइ आसन आप्युं अने गुरुए पूर्वे करेला जप्कारों संभारीने तेमने वंदना करी. पछी राजाए पूछ्युं के— हे भगवन्, सर्व धर्ममां

कयो धर्म श्रेष्ट ? गुरु बोल्या-हे राजन्, सर्व धर्ममां आहिसा धर्म श्रेष्ट छ अने ते सर्व भा द्वीमां विल्यात छे. जे धर्ममां जीवद्या नथी, ते धर्मने सर्व रीते छोडी देवो. बळी कुष्णे युधिष्ठिरने कहाँ छे के,-

ध्रुवं प्राणिवधो यज्ञे । नास्ति यज्ञस्त्विहंसकः । सर्वसत्वेष्वहिंसैव । धर्मयज्ञो खिष्ठिरः ॥

है युधिष्ठिर, यज्ञमां प्राणीनो वध जरुर थाय छे. कोइ यज्ञ हिंसा विना थती नयी; तेथी सर्व प्राणी उपर जे दया तेज मोटो धर्मपत्र छे. वळी मीमांसामां कहां छे के,

अयं तमसि मजामः। पशुभियें यजामहे। हिंसायां न भवेद्धर्भ। न भूतो न भविष्यति॥

" जे पशुवडे यज्ञ करे छे ते अंधकारमां मग्न थाय छे. हिंसाथी कदिएण धर्म श्रतो नथी, थयो नथी अने थशे पण नहीं. "

जैन शास्त्रमां पंण कहां छे के, धर्म धर्म ए शब्द जगतमां घणे प्रकारे प्रवर्ते छे, तेथी घर्षण, ताप अने छेदवडे जेम सुवर्णनी परिक्षा करीए छीए तेम तेनी त्रण मकारे परीक्षा करवी. परस्पर विरोधी एवा दर्शनोना ३६३ भेद परस्पर विरोधी छे, पण तेओ अहिंसाने दूषित करता नथी. तेथी ज्यां विशेष प्रकारे अहिंसा वर्त्तती होय ते धर्मने यहण करवी. आ प्रमाणे सूरिना उपदेशथी सम्यक् प्रकारे धर्मने जाण्या छतां पण कुमारपाळराजा लोकलजाथी मिथ्यात्वने छोडी देवा इच्छती नहोतो. कह्युं छे के, " कामराग अने स्नेहराग ते टालवा सुलभ छे, पण दृष्टिराग तो एवी महापापी छे, के ते सत्पुरुषोने पण दुःख आपे छे: "

राजाए सूरीने कहुं के, भगवन् ! कुछ तथा देशनो धर्म तो उद्घंवन करवो नहीं. नीतिमां पण ए प्रमाणे कह्यं छे, तेथी कुलाचारने त्यजवो ते योग्य जणातुं नथी. सूरि बोल्या-राजन्, आ वाक्य क्षुभकर्म न तजवा माटे ग्रहण करवानुं छे. कदि कुलक्रमधी दरिद्रता चाली आवती होय तो तेने निवारवा कोण इच्छा न करे ? कह्युं छे के, " ज्यांसुधी वीजानी प्रतीतिमांज वुद्धि वर्तती होय त्यांसुवी तेना वधा विचार दुः खदायक छे; तेथी पोताना मनने पोताना खरा स्त्रार्थमां योजवुं, कारणके कांइ आप्त वचन आकाशमांथी पडता नथी. मूद बुद्धिवाळा पुरुषो कुल-कमवडे धर्मनुं आचरण करे छे अने विद्वानी परिक्षा करवावडे पोताना चित्तमां निश्चय करीने धर्म आचरे छे." कोइ एवा पण मूद होय छे के जेओ लोढाना भारने बहन करनारनी जेम रुपुं तथा सुवर्णादि मळ्या छतां लोहुं न राखवारूप पोतानो कदा-मह कदि पण छोडता नथी. तेओ आ दुरंत संसारमां परिश्रमण करे छे. तेथी है

राजा, "सर्व धर्म दया मूल छे अने ते सर्व शास्त्रोव छे प्रमाण गणाय छे; तेथी भ्रांतिन छोडी दइ दया धर्ममां स्थिर थाओ. आचार्यनी आवी युक्तिथी प्रतिवोध पामीने कुमारपाळराजाए प्राणातिपातिवरमण वत यहण कर्यु अने पोताना राज्यमां सर्वत्र पटह वगडावीने जणाव्युं के, "चारे वर्णमां जे कोइ पोताने माटे के वीजाने माटे जिवने हणके ते राजद्रोही गणाको." पछी पोताना राज्यमां जे पार्धि, कसाइ, माच्छी अने दारुना पीठावाळा इता तेमना व्यापार वंघ कराव्या अने तेओना पर्थी कर मात्र छोडी दीघो, तेमज तेओनो निष्पापवृत्तिए निर्वाह चाले तेवी योजना करी आपी.

एक वस्तते कुमारपाळना शरीरमां कुळदेवीए करेला कप्टने जोइने वाग्भट नामना मंत्रीए कहुं के, स्वामी, आत्मरक्षा माटे देविने पशु आपो. ते सांभळी 'अरे आ विणक केवो निःसत्व छे. मारी भिक्तमां घेलो यइ आवां वचन बोले छे' एवं यारी राजा बोल्यो के, अरे मंत्री सांभळ—

भवे भवे सेव देहा, भाविना भवकारणं । न पुनः सर्विवित्रोक्तं, मुक्तिकारी कृपावृतं ॥ १ ॥ श्वासश्चपलवृत्ति स्याजीवितं च तदात्मकं ॥ तत्कृतेहं कथं मुंचे, स्थिरा मोक्षकरी कृपा ॥ २ ॥

"आ भव कारणरूप देह भवे भव माप्त थया करे छे, पण सर्वज्ञ ममुए कई छैं। दयाधर्म वारंवार माप्त थतो नथी. वळी श्वास चपछ छे अने जीवित तेने आधिन छे तो तेने अर्थे मोक्षने आपनारी एवी स्थिर दया हुं शामाटे छोडी दुउं." आवी धर्म दृदताथी तेना देहमांथी सर्व रोग नाश पाभी गया.

पक वलते कुमारपाळ गुरुने प्रणाम करी उभा हता ते वलते गुरु वोल्या─ राजन्, आवुं देहमां कष्ट छतां पण तुं अहितना शासनथी भ्रष्ट थयो नहीं, तेथी आजथी तने परमाहित्नुं विरुद आपुं छुं.

आ प्रमाणे राजाना मुलमां, मनमां, घरमां, देशमां अने नगरमां सर्वत्र दया व्यापवाथी हिंसाने कोइ ठेकाण स्थान मळ्युं नहीं, तेथी ते पोताना पिता मोहनी पासे गइ. मोहे चिरकाळे जोएली हिंसाने ओळली नहीं, तेथी पुछयुं के—हे सुंदरी, तुं कोण छे? ते बोली—पिताजी! हुं तमारी वाहाली पुत्री हिंसा छुं. माहे पुछयुं के— तुं केम ग्लानि पामी गइ छुं? हिंसा बोली के—तात, कांइ कहेवानी वात नथी. राजा कुमारपाळे मने देशमांथी काढी मुकी छे. ए सांभळी मोह रोष पामीने बोल्यो—वत्से, कृदत कर नहीं, हुं तारा वैरीओने हदन करावीश आ प्रमाणे आश्वासन आपीं

मोहे गर्वथी कहां, अरे पुत्री! आ त्रण भुवनमा कोड एवो नथी के जे मारी आज्ञानों स्रोप करे. पछी मोहराजाए पोताना सैन्यने सज्ज कर्यु तेमां कदाग्रह नामे मंत्री इतो, अज्ञानराज्ञी नामे सेनापति इतो, मिध्यात्व, विषय अने वुर्ध्यानरूप सुभटो इता अने हिंसानी साथे पाणियइण करावनारा यज्ञकत्ती ब्राह्मणो पण हता. ते सर्व सैन्य चौलुक्यवंशी कुमारपाळनी साथे युद्ध करवा गयुं, पण पराभव पामी पाई आन्युं; एटले मोह दु:लथी विलाप करवा लाग्यो. ते वखते रागादि पुत्रो तेने कहेवा लाग्या-पिताजी, तमारा जेवा गरुडने टीटोडीह्रप कुमारपाळनी धर्म बुद्धिने छेदवामां आटलो बधो खेद केम थाय छे? तेओमां प्रथम पुत्र राग वोल्यो-तात, हुं एकलोज आ त्रणभुवनने जिती शकुं तेवी छुं. जुओ! इंद्र अहल्यानी जार थयो, ब्रह्मा पोतानी पुत्रीनी पछवाडे गया अने चंद्रे गुरुनी ख्रीने सेवी, ए प्रमाणे में कीने अस्थाने पग नथी मुकाव्यो! मारा वाणने जगतने उन्माद उत्पन्न करवामां शो श्रम पडे! पछी क्रोध वोल्यो-पिता, मारुं पराक्रम सांभळो, हुं आखा जगतने अंध अने विधर करी दऊं, धीर अने सचेतनने अचेतन प्राय करी दऊं, मारा प्रभावयी बुद्धिमान् पण कृत्याकृत्य जोता नथी, दितनी वात सांभळता नथी अने भणेलुं पण भुली जाय छे. ए प्रमाणे लोभे अने दंभे (कपटे) पण गर्जना करी पोतानी भुजानो आस्फोट क-रीने पोतानुं पराक्रम जणान्युं. पछी पोताना शञ्च धर्मराजा उपर तेमज तेने स्वदेशमां अवकाश आपनार कुमारपाळ उपर युद्ध करवाने ते सर्वे एकढा थइने गया. राजा कुमारपाळे धर्मराजाना मंत्री सदागम ( सच्छाञ्च ) नी सल्लाइ प्रमाणे वर्तीने तेमने सणवारमां जिती लीघा.

कुमारपाळनुं आवुं साहस अने बळवानपणुं जोइ धर्मराजा प्रसन्न थया अने पोतानी पुत्री छपासुंदरी (दया) तेने आपी (वाग्दान कर्युं). पछी श्री हेमचंद्र सृरिह्म ब्राह्मणे (कुळगुरुष्) श्री अहतदेवनी समक्ष, धर्म ध्यानना चार भेदह्म चारीमां, नव तत्वह्म वेदीनी उपर, प्रवोधह्म अग्नि प्रगटावी अने तेमां भावनाह्म घी होमी कुमारपाळने छगासुंदरी नामनी कन्या साथे पाणिग्रहण कराव्युं. (करा फेरव्या). ते वखते चत्तारिमंगळं विगेरे वेदोच्चार कर्यों. पछी धर्मराजाए पोताना जामाताने पाणिमोचन पर्वमां सौभाग्य, आरोग्य, दीर्घ आयुष्य, बळ अने अनेक सुस आप्या. पछी राजा कुमारपाळे छपासुंदरीने पटराणी पद आप्युं.

पक्र वस्तते राजा कुमारपाळने पूर्वे पृथ्वीमां फरता एक पाप कर्युं इतुं ते याद आञ्युं. ते प्रवी रीते बन्युं इतुं के, एक वस्तते राजा दिधस्थळीने मार्गे जती इती. स्त्रां मार्गमां कोइ वृक्षनी छायामां विश्रांत थइ वेडो. तेवामां एक उंदर द्रमांथी क्रपा मोहोर काढतो जोवामां आन्यो. राजाए विचार्यु के आ मूपक केटली मुद्रा काढे छे, ते जोडए. लणवारमां तेणे एकविश्व मुद्रा काढी. पछी ते उपर नृत्य करी शयन करी एक मुद्रा लड़ने पाछो विलमां पेटो. ते वखते कुमारपाळे चिंतन्युं के, "अहो, आ प्राणीने कांड भोग नथी, कांड गृहकार्य करवाना नथी, कांड्रपण राजाने आपवानुं नथी, वीजानो कांड्र सत्कार करवानो नथी. वळी तीर्थयात्रादिक सुकृतकांड्र करवानुं नथी, तथापि ते लुच्य बुद्धियी घन उपर केवी प्रीति राखे छे, तेथी हुं मानुं छुं के, आ जगतमां घनना जेबुं वीजुं कांडपण मोहक नथी." आ प्रमाणे विचारी राजाए वाकिनी वीश्व मुद्रा लड़ लीबी अने दूर उभो रह्यो. एटलामां तो उंदर विलमांथी नीकळ्यो, पण त्यां एके मुद्रा न दीठी एटले तत्काळ हृद्य फाटी जवाथी मृत्यु पामी गयो. ते जोइ राजा घणो खेद पाम्यो सतो विचारवा लाग्यो के—

धनेहा जीवितव्येषु, स्त्रोषु चान्येषु सर्वदा ॥ अतृप्ता प्राणिनः सर्वे, याता यास्यंति याति च ॥

"अहो, प्राणीओ, धननी इच्छामां, जीवितमां, स्त्रीमां अने वीजामां, सदा अद्वप्त रह्या सता चाल्या गया छे, चाल्या जाय छे अने चाल्या जशे."

आ प्रमाणे पूर्व पापने याद करी ने ते पापनुं प्रायिश्वत करवा सारु प्रथम बत यहण करवाने समये ते स्थळे जइ त्यां एक उंदरीका विहार नामे प्रासाद कराव्यों ते अद्यापि पण त्यां रहेलो छे.

एक वखते शाकंभरी नगरीनो स्वामी आताक नामे राजा जे कुमारपाळनी वेननो स्वामी (वनेवी) थाय, ते पोतानी पत्नी साथे सोगठावाजी रमतो हतो. तेणे हास्यथी रमतां रमतां कहुं के, "हेमसूरि विगरे मुंडीआने मारो," त्यारे पत्नीए कहुं, ''स्वामी! एम बोलो नहीं, ते आचार्य तो मारा भाइना गुरु थाय छे अने हिसाने निवारनारा छे." राणीए आ प्रमाणे कहा छतां आनाक राजा वारंवार ते प्रमाणे कहेवा लाग्यो त्यारे राणी कोप करीने बोली के—अरे जांगडा शजीभने संभाळी राखा हुं तारी जी छुं एम धारी माराथी किंद भय न होय पण शुं मारा भाइ कुमारपाळथी पन भय नयी ? राणीनां आवां वचन सांभळी आनाके रोप करी पत्नीने पाटु मार्थु. पत्नीए कहुं, 'अरे दुष्ट, जो तारी जी भ मारा भाइ पासे अवळे मार्गे खेंची कढावुं तो मने राजपुत्री सत्य जाणजे.' आ प्रमाणे कहीने ते पाटण चाली गइ, अने पोतानी प्रतिज्ञा ख्राताने जनावी. तत्काळ नैन्ययी विटाएला चौलुक्ये शाकंभरी उपर चडाइ करी. कुनारपाळनी मोटी सेना आवेली सांभळी आनाक राजा पण त्रण लाख घोडा, पांचसो हाथी अने दशलाख पायदल लह सामो चाल्यो. बन्ने लक्कर भेळा थया.

परंतु चौलुक्यराजानी मोटी सेना जोइने आनाके घणुं द्रव्य आपी कुमारपाळनी मोटी सेनामां फाटफुट करी दीथी. पछी ज्यारे संत्राम शरु थयो त्यारे सामंतोने युद्ध करवामां उदासवृत्तिवाळा जोइ राजा कुमारपाळे महावतने पुछ्युं के, आ सामंतो युद्ध केम करता नथी १ महावते जगाव्युं के, महाराज ! तमारा सेन्यना आगेवानोने आनाकराजाए द्रव्य आपीने खुरव्या छे. राजा वोल्यो—हे महावत, तुं केवो छुं १ ते बोल्यो—हुं, आ कल्द पंचानन हाथी अने तमे ए त्रण जण फर्या नथी. आ इकीकत सांअळी राजा चिंतातुर चित्ते युद्ध करवा तैयार थयो. ते वस्तते एक चारण बोल्यो—

कुमारपाळ मम चिंत कर। चिंत्युं किमपि न होय॥ जिणे तुह रज समप्पियुं । चिंता करशे सोय॥ १॥ अमे थोडा रिउ घणा। इय कायर चिंतंत॥ मुद्ध निहाळो गयणाळों। के उज्जोय करंत॥ २॥

" हे राजा कुमारपाळ! मनमां चिता करीश नहीं. चितवेलुं कांइ थतुं नथी. केमके जेणे तने राज्य आप्युं छे, तेज तारी चिंता करशे. हे भोळा राजा, अमे थोडा अने शत्रु घणा छे एम चितववुं, ते तो कायरनुं काम छे; आ आकाशमां जो, के जचीत करनार थोडा छे के घणा." आवा तेना शब्द सांभळी राजा कुमारपाळ युद्ध करवा चाल्या. वंने वचे मोटुं युद्ध थयुं. प्राते अतुल बलवाळी कुमारपाळ विज स्रीनी जेम ढेकीने शत्रुना हाथीना एकंघ उपर चडी वेढो, अने हाथीनी ध्वजा छेदी शत्रुने पृथ्वी उपर पाडी तेनी छाती उपर चडी वेठी. पछी कहाँ के, अरे वाचाळ! मारी वेनना वचन सांगरे छे. हुं तेनी प्रतिज्ञा पूरी करवा माटे आ तरवारवडे तारी जिन्हा छेदी नाखुं ? हवे पछी हिसक वाक्य बोलीश ? आ प्रमाणे बोलवावडे यम राजनी जेवा दुर्दर्श कुमारपाळने जोइ आनाकराजा कांइ पण बोली शक्यो नहीं. ते वलते कुमारपाळनी पासे तेनी बेने आवी पतिरूप भिक्षा मागी. एटले कुमारपाळ बोल्या के अरे जांगडा, तने बेन्नो पति जाणी मुकतो नथी. पण द्याधर्मने अधिक मानी जीवतो मुकुं छुं. पण तारे जिह्ना खेंचवानुं आ चिन्ह पोताना देशमां धारण करबुं. आजथी तारा देशमां नाम अने दक्षिण भागे जिङ्काना आकारे मस्तकने ढांक-बानो बसनो बुरखो चिरकाल रहेशेः तारी पछवाडे पण परंपराए आ जिहाने चिन्ह मारी आज्ञायी राखवुं, के नेथी पृथ्वीमा मारी वेननी प्रतिक्वा पूर्ण थये ही विख्यात साय. तेणे आ सर्व अंगीकार कर्युं, बळवाननी साथे कोण, विरोध करे ! पछी कुमा-रपाळे आनाकराजाने काष्ट्रना यांजरामां त्रण दिवसः सूधीः पूरी पोताना सैन्यमां राख्यो. जे सामंतो द्रव्यथी खुटेला इता, ते घणी लज्जा पाम्या. परंतु गुर्जरपितए गंभीरपणाने लीधे तेमने कांडपण लपालंभ आप्यो नहीं. पछी आनाकराजाने पाछुं तेनुं राज्य आपी पोतानी आज्ञा मनावी कुमारपालराजा पाटणमां आव्यो. त्यारथी मारि एवा असरो पण कोइ वोलतुं नहोतुं.

एक समये कोई ब्राह्मण श्री हेमचंद्रस्रिनी कीर्तिने सहन न करवाथी तेमने आवतो देखी आ प्रमाणे निंदा करवा लाग्यों के—" अरे आ हेमड सेवडों के जेना कांवलामां लाखों जुओनी श्रेणी चाली जाय छे, ढांतना मलथी मुखमां दुर्गिध छुटे छे, नाकमां छिद्रोनो रोध थवाथी भणवामां गुणगणाट करे छे ते पलपलाट करतो भरवाडनी जेम आवे छे" आ प्रमाणे निंदा सांभळी सूरी बोल्या—अरे पंडित, 'विशेषणं पूर्व ' आ सूत्र शुं तुं नथी भण्यों के जेथी आ स्लोकमां 'देमड सेवड ' वोल्यों त्यां 'सेवड देमड ' एम वोल्युं जोइए. कुमारपाळे आ खबर मांभळी ते ब्राह्मणनी आजीविका छेदी नाखी, जेथी तेनो अस्त्र वगर वध कर्यों. त्यारथी ते ब्राह्मण दुःखे जीववा लाग्यों.

एक वसते कोइ किव देव जेवं छित्रिमरंप करी हाथमां छेस पत्र छइ कुमार-पाळनी सभामां आव्यो. कोइए तेने 'ओळख्यो नहीं. राजाए पुछछुं, तुं क्यांथी आव्यो ? अने कोण छे ? ते वोल्यो—राजन्, मेने इंद्रे आ छेस आपी मोकल्यो छे. राजाए छेस फोडीने वांच्यो. तेमां आ प्रमाणे छल्छुं हतुं—'' स्वस्तिश्री पाटण नगरमां राजगुरु श्रीहेमचंद्रसूरिने हर्पथी नमी इंद्र विक्रिप्त करे छे के, हे भगवन्! चंद्रनुं चिन्ह मृग, यमराजनुं वाहन मिहप (पाडो), वरुणनुं वाहन जलजंतु अने विष्णुना अवतार मत्स्य, कच्छप अने वराह नेमना कुलमां तमे अभयदान अपान्छुं, ते बहु मारुं कर्यु. पूर्वे श्रीवीरप्रमु जेवा धर्मवक्ता अने बुद्धिमान् अभयकुमार जेवो मंत्री छतां पण श्रेणिकराजा जे करी शक्यो नहीं तेवी जीवरसा जेना अमृतरस जवां वचन सांभळी कुमारपाळराजाए करी छे, ते हेमचंद्रगुरुने धन्य छे. "—आ प्रमागेनो छेस वांच्या पछी ते कविने ओळसीने धर्मनुं महात्म्य सांभळवाथी संतुष्ट थयेला परमाईत् कुमारपाळे ते कविन बाह्मणनी आजीविका बमणी करी आपी.

एक वखते कुमारपाळ घेवर जमतो इतो, ते वारे तेने कांइक मळतापणाथी पूर्वे करे छुं मां मभसण याद आवी गयुं. एटले तत्काळ खावुं वंध करी सूरी पामे जइने पुछ युं के स्वाभी, अमारे घेवरनो आहार करवो घटे के नहीं १ गुरु वोल्या—" ते विणक अने ब्राह्मणने घटे, पण अभक्ष्यनो नियम राखनारा सत्रीयने घटे नही. कारण के ते खावाथी पूर्वे करेला निषद्ध (मांस) आहारनुं स्मरण थइ आवे छे. " गुरुनी

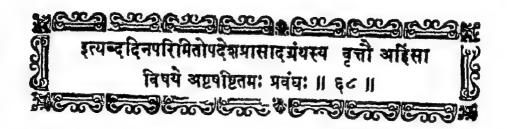
कहेली आवात कुमारपाळे स्वीकारी, परंतु पूर्वे करेला मांसनुं स्मरण करतां बत्रीश ग्रास भर्मा हता, तेना पायिश्वतमां एक साथे घेवरना वर्णसहश्च बत्रीश विहारो करान्या.

आवा अनेक लोकोत्तर चरित्रथी सूरिए घणाना इदयने हरि लीघा हता. जन्मयी आत्मस्तुति तथा मनुष्यस्तुति विषे तेमणे नियम राख्यो हतो. तोपण तेओ राजाने कहेता हता के,

किं कृतेन न यत्र त्वं, यत्र त्वं किमसौ किलः ॥ कलौ त्रेद् भवतो जन्म, किल्सित्तु कृतेन किं॥ १॥

" ज्यां तुं नथीं त्यां कृतयुग होय तोपण शा कामनो अने ज्यां तुं छे त्यां किलि होय तोपण शुं करवानी छे ? जो तारो जन्म कलियुगमां छे, तो अमारे कलि- खुग हो, कृतयुगनी शी अहर छे! "

आ प्रमाणे अनेक दृष्टांत ए परमाईत् कुमारपाळ विषे छे. जे कुमारपाळ आवर्ती चोविशीमां पद्मनाभप्रभुना शासनमां प्रथम गणधर थन्ने, ते जिन धर्मने वधारनारा कुमारपाळ कुछक्रमथी चाली आवर्ती हिंसाने पण छोडी दीधी हती.



## व्याख्यान ६९ मुं.

केटलाएक जीवो कोधथी हिंसा वचन बोले छे, तेमने माटे शिक्षा कहे छे.

> वचोऽपि हिंसाविषयं । महानर्थविधायकम् ॥ अत्र मातृस्रतचंद्रासर्गयोश्च निदर्शनम् ॥ १ ॥ व्याख्या

हिंसा विषे वचन बोलवुं, ते पण मोटा अनर्थने करनाई छे. ते विषे माता भने पुत्र चंद्रा अने सर्गानुं उदाहरण छे. ते आ ममाणे—

### चंद्रा अने सर्गनी कथा.

वर्द्धमान (बढवाण) नगरमां स्वधंड नामे कुलपुत्र इतो. तेने चंद्रा नामे सी इती तेमने स्नर्भ नामे एक पुत्र थयो इतो. आ सर्वे दुःखदायक स्थितिमां इता. चंद्रा पारका घरनुं काम करती इती, अने सर्ग वनमांथी इंघणां छावतो इतो. एक वस्तते सर्गने माटे शीका उपर आहार मुकी चंद्रा जळ भरवाने गइ. सर्ग वनमांथी आव्यो त्यारे तेणे माताने जोइ नही अने धुधा तुषा लागेली तेथी क्रोधे भरायों. एटलामां तेनी माता आवी तेने जोइने ते गुस्साथी बोल्यो-पापिणी, आटली बार शुं शूलीए चडी हती? ते सांभळी क्रोधथी चंद्रा बोली के-आं शींकापरथी उतारीने केम लाधुं नहीं ? शुं तारा हाथ कपाड गया हता ? आ प्रमाणे वंनेए दुर्वचनवडे कर्म बांध्युं. पछी आयुष्य पूर्ण थयाथी सर्गनो जीव मृत्यु पामी केटलाक भव भमीने ताम्रलिप्ती नगरीमां अरुणादेव नामे एक श्रेष्टीनो पुत्र थयो, अने चंद्रानो जीव परिभ्रमण करीने पाट-लीपुरमां जसादित्यने घेर देवणी नाभे पुत्री थयो. तेना पिताए देवणीने अरुणदेवने आपी. तेमनो विवाह थया पछी अरुणदेव वीजा मित्रोनी साथे वेपार करवा माटे वाहाणे चट्या. दूर जतां प्रतिकूल वायुवडे वाहाण भांग्युं. पुण्ययोगे पाटींयुं मेळवी एक मित्रनी साथे कांडे आन्यो. अनुऋषे फरतो फरतो पाटळीपुरमां पहोंच्यो. त्यां मित्रे अरुणदेवने कहुं, भित्र, अहीं तारा साप्तरानुं घर छे, तेथी चाल, त्यां जहए. अरुणदेव वाल्यों के, आवी स्थितिमां आपणे त्यां जवुं युक्त नथी. मित्रे कह्यं के, त्यारे तुं अहीं रहे, हुं नगरमां जइ भोजन छइ आवं. पछी अरुणदेव कोइ देवालयमां रह्यो. थोडीवारमां श्रांत थयेला अरुणदेवने निद्रा आवी गइ.

आ समये ते बनमां तेनी खी देवणी क्रीडा करवा आवेली तेना बंने हाथ छेदीने कोइ चोर कंकण लइ नाशी गयो. तेणीनो पोकार सांभळी राजाना सेवको तत्काळ त्यां दोडी आव्या अने चोरनी पाछळ दोड्या. पेलो चोर ज्यां अरुणदेव सुतो हतो ते देवाल प्रमां आवी भय पामवाथी कंकण अने खर्कें अरुणदेवनी पासं मुकीने नाशी गयो. तेना गया पछी ज्यारे अरुणदेव जाग्यो त्यारे ते कंकण अने खर्कें जोइ 'आ कंकण देवीए आप्या ' एवं जाणी हर्षयी लइ लीघा. तेवामा चोर पाछळ दोडता राजाना सेवकोए त्यां आवीने कहां के—अरे, हवे क्यां जइश ? एम कहीं अरुणदेवने पारवा मांड्यो. एटले तेना वस्त्रमांथी वे कंकण नीचे पडी गया. तत्काळ तेने वांधीने राजा पासे लइ गया अने राजानी आज्ञाथी तत्काळ तेने श्रूलीए चडावी दीघों.

ए समये पेलो भोजन लेवा गयेल मित्र त्यां आव्यो. ते अरुणदेवनी आ अवस्था जोइ, अरे सुखदुः समां वत्सल एवा मित्र, तुं क्यां चाल्यो ? एम बोलते। धैने स्वरे रुदन करवा लाग्यो. मेक्षक पुरुषोए तेने पुछ्युं के, आ क्या श्रेष्टीनो पुत्र छे? ते बोल्यो, इवे शुं कहेर्नु, तेनी कथा तो पूर्ण यह रही. पछी तेणे सर्व वृत्तांत जणाव्युं अने शिलावड आत्महत्या करवा तैयार थयो. लोकोए एकठा मळी तेने निवार्यो. जशादित्य पोतानी पुत्री अने जामातानो सर्व वृत्तांत सांभळीने तथा ते अवस्थामां बंनेने जोइने घणो खेद पाम्यो. पजी जामाता अठणदेवने शूली चपरथी नीचे उतरावी तेणे राजसेवकोने उपालंभ आप्यो. राजा बाल्यो के, ह श्रेष्टी, आ काममां सहसा काम करनार एवा मारोज अपराध छे.

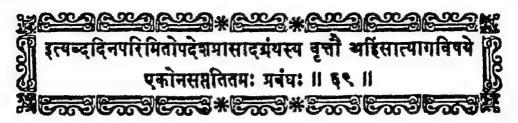
ए समये चतुर्कानी अमरेश्वर नामे मुनि महाराज 'त्वां पत्रायां. तेमणे देशना आपी के, "हे भन्यो ! मोहनिद्राने छोडी दो, अने त्रीविधे त्रीविधे हिंसा त्वजी दो. बचन अने कायावडे करेछी हिंसा तो दु:खदायक छेज, पण मनमां पण चिंतवेली हिंसा पण प्राणीने नरकमां पाडे छे, ते विषे एक दृष्टांत सांभळी-

वैभारिगिरि चपर आवेला एक उद्यानमां अन्यदा केटलाक लोको उजाणी करवा एकटा थया इता. तेमने जोइ कोइ रांक भीख मांगवा आव्यो. पण तेना दुष्कर्मोद्ययी तेने कोइ देकाणेथी पण भिक्षा मळी नहीं एटले तेणे विचार्यु के, 'अहा, आटलुं बधुं भोजन लतां पण कोइ मने आपतुं नथीं' तेथी 'आ 'सर्वने मारी नाखुं' आदुं विचारी कोप करीने ते गिरि उपर चड्यो अने एक मोटी शिलां तेमनी उपर देडवी देतां देवयोगे शिला साथे पोते पण पटी गयो सर्व लोको दूर' खसी गया अने ते भीखारी शिला नीने चूर्ण यह मृत्यु पामीने नरके गयो. आ ममाणे मनमां चितवेली हिंसानुं पण तेने मादुं फळ माप्त थयुं.

वळी श्री आऊरपचरवाण नामना पयनामां कहुं छे के, "आहारनी अभिलाषाए मत्स्य सातमी नरके जाय छे, तेयी साधुए मनवडे पण सचित्त आहा-रनी रच्छा न करवी " आहें मत्स्य एटले तं दुल मत्स्य विगरे लेवा, ते पण गर्भज जाणवा. कारण के संपूर्छिम तो असंद्रीपणाने लीधे पहेली रत्नप्रभा नरक सुधीज जाय छे. ते तं दुल मत्स्य मोटा मत्स्यना मुखनी पासे आंखनी पापणमां उत्पन्न थाय छे. तेनुं प्रमाण तं दुल जेटलुं होय छे, ते बज्र रूपभनार। चसंघयणी होय छे अने दुष्ट मननो ज्यापार करवाथी सातमी नरके जाय छे. आ प्रमाणे वृद्धो कहे छे. वली जधन्ये अंगुळना असंख्यातमा भागप्रमाण देहवाळा. मत्स्य पण सातमी नरके जाय छे, एम श्री भगवती सूत्रमा कहुं छे. तेथी मन वचन अने काया, ए त्रिविधे यती हिंसा अनेक भवने आपनारी छे. आ प्रमाणे सांभळी राजा विगरेए ते समये प्राप्त अनेक भवने आपनारी छे. आ प्रमाणे सांभळी राजा विगरेए ते समये प्राप्त थयेलुं ते सी पुरुपना दु:लनुं कारण पुछ्युं. ज्ञानी मुनिए तेनो पूर्व भव कहेवा-

बढे ते सर्व करी बतान्युं. ते सांभळी देवणी अने अरुणदेवने जातिस्मरण ज्ञान जत्यम थयुं, तेथी तेमणे तत्काळ अनञ्चन आंगिकार कर्युं. ते जोई सर्व पर्यदाए संवेग पामी द्याधर्मने स्वीकार्यों, अने ते देवणी अने अरुणदेव मरण पामीने देवलोंके गवा.

दे भन्यो! चपर प्रमाणे चंद्रा माता अने सर्ग पुत्रनुं वृत्तांत सांभळीने दास्य, मोद्द के दुष्ट बुद्धिवडे काँदि पण दिसा बचन बोळवुं नहीं, अने इंमेशा मनने दयाळु करतुं.



# व्याख्यान ७० मुं.

केटहाएक करे छे के, आ जीवात्मा अभेद्य, नित्य अने सनातन छे, तो देह जिंदनों नाक यवायी जीवनो नाक श्री रिते थाय? पृथ्वीयी उत्पक्त थयेलो घडो नाक पामवायी श्रुं आकाश नाश पामे छे? किंद करेशो के, घटाकाशतो नाश पामे छे, तो ते पण कल्पित छे. वळी गीतामां कहां छे के, युद्ध के यशादिकमां जीववथ करवानो वाघ नयी, पण ते वाक्य अयुक्त छे. कारण के, निश्चयनयनी अपेक्षाए जीव नित्य अने गति आगतियी रहित छे, पण व्यवहारनी अपेक्षाए ते नानाप्रकारना देह पिंडात्मक यह गायपणुं. हाथीपणुं, पुरुषपणुं, स्त्रीपणुं धारण करे छे, तेथी मांकड की- दि विगेरेमां पण उत्पक्त ययेलो प्रत्यक्ष जणाय छे. ते पक्षे दीपकनो नाश थये तेनी प्रभाना नाशनी जेम देहहूप पिंडनो विनाश थतां जीवनो पण विनाश याय छे. ए- थीज 'तुं मरीजा' एवं कहेवाथी प्राणीने दुःख थाय छे अने मारी नाखवाथी तेनुं फळ नरकनी वेदनारूप प्राप्त याय छे, माटे सर्व धर्ममां दयाधर्मज श्रेष्ठ छे. तेनी स्तुति अमे पण करीए छीए. तेवी जीवदयामां जेमना हृदय तत्पर छे एवा श्री शांतिनाथ अने मुनिसुद्रतप्रसु पूर्वे यया छे, तेमनी कीर्ति अद्यापि पृथ्वीपर प्रवर्ते छे. आ विषे अधिरा माताना पुत्र श्री शांतिनाथ प्रमुनो संबंध आ प्रमाणे—

#### श्री शांतिनाथजीनी कथा.

जंबुद्वीपना पूर्व महाविदेह क्षेत्रनी मंगलावती विजयमां रत्नसंचय नामना नगरने विषे श्री श्रांतिनाथप्रभुजीनो जीव पूर्वे वज्ज्ञायुध नामे राजा इतो एक वखते एक पारेवुं भय पामी राजा बज्रायुषनी करणे आव्युं. राजाए कहुं के, भय पामीश नहीं. तेनी पछवादे तरतज एक सींचाणो पत्ती आव्यो, तेणे कहुं के हे राजन, मने घणी शुषा छागी छे तेथी आ पत्ती मने आपो. राजाए कहुं, तेने बदले तुं उत्तम अस ले. सींचाणे कहुं के, मने तो मांस उपरज रूची छे. राजा बोल्यो. त्यारे हुं मारा देहतुं मांस आयुं. सींचाणो बोल्यो के— तो आ पारेवा जेटलुं आपो. पछी राजाए ताजवुं मंगावी एक तरफ पोतानी जंघामांथी छेदीने मांसनो पिंड मुक्यो अने बीजी तरफ वारेवाने राल्युं. पारेवामां एटको भार ययो के छेवटे राजा पोते तुलापर चढी बेडो. आवी बज्रायुष राजानी दया तरफ हिंमत जोई, बे देव मत्यक्ष यह बोल्या, हे महानु भाव! इंद्रे सभामां तमारी मशंसा करी, ते नही मानीने अमे बंने तमारी परीक्षा करवा आवा रूप करी अहीं आव्या हता. पछी तेओ राजा उपर पुष्पवृष्टी करी स्वर्गे चाल्या गया. राजा बज्रायुष चारित्र लई नवमा मैवेयकमां एकत्रिश्व स्वागरे।पम आयु-ष्याळा देवता थया.

#### मुनिसुबतप्रभुनी कथा

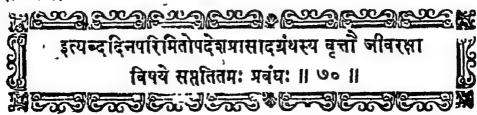
मृगुकच्छ (भरुच) नगरमां जित्र शास्त्र नामे राजा हतो. तेणे एक वस्तते अश्वमेष यह करवा माटे अभिमां होमवा एक अश्व तैयार कयों. आ सवर हानवडे प्रति
सुव्रत स्वामीए जाण्या, एटले तत्काळ ते अश्वने बचाववा माटे मितिष्ठानपुरथी भरुच
एक रात्रिमां साढ योजन आवी पहोंच्या. त्यां एकठा थयेला जनसमूहमां प्रभुए धर्मदेशना आपवा मांडी. ते अश्वे प्रभुने जोई उंचा कान कर्या अने वारंवार प्रमु सामुं
जोवायी तेने जातिस्मरण हान उत्पन्न थयुं. तेथी तत्काळ प्रभु पासे आवी पृथ्वींपर
मस्तक मुकीने पोतानी वाचामां बोल्यो के, हे विश्वरक्षक, दुःलार्च एवा मारी रक्षा
करो. ते जोई राजाए प्रभुने पुछ्युं के, आ अश्व शुं कहे छे? प्रभु बोल्या—राजन,
तेनो पूर्वभव सांभळो.

प्रिनीपुर नामना नगरमां जिन्धर्म नामे एक जैनधर्मा श्रेष्ठा इतो, तेने सागरदत्त नामे एक बैनधर्मा मित्र इतो. ते सागरदत्ते पूर्वे एक शिवालय कराव्युं इतुं. एक वस्ते ते मित्रनी साथे साधुनी पासे गयो. त्यां जिन मंदिर कराववानुं महत् फळ सांभळ्युं, तेथी तेणे एक जिन्धिंव प्रासाद कराव्यो. ते कार्यथी तेने समिकत दर्शन प्राप्त ययुं. एक वस्ते शैव लोकोए धीवडे शिविलगपूर्युं, ते जोवा सागरदत्तने बोक्साव्यो. त्यां घीना गंधयी घणी घीमेलो तथा कीडिओ एकठी थई इती ते निर्दय शैव लोन कोना चरणन्यासयी कचराइने मरी जती इती. ते जोइने सागरदत्त बोल्यो के, तन्मारा पगवडे इजारो कीडिओ मरी जाय छे, ते तमने घटतुं नथी. त्यारे तेओ कोष

करीने बोल्या के, अरे मुर्खा! कुलकमधी चाल्या आवेला धर्मने छोडी दइ नवी धर्म अंगीकार करतां तुं केम शरमातो नथीं। माटे उठ, तारे घर चाल्यो जा. ते सांभळी लजायी ग्लान मुख ययो सतो पोताने घर आवीन ते विचारवा लाग्यों के, अरे, में कुलधर्मनो त्याम करी केंचुं काम कर्युं! आ प्रमाणेना अंतध्यीनथी मृत्यु पामी घणां भव भमीने हे राजा, ते सागरदत्तनो जीव आ अश्व थयो छे. ते मारो पूर्वभवनो मित्र होवाथी मने जोइने कहे छे के, आ राजा मने आजे यहमां होमी देशे, तथी मारी रक्षा करो, रक्षा करो. हे राजन्, यहनुं फळ नरकज छे, तथी ते करवा योग्य नथी. आ प्रमाणे प्रमुनां वचनथी जीतशत्रु राजा प्रतिवोध पाम्यो. तथी अश्वने निर्भय करी पोताना नगरमां यहो करवानोज अटकाव कर्यो. ते अश्व प्रमु पासे अनशन अंगीकार करी सहस्रार देवलोकमां देवता थयो. त्यांथी तत्काळ त्यां आवीने ते देवे प्रमुना समोसरणने स्थाने एक जिनप्रासाद रचावी तेमां मुनिसुवत-स्वामीनी प्रतिमा अने तेनी आगळ अश्वनी मूर्ति स्थापन करी; त्यारथी त्यां अश्वाववाध नामे तीर्थ थयुं.

केटलेक काळे तेज बनमां एक वडना वृक्ष उपर श्रमळी रहेती हती. ते कोइ म्हेच्छे बाण मारी वींघी नाखी ते प्रभुना प्रासाद पासे पड़ी अंत-समये कोइ मुनिए तेने नवकार मंत्र संभळाववाथी ते सिंहल्ठराजानी पुत्री थइ. अन्यदा मृगुपुरथी कोइ श्रेष्टी त्यां आव्यो, ते छीक आवतां नवकारमंत्रनुं पेहेलुं पद वोल्यो. ते सांभळी राजपुत्रीने जातिस्मरण थयुं. पछी मातापिताने पुछी भृगुपुरे आवी तेणे ते चैत्यनो उद्धार,कर्यो. त्यारथी ए तीर्थ " शकुनिकाविद्धार " ए नामथी विख्यात थयुं.

त्यारपछी अनुऋमे परमाईत श्रीकुमारपाळराजाना मंत्री उदयनना पुत्र, शतुं जय तीर्थनो उद्धार करनार, गिरनार पर्वत उपर सुगम पाज वांधनार अने बीजा पण अनेक पुण्य कार्य करनार श्रीवाग्भट कविना अनुज वांधव अंवड मधाने पिताना पुण्यने अर्थे ते तीर्थे उद्धार कराव्यो. ते समळीकाविहार तीर्थमां तेणे मंगळदीपकना छुंछणा वखते याचकोने वत्रीश लाख सोनैया आप्या हता, एम वृद्ध पुरुषों कहे छे उपर प्रमाणे श्रीशांतिनाथ अने श्रीमुनिसुवत स्वामी अश्व अने पारेवानुं रहण करवायी पृथ्वीपर महान् कीर्त्तना भाजन थया छे. ते वंने प्रभु मने पण शीव सुखना आपनारर थाओ.



# व्याख्यान ७१ मुं. हवे हिंसाउं कारण प्रमाद छे ते कहे छे.

शरीरी म्रियतां मा वा भ्रुवं हिंसा प्रमादिनः। सा प्राणव्यपरोपेऽपि प्रमादरहितस्य न ॥ १ ॥ व्याख्या.

"प्राणी मरण पामे अथवा न पामे पण निश्च प्रमादीने हिंसा छागे छे. अने प्राणनो किद नाश याय तोपण प्रमाद रहित एवा पुरुषने हिंसा छागती नथी." जो कीइ साधु प्रमाद्यी एटछे उपयोग वगर चार्छ तो तेने जीवनो वथ न थाय ते छतां पण हिंसा छागे छे, अने जे साधु अप्रमादथी एटछे उपयोगथी चार्छ तो तेनाथी कदी जीव वथ थई जाय तोपण तेने भावथी हिंसा छागती नथी. जेम नदी विगेरे उत्तरतां उपयोगथी चारुता साधुने अप्काय जीवनी विराधना तीववंध आपनारी थती नथी, तेम जेम कोई घांचीनो जीव कोटी पूर्वना आयुष्यवाळो होय ते प्रतिदिन विश्व भाणीओवडे तिछ पीछ छे ते आखा जीवितवडे पण तेटला तिल पीलवा समर्थ न थाय के जेटला जीव साधु नदी उत्तरतां जळना एक बींदुमां हणे छे. जो ते जळ सेवाळवाळुं होय तो तेमां अनंत जीवनो पण घात थाय छे. पण जो ते मुनि प्रमादी होय तो तेनी हिंसा छागे छे. अन्यथा छागती नथी.

श्रीमगंवती सूत्रमां कहुं छे के, केवलज्ञानी पण गमनागमनथी अने नेत्रना लाखन विगरेथी घणा जीवनो घात करे छे. परंतु मात्र योगवडेज बंध होवाथी ते प्रथम समये बांधे छे; बीजे समये अनुभवे छे (वेदे छे) अने त्रीज़े समये निर्जरे छे. कारण के ते अपमादी होवाथी तेमने कर्मनो बंध वहु काळनी स्थिति वाळो थुतो नुथी.

वळी प्रथमांगमां कहां छे के, कोइ मानिए अकस्मात् कार्चे लुण बोहोरी होये, ते जो लुण बहोरावनार प्रहस्य पाछुं न ले तो मुनिए तेने जळमां घोळीने पी जबं. तमे करवायी तेणे श्रीजिनेश्वरनी आंज्ञा पाळी माटे ते मने पृथ्वीकाय जीवनी हिसा न लागे. तेज प्रमाणे प्रहस्थने पण जिन पूजा विगेरेमां अंतर द्यामाव होवाथी हिंसा लागती नथी.

भाचीन पूज्य पुरुषीए हिंसाना त्रण प्रकार कहेला छे—स्वरूपहिंसा, हेतुहिंसा अने अनुवंधिहंसा. अंतःकरणमा दयाना परिणाम वर्ततां वाह्यक्रिया करतां जे हिंसा थाय ते स्वरूपहिंसा कहेवाय छे. छत्यिष विगेरेना हेतु माटे जे हिसा थाय छे वे हेतुहिंसा कहेवाय छे. अने अंतःकरणमां कलुषित परिणाम वर्तता निर्दयपणे जे हिंसा कराय छे ते अनुबंधाहिंसा कहेवाय छे. राजा यशोधरे माताना चचनथी पिष्टमय कुकडानी पण हिंसा करी तो तेथी ते दुरंत दुःल परंपराने, पाम्यो हतो. अने ब्रह्मदत्त चक्री विगेरेने वाह्मपणे स्वरुपहिंसानो अभाव छतां पण अनुवंध हिंसाना ध्यानयी नरकनी प्राप्ति यह हती. तेनो संवंध नीचे प्रमाणे छे.

#### श्रीब्रह्मदत्त चक्रीनी कथा.

कांपिल्यपुर नगरमां ब्रह्म नामना राजाने चार मित्रो इता. काशी देशनी राजा कंटक, इस्तिनापुरनो अधिपति करेणु, कोशल देशनो स्वामी दींघे अने चंपा नगरीनो नृपति पुष्पचूल, आ चारे राजाओ परस्पर स्नेइथी एक बीजाना राज्यमां एकेक वर्ष आवींने रहेता इता. एक वखते बीजा त्रणे ब्रह्म राजाने त्यां आवेला इता; तेवामां अकस्मात् ब्रह्म राजाने मस्तकनी वेदना जत्पन्न यइ. एटले ब्रह्म राजाए तेओना जत्संगमां ब्रह्मदत्त नामना पोताना वाळ वयना पुत्रने मूकीने 'तमारे आ राज्यनी व्यवस्था करवी' एम कही ते मृत्यु पाम्यो. पछी तेओ पोतामांथी दींघे राजाने त्यां मूकी पोतपोताना राज्यमां चाल्या.

दीर्थ राजा त्यां रह्यो सतो ब्रह्म राजानी स्त्री चूळणीनी साथे आसक्त थयो. ते खबर जाणी धनु नामना मंत्रीए पोताना पुत्र वरधनु ने जणाव्युं के, आ वृत्तांत तुं एकांतमां जहने चूळणीना पुत्र ब्रह्मदत्तने जणावजे. तेणे ब्रह्मदत्तने जणाव्युं एटले ते चतुर कुमार कोकिछा अने कागडाने छहने अंतःपुरमां गयो. त्यां ते बन्नेनो संबंध करावी कागडाने मारी नाखीने ते बोल्यो के, बीजो पण जे कोइ आबुं करसे तेने हुं आबी रीते मारी नाखीश. आ इकीकतनो सार समजीने दीर्घे चूळणीने कहुं के, हुं काग अने तुं कोकिछा छुं. राणी बोली के—एवी शंका करो नहीं. आ बालक ते आपणो संबंध शुं जाणे! फरी वळी एकवार ब्रह्मदत्ते पाडानो अने हाथिणीनो संबंध करावी पूर्वोक्त वाक्य कहीने, पाडाने मारी नाल्यो. तेथी दीर्घ राजाए 'आ मारुं जाणे छे अने अन्योक्तिवडे मने शिक्षा आपे छे.' एवं समजी राणीने तेवात जणावी. एटले राणी बोली के—त्यारे आपणे पुत्रने मारी नाखीए. जो आपणे कुन्नल हुश्चं तो घणा पुत्रो थके. दीर्घराजाए ते स्वीकार्ध. पछी दीर्घराजाए ब्रह्मदत्तने कोइ- एक सामंतनी पुत्री पर्णवाती, अने तेमने सुवाने माटे एक लाखनुं गृह कराव्युं. आ खबर जाणीने बर्धनु मंत्रीए गुप्त रीते ते घरनी नीचेथी नगर बहार जद्यान सुधी एक सुरंगा करावी. शुभ दिवसे वर वधू अने धनु कुमारे ते घरमां मवेश कर्यो एटले रान सुरंगा करावी. शुभ दिवसे वर वधू अने धनु कुमारे ते घरमां मवेश कर्यो एटले रान सुरंगा करावी.

त्रिना वे पोहोर जतां तें गृहने चूलणीए अग्नि लगाड्यो. मंत्रीपुत्र वरघन् थमथीज जाणतो इतो तेथी सुरंगा मार्गे ब्रह्मदत्तने उद्यानमां छइ गयो, अने त्यां सुरगाना द्वार चपर वे अश्व तैवार राखेला इता ते उपर वेसी बन्ने मित्र देशाटन करवा नीकळी पड्या-

भाग्यवान् ब्रह्मदत्ते पृथ्वीपर भमतां सार्वभौमपदनी संपत्ति माप्त करी, अने वरधनुने सेनापतिनी पदवी आपीने दीर्घराजानी उपर मोकल्यो. तेनी पछवाडे पोते आवीने चक्रवंदे दीर्घराजानुं मस्तक छेदी नाल्युं. पछी तेणे पोताना नगरमां प्रवेश कर्यो. अनुक्रमे ब्रह्मदत्त चकीए पट्खंड भरतने साध्य कर्यो.

पूर्वे ज्यारे ब्रह्मदत्त एकाकीपणे भमतो इतो त्यारे एक ब्राह्मणे तेने जळ पार्ख इतुं. ते ब्राह्मण ब्रह्मदत्तने चक्रवत्तीपद प्राप्त थएलुं सांभळी र्यां आव्यो. तेणे विचांधु के, आटला बधा सैन्य वसे ते मने केम ओळखशे, तेथी तेणे एक जीर्ण वसूनो ध्वज करी जीणी सुपडुं विगेरे स्टकावी जुदुंज रूप बताव्युं. तेवी विस्प्तणता जोइ राजाए सेवक मोकछीने तेने बोलाव्यो. पछी तेने ओळली तेनापर संतुष्ट थइने बरदान मागवा कर्ड, एटले अल्प बुद्धिवाळा ब्राह्मणे स्त्रीना वचनथी दररोज अनुक्रमे एकेक गृहे भोजन अने बेसोना मोहोरनी दक्षिणा तेने मळे एवी मागणी करी. राजाए तरतज तेवी गोठवण करावी आपी. एक वखते ते छुन्प ब्राह्मणे चक्रीने कहां के, हे राजन्! एकवार तमारा घरनुं भोजन मने करावो. चऋषि कहुं के, मारुं भोजन तो मनेज जरे तेवुं होब छे. ब्राह्मणे गुस्साथी कह्युं के, अरे राजा! शुं तुं छपण छे के जेथी मने भोजन तारुं पण आपी शकतो नथी. पछी चक्रीए ते ब्राह्मणने कुटुंब सहित पोताने घेर जमाट्यो, नेथी ते आति कामातुर यह गयो. पछी तेणे रात्रे पोतानी माता बहैन विगेरेनी साथे पशुवत् आचरण कर्धी. ज्यारे चक्रीना अक्रनो मद उत्तरी गयो स्यारे ते लजा पामी गयो. पछी तेणे विचार्यु के आतुं अपकृत्य चकीएज जाणी वुजीने कर्च छे, माटे तेने शिक्षा करवी. आवा क्रोधयी ते एक बखते ते बनमां फरतो इतो तेवामां कोइ गोवाळ गलोलना प्रयोगथी पिपळाना पानने काणा करतो तेना जोवामां आन्यो. एटले तेने पळी कांइ द्रव्य आपी तेनी पासे चक्रवर्तीना बन्ने नेत्र फोडी नंखाव्या. राजसेवकोए ते गोवाळने पकड्यो अने कह्युं के, अरे दुष्ट, आ तें शुं कर्युं? एटले तेणे पेला बाद्मणने बतान्यो, तेथी ते बाह्मणने कुदुंब सहित मारी नाल्यो. त्यार्थी चक्रीने ब्राह्मण जाति उपर रोष चढ्यो. तेथी तेणे मंत्रीने आज्ञा करी के, मंतिदिन अनेक बाह्मणीना नेत्रों कादी मारी पासे काववा. एटले मंत्री तेम करवा काम्बो. चक्री ते नेत्रोने मर्दन करी खुशी थवा छाम्बो. आ प्रमाणे हमेशा करतां यणा जीवनो वध थतो जोइ मंत्री बीज वगरना वडगुंदानो थाळ भरीने राजा पासे मुकवा लाग्यो. अंध चक्री तेने पोताना शत्रुओना नेत्र जाणी कोध बुद्धिथी चोळी

नाखवा लाग्यो. आ प्रमाणे सोळ वर्ष सुधी करी रौद्र ध्यानवडे मृत्यु पामीने सा-तमी नरके गयो, कह्युं छे के-''वडगुंदाने ब्राह्मणना नेत्रनी बुद्धिए चोळतो छेछो ब्रह्मदत्त नामनो चक्रवर्त्ती अनुवंध हिंसाना योगथी सातमी नरके गयो छे."



### व्याख्यान ७२ मुं.

हवे केटलाएक माणसो बीजा जीवोनी हिंसा करनारा हिंसक जीवोने मारी नाखवामां धर्म माने छे, तेओने माटे शिक्षा कहे छे—

> केचिद्धदंति हंतव्याः प्राणिनः प्राणिघातिनः । हिंसस्यैकस्य घाते स्यादक्षणं भूयसां किल ॥ १ ॥ व्याख्या.

केटलाएक कहे छे के, जे बीजा प्राणीओनी हिंसा करनारा प्राणीओ छे, तेमने मारी नाखवा. कारण के तेवा एक हिसक प्राणीना घातथी बीजा जीवोर्च रक्षण थाय छे. अर्थात् जे सर्प मार्जर विगेरे हिंसक प्राणीओ छे तेमने मारवामां दोष नथी. पण आ तेमनो विवार अयुक्त छे कारणके तेवो विचार करीशुं तो आ आर्यक्षेत्रमां पण अहिंसक प्राणीओ घणा थोडा मळी शकशे, तेथी तेवा निष्वंस परिणामनो त्याग करवो.

वळी कोइ कहे छे के, " निर्वाहने माटे मत्स्य तथा धान्य विगेरेना घणा जीवोने शा माटे हणवा, पण एक मोटा हाथीने मारवो के जेथी घणा काळ सुधी निर्वाह चाले." आ प्रमाणे माननाराने आर्द्रकुमारना प्रवंधद्वारा शिखामण दे छे.

आर्द्रकुमारनी कथा.

मगधदेशमां श्रेणिक नामे राजा इतो. तमणे एक वखते पूर्वजनी प्रीति वधारवा माटे पोताना मंत्रीनी साथे आर्द्रकराजाने केटलीक भेट मोकली. मंत्रीए आर्द्रदेशमां

जइ त्यांना राजानी आगळ भेट मुकी. पछी परस्पर कुशल वार्ची पुछी. ते चखते आर्द्रकराजाना पुत्र आर्द्रकुमारे श्रेणिक राजाना मंत्रीने पुछर्यु के, तमारा राजाना कुमारनुं नाम शुं छे? मंत्रीए कहुं के, तेमनुं नाम अभयकुमार छे. ते महा धर्मज्ञ छे, अने पांचसो मंत्रीओनो अधिपति छे, शुं तेमनुं नाम तमारा सांभळवामां पण नथी अव्युं ! मंत्रीना आ प्रमाणेनां वचनो सांभळी आर्द्रकुमारे अभयकुमारने माटे मोती विगरे मोकलाव्या. अनुक्रमे मंत्री राजगृह नगरमां आव्यो, अने त्यांथी आपेली भेट श्रेणिक राजाने अने अभयकुमारने आपी. पछी अभयकुमारने कहुं के, आर्द्रकुमार तमारी साथे मैत्री करवा इच्छे छे. ते सांभळी अभयकुमारे विचार्यु के, ए कोइ भन्य जीव वतनी विराधना करवाथी अनार्य देशमां जन्मेलो लागे छे, कारण के अभन्य के दूरभव्य तो मारी साथे मैत्री करवाने इच्छताज नथी. "प्रायः समान धर्मीओनेज परस्पर मीति थाय छे." इवे हुं तेनी उपर एक आईत् विव मोकलावुं के जेने जोइ ते जहर प्रतिवोध पामशे. आवुं विचारी अभयकुमारे एक पेटीमां रतनमय आईत् मतिमा मूकीने ते भेट तरीके मोकलावी. मंत्रीए ते पेटी लइ जइ आर्द्रकुमारने एकांते आपी अने प्रणाम करीने स्वस्थाने गयो. आर्द्रकुमार पेटी उघाडी एटले तेनी अंदर मतिमा जोइ विचारमां पड्यो के, आ ते केवुं आभूषण इशे? आ आभूषण कंटे, मस्तके के इदयमां क्यां पेहेरातुं इशे? अथवा में पूर्वे आवुं कांइक जोए छुं छे. एवो विचार करतां तेने जातिस्मरण ज्ञान थयुं. तेथी तेणे जाण्युं के अहो, आ भवथी त्रीने भवे हुं सामायिक नामे कौटंवीक हतो. मारे बंधुमित नामे स्नी हती. में वैराग्य पामी शिया सहित दीक्षा लीधी हती. एक वखते साध्वीओना समूहमां मारी स्वरुपवती स्त्रीने जोइने पूर्वना अनुरागथी हुं तेनो अभिलापी थयो. में तेनी आगळ मारो अभिप्राय जणाव्यो. ते साध्वीए जाण्युं के, आ साधु जरुर तेना तथा मारा वतनो भंग करको, तेथी ते अनक्षन छइ मृत्यु पामीने स्वर्गे गइ. पछवाडे हुं पण तेना दु:खर्थी अनशन करी मृत्यु पामी देवता थयो. देवलोकनुं सुख भोगवी त्यांथी चवीने अहिं उत्पन्न थयो छुं. मारा धर्मगुरु अभयकुमारने घन्य छे, के जेणे दुर रहीने पण मने प्रतिवोध कर्यो.

पछी आर्द्रकुमारे अभयकुमारना दर्शन करवाने उत्सुक थइ पोताना पिताने कहां के, पिताजी, राजगृहनगर जोवानी मारी इच्छा छे. ते सांभळी आर्द्रकराजाए तेने ना पाडीने अटकाव्यो अने ते नाशी न जाय ते माटे तेनी संभाळ राखवा पांचसो सुभटोने तेनी पासे राख्या. तथापि छेवटे आर्द्रकुमार सर्व सुभटोने छेतरी वाहाणमां वेसी आर्यदेशमां आवतो रह्यो, अने ते पत्येकबुद्ध आर्द्रकुमारे आवेलुं आईत्विंब

अभयकुमार उपर मोकली आप्युं. पछी हजु तारे भोग्यकर्म वाकी छै एम कहीने देवताए तेने अटकाव्यो तथापि तेणे साइसथी वत बहण कर्युं.

अन्यदा विहार करतां करतां आर्द्रमुनि वसंतपुर नगरना उद्यानमां आवेला कोइ देवालयमां कायोत्सर्ग करीने रह्या. ए अरसामां वंधुमतीनो जीव ते नगरवासी कोइ श्रेष्टीने घेर श्रीमती नामे पुत्रीपणे उत्पन्न थयो हतो. ते सखीओ साथे एज उद्यानमां रमवाने आवी चडी. सर्व वालिकाओ परस्पर उपहास्यमां कहेवा लागी के, सखीओ, मनगमता वरने वरो, एटले वधी इच्छा प्रमाणे वर धारवा लागी. ते चखते श्रीमती बोली के, हुं तो आ मुनिने वरीश. ते वखते आकाशवाणी थइ के, ' मुग्धे ! तुं योग्यवरने वरी छुं.' एम कहेवा साथे देवताए दुंदुभिना नादपूर्वक त्यां रत्नोनी वृष्टि करी. ते वखते दुंदुभिनी गर्जनाथी भय पामी श्रीमती मुनिने पगे ब-ळगी पडी. आर्द्रमुनि अनुकुळ उपसर्गनो संभव जाणी त्यांथी वीजे चाल्या गया. पछी राजाना पुरुषो ते वृष्टिनुं द्रव्य लेवाने आव्या. तेमने अटकावीने देवताए कहुं के, ए द्रव्य तमारुं नथी, पण ए तो श्रीमतीना विवाहने माटे आप्युं छे. पछी तेना पिताए ते ग्रहण कर्युं. श्रीमतीए ते मुनिनेज वरवानी पोतानी विचार जणाव्यो. पिताए पुत्रीने कहुं के, वत्से ! अमरनी जेम भमता ए मुनि तने शी रीते मळशे ? अने कदि मळशे तोपण घणा मुनिओमां आ तेज छे एम ताराथी केम ओळखाशे ? माटे हवे वीजा वरने वरवं कवुल कर. श्रीमती वोली-पिताजी! आम वोलवं युक्त नथी. नीतिमां कहुं छे के,

#### सकुजल्पंति भृपालाः, सकुद्धदंति सजनाः । सकृत् कन्या प्रदीयंते, त्रीण्येतानि सकृत्सकृत् ॥

" राजाओ एकवारज वोले, सज्जनो एकवारज वदे अने कन्या एकवारज अपाय, आ अण वानां एकजवार थाय छे. " वळी आपे केम ओळखीश एम कहुं, पण हुं तेना चरणना चिन्ह उपरथी तेमने ओळखी काढीश.

पितानी आज्ञाथी श्रीमतीए त्यारथी नित्य मुनिओने दान आपवा मांडचुं. वार वर्ष वित्या पछी ते मुनि फरीने अकस्मात् त्यां आवी चड्या. चरणना चिन्ह उपरथी तेमने ओळली श्रीमती बोली के, हे स्वामी, ते वखते तो मने ऋरनी जेम छोडीने नाशी गया हता, पण हवे क्यां जशो १ पछी आर्द्रमुनि पेली आकाशवाणी संभारी श्रीमतीने परण्या. अनुऋमे तेमने एक पुत्र थयो, ते मोटो थयो एटले आर्द्र कुमारे श्रीमतीने कहुं के, भद्रे, तमारो पुत्र मोटो थयो छे, माटे हवे हुं दीक्षा लहश्च. ते सांभळी श्रीमती रेंटीआनी त्राक लहने रु कांतवा वेठी. मोटा थयेला पुत्रे माताने

पुछयुं के, माता! तमे रेंटीआनी त्राक केम लीधी? श्रीमती बोली, पुत्र! ज्यारे तारा पिता तपस्या करवा जशे, अर्थात् दीक्षा लेशे तो पछी मारे त्राकनुंज शरण छे, एटले के रेंटीओ कांतिनेज पेट भरवुं पड़शे. पुत्र बोल्यो-माता, हुं मारा पिताने वांधी राखीश, जवा नहीं दर्जं. पछी पुत्रे त्राकना सूत्रथी पोताना पिताना पगने वींटवा मांड्या अने कहुं, पिताजी ! में तमने बांधी लीधा, हवे क्यां जशो ी आवुं पुत्रनुं आचरण जोइ आर्द्रकुमारे पोताना पगने वींटेला सूत्रना तंतुनी संख्या करी, त्यारे ते बार बींटा थया. ते प्रमाणे पोते बार वर्ष सुधी घेर रह्या. ज्यारे अविध पूर्ण थयो पुटले ते दीक्षा लड्ड पवननी जेम अमितवद्धपणे पृथ्वीपर विहार करवा लाग्या.

आ अरसामां तेना पिताए रक्षाने माटे मुकेला सुभटो कुमारने शोधता इता, तेओ चोरी करीने पोतानी आजीविका चलावता हता. दैवयोगे मार्गमां आईमुनि तेमने मळ्या. तेमने घर्मीपदेश कर्यो एटले प्रतिवोध पामी ते सर्वेए दीक्षा लीधी. तेमने साथे लड़ आर्द्रकुमार मुनि श्रीवीर प्रभुने वांदवा माटे चाल्या, मार्गमां गो शाळो मळ्यो, ते बोल्यो के-- हे मुनि ! तमे वृथा तप करी कष्ट सहन करो छो, शूभ अशुभनुं कारण तो दैवज छे, ते सर्वत्र प्रमाण छे. कहुं छे के,

> उपक्रमशतैः प्राणी, यन्न साधियतुं क्षमः । दृश्यते जायमानं, तल्लीलया नीयतेर्वलात् ॥

" सेंकडो यह करवाथी पण प्राणी जे साध्य करवा समर्थ यतो नथी, ते दैवना वळथी एक रमत मात्रमां साध्य थइ जाय छे. " आर्द्रकुमार मुनि बोल्या के, आ कहेर्नुं घटतुं नथी. प्रारब्ध-कर्म अने उद्योग वंनेना मळवाथी कार्यसिद्धि थाय छे. "जेम कर्म- पारब्धथी थाळीमां मोजन पाप्तथयुं, पण ज्यांसुधी हाथ मुख तरफ लड़ जाय नहीं त्यांसुधी ते मुलगां पेसे नहीं. " इत्यादि अनेक दृष्टांती आपी गोशाळाने निरुत्तर करी दीथो.

त्यांथी आगळ चालतां आर्द्रमुनि इस्तितापसोने आश्रमे आव्या. ते तापसो कायम हाथीने मारीने तेनुं मांसज खाता हता. तेओ एम मानता के, अनाज विगेरेथी निर्वाह करतां अग्निकाय, वनस्पतिकाय विगेरेना घणा जीवोने मारवा पडे छे, तेथी घणुं पाप लागे, माटे एक मोटो जीव मारवाथी घणा वखत सुधी निर्वाह चाले ने पापथोई लागे. ज्यारे आर्द्रमुनि त्यां आव्या त्यारे तेमणे एक हाथीने पकडीने बांधेली हती. आ मुनिने जोड़ ते हाथी लघुकर्मी होवाथी खीलाने खखेडी मुनिना चरण पासे आव्यो अने मुनिने भक्तिथी प्रणाम कर्यो. मुनिना अतिशय जोइ अने देशना साभ-ळीने ते तापसी प्रतिबोध पाम्या अने तेमणे जैनवाणीनी स्त्रीकार कर्यों. पछी आर्द्रमुनिए तेमने दीक्षा आपी. त्यांथी सर्व परिवार सहित ते वीरमभुनी

पासे आव्या. ते वसते अभयकुमार सिंहत श्रेणिकराजा समोसरणमां आव्या हता. तेमणे आर्द्रकुमार मुनिने हस्ति छोडाववानो वृत्तांत पूछ्यो, त्यारे मुनि वोल्या के, हे राजन्! हाथीने वंधनथी छोडाववो ते कांइ दुष्कर नथी, पण सूत्रना तंतुपासमांधी छुटा थतुं ते दुष्कर छे. श्रेणिके सूत्रतंतु विषे वधारे हकीकत पृछी एटले आर्द्रकुमारे पोतानी वधी वार्त्ता कही संभळावी, अने अभयकुमारनी प्रशंसा करीने तेने धर्माशीष आपी. पछी आर्द्रमुनि सर्व पापने आळोइ पिष्ठकमी, केवळज्ञान पामीने मोक्षने प्राप्त थया.

उपर प्रमाणे आर्द्रकुमार मुनिनां वचनथी जेम हस्तितापसोए हिसा छोडी दीथी, तेम तेमनुं चरित्र सांभळीने प्राज्ञ पुरुषोए हमेशां दया धर्मनो पक्ष करवो.



### व्याख्यान ७३ मुं.

हवे मुनि तथा गृहस्थोने जे हिंसाना स्थान वर्जवा योग्य छे ते कहे छे.

सुखरंष्रमनाच्छाद्य, भणनीयं न किहिचित् । निमित्तं च विकालानां, न वाच्यं कस्यचित्पुरः ॥ १ ॥ उच्चेः स्वरैः निशिथेन, पाठो वज्यं सुबुद्धिभिः । हिंसास्थानान्यनेकानि, इथ्यं ज्ञात्वा त्यजेद्बुधः ॥ २ ॥ व्याख्या.

"मुखनुं छिद्र ढांक्या वगर क्यारे पण भणवुं नहीं अने कोइनी आगळ अना-गत काळना (भविष्यना) फळादेश कहेवा नहीं. वळी वुद्धिमाने पाछली रात्रे ऊंचे स्वरे भणवुं नहीं. आ प्रमाणे अनेक हिंसाना स्थान छे, तेने जाणीने प्राज्ञ पुरुषे त्यजी देवा." प्रथम कह्युं के, मुखछिद्रने वस्त्रादिकथी आच्छादन कर्या शिवाय भणवुं नहीं, तेनुं कारण ए छे के, तेम भणवाथी वायुकाय जीवोनी हिंसा थाय छे. महाभारतमां कहुं छे के, "मुखबिसका छे ते मुखना निश्वासने रोकनारी छे, ते जीवोनी दयाने माटे रखाय छे." ते विषे अन्य मतमां कहे छे के, "हे ब्रह्मन्, अणुमात्र पण असर वोलतां नासिका विगेरेमांथी नीकळता एक श्वासवडे सैकडो सूक्ष्म जंतुओ हणाय छे." ते विषे पूर्वाचार्यों कहे छे के, "चार स्पर्शवाळा भाषा वर्गणाना पुद्रळो श्वास्तिश्वासना आठ स्पर्शवाळा पुद्रळोमां मळी जवाथी आठ स्पर्शवाळा वायुकाय जीवोने हणे छे." वळी कोइनी आगळ ज्योतिष विगेरे उपरथी भविष्य कहेवुं नहीं. ते विषे कहुं छे के, "जे मुनिओ ज्योतिष निमित्तादिवडे भविष्यना असरो कहे, अथवा कौतुक इंद्रजाल विगेरे चमत्कार बतावे, वळी मूतिकर्म विगेरे करे, तेम करवाने भेरे अथवा तेम करनारनी अनुमोदना करे तो ते मुनिना तपनो क्षय थाय छे." ते विशे एक क्षत्रियनो प्रवंध छे.

#### क्षत्रिय प्रबंध-

क्षितिमतिष्ठितनगरमां एक मोषितभर्जुका \* क्षत्रियाणी हती. तेने घर एक मुनि कोइ कोइ वखत आहार छेवाने आवता हता. एक वखते ते क्षत्रियाणीए मुनिने पुछ्युं के, मुनिराज, मारो स्वामी क्यारे आवशे ? मुनि वोल्या नही. पण तेणीए यणो आग्रह कर्यों त्यारे मुनिए विचार्या वगर कही दीधुं के, आजधी पांचमे दिवसे आवशे. दैवयोगे पांचमे दिवसे ते क्षत्रिय आव्यो एटछे मुनिनुं वचन सत्य थयुं. ते दिवसे मुनि आहार छेवाने तेने घर आव्या. एटछे पेली क्षत्रियाणीने अने मुनिने सामसामुं हास्य आव्युं. ते जोइ क्षत्रियने शंका आवी, तेथी हायमां खड्ग लइने उभो थयो अने मुनिने हास्य थवानुं कारण पूछ्युं. त्यारे मुनिए जे यथार्थ हतुं, ते कही आप्युं. एटछे क्षत्रिए परिक्षा करवा माटे मुनिने पूछ्युं के, आ घोडी सगर्भा छे तेने शुं अवतरशे ? मुनिए कर्छं—वछेरी आवशे. तेथी तत्काळ ते क्षत्रिए खड्गथी ते घोडीनुं ऊदर विदार्युं, तेमां वछेरी जोइने ते शंका रहित थयो. आ हिंसाछत्य जोइ मुनिए तत्काळ अनशन कर्युं. पेला क्षत्रिये मुनिने खमाव्या. मुनि काळ करीने स्वर्णे गया. इति क्षत्रिय प्रवंध.

वळी रात्रे मोटे स्वरे पाठ करवी त्यजी देवो. जो कदि कांइ काम पढे तो मंदस्वरथीज बोलवुं. खुंखारों के होंकारों पण रात्रे करवी नही. जो रात्रे तेम करे तो घरमां रहेला घरोळी विगेरे हिसक जीवो जायत थइ मिलका विगेरेना भक्षणनो आरंभ करे अने पढखे पाडोशीओ होय ते जागी पोतपोताना आरंभ करवामां प्रवर्ते. तेमज रसोइ करनारा, घांची, जार, तस्कर, खेडुत, कोलुकार, घंटी फेरवनार, चर-सावाळा, घोबी अने मच्छीमार विगेरे पण परंपराए पोतपोताना कुल्यापारमां प्रवर्ते.

<sup>\*</sup> जेनो स्वामी परदेश गएलो छे एवी.

ते विषे श्रीवीर भगवंते जयंतीना प्रश्नोत्तरमां कहुं छ के, 'अधमीं पुरुएरे सुताज भला अने धर्मी पुरुषो जागता भला' आ विषे नीचे प्रमाणे एक प्रवंध वृद्धोना मुखर्थी सांभळेलो छे.

मच्छीमार चोरनी कथा.

कोइ साधु रात्रे पोताना शिष्योंने पूर्वगत वाचनौ आपता हता. ते प्रसंगमां एक वखते तेमणे पोताना शिष्यने अमुक चूर्ण औषधि विगेरेना प्रयोगथी समुर्छिम मत्स्यादिक जीवोनी उत्पत्ति थाय छ एम कहुं. ते वात त्यांथी चाल्या जता एक चोरी करवा नीकळेला मच्छीमारे सांभळी, अने ते चूर्णनो प्रयोग मनमां धारी लड्ने ते घेर गयो. पछी तेण ते प्रमाणे कर्यु एटले घणां मत्स्योनी जत्पत्ति थइ, तेथी इर्ष पामीने ते माछी नित्ये तेज प्रयोगथी पोताना कुदुंवनुं पोपण करवा लाग्यो. एवी रीते करतां घणो काळ चाल्यो गयो. एक वखते ते विद्याचोर मार्छी ते मुनिनी पासे आव्यो, अने मुनिने नमस्कार करीने वोल्यो के-हे स्वामी, तमारा प्रसाद्यी हुं सहकुटुंव सुखे जीवुं छुं अने ते रीते दुकाळ विगेरे संकटना वखतमां अनेक जीवोनों उपकार थरो. मुनि बोल्या-केवी रीते ? चोरे कहां के-पूर्वे तमे रात्रे शिष्योनी आ-गळ चूर्ण प्रयोगथी जीवोत्पत्ति कही हती, ते मारा सांभळवामां आवी हती, त्यारथी ते प्रयोगवडे हुं सुले जीवुं छुं. ते सांभळी मुनि मनमां पोताना प्रमाददोषनी निंदा करता सता परंपराए अत्यंत पापनी वृद्धि थवानो निश्चय जणावाथी ते मछीमार प्रत्ये बोल्या के-हुं तने वीजो तेथी पण श्रेष्ट उपाय वतावुं ते सांभळ. " अमुक अमुक द्रव्यनो योग मेळवी, एकांते ओरडामां वेसी, तेना कमाड वंध करी, मध्य भागे राखेला जळ विगेरेमां ते चूर्ण नाखवुं एटले सुवर्ण सरखा वर्णवाळा मत्स्यो उत्पन्न थरा. तेनुं भक्षण करवाथी तारुं शरीर पण पुष्ट थरो." ते सांभळी ते माछी पोताने घेर गयो, अने गुरुना कहेवा प्रमाणे चूर्ण तैयार करी ओरडामां पेठो. पछी तेनो प्रयोग करतां तेमांथी एक व्याघ्र उत्पन्न थयो. ते तेनुं भक्षण करी गयो, जेथी ते पापी मृत्यु पामीने नरके गयो अने मुनि ते पापनी आलोचना करी स्वर्गे गया. माटे रात्रे उंचा स्वरथी पढन पाटन न करवुं, ए आ उपदेशनी सार छे.

आ विषे बीजुं पण एक दृष्टांत छ ते नीचे प्रमाणे-

कोइएक श्रावक रात्रिने छेल्ले पोहोरे उंचेस्वरे आवश्यक (प्रतिक्रमण) भणवा लाग्यो. ते नजीक रहेला पाडोशीनी स्त्रीए सांभळ्युं, तेथी थोडी रात्रि शेष हशे एवुं जाणी ते उठी अने अनाज दळवानो समय जाणी दळवा वेठी. तेवामां घंटीना गाळामां रहेलो एक सर्प कचराइ गरो. तेनुं विष सर्व लोटमां प्रसरी गयुं. ते लो-

१ चौद पूर्वीमां रहेली.

टना रोटला खावाथी तेना सर्व स्वजन मृत्यु पामी गया. पेला श्रावके ज्ञानी पासेथी ते पापनी शुद्धि जाणी ते प्रमाणे आलोचना करी अने मृत्यु पामीने स्वर्गे गयो.

आ प्रमाणे हिंसा यवाना अनेक प्रकारों छे ते जिनेंद्र कथित शा त्रोयी तथा पोतानी बुद्धिथी जाणीने जे सुझ पुरुषों तेनो त्याग करे छे ते साश्वत सुखवाळी मोक्ष लक्ष्मीने पामे छे.

इत्यन्दित्वपरिमितोपदेशसंग्रहन्याख्यायामुपदेशमासाद्यंथस्य हि वृत्तौ जीवद्याविषये त्रिसप्ततितमः प्रवंधः ॥ ७३ ॥ अस्टिन्स्य स्टिन्स्य

### व्याख्यान ७४ मुं.

हवे हिंसा अने अहिंसानुं फळ दर्शावे छे. हिंसा निरंतरं दुःख, महिंसा तु परं सुखम् । जाता ददात्यहो सूरचंद्रयोरिव तद्यथा ॥ १ ॥

"हिंसा हमेशां दु:ख आपे छे अने अहिंसा परम सुख आपे छे. ते विषे सूर चंद्रनुं दर्शत छे." ते आ प्रमाणे:—

### सूर अने चंद्रकुमारनी कथा.

जयपुर नामना नगरने विषे द्राष्ट्रं ज्या नामे राजा इतो. तेने स्तूर अने चंद्र नामे ने पुत्रो इता. पिताए ज्येष्ट कुमार स्तूरने युवराजपद आप्युं तेथी पोताने अप-मान थयुं जाणी चंद्रकुमार नगर नहार नीकळी विदेशमां फरवा छाग्यो. एक वस्तते तेणे कोड मुनिना मुखर्थी नीचेना वे श्लोक सांभळ्या—

> सापराधा इति प्रायो गेहिभिः पुण्यदेहिभिः। न हंतव्यास्त्रसास्ताविक पुनस्ते निरागसः ॥ १ ॥ भीनानां वधप्रारंभे छेदः स्वांग्रिलनोऽभवत् । त्यक्ताः शस्त्रेण हिंसां च जातो धीवरधीधनः॥ २ ॥

भावार्यः—" पवित्र देहवाळा गृहस्थे अपराधी एवा पण त्रस जीवोने हणवा नहीं तो निरपराधी जीवोने तो केमज हणवा. कोइ बुद्धिमान् ढीमरे मत्स्यनी वध करतां पोतानी अंगुलीनो लेद थयो ते उपरथी शस्त्रवंडे हिंसा करवीज छोडी दीधी." ते कथा आ प्रमाणे छे:—

"पृथ्वीपुर नगरमां एक ढीमर रहेतो हतो, ते मत्स्य मारवाने इच्छते। नहोतो, तथापि तेना स्वजन वर्गे तेने जाल विगेरे आपीने मत्स्य मारवा वलात्कारे मोकल्यो. ते जालमां मत्स्यो लड्ने आव्यो. स्वजनाए तेने मत्स्य चीरवाने तीक्ष्ण शस्त्र आण्युं. ते शस्त्रथी मत्स्योनो वध करतां तेनी आंगली कपाइ गइ. तेनी वेदनाथी पराभव पामता तेणे चितव्युं के, "हिसाभिय जीवोने धिक्कार छे. कोइने 'मरी जा" एवुं कहेतां पण दु:ख लागे छे तो हिंमा करतां केम न लागे!

ए बखने कोइ गुरु शिष्य नगरमांथी वहार उछे जतां ते स्थानेथी निकळ्या.
तेमणे हाथमां शल्लवाळा पेला माछीने चोथो. ते जोइ शिष्ये गुरुने कृत्युं के, हे भगबन्, आवा पापी जीवो तो कोइ रीने पण तरे एम लागतुं नथी. गुरु वोल्या—वत्स,
जिनेंद्र शासनमां एवो एकांत कदायह नथी. कारण के, अनेक भवोमां संचय करेला
कमींने सन्द्राव अने अध्यात्म ज्ञान सिहत शुभ परिणामवडे प्राणी क्षणवारमां नाश
पमाडे छे. ते विषे कह्युं छे के,—

जं जं समयं जीवो, आवस्सइ जेण जेण भावेण ॥ सो तंमि तंमि समये, सुहासुहं बंधए कम्मं ॥

भावार्थ:-"जे जे समये जीव जे ने भावमां प्रवर्ते छे, तेते समये तेवा तेवा शुभाशुभ कर्म वांधे छे." आ प्रमाणे कही शिष्यने निरुत्तर करीने गुरुए ऊंचेस्वरे आ प्रमाणे एक पद कहां के-"जीववहो महापावो" आ प्रमाणे कही गुरु आगळ गया. ते सांभळी ढीमरे ते पद याद करीने चि नव्युं के, "आजथी मारे कोइ जीवनो वध करवो नहीं"-आवुं ध्यान करतां तेने जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं. तेथी पोते पूर्वे चारित्रनी विराधना करेली तेनुं फळ आ नीच कुळमां जन्म विगेरे मानी ते दीक्षा छेवामां उत्पादन थयो अने अंते शुक्छ ध्यानथी तत्काळ केवलज्ञान पाम्यो. सानिध्यमां रहेला देवनाओए तेनो महोत्सव कर्यो. 'देव दुंदुभिनो' शब्द सांभळी पेळा शिष्ये गुरुने पुछ्युं के, आ श्रेनो शब्द छे? गुरु वोल्या-"वत्स! जो, ते ढीमरने महाज्ञान उत्पन्न थयुं. तेनो देवो महोत्सव करे छे ते संबंधी दुंदुभीनो नाइ छे. हवे तुं त्या जइ तेमने मारा भव विषे पुछ." पछी शिष्य शंका अने विस्मय घरतो सतो त्यां गयो. त्यारे ज्ञानी बोल्या के-"अरे मुनि! शुं विचारे छे, हुं तेन ढीमर छुं, अने द्रव्य भाव हिंसाना त्यागथी मने आ फळ प्राप्त थयुं छे. हवे तुं जे पुछवा आव्यो छे तेनो उत्तर सांभळ-तुं जे वृक्ष\*

<sup>\*</sup> ते वृक्ष आंवलीनुं हतुं.

मींचे जभो छे तेना पत्र जेटला तारा गुरुने भव छे, अने तुं आ भवमांज सिद्धिनेपामनार छे." ते सांभळी शिष्ये गुरुनी पासे जइने ते वात कही, ते सांभळी गुरु नृत्य करी हर्षे पामता सता बोल्या के, अहो आटला गणत्री थइ शके तेटला भवेज मने सिद्धि प्राप्त थशे! खरेखर हुं धन्य छुं अने ते ज्ञानीनुं वाक्य सत्य छे. आ प्रमाणे कही तेमणे त्यांथी आगळ विहार कर्यों. पूर्वोक्त माछी हिंसाने छोडी क्षणमां चरमज्ञानने प्राप्त थयों. तेथीज सर्व व्रतमां अहिंसावतने मुख्य कहेलुं छे. ते सत्यज छे अने तेना गुण वचन द्वारा कही शकाय तेम नयी. आ प्रमाणे गुरुष कहेली देशना सांभळी चंद्रकुपारे अपराधी जीवनी हिंसानो पण त्याग कर्यों. मात्र तेनो राजाना आदेशयी भंग न थाय एटली छुट राखी. आ प्रमाणे वत प्रहण करी तेणे ते नगरना राजानी सेवा करवा मांडी. एक वखते वनमां राजाना सुभटोए कोइ चोरने पकड्यों. राजाए चंद्रकुपारने कहुं के, हे चंद्रकुपार, तुं आ जब चोरने मारी नाख. ते वखत चंद्रे पोताने गुद्ध शिवाय कोइपण प्राणीने मारवानों नियम जणाव्यों. तेथी हर्ष पामी राजाए तेने पोतानो अंगरक्षक (इजुरी) कर्यों अने अनुक्रमे एक देशनो स्वामी वनाव्यों.

अहीं चंद्रकुमारना मोटा भाइ सूरकुमोर युवराज पदवीथी पण असंतुष्ट थइ पराङ्मुल थइने सुतेला पितानी उपर रात्रे शक्षनो महार कर्यों. राजानो घात करी- ने भागतां तेने राणीए जोयों, तेथी 'आ राजघातक चाल्यो जाय छे माटे तेने प- कडो " एवो त्यां कोलाहल थइ पड्यों. घायल थयेलो राजा पोताना पुत्रने ओळ सीने विचार करवा लाग्यों के:—

सौरभ्याय भवंत्येके, चंदना इव नंदनः । कुलोच्छेदे भवंत्यन्ये, वालका इव बालकाः ॥ १॥

भावार्थ—"केटलाएक पुत्रो चंदनना वृक्षनी जेम सुगंधने माटे थाय छे अने केटलाएक पुत्रो वाळानी जेम कुलना उच्छेटने माटे थाय छे."

आ प्रमाणे विचारीने राजाए सूरकुमारने देशपार कर्या अने चंद्रकुमारने बोलावी राज्यजपर बेसार्यो.

शक्तना घानी पीडाथी सूरकुमार उपर रौद्र ध्यान करतो राजा मृत्यु पामीने चित्तो थयो. सूरकुमार फरतो फरतो ते वनमां आव्यो. पूर्वना वैरथी चित्ताए तेने मारी नाख्यो. पछी ते भिष्ठ थयो. तेज वनमां शीकार करतां ते भिष्ठने चित्ताए पुनः मारी नाख्यो. तेना सगासंबंधीओए मळीने चित्ताने पेण मारी नाख्यो. पछी बंने इक्कर थया. परस्पर वैर राखतां ते वंनेने पारधीए इणी नाख्या. मरीने वंने गजेंद्र थया. कोईए तेओने पकडीने चंद्रराजाने अपण कर्या. चंद्रराजानी आगळ पण ते बंने युद्र करवा लाग्या. राजाए सुदर्शन केवलीन तेमना वैरनं कारण पुछयं. एटले केवली

( 90 )

भगवंते तेमने वैर् थवानुं पूर्वोक्त कारण कहुं. ते सांभळी चंद्रराजाए चिंतव्युं के, अहो विचित्र कर्मरुप नटे भजवे छुं आ भवनाटक केवुं छे, जेमां रंक राजा थाय, अने राजा रंक थाय. अढार सागरोपमना आयुण्यवाळो देवता पण क्षणमां खर के श्वान वने छे. महा मोहरूप निद्रावाळा पाणीओ जेनो आश्रय करवाथी संसार रुप कूवा-मां पडेंछे अने सद्गतिना मार्गने जोता नथी तेनुं कारण मिथ्यात्वरुप गाढ अंघका-रज छे. आवा प्रकारना उत्तम चितवनथी वैराग्य पामी पोताना पुत्रने राज्ये वे-साडी चंद्रराजाए चारित्र ग्रहण कर्युं. निरतिचार चारित्र पाळी ते राजिए एकाव-तारी देवपणाने पाम्या. पेला वंने हाथी मरीने पहेली नरके गया.

" जेमने गृहस्थपणामां देशथी पण आद्यवत उत्क्रप्टप्रणामे अंगीकार करीने पाळ्युं तेवा सर्व जीवनी दयामां वत्पर चंद्रकुमार नामे राजापं अनुक्रमे मोक्षसुलने शाम्या."



१ आठमा देवलोक सुधीना देवता त्यांथी चवीने तियंच पण थाय छे.

# स्थंभ ६ हो.

## व्याख्यान ७५ मुं.

हवे मृषावाद नामे बीजुं वत कहे छे.

सूक्ष्मबादरभेदाभ्यां, मृषावादं दिधा स्मृतम् । तीत्रसंकल्पजं स्थूलं, सूक्ष्मं हास्यादिसंभवम् ॥ १ ॥ व्याख्याः

मृषावाद नामे वींजुं वत सूक्ष्म अने वादर एवा वे भेदवार्छ छे. तेमां जे तींक संकल्पथी थाय ते स्थूल ( वादर ) अने हास्य विगेरेथी थाय ते सूक्ष्म. तेमां आवक-ने सूक्त मूनावादने विषे यतना करवी अने स्थूलनो तो अवश्ये करीने त्यागज करवी. कारण के, ते लोकमां पण अपकीर्ति विगरेनो हेतु छे. स्थूल मृषावाद कन्या विगेरे संबंधी असत्यने कहे छे. वीजुं जे अणुवत छे तेमां क्यारे पण असत्य बोलर्जु नही. तेमां पण विशेषे करीने पृथ्वी, कन्या, गाय, धननीं स्थापण अने साक्षीमांती असत्य वोलवुंज नहीं. ते विषे कहुं छे, "कन्या, गाय, ने भूमिसंबंधी असत्य, कोइनी थापण ओलववी ते अने खोटी साक्षी पूरवी ते─ए पांच स्यूल अस-त्य कहेवाय छे. " तेमां कन्यासंबंधी असत्य आ प्रकारे के, जे विवकन्या न होय तेने द्वेषने लीधे आ विषकन्या छे, एम कहेबुं. वली दुःशीला होय तेने रागवडे सुशीला कहेवी, इत्यादि कन्यासंबंधी अलीक असत्य कहेवाय छै. तेमां उपलक्षणथी दासदासी विगेरे सर्व द्वीपदसंवंधी असत्यनो समावेश करवो. इवे गायसंवंधी अस-त्य आ रीते के, अलपदुधवाळीने घणा दुधवाळी कहेवी, घणा दुधवाळीने अलप दुध-वाळी कहेवी ते. आ उपरथी वीजा सर्व चतुष्पद विषे जाणी लेवुं. भूभिसंबंधी अस-त्य आ रीते के, पारकी भूमिने पोतानी कहेवी, उखर (खारवाळुं) क्षेत्र होय तेने जखर वगरनुं कहेर्नुं. ए भूमिसंवंधी असत्य. तेमां सर्वे घर, हाट, मकान विगेरे अपद पदार्थोनुं यहण करवुं. अहि शिष्य शंका करे छे के, उपलक्षणथी आप वीजा द्वीपद, चतुष्पद ने अपद पदार्थोंनुं यहण करवानुं कहोछो तो मुख्य वृत्तिएज ते त्रण विषय असत्यना केम न गणाव्या ? गुरु उत्तर आपे छे के-कन्या विगेरे असत्य लोकमां पण विशेषे निदनीक छे. वळी कन्यादि असत्यथी भोगांतराय द्वेषवृद्धि विगेरे दोषो स्फुट रीते जणाय छे.

वळी कोइए सुवर्ण विगेरेनी थापण मुकेली होय ते ओळववाथी महापाप छागे छे. जो के, थापण ओळववानो अदत्तादानमां समावेश थाय छे पण तेमां 'तें मुकीज नथी ' एम ना पाडवी पडे छे तेथी वचननी प्राधान्यता छे तेथी तेने मृषा-वादमां गणेल छे.

पांचमो भेद ने कूट साक्षी छे ते लेण देण विगेरेमां ने खरो साक्षी होय ते लांच के द्वेप भावधी खोटी साक्षी पूरे तेने घणुंपाप लागे छे, अने तेथी वसुराजानी पेठे वेने भवमां अनर्थनी प्राप्ति थाय छे. नेम वसुराजाने मात्र अज शहना अर्थनी साक्षीमां कूटसाक्षी दोष लाग्यो इतो, ते कथा आ प्रमाणे:—

### वसुराजानी कथा.

शुक्तिमती नगरीमां क्षीरकदंवक नामे एक उपाध्याय रहेतो हतो. तेनी पासे ते खपाध्यायनो पुत्र पर्वत, राजानो पुत्र वसु अने एक ब्राह्मणनोपुत्र नार्द, ए त्रण जण साथे भणता हता. एक वखते तेओ घरनी अगाशी उपर भणतां भणतां थाकी जइने सुइ गया इता, तेवामां कोई वे चारणमुनि आकाशे जतां तेमने देखीने बोल्या के, आ त्रण विद्यार्थीओमां एक स्वर्गगामी छे अने वे नरकगामी छे. आ वचन उपाध्यायना सांभळवामां आव्युं तेथी पाठके तेमनी परीक्षाने माटे प्रातः-का ळे एक एक पिष्टनो कुकडो ते त्रणेने आपीने कहुं के, हे वत्सो, ज्यां कोई जुने नहीं त्यां जइने आ कुकडाने मारी नाखजों। आ ममाणे सांभळी वसु अने पर्वत ना कोई जून्य स्थाने जइ तेने इणीने पाछा आव्या. पण जे ब्राह्मण पुत्र नारद इतो तेणे एदांते जइने विचार कर्यों के, " गुरुए कहीं छे के, ज्यां कोई जुने नहीं त्यां जइने हणजी. तो तेवुं स्थान तो अणे जगतमां पण नथी. केमके सर्वज्ञ अने सिद्ध पुरुपोने शुं अगम्य छे! ज्ञानीने अगोचर कोई वस्तु नथी. वळी आ कुकडो मने जुए छे अने हुं तेने जोडं छुं, तेथी गुरुए जरूर अमारी परीक्षा करवाने माटे आ बताव्युं छागे छे." आ प्रमाणे विचारी ते कुकडाने इण्यावगर अक्षत छइने घेर पाछो आव्यो. गुरुए कहुं के, वत्स! तें मारी आज्ञा ममाणे केम न कर्युं ? ते वोल्यो-भगवन् ! इदयमां विचारो. में आपनां वचन प्रमाणेज कर्युं छे. आम कहींने पछी पोतानो अभिप्राय षयो जगाव्यो. ते सांभळी गुरुए निश्चय कर्यों के, 🥍 नारद दयाने लीघे स्वर्गे जदानों अने पेळा वे नर्कगामी थवाना. तो इवे जेओ नरकमां जवाना तेमने भणा-हीने शुं कर्मे इत्यादि वैराग्य धारण करीने खपाध्याये गुरुपासे दिशा लीधी. पछी क्षीकाए 😝 ग्रंथने स्थाने तेना पुत्र पर्वतने स्थापित कर्यों अने अभिचंद्र राजाना पद् जुपर/वसुकुमार राजा थयो,

एक वसते कोई पार्धिए मृगउपा वाण नाल्युं. ते वाण वचमां स्सिटित थइ गयुं. तेथी पारधीए पासे आवी इस्तस्पर्ध कर्यों एटले त्यां स्फिटिकनी एक शिला जोवामां आवी. पछी तेणे राजानी पासे ते वात कही. राजाए ते शिला मंगावीने पोताना सिंहासन नीचे मूकी, जेथी तेनुं सिंहासन जमीनथी अधर रह्युं होय तेम जणा-च्या लाग्युं. ते जोई लोकोए जाण्युं के, आ राजा सत्यवादी छे तेथी तेनुं आसन अधर रहे छे. अनुक्रमे तेवी प्रसिद्धी लोकमां पण सर्वत्र प्रसार पानी.

एकदा नारद पर्वतने मळवा आव्यों, ते वसते पर्वत विद्यार्थीने भणावतो हतो. तेमां एम आव्युं के, "अजवडे यक्न करवो "तेनो अर्थ पर्वते एवो कहो के, अज एटले वकरों, तेनावडे होम करवों. ते सांभळी नारदे कहां के, रे पर्वत! तुं ए पदनो अर्थ खोटो करे छे. तेनो खरो अर्थ एवो छे के, अज एटले त्रण वर्षनी हांगर के जे जगे नहीं तेवडे होम करवों. गुरुए पण आपणने एमज शीखव्युं छे. माटे अरे बांधव! तुं केम मुली गयों ते सांभळी पर्वते गर्वधी कहां के, हुं कहुं छुं तेज खरुं छे, तेथी जेनुं खीटुं पडे तेनी जिन्हा छेदी नाखवीं. एवी परस्पर प्रतिज्ञा करीं, अने ते विषे वसुराजाने पुछचुं, ने जे वसुराजा कहे ते सत्य मानी छेनुं एम टरान्युं. आ खबर पर्वतनी माताने पडी एटले ते पुत्रना मृत्युथी कंपती वसुराजा पासे गइ अने सर्व वृत्तांत जणावीने वोली के, महाराजा! मने पुत्रदान आपो. वसुराजाए कहां के, माता! सुले जाओं. हुं तमारा पुत्रनो पक्ष करींश. वीजे दिवसे पर्वत अने नारद वसुराजानी पासे परिवार साथे आव्या. राजाए पर्वतनी तरफमां कूटसाक्षी पूरी एटले समिप रहेला देवताए अधर देखातुं ते सिहासन चूर्ण करीं नाख्युं. वसुराजाने मूमिपर पाडी नाख्यों. तत्काळ मृत्यु पामीने ते नरके गयों. नार-दनी देवताओए स्तुति करीं अने अनुक्रमे ते सत्यथी स्वर्गे गयों.

उपरनी कथा सांभळीने प्राज्ञ पुरुषोए सत्यव्यतने विषे हमेशां आदर राखवो. वसुराजाना आढ पुत्रो हता तेमने पण देवताओए मारी नाख्या. पर्वतने नगर जनो-ए धिःकारीने काढी मूक्यो. तेने महाकाळनामना असुरे ग्रहण कर्यो. ते महाकाळनो संबंध आ प्रमाणे छे.

अयोधन नामना राजाए पोतानी पुत्रीनो स्वयंवर रच्यो हतो. ते वखते मा-ताए गुप्त रीते, कन्यानें कहां के, तारे मारा भाइना पुत्र मधुपिगने वरवो. आ खबर त्यां रहेली दूतीनी मारफते सर्व राजाओमां मुख्य एवा सगर राजाना जाणवामां आवी. तथी तेणे पोताना पुरोहितने ते कन्या वरवानो जनाय पुछ्यो. किव अने चतुर एवा पुरोहिते कपट भरेली राजलभणना विवेचनवाळी एक नवीन संहिता वनावीं अने ते वांचवा माटे सभा भरी. तेमां तेणे छक्षणोवडे सगरने सर्वथी उत्कृ-प्ट अने मधुपिंगने सर्वथी नीचों जणाव्यों. तेथी सर्व राजा विगेरे मधुपिंगनुं उपहास्य करवा छाग्या, तेथीं मधुपिंग छज्जा पामीने त्यांथी चाल्यों गयो. पछी पेछी कन्या सग(राजाने वरी. आथी कोघ पामेछो मधुपिंग कष्टकारी तप करी महाकाछ नामे असुर थयों. ते असुर पर्वतने मळ्यों. ते वंनेने पिप्पछाद नामना एक बीजा पुरुषनों मेळाप थयों. ए पिप्पछाद कोण हतो तेनुं वृत्तांत आ प्रमाणेः—

सुलसा अने सुभद्रा नामे वे तापसीओ लोकमां विदुषीं तरीके विख्यात थइ हती. तेओमां सुलसा विशेष पंडिता हती. तेवामां याज्ञवल्क्य नामना कोई तापसे एवो पडह वगडाव्यो के, 'जे मने वादमां जिते तेनो हुं शिष्य थइने रहुं.' आ सांभ-ळी सुलसाए वाद करी याज्ञवल्क्यने जिती लीधो अने तेने पोतानो शिष्य वना-व्यो. पछी ते वंनेने घणो परिचय थवाथी सुलसा सगर्भा थइ. आ खवर सुभद्राने पडी एटले तेणे आवीने तेओने वहु उपालंभ आप्यो अने ते वात सगर राजाने जणावी. राजाना भयथी सुलसा गृप्तपणे पुत्रने जणी एक पिंप्पल (पिपळा) ना वृक्षनीचे छोडी दइ याज्ञवल्क्यनी साथे नाशी गइ. प्रातःकाले सुभद्रा त्यां आवी, तेणे पिपळा नीचे पुत्रने जोयो. ते पुत्र धुधातुर यइ पिपळानुं फळ स्वयमेव मुखमां पडेलुं तेनुं आस्वादन करतो हतो. ते जोई सुभद्राए तेनुं विष्यलाद एवं नाम पाडचुं अने तेने सारी रीते भणाव्यो - सुभद्रा पासेथी पोताना जन्मनी वार्ता सांभळी ते अनार्य पिप्पलादे अनार्य वेद रच्या. तेमां एवी प्ररुपणा करी के, राजाओए अरिष्टनी शांतिने माटे तेमज स्वर्गनी प्राप्तिने माटे पशु, अश्व, हाथी, अने मनुष्य विगेरेने होमी यज्ञ करवी. आ वार्ताने महाकाल असुरे टेंको आप्यो. तेणे एवं विचार्य के, आ पर्वत अने पिप्पलादनां वचनयी राजाओ यहमां हिसा करशे एटले तेओ नरके जइ महावेदना भोगवशे. आ प्रमाणे मारा वैरी सगर विगेरे राजा पण करशे एथी मारा वैरनो वदछो वळी जशे. आवुं विचारी तेणे ते इंनेने कहाुं के, तमे तेवा यज्ञा प्रवत्ति हुं तेमां सानिध्य रहीश. आयी ज्यां ज्यां तेओ यज्ञ करावे त्यां त्यां महाकाल असुर आवी रोग विगेरेनी ज्ञांति करे अने पशु विगेरेने साक्षात् विमानमां रहेला बतावे. आ प्रमाणे नजरे जोवाथी घणा राजाओं विगेरे यह करवा मां आदरवाळा थया. छेवटे तेओए निःशूक थइ मनुष्यनी हिसा पण प्रवर्तावी. एक चलते महाकाले मायाथी मोह पमाडी सगरराजाने सीसहित यज्ञमां होमी दीघो. पिप्पलादे पितृमेघ करी पोताना मातापिताने यज्ञमां होमी दीधा. एवी रीते लोकोमां अनार्य वेद प्रवत्त्या अने आर्यवेद के जे माणवक नामना नि-धानमांथी उद्धरीने पतिदिन जमाडाता श्रावकोने भणवा माटे भरतचक्रीए पूर्वे

चनाव्या हता के जेमां वार वतनां अंगीकाररुप अंगडपर बार तिलक अने त्रण, रतने सूचवनार यज्ञोपाँवतना त्रण सूत्र अने तीर्थंकरची स्तुति विगरे प्रतिपादन करेल छे ते बेदनी प्रवृति वंध पडी.

उपर कहा प्रमाणे वसुराजा, पर्वत अने पिप्पलाद विगेरे असत्यवादयी अधमगंतिने पाम्या, तेनो दाखलो हृदयमां धारण करीने आत्महितेच्छु प्राणीओए

असत्यवाद्नो त्याग करवो.



### व्याख्यान ७६ मुं.

इवे असत्यना भेद कहे छे.

अभृतोद्भावनं चाद्यं, दितीयं भूतनिह्नवम् । अर्थीतरं तृतीयं च, गहीनाम चतुर्थकम् ॥ १ ॥ एतचतुर्विधासत्यं, श्रमादिदुः खहेतुकं। ज्ञात्वानृतं व्रतं याह्यं, येनातिसौख्यवैभवम् ॥ २ ॥

#### <u>ज्या</u>ख्या

असत्य चार प्रकारनुं छे, तेमां पहेलुं असत्य असूतोद्घावन नामे छे एटले आत्मा सर्वगत छे अथवा स्यामाक नामनुं खडधान चोला जेवुंज छे. आम जे कहेर्नुं ते अभूतोद्भावन असत्य वीजुं भूतानिन्हव असत्य एटले छती वस्तुने निपेधवी, जेमके आत्मा नथी, पुण्य पाप नथी एम कहेबुं इत्यादि. त्रीजुं अर्थीतर असत्य एटले जे पदार्थ होय तेने चीजो कहेवो. जेम गायने अश्व कहेवो. चोंधुं गृही असत्य एटले निंदायी असत्य कहेतुं. ए गृही असत्य त्रण मकारनुं छे. पहेलुं सावद्य व्यापारमां पवर्चावनुं, जेमके क्षेत्र खेड, क्षेत्रनी जमी-नने बाळी दे विगेरे कहेवुं. चीजुं अप्रिय कारण, एटले काणाने काणी कहेवी ते. त्रीजं आकोशरूप एटले कोईने तिरस्कारथी कहेवुं के, अरे निर्मुख! अरे भानवगरना ! इत्यादि आ प्रमाणेना असत्य बोलवाथी प्राणीने नारकी विगेरेनां दुःखो प्राप्त थाय

छे. ते विषे योगशास्त्रमां छले छे के, "ने प्राणी मृषावाद बोले छे, ते निगोदमां, तिर्ये चमां अने नारकीमां उत्पन्न थाय छे. परस्ती भोगवनार अने चोरी करनारने पाप मुक्त थवानां उपाय छे, पण ने असत्यवादी छे तैने कोई पण उपाय नथी." एथी तेना त्यागरूप वीजुं अणुत्रत यहण करवुं के नेथी मुख संपत्तिनी प्राप्ति धाय. ए विषे श्रीकांत श्रेष्टीनुं दृष्टांत छे ते आ प्रमाणे—

#### श्रीकांत श्रेष्ठीनी कथा.

राजग्रह नगरमां श्रीकांत नामे एक श्रेष्टी इतां. ते दिवसे व्यापार करे अने रात्रे चोरी करे. एक वखते द्वादशवतने धारण करनार जिनदास नामे कोई श्रावक त्यां आव्यो. श्रीकांत बोटे भोजनने माटे तेने आमंत्रण कर्युं. जिनदासे कहुं के, जेनी आजीविकाना प्रकार मारा जाणवामां न होय तेने घेर हुं भोजन करतो नथी. श्रीकांते कह्युं, हुं शुद्ध व्यापार करूं छुं. जिनदासे कह्युं, पंण तमारा घरखरचप्रमाणे तमारो व्यापार जोवामां आवतो नथी माटे सत्य होय ते कहो. पछी श्रीकांते जिन-दास पारकुं गुह्य मगट करे तेम नथी एवी खात्री थवाथी पोताना व्यापारनी, अने चोरीनी सत्य वात कही. त्यारे जिनदासे कहां, हुं तमारे घेर भीजन छड्श नहीं, कारण, मारी बुद्धि पण तमारा आहारथी तमारा जेनी याय. श्रीकांते कहुं, चौरीना त्याग विना जे तमे कही ते हुं धर्म करुं. जिनदासे कहुं के, त्यारे तमे प्रथम असत्य वील्या इता, तेम इवे असत्य वोलवुं नहीं, ते वत ग्रहण करों. असत्य विषे कहां छे के, "ताजवामां एक तरफ असत्यनुं पाप राख्युं अने वीजी तरफ वीजां वधां पापो राख्यां, तोपण असत्यनुं पाप अधिक थयुं." जे कोई शिखाधारी, मुंडी, जटाधारी, दिगंबर, के बलकलधारी यइ लांबा बखत तपस्या करे ते पण जो मिथ्या बोले तो ते चंडालयी पण निद्वा योग्य थाय छे. वळी असत्य अपतीतिनुं मूल कारण छे. अने सत्य विश्वासनुं मूळ कारण छ तथा सत्यनुं अचित्य महातम्य छे. लोकीकमां पण कहेवाय छे के, द्रौपदीए सत्य वोलवाथी आम्रवृक्षने नवपञ्चवित कर्युं इतुं. ते वार्ता नीचे प्रमाणे छे:-

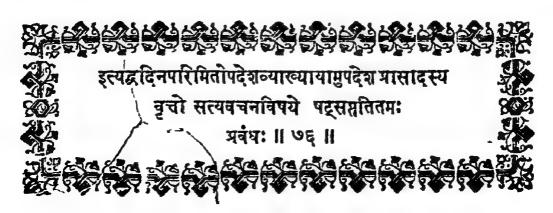
हस्तिनापुरना राजा युधिष्ठिरना उद्यानमां माघ मासने विषे एकदा अठ्या-शी हजार ऋषिओ आव्या. राजाए तेमने भोजनने माटे निमंत्रण कर्युं. त्यारे तेओ बोल्पा के हे राजा, जो तमे आम्रासधी भोजन करावो तो अमे जमीशुं, नहीतर नहीं जमीए. ए सांभळी राजा युधिष्ठिर चिंतामां पड्या के, आ आम्रनी ऋतु नथीं तो अकाले आम्रफळ शीरीते मळी शके. तेवामां अकस्मात् नारद मुनि आवीं चड्या. तेणे राजानी चिंना जाणीने कह्युं के, जो तमारा पटराणी द्रीपदी सभामां आवी पांच सत्य बोले तो अकाले पण आम्बवृक्ष फळे. राजाए ते वात अंगीकार करी द्रौपदीने सभामां बोलाव्यां. नारदे सतीने पुछयुं के, दे सती, पांच पतिथी संतोष घरावनारां एवा तमे सतीपणुं, संबंध, शुद्धपणुं, पतिमां प्रेम अने मनमां संतोष ए पांच बावत संबंधी जे सत्य होय ते कहो ? द्रौपदी असत्यथी भयपामीने जे सीओनुं गुहा हतुं ते सत्य रीते कहेवां लाग्यां. " हे मुनि, रूपवान्, शूरवीर अने गुजी एवां मारे पांच पतिओं छे तथापि कोईवार मारुं मन छहामां जाय छे. हे नारद, ज्यां सुधी एकांत, योग्य अवसर अने कोई मार्थना करनार पुरुष मळे नहीं त्यां सुधीज स्तीओनुं सतीपणुं छे. स्वरूपवान पुरुष, पिता, भ्राता के पुत्र होय तो पण वेने जोईने काचा पात्रमांथी जलनी जेम ल्लीओनी योनी भीजाया करे छे. हे नारद! जेम वर्षा अरुतुनों समय कष्टदायक छे तथापि आजीविकानुं कारण होवाथी सर्वने बहालो लागे छे तेम भर्ता भरणपोषण करे छे तेथी स्त्रीने वहालो लागे छे, कांइ मेमथी वहालो स्नागतो नथी. काष्ट्रवेडे अग्नि तृप्त थतो नथी, सरिताओथी समुद्र तृष्त थतो नथी अने सर्व प्राणीओथी यमराज तृष्त थती नथी, तेम पुरुषोथी स्त्री तृष्त थती नथी. हे-नारद, स्त्री अग्निना कुंड समान छे अने पुरुष घीना कुंड समान छे तेथी उत्तम, जनोएं स्थिनो संसर्ग छोडी देवो." आ प्रमाणे द्रौपदी पांच सत्य बोली तेमां प्रथम सत्ये आंवाने अंकुर थया, वीजे सत्ये पछव थया, त्रीजे सत्ये टीसीओ थइ, चोथे सत्ये मंजरी थइ अने पांचमे सत्ये पाकां मधुर फळ थइ गयां. ते जोइ सर्वे सभासदो मशंसा करवा लाग्या. पछी ते आचना रसवडे युधिष्ठिरे सर्व मुनिओने पारणुं कराव्युं,

आ प्रमाणे सत्य वचनना मिहमा लोकमां अने शाल्लमां वर्णवेलो छे. एथी हे श्रीकांत शेढ! तमे पण ते सत्यवत स्वीकारो. आ सांभळी श्रीकांते सत्यवत स्वीकारों. आ सांभळी श्रीकांते सत्यवत स्वीकारों. आ वा वाविज्ञावित पालकों. श्रीकांते कधुं के, राज्य जाओ, लक्ष्मी चाली जाओ, अने आ नाशवंत प्राण पण जाओ, परंतु मारी वाचा न जाओ. आवुं नीतिनं वचन छे तेथी में वत लीधुं छे तेनो हुं कदी पण मंग करीश नहीं.

हवे श्रीकांत शेंडे आ वत ग्रहण कर्यु तथापि तेनी चोरीनो स्वभाव तो गयो न होतो. तेथी एक वखते श्रीकांत शेंड चोरी करवा गयो. त्यां मार्गे नगरचर्चा जीवा निकळेला श्रेणिक राजा अने अभयकुमार मळ्या. तेमणे श्रीकांतने पुळ्युं के, तुं कोण छुं? तेणे कह्युं, हुं पोते छुं. फरी पुळ्युं के, तुं क्यां जाय छे ? श्रीकांते कह्युं के, राजाना भंडारमांथी चोरी करवाने जांच छुं. पुनः पूळ्युं के, तुं क्यां वसे छे ? श्रीकांते कह्युं के अमुक पाडामां, वळी पूळ्युं के तारुं नाम शुं ? श्रीकांते कह्युं के, मारुं नाम श्री-कांत छे, ते सांभळी वंने आश्रय पाम्या के, चोर आवी रीते साचुं कहे नहीं, माटे

आ चोर जणातो नधी. पछी तेओ त्यांथी आगळ चाल्या. पाछा वळतां पेलो श्री-कांत राजाना भंडारमांथी पेटी छड्ने जती इतो तेने पाछा श्रेणीक अने अभयकुमार मळ्या हेणे पुछ्यूं के, आ शुं छीशुं छे ? श्रीकांते कह्युं के, राजाना भंडारमांथी आ रत्ननी पेटी लड़ने बेर जाऊं छुं. आवुं तेनुं वाक्य सांभळी तेओ राजमहेलमां गया. प्रातःकाळे भंडारीए भंडारमां चोरी धयेळी जाणी वीजी एण केटलीक वस्तु आघी पाछी करीने पछी पोकार करी कोटवालने तिरस्कार साथे भंडारमां चोरी ययानं कहुं. ते वातनी राज्यने खबर थइ एटले तेणे भंडारीने वोलावीने कहुं के, कोश्रमांथी क्युं कुं गयुं छे? भंडारीए कहुं के, रत्ननी दश पेटीओ गइ छे. पछी राजाए मंत्री सामं जोइ पेला श्रीकांतने वोलाव्यो अने पृछयुं के, रात्रे तें शुं चांगु छे ? ते पृछ-त्तांज श्रीकांते जाण्युं के, रात्रे जे वे जण मल्या हता तेज आ छे. तेथी तेणे कहुं के, स्वामी, तमे यूं भूली गया. तमारा देखतांन हुं मारी आजीविका माटे एक पेटी लड़ने जतो हतो. श्रीणक राजाए पुछर्युं के, अरे चोर ! तुं मारी पासे पण साचुं चोल्दां केम भय पामतो नथी? श्रीकांत वोल्यो के,-" महाराज! प्राज्ञ पुरुपोए प्रमान द्यी पण असत्य वोछ्तुं न जोइए, केमके असत्य वोल्वाथी प्रचंड पवनवडे वृक्षनी जेम कल्याण ( सुकृत ) नो भंग यह जाय छे. वळी कदि तमे क्रोध पामो तो आ-स्रोकमां एक भवना मुखनो नाश करो, पण जो सत्यवतनो भंग करं तो अनंत भव-मां मने दुःख शाप्त थाय. " आ ममाणेनां तेनां वचनो सांभळी राजा श्रेणिके तेने शिक्षा दीधी के, जेवुं आ बीजुं बत पाळे छे, तेवी रीते वीजां पण वत पाळ. श्रीकांते ते स्वीकार्युं. एटले राजाए ते जुना भंडारीने रजा आपीने ते पदवी उपर श्रीकांतने राख्यो. अनुक्रमे वे त्रिश्रळानंदन (महावीर स्वामी ) ना शासननो श्रावक ययो.

आ प्रमाणे श्रीकांत चीरे जिनदास श्रावकना वाक्यथी दृढतावडे सत्यवचन रूप बीजुं व्रत लीधुं तेवुं पाळ्युं तो तेथी तेणे आलोकमांच इष्टफल प्राप्त कर्युं. तेथी भव्य प्राणीओए जरूर सत्यवत ग्रहण करतुं.



# व्याख्यान ७७ मुं.

ह्वे ए बीजा बतना पांच अतीचार कहें छे. एतइतप्रयन्नस्य, त्याज्यं मिथ्योपदेशनम् [। अभ्याख्यानमनालोज्य, ज्याचक्ष्यं नैवकस्यचित्॥ १॥

#### व्याख्या

ए बीजुं वत जे असत्य न बोलवुं ते जेणे अंगीकार कर्युं होंच तेंवा पुरुषे मि-ध्या उपदेशनो त्याग करवो, एटले असत् उपदेशने छोडी देवो, अर्थात् कोईने पीडा याय तेवुं वचन न कहेंचुं, एवां वचनने असत्यज समजवुं, जेमके 'आ गश्रेडा अने उंट उपर वधारे भार नालो,' 'आ चोरने मारी नालों' एवां बचनों न कहेवां. सत्यः शब्दनो अर्थ व्युत्पत्तियी एवो थाय छे के 'सद्भ्यों हितं सत्यं' एटले जे उत्तम पुरुषने हितकारी ते सत्य. तेथी बीजानी हिंसा करवा ह्रप वाक्य सत्य होय तोपण के अहितकारी होवाथी असत्य समजवुं. तेने माटे कह्युं छे के,

न सत्यमपि भाषेत । परपीडाकरं वचः॥ लोकेपि श्रुयते यस्मात् । कौशिको नरकं गतः॥

"बीजाने पीडा थाय तेवुं वचन सत्य होय तोपण बोछवुं नहीं. ते विषेष्ठ छोकमां एम संभळाय छे के, कौशिक नामनो तापस तेवुं बचन बोछवाथी नरके ययो हतो." तेनी कथा नीचे ममाणे:—

# कौशिक तापसनी कथा-

कीशिक नामनों एक तापस छोकमां सत्यवादी तर्रीके मख्यात थई फरतो हतो. एक वलते एवं बन्युं के, केंटलाक चोर कोई गामने छुंटी ते तापसनी पासे थईने वनमां नाशी गया. ते चोरोनी पछवाडे रहाको पगीरे पगीरे त्यां आव्या. तेमणे कौशिक मुन्तिने जोईने पुछ्युं के, मुनिराज! तमे सत्यवादी छो माटे सत्य कहो, चोर कमे मार्गे गया? तापसे विचार्यु के, "जे साचुं पुछे तेने असत्य कहेवाथी मोटुं पाप छागे छे अने तेवुं पाप एक इरणीए पण माथे छीधुं नहतुं." आवुं विचारी ते तापसे चोर छोकोनुं स्थान बताव्युं. एटले तेओए त्यां जइ चोरोने मारी नाख्या. ते पापथी कौशिक मुनि नरके गयो.

<sup>?</sup> आ इरणीनी कथा लौकिकपुराणमां छे.

वर्ळी एक एवी वार्ता पण छे के, एक ज्ञानी मुनि वनमां तपस्या करता हता. त्यां एक वस्ते कोई पारिधना त्रासथी मृंगला नाजी तेनी पासे थइने वनमां चाल्या गया. पारिथए आवी तेमने पुछ्युं के, अहिंथी मृग क्यां गया ? द्याळु मुनिए विचारीने कह्युं के, जे जुवे ते वोले नहीं, अने जे वोले ते जुए नहिं. आ प्रमाणे वारंवार घोलता सांभळी ते पारिथ विचारवा-लाग्या के, आ तापस तो लोकवहिर्मुल जणाय छे, माटे तेने पुछ्वाथी शुं वंळवानुं छे. आम कही तेओं 'त्यांथी चाल्या गया अने मृगला वची गया तथी मुनि स्वर्गे गया.

आ प्रमाणे प्रमादवंडे परने पीडाकारी वचन वोल्युं ते पहेलो अतिचार छे अथवा युद्धन माटे अनेक प्रकारना प्रपंच शिलडाववा ते पण प्रथम अतिचार कहेवाय छे.

इति प्रथम अतिचार.

इवे बीजो अतिचार करें छे. जे विचार्या वगर जुटुं आळ चडाववुं अथवा अछतां दोपनुं आरोपवुं, जेम कोईने कहेवुं के, ' तुं चोर छे, तुं व्यभिचारी छे ! ते यीजो अतिचार छे. माटे आ प्रमाणे कोईने कहेवुं नहीं. बीजा एम पण करें छे के, तदन खाटुं आळ चडाववुं अथवा कोईनुं एकांत रहस्य जनसमूहमां उधाडुं करवुं. जेमके, फाई वृद्ध स्त्रीने कहेवुं के, तारो पति अन्य मुख्य तक्णीमां आसक्त छे एवुं शिखवीं कल्लह उत्पन्न करवो, अथवा कोई स्त्री पुरुपनुं रहस्य (एकांते गुप्तपणे थयेल बीना) हास्य रूपेन मात्र प्रयट करे, तीन संबलेश पडे नहीं. ते विषे सूत्रमां पण कहां छे के, जे सहसा अभिनाप ( आळ) आपवुं ते बीजा नतमां निषिद्ध छे, ते जाणतां छतां आ-चरे तेनुं तो वत भंग याय अने जे अजाणे आचरे तेने अतिचार लागे. आ प्रमाणे बीजो अतिचार छे.

इति द्वितीय अतिचार.

शास्त्रमां कहाँ छे के, "कोईने आळ आपवाथी जीव गघेडो थाय छे, निंदा कर-षाथी श्वान थाय छे, परसी भोगववाथी छिम थाय छे, अने मत्सर (द्वेपभाव) राख-षाथी कीडो थाय छे. " वळी कहुँ छे के—जे दूपण तरफ दृष्टिज करे नहीं ते जत्तम, ले सांभळे जाणे पण मकाश न करे ते मध्यम, जे दूपण जोईने तेनीज पासे कहे ते अधम अने जे सर्व देकाणे अकाश कर्या करे ते अधमाधम. " हवे विचार्या वगर कोईने आळ चढाववा छपर एक दृष्टांत कहे छे—

कोई गाममां सुंद्र नामे एक श्रेष्ठी हतो. ते घणोदाता होवाथी लोकप्रिय थह एड्यो हतो. कहुं छे के, "जे दातार होय ते प्रजाने प्रिय याय छे, कांई धनाट्य प्रिय थतो नथी. लोको वरसादने चाहे छे, कांई समुद्रने चाहता नथी." आवा

१ लोकनी रीतभातने नहिं जाणनारा.

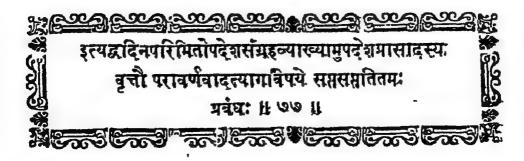
दाता शेठनी मात्र एक ब्राह्मणी निंटा करती इती. ते कहेती के, जे प्रदेशीओ आवे छे, ते आ शेठने धर्मी जाणी तेने घेर द्रव्यनी थापण मूके छे अने तेओ परदे-श्रमां जहने मृत्यु पामे छे. तेनी दोलत शेठने रहे छे तेथी शेठ घणो. हर्प पामे छे, माटे एनुं बधुं कपट छे. एक वखते कोई कापडी ते शेठने घेर आव्यो. ते सुधावडे वह मीडित हतो तेथी तेणें खावानुं माग्युं. ते समये शेठना घरमां काई भोजन के पेय पदार्थ इता नहीं, तेथी दयाने लीधे शेठे कोई आहीरनी स्नीने घरथी जाश लावी आपी. ते पीतांज ते कापडी मरण पाम्यो. कारण के, ते छाशनी दोणी माथापर राखी ढांक्याविना आहीरनी स्त्री कांईक जती हती, तेवामां एक सर्पने लड़ आकाशे समळी उडती इती. ते सपना मुखमांथी झेर नीकळीने ते छाशमां पड्युं इतुं. इव मभाते ए कापडीने मरेलो जाणी पेली वृद्धा बाह्मणी खुशी थइ सती कहेवा लागी के, जुवो, आ दातारनुं चरित्र! तेणे द्रव्यना लोभथी वीचारा कापडीने विष आपीने मारी नाल्यो. ए समये ते कापडीना मरवाथी जे पापरुप इत्या प्रगट थइ ते स्त्रीरूपे भमती इती अने विचारती हती के, हूं कोने छागु पडुं, आ दाता तो अति शुद्ध भनवाळी छे, तेनो आमां कांई दोष नथी. वळी सर्प तो पराधीन हतो अने तेने लड़ जनारी समळी तो सपैनो आहार करनारीज छे. तेमज आ आहीरती स्त्री तो तदन अज़ाणी छे. इवे हुं कोने व ळगुं ? आवुं विचारती फरती इती ते पेळी निंदा कर-नारी बाह्मणीने लागु पडी. कारण के शेटने खोढ़ें आळ देवाथी खरी रीते तेज दोषवान् इती. इत्याना स्पर्शथी ते स्त्री तत्काळ स्याम, कुवडी अने कुष्ट रोगिणी थइ गइ. सर्व तेनी निंदा करवा लाग्या. कहां छे के, '' माता पोताना वाहाला बाळकनी विष्टा फुटेला घडानी टीववडे ले छे, पण दुर्जन माणस तो पोताना कंट, तालु अने जिं-न्हावडे लोकोनी निंदा करवाने मिपे तेनी विष्टा ग्रहण करे छे. एथी दुर्जने तो मा-ताने पण इरावी दीधी. " उपर कहेला ब्राह्मणीना दृष्टांतथी एटलुं समजवुं के, कोईनो पण अवर्णवाद छोक समक्ष बोछवो नहीं. तो पछी राजा, अमात्य, देव अने गुरुना अवर्णवाद विषे तो शुं कहेवुं. तेमां पण साधु मुनिराजना अवर्णवाद बोलवाथी भवांतरमां नीचगोत्रनी तथा कलंकनी प्राप्ति थाय छे. कहुं छे के, "पूर्व भवमां मुनिने आळ आपवायी प्राणीने सीता सतीनी जेम कलंक प्राप्त थाय छे अने अनंत दुःख पामे छे, " तेनी कथा आ प्रमाणे छे-

## वेगवतीनी कथा.

आ भरतक्षेत्रने विषे मिणालकुंड नामना नगरमां श्रीमृति नामे पुरोहित रहेतो हतो. तेने स्रस्वती नामे स्नी हती. तेओने वेगवती नामे एक पुत्री थइ हती.

एक वखते ते गाममां कोई मुनि आव्याः ते उद्यानमां कार्योत्सर्गः करिने रहाः स्रोकोः तमने वांदवा अने पुजवा जवा लाग्या. ते जोई खोटी इर्पा करनारी पुरोहितनी पुत्री वेगवती लोकोने कहेवा लागीं के, अरे, आ मुंडो तो पाखंडी छे, बाह्मणोने छोडी-ने तेने शा माटे पुजी छो? आ साधु तो कोई रमर्गीनी साथ कीडा करतो मारा जोवामां आव्यो हतो. आ प्रमाणे तेणें साधुने खोंटुं आळ दीधुं. ते सांभळीं केटला-एक मुग्य लोको ते मुनि पासे जतां अटकी गया. आ खबर मुनिने थया एटलें तेमना मनमां घणुं लोटुं लाग्युं. तेमणे चितव्युं के, माराः निमित्ते जिनशास्त्रनि हिलणाः थवीं न जोईए. आवुं घारीं तेमणें अभिग्रह कर्यों के, ज्यांसुधी मारा उपरथी आ कलंक उतरे नहीं त्यांमुनी मारे आहार पाणी छेत्रां नहीं. आवीं मातिहा करीने तेओ कायोत्सर्गमां रहा। आवी दह मतिशाथी श्वासननी अधिष्ठायक देवी तेमने सा-निध्य थया. तत्काळ तेणे पुरोहितनी पुत्री वेगवतीने गरीरे तीव वेंदना उत्पन्न करी. आथी वेगवतीने घणो पत्रात्ताप थयो. तेथी तेणे ते मुनिनी पासे जइ सर्वे छोकोंनी समक्ष क्षमा मागी अने कहुँ के, हे भगवन्, में मात्सर्यथी अरपनी उपर लोटूं आळ चडाव्युं छे, ते समा करो. एम कहीने ते चरणमां पडी. तेनी अंतरंग पश्चात्ताप जोई शासनदेवीए तेने साजी करी. पछी ते धर्मदेशना सांभळी दिशा लड़ने सौधर्म देव-लोकमां देवी थइ. त्यांथी चवीने ते जनकराजानी पुत्री सीता थइ. सीताना भवमां पूर्वे मुनिने मृषा आळ चडाववाना पापथी तेने कलंक माप्त थयुं. पेला मुनि तो कलंक मुक्त यह लोकोमां अतिशय पूज्य यया.

आ प्रमाणे वेगवतीनी कथा सांभळीने सर्व भन्य प्राणीओए सर्वेदर अवर्ण-वाटनो त्याग करवो, अने वीजानो अवर्णवाद कोई करे तो ते सांभळको पण नहीं. ए प्रमाणे करवाथी प्राणी सर्व जननी प्रसंसानुं पात्र थइ सम्बक् प्रकारे सद्धर्मने योग्य थाय छे.



# व्याख्यान ७८ मुं.

हवे बाकीना मृषावादना अतिचार कहे छे. विश्वासेन स्थिता ये च । तेषां मंत्रप्रकाशनम् । अन्यस्मै भाषणं ग्रह्म । कृटलेखश्च पंचमः ॥ १ ॥

#### च्या ख्या

जे मित्र स्नी विगोरे परेताना विश्वास उपर रहेला होय तेमना ग्रप्त विश्वारने सीजानी प्रासे मगट करवा, जो के ते सत्य कहा छे तेथी अतिचार लाबवो जोईए नहीं, तथापि तेमना ग्रप्त विश्वार जाहेर करवाथी लज्जाने लीधे किंद नेओनुं पृत्यु विश्वार यवा संभव छे, तथी ते परमार्थक्षे असत्य (प्रुपा) कहेनाय छे, पाटे ए त्रीजो सृपाहादनो अविचार छे.

#### इति तृतीय अतिचार-

हवे चोया अतिचारमां आछित तथा चेष्टाथी कोईनुं गृह्य जाणी वीजाने कही देवुं. ते सत्य छतां असत्य छे एम जाणवुं. जेमके, 'अमुक माणस भेगा थइने राजानी विरुद्ध विचार करे छे" आवुं कहेवाथी तेने मोटी हानि थवा संभव छे. अहि कोई शंका करे के, जीजा अने चोथा अतिचारमां शो भेद छे। जेना उत्तरमां कहेवानुं के, जीजामां कोईनो ग्रुप्त विचार के जे विश्वासथी पोताने कहेवामां आव्यो होय जेने जनसमूह आगळ खुछो करवो ते अने चोथामां आछिति तथा चेष्टा विगेरेथी कोईनुं ग्रुह्म जाणी छहने तेने खुछुं करवुं हे. आ ममाण जीजा अने चोथा अतिचारमां भेद नहे छो छे.

हवे कोइनो ग्रप्त विचार खुलो करवाथी जे दोष थाय ते कहे छे.

" बुद्धिमान पुरुषे कोईनुं गुह्य वाक्य मगट करवुं नहीं." जेम मर्भ कहेवाथी एक चिणकने स्त्री मरण संवंधी दुःख थयुं हतुं. ते कथा नीचे ममाणे छे:—

#### पुण्यसारनी कथा-

वर्णपुर नामना नगरमां पुण्यसार नामे श्रेष्ठी रहेतो हतो. एक वसते ते पोतानी सीनुं आणुं वाळवा सासराने घर मयो. ते स्वी कोई वीजा पुरुषसाथ रागी थये-छी हती तथी जवाने आनाकानी करती हती. तथापि पुण्यसार शेठे तेने हठ करीने स्वीधी. मार्थमां ते विणक त्याची थवाथी कोई कुवाउपर पाणी भरवा गयो. ते कुवा-मांथी जळ खेंचतो हतो एवामां तेनी पछवाडे रहेळी स्वीप तेने कुवामां नाखी दीधो,

अने पोते पाछी पिताने घर आवी. पिताए तरतमांज पाछी आववानुं कारण पुछ्युं एटले तेणीए कहुं के, "मार्गमां मारा पितने चोरोए छुंटी छीघो अने तेने मार्या हो के शुं थयुं हो तेनी मने खबर नथीं. हुं तो नाशीने अहिं आवी छुं." पछी ते स्त्री पितृगृहमां रही सती स्वेच्छाए वर्त्तवा छागी.

अहि पुण्यसार कुवामां थोर्ड जळ होवाथी उपरज रह्यो. तेने कोइ मुसाफरोए खेंचीने वहार काट्यो. ते फरीवार पाछो श्वसुर गृहे गयो. सर्व लोकोए मार्गनी वार्ता पुछी त्यारे तेणे कहां के, मने चोरोए लुंटी लीधो पण जीवतो मुक्यो अने मारी श्वी नाशीने अहि आवती रही ते सारुं थयुं. आ प्रमाणे तेणे पोतानी स्वीनं गुह्य (मर्म) ढांकीने वार्त्ता कही, तेथी ते स्वी तेनापर विशेष रागी थइ. पछी तेने लड़ने ते विणक घेर आव्यो. गाढ प्रेमी थयेला ते दंपतीने एक पुत्र थयो. अनुक्रमे पुत्र मोटो थयो. एक वखते पुण्यसार शेठ भोजन करतो हतो तेवामां प्रचंड पवननो दं-टोळीओ आववाथी तेना भाणामां रज पडवा मांडी, त्यारे स्वीए आवीने पोताना वस्ननो छेडो आडो राख्यो. ते वखते पुण्यसारने तेनुं पूर्व चरित्र याद आव्युं तेथी कांइक हास्य थयुं. पुत्रे एकांते जईने पिताने हास्यनुं कारण पुछ्युं. पुत्रनो घणो आग्रह थवाथी पिताए तेनी पासे तेनी मातानुं पूर्व चरित्र कही दीथुं.

एक वखते पुण्यसारना पुत्रनी स्त्री तेना पति आगळ पोतानी स्त्री जाति माटे गर्व करती हती ते वखते पुत्रे पोतानी मातानुं चित्र तेनी आगळ जणादीने कहुं के, तमारी स्त्री जातिने धि:क्कार छे. नीतिमां कहुं छे के,

नितंबिन्यः पतिं पुत्रं, पितरं भातरं क्षणात्। आरोपयंत्यकार्येपि । दुर्वृत्ताः प्राणसंशये ॥

" दुराचरणी खीओ पति, पुत्र, पिता अने आताने पण प्राणसंशयवाळा अकार्यने विषे क्षणवारमां नाखी देखे." तेवी स्त्रीओमां कयो पुरुष प्रेम वांधे.ते विषे नीतिशास्त्रमां कहां छे के,

> वंचकत्वं नृशंसत्वं, चंचलत्वं कुशीलता । एतेनैसर्गिका दोषा । यासां तासु रमेत कः ॥

"वंचकता, कुरता, चंचळता, अने कुशिळपणुं एटलातों जे स्ती जातिमां स्वामा-विक दोप छे, तेवी स्त्रिओसाथे कोण मीति वांधे!" आवधुं सांभळी ते स्त्रिमीन करीने वेसी रही. अन्यदा सासु वहुंने परस्पर कलह थयो. एटले एक वीजाना मर्मनी वा-तो जवाडी करवा मांडी. ते मसंगे वहुए पोताना पित पासेथी सांभळेली वात मेहे-णाना रुपमां कही दीधी. ते सांभळतांज तेना मनमां विचार आव्यो के, अहो, मारा पतिए आरका वस्ततस्थी मारी गुह्य वात गुप्त राखी छेवरे आ वहु आगळ पण प्रगर करी, तेथी मारे हवे जीवीने शुं करशुं. आबुं चिंतवी गळाफांसो वांधी ते मृत्यु पामी. ते जोई पुण्यसार शेठे पण देहत्याग कर्यों. तेवो वनाव जोई श्रेष्ठी पुत्रने वैराग्य थयो तेथी ते पोतानी स्तीने छोडी दईने दीक्षा छइ चाली नीकळ्यो.

उपरनी कथा सांभळी कोइए कोइनी गुप्त वात प्रकट करवी नहीं. जेओ बीजाना गुहाने ढांके छे तेओ खरेखर धन्य छे. ते उपर कपासना छोडनुं दृष्टांत कहे-बाय छे. जेम कपासना छोड जेवा पुत्रने तो कोइ दिरल माताज जणे छे के जेओ पोतानुं अंग (कपास) काढीने गुणवडे वीजाना गुहाने ढांकी दे छे, एटले सुतरवडे मनुष्य मात्रने वस्त पुरां पाडी सर्वना देहने ढांके छे. लौकिक शास्त्रमां पण कह्युं छे के, " जे नराधमो परस्परना मर्भ उघाडा करे छे, तेओ उद्दाना अने राफडाना सर्पनी जेम मृत्युने पामे छे." तेनी कथा आ प्रमाणे छे—

# बे सर्पनी कथा-

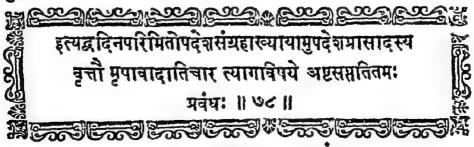
पृथ्वीपुर नामना नगरमां सुंद्र नामे राजा हतो, तेने एकदा वक्रशिक्षीत अश्व कोइ अरण्यमां छइ गयो. ज्यारे अश्व थाकीने जभी रह्यो त्यारे ते राजा अश्व जपरथी जतरी आंत यहने एक वृक्ष नीचे सुइ गयो. ते वखते तेना ज्याज्ञा रहेला मुखमां एक नानो सर्प पेशी गयो. राजा त्यांथी घेर आव्यो, परंतु जदरमां रहेला सर्पनी पीडाथी ते एटलो वथो कंटाळी गयो के, छेवटे करवत मुकाववाने गंगाती थे जवा जाल्यो. तेनी राणी पण साथे चाली. यागें जतां अमने लीचे राजा एक वडना वृक्ष नीचे सुइ गयो, राणी जागती रही. तेवामां वायु भक्षण करवाने माटे पेलो सर्प जदरमांथी मुखद्वारा जरा वहार नीकळ्यो. तेवामां निजक एक राफडो हतो तेमां रहेला वीजा सर्थे तेने जोइने कहीं के, अरे पापी, आ राजाना जदरमांथी वहार नीकळ, नहीं तो हुं तारा नाशनो जपाय जाणुं छुं. ते ए छे के, जो कडवी चीभडीना मूल कांजीमां वाटीने पीवे तो तारो नाश थई जाय. पण शुं करुं अहीं कोई नथी के जनी आगळ हुं ते निवेदन करुं. ते सांभळी पेलो जदरनो सर्प वोल्यो—हुं पण ज्या करेला तेलने तारा वीलमां रहवावडे तारा नाशनो अने तारा वीलमां रहला निधानने मेळववानो जपाय जाणुं छुं, पण कोई अहीं नथी के जेने ते जपाय कहुं के जे ते खपायथी तने मारीने तारी नीचे रहेलो द्वयनो निधि मेळवे.

आ प्रमाणे ते वंनेना परस्परना ममने उघाडनारां वचनो राजानी पासे जाय-तपणे सुतेली राणीए सांभळी लीघां. पछी ते प्रमाणे उपाय करवाथी राजा नीरोगी थयो अने पेला राफडाना सर्पने मारी द्रव्यनिधि पण तेमणे स्वाधीन करी लीबो. आ दृष्टांत जाणीने कोई पण प्राणीए परस्परना मर्म (गृह्य) प्रकाश करवा नहीं. जे पारका मर्भ मगट न करे तेनेज खरो व्रतधारी समजवी. हवे पांचमो आतिचार कहे छे:-वीजानी मुद्रावडे अथवा तेनी जेवा अक्षरो काढवावडे खोटो लेख बनावबो ते कूटलेख नामनो पांचमो अतिचार कहे-वायछे. जेम:कुणालनी अपरमाताए राजाना पत्र (लेख) रुपे पुत्र उपर कूटलेख लख्यो. .अथीत् पत्रमां मात्र एक विद्व वधारी दीधुं जेथी कुणालने नेत्र विनाशरूप महान् अनर्थ प्राप्त थयो हतो.

अहीं कोई शंका करे के, आ कूटलेखरुप अतिचार छे ते तो महा अनर्थकारी होवाथी तेमज प्रगटपण असत्यरुप होवाथी तेने तो स्थूल मृपावादमां गणवो जोईए, तो ते आतिचारमां केम गणाय शक्त ते प्रमाणे करवाथी वर्त भंग थयेलो केम न गणाय शित्ता समाधानमां कहेवानुं के, कोई मुग्य माणस असत्य वोलवाना पच्चाण ले अने ते एम समजे के, में तो असत्य वोलवाना पच्चाण लीधा छे, कांई लखवाना लीधा नथी, तो जे कूटलेख लखवो तेमां शो दोप छे शबां धारी ते वतनी सापेक्षता जाळवी राखे तथी बीजा वतमां आ कूटलेख अतिचार रुपे कहा छे. अथवा अनाभागथी एटले अजाणपणा विगेरेथी पण ते अतिचार गणाय छे. आ प्रमाणे ते पांचमो अतिचार छे.

इति पंचम अतीचार

आ पांचे अतिचार निश्चय त्याग करवा योग्य छे, कारण के ते वीजा नतमां मलीनताने आपनारा छे. तेथी तेनो त्याग करी जैन धर्मना वतधारीओए सत्यतानो गुण विशुद्धपणे ग्रहण करवो.



व्याख्यान ७९ मुं.

हवे सत्यवादीनी स्तुति करे छे. सर्वेषां धर्मकार्याणामाद्यं सत्यमुदीरितम्। तद्विना गदितो धर्मः। कुतीर्थिकैर्निर्थकः॥ १॥

#### **च्या**ख्या

सर्व धर्म कार्योमां सत्यगुण मुख्य रहेलो छे. ते सत्य विना कुतीर्थी ( भि-श्यात्वी ) ओए धर्म कहेलो होवाथी तेने निरर्थक समजवो. शास्त्रमां जे धर्मनां कार्य तप, जप, ज्ञान अने दर्शन विगेरे कहा छे तेओमां श्रीवीतराग प्रभुए सत्यने मुख्य कहल छे. ते उपर एक दृष्टांत कहेवाय छे के, कोई श्रावकनो पुत्र धर्मरहित हतो. पिताए तेने वलात्कारे गुरुनी पासे लावी वेसार्योः धूर्तपणाथी तेणे गुरुए कहेला द्वादश्वतना नियमो जाणे प्रतिवोध पाम्यो होय तेम आदर्थी स्वीकार्याः नियम विषे दृहता थवाने गुरुए तेनी प्रशंसा करी एटले ते वोल्यो—आ वधा वतोमां बीजुं सत्य बोलवारुप जे वत छे ते मारे छुटुं छे, कारण के ते मुश्केल होवाथी गृहस्थथी पाळी शकाय नहीं. आ प्रमाणे बोलवामां तेनो आश्रय एवो हतो के, में अत्यार सुधी जे नियम प्रहण कर्या छे, ते वधुं हुं असत्य बोल्यो छे. आवो तेनो आश्रय जाणी गुरुए अने तेना पिता विगेरेए आ धर्मने अयोग्य छे प्रम जाणी तेनी उपेक्षा करी.

सत्य विनाज कुतीथिओए कहेलो धर्म निरर्थक छे. जेने माटे कहुं छे के, "चार्वाक, कोलिक, ब्राह्मण, वौद्ध, अने वैष्णवोए असत्यवडेज पराक्रम करी आ जगतने घणी विडंबना करी छे." वळी "अल्य एवा मृषावाद्यी पण रौरवादि नरकमां पडाय छे तो जैन वाणीने अन्यथा कहेवाथी तो कहो केवी माटी गित थाय?" परंतु "तेवा पापी नास्तिकोना मुखोदर नगरनी खाळ जेवा छे के जेमांथी कादववाळा दुर्गियी जलना जेवीज वाणीओ निकळे छे." अने "जेओ ज्ञान अने चारित्रनुं मूल जे सत्य तेने वदे छे, तेओ पोताना चरणनी रजधी आ पृथ्वीने पवित्र करे छे." आ विषे इंसराजानी कथा छे. ते आ प्रमाणे—

## हंसराजानी कथा.

राजपुरीमां हंस् नामे एक राजा इतो. एक वखते ते उपवननी शोभा जो-वाने माटे नगर वहार गयो. त्यां वनमां एक मुनि तेना जोवामां आव्या. राजा तेनी पासे बेठो एटले मुनिए आ प्रमाणे धर्मदेशना आपी.

## सर्च जसस्समूलं । सर्च विसास कारणं परमं । सर्च सग्गद्दारं । सर्च सिद्धिइ सोपाणं ॥

"सत्य यशनुं मूळ छे, सत्य विश्वासनुं कारण छे, सत्य स्वर्गनुं द्वार छे अने सत्य सिद्धिनुं सोपान (पगर्थीयुं) छे." वळी " जेओ असत्य वोछे छे तेओ भवांतरे दुंगधी मुखवाळा, अनिष्ट वचनना वोलनारा, कठोर भाषी, वोवडा अने मुंगा थाय छे. आ सर्व असत्य वचनना परिणाम छे. " आवी धर्मदेशना सांभळी इंसरा- जाए सत्यवत ग्रहण कर्युं.

एक वस्तते हंसराजा अल्प परीवार छइ रत्नशिखर गिरि उपर चैत्री महो-त्सवना प्रसंगे श्रीआदीश्वर प्रभुने नमवा गयो. अर्ध मार्गे आवतां कोई सेवके त्व-राथी आवीने कहुं के, "हे देव! तमे यात्रा करवा चाल्या, के तरत सीमाडाना राजाए आत्री वळात्कारे तमारा नगरने कवजे कर्युं छे, तेथी आपने जेम योग्य लागे तेम करो " पासे रहेला मुभटोए पण राजाने विज्ञप्ति करी के, म्वामी आपणे पाछा जड़ये. रा-जाए कहुं के, माणीने पूर्व कर्मना वज्ञथी मंपात्त अने विपत्तिनी माप्तिययाज करे छे. तेथी जेओ संपत्तिमां हर्प अने विपत्तिमां खेदने विस्तारे छे, तेथा खरेखरा मूह छे. आ अवसरे सद्भाग्यथी माप्त थयेला जिनयात्रा महोत्सवने तजी दृइने भाग्यथी रूम्य एवा राज्यने माटे दोखनुं ते युक्त नथी. वळी कहुं छे के—

> धनेन हीनोपि धनी यनुष्यो, यस्यास्ति सन्यक्तधनं सहार्थ। धनं भवेदेकभवे सुखार्थ, भवेभवेऽनंतसुखी सुदृष्टि॥

"जेनी पासे समिकतिकप अमूल्य धन छे, ते धनहीन छतां धनवान् समजवो, केमके बन तो एक भवमांज मुखदायक छे अने समिकित तो भवोभवमां अनंत सुखदायक छे." आ प्रमाणे कही राजा पाछो न वळतां आगळ चाल्यों. परंतु जञ्ज आव्याना खबर सांभळी एक छत्रवारक शिवाय दीं जो सर्व परिवार पोत्पोताना घरनी संभाळ छेवाने पाछो वळी गयों. राजा पोताना अछंकारांने गोपर्वाने छत्रधारकता बल्लो पहेरी आगळ चाल्यों. त्यां कोई एक मृग राजाना देखतां सत्वर दोडतो ळताकुंजमां पेशी गयों. तेनी पछवाडे तरतज धनुष्य उपर वाण चडावेळों कोई शिछ आव्यों. तेणे राजाने पुछ्छुं, अरे! मृग कई वाजु गयों ते कहे. ते सांभळी राजाए मनमां चित्वन्युं के, "जे प्राणीओने अहित होय ते सत्य होय तोपण कहेंचुं नहीं अने तेवो तमंग आवे तो मुनुद्धि पुरुषोए ते पुछनारने वुद्धिना प्रपंचित समजाववों." आ प्रमाणे चितवी राजा बोल्यों क अरे भाई! हुं मार्ग श्रष्ट थयो छुं. किराते फरीवार पुछ्छुं, त्यारे राजाए कह्युं के, हुं हंस छुं. आ प्रमाणे राजानां व-चन सांभळी ते भिछ कोत्रथी बोल्यों के, अरे विकळ! आवो विपरीत उत्तर केम आपे छे? त्यारे राजाए कह्युं के, हवे तमे मने जे मार्ग बतावशों, ते मार्ग हुं जर्ज आ प्रमाणे विरुद्ध बचनों सांभळी ते भिछ तेने गांडो मानी निराश धईने पाछों चाल्यों गयों.

त्यांथी राजा आगळ चाल्यो तेत्रामां एक साधु तेना जोवामां आव्या. तेने नमस्कार करी आगळ जतां हाथमां अल्ल धारण करनार वे भिछु राजाने सामा मळ्या. तेओए राजाने कहुं के—" अरे पांध! अमारा स्वामी चोरी करवी धारीने जना हता, त्यां वचमां एक साधु सामो मळ्यो. तेथी अपगुकन थया जाणी अमारा स्वामी पाछा वळ्या, अने अमने ते मुनिने मारवा माटे मांकल्या छे, तो ते साधु तारा जोवामां आव्यो होय तो वताव्य" राजा ते वसते असत्य पण मत्य जेवं छे एम मानीने वोल्यो के—ते साधु, डावे मार्गे जायछे पण तमने मळशे नहीं, कारण के

ते वायुनी जेम प्रतिवंध रहित छे आवो उत्तर सांभळी ते वंने पाछा चाल्या गया. पछी राना सुका पांइडा विगेरेनो आहार करीने रात्रे सुवा माटे तैयारी करतो हतो तेवामां कांईक कोळाहळ तेना सांभळवामां आव्यो. तेमां तेणे एवी शब्द सांभळ्यो के, 'आपणे त्रीजे दिवसे संघने छुंटीशुं' ते सांभळी राजा चिंतातुर थयो. क्षण्वार थई तेवामां तो केटळाएक सुभटोए आवीने पुछ्छुं के, अरे! तें क्यांई चोरते जोया? अमे गोधिपुरना राजाना सेवकी छीए अने ते राजाए संघनी रक्षा करवाने माटे अमने मोकल्या छे. ते सांभळी राजाए चितव्युं के, जो हुं चोरोने बतावीश तो आ राजपुरुषो अवश्य तेओने मारी नाखशे अने नही बतावुं तो ते चोर छोको संघने छुंटी छेशे. हवे आहं मारे शुं बोळहुं युक्त छे. पछी जरा विचारीने राजा वोल्यो के, में ते चोरने जोया नथी पण तमारे कोई ठेकाणे शोधी छेवा, अथवा तेमने शोष्यानी शी जरुर छे, तमे संघनी साथे रहीने तेनी रक्षा करो. आवो उत्तर सांभळी तेओ चाल्या गया. तेमना गया पछी सुभटो साथे थयेळी वातने सांभळनारा ते चोरो राजा पासे आवीने कहेवा छाग्या के, अरे भद्र! तें अमारा प्राण वचाव्या तथी हवे अमे चोरी के हिसा नहीं करिए. तेनो छाभ तने प्राप्त थाओ. आ प्रमाणे कही ते चोर पोताने स्थानके चाल्या गया.

त्यायी राजा आगल चाल्यो तेवायां केटलाएक घोडेस्वारोए आवीने पुछलुं के, अरे पांय! अनारा शत्रु इंसराजाने तें कोई टेकाणे जोयो छे? ए अमारो कहो अनु छे तेथी अमारे तेनो विनाश करवो छे. राजा इंस असत्यना भयथी घोल्यो के— हुं पोतेज इंस छुं. आम सांभळी तेओए क्रोधथी राजाना मस्तक उपर खड़नो प्रहार कर्यों, परंतु तेज वखत खड्गना सेंकडो कटका थई गया अने राजानी उपर पुष्पवृष्टि थई. तत्काळ एक यक्ष प्रत्यक्ष थईने वोल्यो के—हे सत्यवादी राजा! तुं चिरकाल जय पाम. हे नृप! हुं तमने आजेज जिन यात्रा करावुं माटे तमे आ विमानने अलंकृत करो. यक्षना आवां वचन सांभळी इंसराजा विमानमां वेटो. अने जिनेश्वरनी यात्रा पूजा करी, यक्षना सानिध्यथी शत्रुने जीती राज्य भोगवी अनुक्रेमे दीक्षा लईने स्वर्गे गयो.

"इंस एवा नाम मात्रने धारण करवाथी पक्षी पण जलाशयमां सुखी थाय छे, तो जे हंस्राज एवा नामने धारण करे ते खरेखर स्वर्गमां रहेली अप्सराना सु-

सने पामे तेमां शुं आश्रर्य ! "



# व्याख्यान ८० मुं

हवे त्रोजा व्रतनो व्याख्या करे छे. तदाद्यं स्त्रामिनादत्तं, जीवादत्तं तथापरम् । तृतीयं तु जिनादत्तं, गुर्वदत्तं तुरीयकम् ॥ १ ॥ स्क्ष्मबादर भेदाभ्या, माद्यादत्तं द्विधा मतम् । स्क्ष्मे हि यतना कार्या, श्राद्धं स्थूलं च संत्यजेत्॥शा

#### व्याख्या

अदत्तादान (चोरी) चार प्रकारे छे. प्रथम स्वामीनुं अदन, वीजुं जीवनुं अदत्त, त्रोजुं श्रीतीर्थंकरनुं अदत्त अने चोथुं गुरुनुं अदत्त. ते चार भदमां पहेछुं जे स्वामी अदत्त छे ते सहम अने वाद्र एवा वे भेदवाळुं छे. श्रावक सूक्ष्मादत्त विषे यतना करवी अने स्यूलादत्तनो त्याग करवो. जे सुवर्ण नाणुं विगेरे तेना स्वामीए न आप्युं होय छतां लेखुं ते पहेळुं स्वामी अदत्त जाणवुं. जे फल, फुल, पत्र विगेरे घोतानी मालेकीनुं छे तेने भेदवुं ते जीवादत्त छे. कारण के ते सचित्त (जीव युक्त) होवाथी तेना जीवाए कांई पाताना प्राण तेने आप्या नथी, माटे ते अदत्त छे. यहस्ये आप्यो आधाकर्मी आहार जो मुनि यहण करे तो ते तीर्थंकरनी आज्ञा रहित छे तेथी ते त्रीजुं तीर्थंकरादत्त कहेवाय छे. एवी रीते श्रावकने अनंतकाय अभक्ष्या-दिक पदार्थों जे छे ते खातां तीर्थंकर अदत्त लागे छे. अने जे सर्व दोषथी रहित होय पण गुरुनी आज्ञा विना लेवाय के वपराय ते चोथुं गुर्वदत्त कहेवाय छे.

अही तो प्रथमना स्वाम्यदत्तनो अधिकार छे. तेना सूहम अने वादर एवा वे भेद कहा छे. तेमां सूहम एटले स्वामीनी आज्ञा वगर जे काई हुण के ईट जेवी वस्तु ग्रहण करवी ते अने वादर एटले जे लेवाथी लोकमां चोर कहेवाय ते, ते स्थूल पण कहेवाय छे. चोरीनी बुद्धिथी जे क्षेत्र तथा खला विगेरेमांथी अल्प पण लेवुं, ते पण स्थूल अदत्तमां गणाप छे. ए रीते पहेला स्वामी अदत्तना वे भेद छे. तेमां श्रावकने सूक्ष्ममां यतना करवी अने स्थूलथी तदन निवृत्ति करवी. ए भावार्थ जाणवो.

हवें ते व्रतनुं फळ कहे छे—चोरी करवी ते वध करवाथी पण अधिक छे, का-रणके वधवडे तो ते एकज मरे छे अने चोरीवडे धन हरवाथी तो वधुं कुटुंव ध-धार्त्त थई मरी जाय छे. चोरी कर्मने छोडनारो रोहिणीयो चोर देव संपत्तिने पाम्यो हतो, ते श प्रागांत काले पग थिवेकीए परधन चोरवुं नही. आ वार्तानो संवंध नीचे प्रमाणे छे -

# रोहिणी चोरनी कथा.

वैभार पर्वतनी गुहामां लोहरबुर नाम एक चोर रहेतो हतो. तेण एक वखते पोताना पुत्र रोहिणोय चोरने शिखामण आपी के, तारे किंद पण श्रीवीरनी वाणी सांभळवी नहीं. अन्यदा रोहिणेय राजगृह नगरमां चोरी करवा गयो. चोरी क-रीने पोताना स्थान तरफ जतो हतो त्यां मार्गमां श्रीवीर प्रभुनुं समोसरण तेना जोवामां आव्युं. ते वखते 'वीरनी वाणी सांभळवी नहीं' एवी पोताना पितानी आ-ज्ञानो भंग न थाय एटला माटे ते कानमां आंगळी राखीने चाल्यो. तेम चालतां तेने पगमां कांटो वाग्यो. ते कांटो काल्या शिवाय चाली शकाय तेम न होवाथी तेणे कांटो काढ्या एक हाथ नीचे कर्यों, ते वखते भगवंतनी आ प्रमाणेनी वाणी तेना सांभळवामां आवी.

## अनिमिस नयणा मणकङ्झसाहणा पुष्फदाम अमिलाणा। चडरंगुलेण भूमि न च्छिविति सुरा जिणा बिति॥

"बेना नेत्रमां निमेष ( मटका ) थाय नहीं, जे मननी इच्छा प्रमाणे करी शके. जेनी पुष्पमाळा करमाय नहीं अने जे पृथ्वीथी चार आंगल उंचा रहे, ते देवता कहें-वाय-एम श्री जिनेश्वर कहे छे." आ प्रमाणे सांभळी तेणे चितव्युं के, अरे धिकार, में आ बीरनी वाणी सांभळी. एम चिंतवतो ते आगळ चाल्यो. तेवामां चोतरफ फरता राजपुरुषो ते रोहिणेयने पकडीने राजा पासे छई गया. राजाए तेनो वध क-रवानी आज्ञा करी, एटले अभयकुमार मंत्री वोल्यो-स्वामी, एने बधी इकीकत पुछचा शिवाय, मुद्दा माल विना तेमज तेनी कवुलत विना तेने केम मारी शकाय? राजाए कहुं के, त्यारे पुछो. एटले रोहिणीओ वोल्यो के-"हुं शालिपुरनो निवासी दुर्भचंद्र नामे कुटुंवी (कणवी) छुं. आजे कार्य प्रसंगे राजगृहीमां आव्यो इतो. बहार नीकळती वखते दरवाजा वंध इता तेथी भय पामी की छो जरुंघीने हुं मारे गामे जतो इतो, तेवामां पुररक्षकोए मने पकड्यो छे, माटे हुं चोर नथी. "आ म-माणे तेणे कहुं, तथापि तेने कारागृहमां पुर्यो अने तेनी तपास करवाने शाळीगामे माणस मोकल्युं. त्यां रोहिणीए प्रथमथी गोठवण करी राखेली होवाथी ते गामना माणसोए रोहिणीआना कहेवा प्रमाणेज कह्युं. पछी तेनी मुखजुवान कवुलत कराववा माटे अभयकुमार तेने मदिरापान करावी वेशुद्ध करीने पोताना महेलमां लई गया. स्यां दोगुंदुकदेवनी जेम अप्सरा जेवी रमणीओथी वींटाएला पलंगमां तेने शयन क-राव्युं अने चीनाई वस्ननो पोशाक पहेराव्यो. पछी ज्यारे तेनो केफ ऊतरी गयो त्यारे

चारेतरफ दिव्यसमृद्धि जोईने ते विस्मय पामी गयो. ते ममये अभवनी आहाथी त्यां रहे जा पुरुषो 'जय पामो, आनंद पामो', एवा मांगल्य वचन ऊचारवा लाग्या. अने कहेवा लाग्या के, हे देव! तमे आ विमानमां स्वामीपणे ऊत्पन्न यया छो, अमे त-मारा सेवको छिए, आ अप्सराओ तमारी पत्नीओ छे; तेमनी साथे आनंदयी क्रीडा करो अने तमारा पुण्ययोगे मळेली आ सर्व संपत्ति भोगवो. आ प्रमाणे कहीने तेओ तेनी आगल संगीत करवा लाग्या. तेवामां एक सुवर्णनी छडीवाळा द्वारपाले आवीने कहुं के, हे देव ! तमारे प्रथम अही स्वर्गनी स्थितिविषे सर्व माहिती मेळ-ववी. प्रथमतो जे आहि देव नवी ऊत्पन्न थाय छे ते पौताना पूर्वभवना करेला पुण्य-पापने जणावे छे. माटे ते आप जणावो. छडीदारनां आवां वचन सांभळी तेणे वि-चार्युं के, हुं लोहखुरनो पुत्र रोहिणेय छुं, हुं मृत्यु पाम्यो नयी, आ सर्व कपटजाळ रचेल जणाय छे. आ प्रमाणे विचारी प्रथम सांभळेली वीर भगवंते कहेली गाथानो अर्थ चितव्यो के, जेना चरण पृथ्वी ऊपर अडता होय, जेना शरीरपर पसीनो तम मेल थतो होय, अने जेनां नेत्र देवातां ऊघडतां होय ते देवता होय नही. माटे जरूर आ कोई देव नथी अने हुं पण देव नथी. आ प्रमाणे खात्री करीने ते दोल्यों के, में पूर्व जन्ममां सात क्षेत्रोमां धन वापर्ध हतुं, कोईवार चोरी विगेरे अपकृत्यो कर्या न-होता, अने टानाटि धर्म आचर्यो हतो, तेथी मने आदुं स्वर्ग सुख प्राप्त धर्य छे. आ ममाणेनो ऊत्तर सांभळी अभयकुमारे विचार्य के, ज आवा दंभयी पण वंचित थयो नहीं ते छोडी मुकवाने योग्य छे. पछी तेणे राजानी आज्ञावडे तेने छोडी मुक्यो.

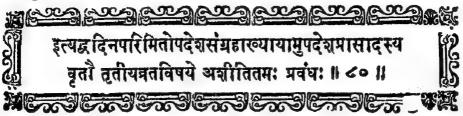
पछी रोहिणेय चोरे चितव्यं के, मने विद्यार छे, के जे हुं पितानी मिण्या आ-ज्ञाथी आटला वखतसुबी ठगायों. में ईच्छायगर पण श्रीवीरमभुनुं एक वाक्य सां-भळ्युं हतुं तो तथी मने आज भवमां प्रत्यक्ष गुण थयों अने एवोज परभवे पण थजे. माटे हवे तो प्रभुए कहेला धर्मने सारी रीते सांभळी हुं मारा जन्मने सफल करूं, कहुं छे के,

> न देवं नादेवं न ग्रहमक्रछंकं न कुग्रहं। न धर्भ नाधर्भ न ग्रणपरिणद्धं न विग्रणं।। न कृत्यं नाकृत्यं न हितमहितं नापि निप्रणं। विलोकंते लोका जिनवचनचर्छावरहिताः॥ १॥

जे लोको श्रीजैन वचनक्तप नेत्रथी रहित छे, तेओ देव के कुदेव, गुरु के कुगुरु, धर्म के अधर्म, गुणी के अगुणी, कार्थ के अकार्य, अने हित के अहित निपुगपणे जोई श-कता नथी. आ प्रमाणे चितवी श्रीवीरपभुनी पासे जईने तेणे आ प्रमाणे देशना सां- भळी के-"ने पुरुष चोरी करे ते आलोकमां विविध प्रकारनी यातना [पीडा], पर लोकमां नारक गति, अने त्यारपछी पण दुर्भाग्य अने दिरद्रपणाने पामे छे" आ प्रमाणे जिनवाणी सांभळी ते रोहिणेयें श्रावकना बारवत स्वीकाया. पछी श्रेणिक राजानी पासे जई, पोताना जातिकुळ अने नाम तथा कर्म जणावी, पर्वतनी ग्रहामां चोरीवडे एकढुं करेलुं सर्व धन नगरजनोने पाछुं सोंपी दई, दीक्षा लईने स्वर्गे गयो.

आ प्रमाणे रोहिणेय चोर खोटा दंभथी जोएली देवतानी समृद्धि उपरथी तेवी सत्यसमृद्धि मेळववा माटे श्रीवीरवचने चोरीनो नियमधारण करी दंभ रहित [साची]

एवी देव समृद्धिने पाप्त थयो.



# च्याख्यान ८१ मुं.

पुनः ते त्रीजा व्रत संबंधोज कहे छे. आहतं स्थापितं नष्टं, विस्मृतं पतितं स्थितम् । नाददीता स्वकोयं स्व, मित्यस्तेयमणुव्रतम् ॥ १ ॥

#### व्याख्या

"कोईनुं हरण करी छावेलुं, मुंकेलुं, खोवायेलुं, विस्पृत थयेलुं, पढी गयेलुं के रहेलुं कोई बीजानुं धन ग्रहण करतुं नहीं, ते अदत्तादान त्याग नामे त्रीलुं अणु वत छे." तेनो एवो भावार्थ छे के, छावेलुं एटले कोइए कोइनुं हरण करीने राख्वा आपेलुं, मुकेलुं एटले स्थापण रूपे पोतानी पासे के भूमिमां मुकेलुं, नष्ट एटले कोई ठेकाणे खोई नाखेलुं के जेनी तेना धणीने पण खवर न होय, विस्पृत थयेलुं एटले कोई ठेकाणे एवी रीते मुकायुं होय के जे तेना स्वामीने पण स्मरणमां न आवे तेवुं, पढी गयेलुं एटले चालता के बाहन उपरथी पढी गयेलुं अने रहेलुं एटले तेना स्वामीए पोतानी पासे राखेलुं—आवी जातनुं पारकुं धन लेवुं नहीं. कदि द्रन्य क्षेन्त्रादि आपत्ति आवे तो पण प्राह्मपुरुपे ते ग्रहण करवुं नहीं. ते विषे कह्यं छे के, "कु-लीन पुरुष प्राणांत थाय तो गण आ वे काम करे नहीं. एक परद्रन्यनुं हरण अने वीजुं परसीनुं आलिंगन" ते विषे नीतिमां पण लखे छे के, "सुवर्ण विगेरे बीजानं

द्रव्य पोतानी आगळ पडेलुं जुए तोषण जेओनी दृद्धि तेमां पाषाणनी जेनी रहेले, तेवा संतोषामृतना रसवडे त्रप्त पुरुषो गृहस्यपणामां पण स्वर्गना सुखने मेळने छे. " आ प्रमाणे त्रीज़ं अद्तादान विरमण अणुष्ठत जाणवं. ते उपर परमाईत कुमारपाळ राजानो प्रवंध कहेनाय छे. ते आ प्रमाणे—

## परमाईत राजा कुमारपाळनी कथा.

एक वलते अणहिलपुर पाटणमां कुमारपाळनी आगळ श्रीहेमचंद्रसूरि अदत्तादान विरमणरूप त्रीजा वतनुं ज्याख्यान करता हवा के, "हे राजा! जेणे पा-रकुं द्रव्य चोंग्रें, तेना आलोक, परलोक, धर्म, वीर्य, धीरज अने बुद्धि ए सर्व चो-राया समजवा." स्रिए आ प्रमाणे कहुं एटले राजाए कहुं, "अहो प्रजामां ने जे पुरुष अपुत्र मरण पामे ते ते पुरुषना धननी आशायी राजा तेना पुत्रपणाने पामे छे." अर्थात् तेवानुं घन राजा लई ले छे. पण आजथी हुं तेवुं घन अने अदत्त यन लेवुं छोडी दर्च छुं, आजयी मारे त्रीजा वतनो अंगीकार छे. आ प्रमाणे वत उच्चरी राजाए सभामां ते खाताना नीमेला पंचने बोलाव्या अने पुल्युं के, प्रति वर्ष अपुत्रीयाना द्रव्य संवंधी राज्यनी केटली आवक छे? तेमणे बीतेर लाखनी आवक जणावी. एटले राजाए कहुं के, एवा अपुत्रनी रुद्दन करती स्त्रीनुं धन शा-माटे लेवुं? एम कही ते संवंधी पट्टानो घारा लेख फाडी नाख्यो. अने पठी आला राज्यमां चोरीनुं अने मरी गयेलानुं धन छोडी देवानो पडो वगडाच्यो.

एक वखते राजानी सभामां चार महाजनना मुख्य पुरुषो आव्या. राजाने नमी विख्ला थईने वेठा. एटले राजाए पुछ्युं के—''आजे सभामां आववानुं शुं का-रण छे? अने तमे केम आम विल्ला थई गया छो? शुं कोईना तरफथी तमारो पराभव तो नथी थयो?" महाजन वोल्या के, हे राजेंद्र! आपना जेवा प्रजावत्सल अने दयाल राजा पृथ्वीपर राज्य करतां सता अमने पराभव के दुःख क्षेतुं होय. पण एक हकीकत निवेदन करवानी छे. ते माटे अमे आवेला छीए. ते हकीकत ए छे के—आपणा गुर्जरदेशनो निवासी कुवेरदत्त नामे एक मुख्य श्रेष्टी समुद्र मार्गे व्यापारोथें गएलो ते पाछो आवतां मार्गमां मृत्यु पामी गयो छे. तथी तेनो परिवार ते श्रेष्टीने पुत्र न होवाथी रूदन करतो अमारी पासे आव्यो अने कहेवा लाग्यो के जो तेना घरनुं द्रव्य राजा संभाळी लईने पोताने स्वाधीन करे तो पर्छी अमे तेनी मरणोत्तर किया करीए. हे राजन्! तेनुं धन अगाणित छे. गुर्जरपति बोल्या के, म-हाजनो! में तो अपुत्र मरेलानुं धन लेवानो त्याग कर्यों छे. परंतु चालो, तेना घरनो

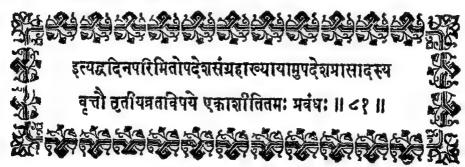
सार तो जोईए. एम कही राजा कुमारपाळ महाजन वर्गने साथे छई तेने घर गयी. ते कुवेरश्रेष्टीनं घर के जेना शीखर उपर सुवर्ण कलशनी श्रेणी हती, शब्द करती धु-घरीओना नादथी दिग्मंडलने वाचाल करती कोटीध्वजपणानी नीशानीहर ध्वजाओ फरकती इती. एक तरफ हस्तिशाळा, अने अश्वशाळा शोभी रही इती. आवुं राज्यद्वार जेवुं कुवेरदत्तनुं घर जोई गुर्जरपति विस्मय पाम्या पछी तेनी अंदर आवेछा उज्बल स्फाटिकमणिथी रचेला चैत्यगृहमां गया. तेमां मरकतमणिमय श्रीनेभिनायनी मूर्ति बिराजती हती. तेने नमस्कार कयों. तेनी आगल रत्न तथा सुवर्णना कलश, याळ, आरती अने मंगलदीप विगेरे पूजानी सामग्री जोवामां आवी. पछी त्यांथी वहार नीकळी तेनी वतोनी टीप वांचवा छाग्या. तेमां परियह परिमाणवत विषे जोतां आ प्रमाणे लख्युं इतुं-"छ कोटी सुवर्ण, आठ कोटी रौष्य द्रव्य, मोटा महामूल्यवान् दशमिण, घृतना वे हजार कुंभ, घान्यना वे हजार मोटां माप, पचाश इजार घोडा, एक इजार हाथी, एंसी इजार गायो, पांचसो हळ, पांचसो दुकानो, पांचसो घर, पां-चसो वाहाण, अने पांचसो गाडां-आटली समृद्धि मारे घेर विडिलोपार्जित छे ते र-हेवा देवी अने हवे जे लक्षी हुं मारे हाथे उपार्जन करीश ते वधी हुं पुण्यधर्ममांज बापरीश्व. आ प्रमाणे समृद्धिपत्र बांची राजा इर्ष अने विस्मय पामी जेवामां तेना घरना द्वारपासे आव्या तेवामां कुवेरदत्तनी माता गुणश्री आ प्रमाणे रुदन करती बोली के, ''हे पुत्र ! तुं समुद्रमार्गे गयो छुं, ते पाछो क्यारे आवी उत्तर आपीश. तुं आवीने तो जो, तारा वगर आ वधी लक्ष्मी राजदरवारे जाय छे."ते सांभळी राजाए चिंतव्युं के, " उत्तम पुरुषो कहे छे के, राज्यने अंते नरक छे. ते सत्य छे. अने ते आची रुद्दन करती स्त्रीओना द्रव्य छेवाना पापथीज छे." पछी राजाए कुवेरदत्तकोठनी माता अने स्त्री विगेरेना आर्कंद सांभळी तेने कह्युं के, ''हे माता ! तमे शामाटे शोक करो छो ? इद्रियी मांडी कीडी सुधीना प्राणीओनुं मरण तो अवश्य थवानुं छे. संबंधीओनो संबंध एक वृक्ष उपर रहेता पक्षीओना संगम जेवो छे अने मृत्यु पामेलानुं पाछुं आवर्तुं ते पाषाण उपर वावेला वीजने अंकुरा थवानी ईच्छा करवा जेवुं छे, तेथी जे शोकथी थात्माने वृथा क्रेश करावे छे, ते अज्ञानी छे." आवो उपदेश आपी राजाए कहाँ के, हे माता आ तमारा पुत्रना मृत्युनी खबर कोण लाव्युं श गुणश्री बोली-वामदेव नामे एक तेना भित्रे आ खबर आप्या. राजाए तेने बोलावीने पुछयुं एटले ते बोल्यो. रा देत्र, अहीथी कुवेरदत्त मृगुपुर (भरुच) गया. त्यांथी पांचसो पांचसो पुरुषोथी भरपूर एवा पांचसो वाहाण लई दूरना बंदरोए व्यापार करवा गया. त्यां व्यापार करतां चौद कोटी सुवर्ण द्रव्यनो तेने छाभ थयो. त्यांथी पाछा फरतां प्रतिकूळ पवनने

स्रीधे ते पांचरें वाहाणो विषमिगरीना वमळमां आवी पड्या. त्यां पूर्वे कोई वीजाना पण ५०० वाहाणो फसी रहेला हता ते पण त्यांथी नीकळी शकता न हता. त्यां आ वाहाणो पण आवी भराया तेथी शेड घणो खेद पाम्या. तेवामां कोई वाहाण उपर वेसीने एक खलासी आव्यो तेणे कहुं के,-"अरे मुसाफरो, तमारे नीकलवानो एक उपाय हुं कहुं ते सांभळो, "अहीथी नजिक एंच जूंग नामे एक द्वीप छे. त्यां सत्यसागर नामेराजा छे, ते एक वखते मृगया रमवा गयो हतो. तेमां तेणे एक सगर्भी मृगलीने मारी. तेने मरती जोई तेना दुःखथी तेनो पात मृग पण मरण पाम्यो. ते जोईने सत्यसागर राजाने घणी दया उपजी तेथी तेणे सर्वेत्र अमारी घोषणा करावी छे. आजे प्रथम तेमणे मोकलेला एक शुकपक्षीना मुखयी तमारी उपर पडेली आपत्ति जाणीने तेमणे मने अहीं मोकल्यो छे. आ पर्वतनी कडणमां एक द्वार छे तेमां पेसीने गिरीनी पेली पार जवाय छे, त्यां एक उज्जड नगर छे, तेमां एक जिन चैत्य छे, त्यां जईने ते चैत्यनी अंदर रहेलो पटह वगाडवो, तेना नादथी त्रास पामीने त्यां रहेला भारंड पक्षीओ उडशे. एटले तेओनी पांलना प्रचंड वायुयी पेरा-एला आ वाहाण मार्गे चडी जरो. तमारे वचवानो मात्र आ एकज मार्ग छे तेथी स्यां एकज माणसने मोकलो. पण ते माणस पाछो आवी शकशे नहीं. 22 तेणे आ प्रमा णे कहुं, पण त्यां जवाने कोईनी हाम चाली नही. तेथी दयाल एवा कुवेरदत्त श्रेष्ठी पोतेज एकला त्यां गया अने पेला खलासीना कहेवा प्रमाणे कर्यु, जेथी तेना ने आ-गळना सर्वे वाहाणो वमळमांथी नीकळी गया अने भृगुपुर क्षेम कुज्ञलताथी आवी पहोंच्या. परंतु पछवाडे ते पर्वतपर रहेला कुवेरदत्तनुं शुं थयुं ते हुं जाणतो नथी. एथी हे राजेंद्र, तेनुं वीश कोटी सुवर्ण, आठ कोटी रौप्य द्रव्य, अने हजार तुला ममाण रत्नो तमे यहण करो. गुर्जरपति ते द्रव्यने तृणवत् गणी नही यहण करतो सतो वोल्यो के, हे माता! तमारो पुत्र थोडा काळमां आवशे. माटे जे आ द्रव्य छे, से धर्ममां के तमारी इच्छा आवे तेमा वापरो.

आ ममाणे आश्वासन आपी राजा स्वस्थानके जता इता, तेवामां तो कुवेर-दत्त एक स्त्री साथे विमानमां वेसी आकाश मार्गे त्यां उतर्यो. ते जोई माताने अत्यंत इप साथे आश्वर्य उत्यन्न थयुं. श्रेष्ठी राजाने अने माताने नमीने उभो रह्यो. राजाए पुछ्युं, अहो साहिसक शिरोमणि! ज्यां तमे गया हता, ते शून्य नगरमां शुंथयुं?

श्रेष्ठी वोल्यो-"हे स्वामी, ते नगरमां एक मेहेलमां कोई कन्या मारा जोवा मां आवी. तेणे मने कह्युं के, " हुं पाताळकेतु विद्याधरनी पुत्री छुं, हजुकुमारी छुं. मारा पिताए मांसनी लोलुपताथी एकदा एक मार्जारीनूं भक्षण कर्युं. तेथी मांस भक्षणनुं व्यसन थतां ते राक्षस थयो. तेणे घणा छोकोने भक्षण कर्या तेथी आ नगर छजाड थइ गयुं छे. हाछ ते आहारने माटे बहार गयेछ छे." कन्या आ प्रमाणे वात करे छे तेवामां तेनो पिता अने माता बंने त्यां आव्या. तेओए मने ते कन्या आपी पाणीयहण समये में एवं माग्यं के, तमे मांस खावानो नियम ल्यो. पछी तेने प्रतिबोध पमाड्यो एटछे तेणे ते नियमनो स्वीकार कर्यो. ते विद्याधर मने ह्रीसिहत विमानमां वेसारी अहीं मुकीने हमणाज पाछो पोताने स्थानके गयो". आ प्रमाणे तेनी हकीकत सांभळी कुमारपाछ राजा विस्मय पामीने बोल्या के, धन्य छे तमने के एवा संकटमां पण तमे पोताना नियमने छोडी दीधो नहीं. आ प्रमाणे तेनी प्रशंसा करता गुर्जरपित त्यांथी गुरुने बंदन करवा गया. गुरुए कह्युं के, हे राजा! जे अपुत्री-पानुं धन ग्रहण करे ते तेमनो वधानो पुत्र थाय छे अने तमे ते द्रव्य संतोषथी छोडी दीधुं तेथी तमे खरेखर सर्व राजाओना पण पितामह थया छो.

आ प्रमाणे राजिष, धर्माईत, नीतिराघव अने चौछुक्यासिंह इत्यादि वीरुदोने धारण करनार अने जैन आगमना अर्थने जाणनार श्रीकुमारपाळराजा परद्रव्यने ग्र• इण करवामां विमुख थई विजयवंत थया.



# व्याख्यान ८२ मुं.

हवे ते त्रीजा व्रतना पांच अतिचार कहे छे. स्तेना उज्जा तदानीतादानं वैरुद्धगामुक्रम् । प्रतिरूपिकयामानान्यत्वं वा स्तेयसंश्रिता ॥ १ ॥

#### व्याख्या

"चोरने आज्ञा करवी, चोरीनुं द्रव्य छेवुं, राजाए निषेध करेल व्यापारादि आ चरतुं, वस्तुमां तद्रूप इसकी चीजनी सेरुभेल करवी अने कुडा तोल माप राखवा. ए अदत्तादान विरमणवतना पांच अतियार छे." चोरने आज्ञा करवी एटले चोरीना काममां तेमने प्रेरणा करवी. जेम के, केम हमणा व्यापार रहित वेसी रहा छो, जो तमारी पासे भातुं विगेरे कांई न होय तो हुं आपीं अ, अथवा तमारी छावे छी वस्तु-आंनो जो कोई खरीद करनार नहीं मळे तो हुं खरीद करीं ग. एवां वचनथी तेमने उत्साहित करवा अथवा चोरीना साधन जेवा के कोश, गणेशीओ विगेरे आपवा. इत्यादि प्रकार तेने चोरीमां सहाय करवी ते. आवी रीते वर्तनार माणसने एण नी-तिमां चोर गण्यों छे. कहुं छे के,

# चोरश्रोरार्पको मंत्री, भेदज्ञो काणककयी। अन्नदस्थानदश्रेति, चौरः सप्तविधः स्मृतः ॥

"चोर, चोरने साथनो आपनार, चोर साथे विचार गोठवनार, चोरनो भेद जाणनार, चोरेली वस्तु खरीदनार, चोरने अन्न आपनार अने चोरने स्थान आपनार ए साते प्रकारना चोर कहेवाय छे "एमां पण न्नती एवी शंका करे के, मारे चोरी करवानो त्याग छे, कांई चोरने अन्नादि आपवानो त्याग नथी तथी ते करवामां शो दोष छे, एवी शंकाने लीचे न्नतभंगमां सापेक्ष निरपेक्षपणुं होवाथी ए प्रथम अतिचार कहेवाय छे. इति प्रथम अतीचार.

हवे बीजा आतिचारमां चोरी लावेला कुंकुयादि वस्तुनुं मूल्य आपी ग्रहण क-रवुं ते. ते पण लोभना दोपथी ग्रहण करतां अनुक्रमे तेना वतनो भंग थाय तेमां वत-थारी एवुं धारे के, चोरी करवाथी वतनो भंग छे पण हुं तो व्यापार करुंछुं, कांई चोरी करतो नथी तो तेमां शो दोष छे. एवा परिणामे वतनी निर्पेक्षताना अभावे वतनो भंग थतो नथी तेथी ए वीजो अतिचार कहेवाय छे. इति द्विताय अतीचार.

त्रीजा अतिचारमां राजानी आज्ञा विरुद्ध वर्त्तवुं. जेम के, पोताना राजानी मनाई छतां वेपारने माटे तेना शत्रु राजाना राज्यमां जवं ते. उपलक्षणथी राजाए निपिद्ध कर्या छतां ग्रुप्त रिते दांत, लोहलंड, पाषाण विगेरे वस्तुओ लावनी ते. जो के मूळ चार प्रकारना अदत्तादानमां स्वामीनी आज्ञा वगर लेबुं ते स्वान्यदत्त के हेलुं छे, अने ते आमां आवी जाय छे वळी ते चौर्य दंडने योग्य पण थाय छे तेथी तेना त्रतनो भंग थाय छे. पण राज्य विरुद्ध वर्त्तनार वृती एम धारे के, में वेपार कर्यों छे, काई चौरी करी नथी. तेथी मने लोको 'आ चौर छे' एम कही शकशे नहीं एथी व्रतनुं सापेक्षपणुं होवाने लीवे ते त्रीजो अतिचार छे. इति तृतीय अतीचार.

हते चोथां अतिचारमां प्रतिह्नप वस्तु साथे शेलभल करवी ते जेम डांगरमां पलंजी भेलवे, घीमां चरवी अथवा तेल, केशरमां कसुंबो इत्यादि ते चोथो अतिचार गणाय छे. इति चतुर्थ अतिचार. हवे पांचमा अतिचारमां कूट तोलमान आवे छे एटले शेर, मण, खांडी वि-गेरे तोल अने माण, पाली, हाथ गज निगेरे माप-तेमां न्यूनाधिक तोलमान माप राखी न्युनमापे आपे अने अधिक मापे ले, ते पांचमो अतिचार छे. आ चोथा अने पांचमा अतिचारमां परने छेतरी परद्रव्यदुं ग्रहण करवाथी जतनो भंग थाय छे तथापि जती एम घारे के, खातरपाडीने चोरी करवी ते चोरी कहेवाय. आतो ब-णिक कुलनी आजीविकानो व्यापार छे. एवी रीते जतनी सापेक्षता रहे छे तथी ए अतिचार छे. एवी रीते जीजा जतना पांच आतिचार उत्तम आवके त्यजी देवा जोईए.

अहीं जे कूटमान कहुं, तेमां तो अगट रीते चोरी रहेली छे. तेविषे नीतिकार रुखे छे के, "थोडुं लालनपालनथी, थोडुं कळाथी, थोडुं मापथी, थोडुं तोलथी अने थोडुं चोरीथी—ए प्रमाणे ग्रहण करता एवा घूर्त विणको प्रत्यक्ष चोरज छे." एथी आ कृत्य श्रावकने करवुं उचित नथी. आ वृत पाळवाथी व्यवहारनी पण श्रुद्धि थाय छे. कहुं छे के, " नेओने शुद्ध अंतः करणथीर परद्रव्य लेवानो नियम छे ते-अोनी पासे समृद्धि स्वयंवरा थई सामी आवे छे." गृहस्थे मेळवेलुं अन्यायोपार्णित द्रव्य, एक वर्षने अंते राजा, चोर, अग्रि के जल विगेरेथी जरूर नाम पामे छे, चिरकाळ रहेतुं चथी. तेमज ते पुण्यकायमां पण वपरातुं नथी. कह्युं छे के,

अन्यायोपार्जितं वित्तं, दशवर्षाणि तिष्ठति। प्राप्ते चैकादशे वर्षे, समूळं च विनश्यति॥

अन्यायथी उपार्जन करेलुं द्रव्य दश वर्ष सुधी रहे छे, ज्यारे अग्यारमुं वर्ष माप्त याय छे त्यारे समूलगुं विनाश पामे छे. ते उपर वंचकश्रेष्टीनुं दृष्टांत छे ते आ प्रमाणे— वंचकश्रेष्टीनी कथा.

कोई नगरमां हेलाक नामे श्रेष्टी इतो. तेने हली नामे स्त्री अने चालक नामे पुत्र इतो, ते श्रेष्टी मधुर भाषण, खोटा तोल मापनी रचना, नवी जुनी वस्तुओ एकढी करवी, रसपदार्थीमां सेलभेल करवी, चोरीथी लावेल चीज वेचाण लेवी विगेरे पाप न्यवहारना मकारोथी गामना मुग्ध लोकोने छेतरी धनोपार्जन करतो इतो. जो के ते वीजानी वंचना करतो इतो तथापि परमार्थथी तो ते पोताना आत्मानेज वंचतो इतो. कपटी पापी जनो मायानी रचनाथी जगतने वंचे छे, पण तेओ खरी रिते पोतानेज वंचे छे.

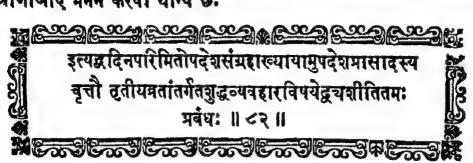
आ प्रमाणे हेलाकशेठे घणुं द्रव्य मेलव्युं पण दरेक वर्षने अंते अन्यायोपा-जीत होवाने लीधे चोर, अग्नि अने राजा विगेरेथी इराई जवा लाग्युं. अनुक्रमे तेनो

'पुत्र यौवन वयने प्राप्त थयो एटले कोई परगामना शुद्ध श्रावक श्रेष्टीनी पुत्री साथै तेने परणाव्यो. पुत्रवधू शुद्ध श्राविका अने धर्मनी ज्ञाता हती ते शेठने घेर आवी. हेलाक शेठनी दुकान तेना धरनी नजीक हती. ज्यारे कोई याहक आवे त्यारे तेने आपवा तथा लेवामां पूर्वसंकेत करी राखेला नामथी पुत्रनी पासे तोलनां काटलां मंगावे. ज्यारे छेवुं होय त्यारे ते पांच पोष्कर मागे एटले पुत्र सवा शेरी आपे अने आपवुं होय त्यारे त्रिपोष्कर मागे एटले पोणो शेर आपे. आ संकेतनी वात धीमे धीमें लोकोमां जाहेर थवाथी लोकोए हेलाकश्रेष्टीनुं नाम वंचकश्रेष्टी एवं पाडचं. एक वखते धर्मक पुत्रवधूए पोताना स्वामीने पुछत्युं के, तमारा पिता तमने वीजा नामथी केम बोलावे छे ? श्रेष्टीपुत्रे तेना उत्तरमां व्यापारसंबंधी सर्व इकीकत पो-तानी स्त्रीने निवेदन करी. ते सांभळी धर्मार्थीवधूए पोताना स्वसुर हेलाकश्रेष्टीने विज्ञप्ति करी के, 'हे तात! आवा पाप व्यापारथी उपार्जन करेलुं द्रव्य धमें का-र्यमां अने शारीरीक उपभोगमां वपराशे नहीं तेमज ते घरमां पण रहेंशे नही. तेथी न्यायमार्गे द्रव्य उपार्जन करवुं उत्तम छे श्रेष्टीए कह्युं के, जो साचा व्यवहारथी चालीए तो घरनो निर्वाह केम चाले ? कोई विश्वास करीने पेंदा करवा आपे नही, वधूए कहुं के ''न्यायथी भेळवेलुं धन अल्प होय तो पण ते न्यवहार शुद्ध होवाथी तेनावडे वीज़ं घणुं मळे अने ते घरमां पण रहे. जेम सारा क्षेत्रमां वावे छुं बीज, घणां फळवाळुं होइ निःशंकपणे भोगादिकनी पाप्तिने माटे याय छे. कुट माप तोल विगेरेथी जे धन उपार्जन कराय छे ते तपावेला पात्रपरना जळ विंदुनी जैम नाज्ञ पामतु जोवामां आवतुं नथी. परंतु नाज्ञ पामेज छे. मळी अन्यायवेडे मैळवेळुं द्रव्य अशुद्ध, तेनाथी लावेलुं अन्नादि अशुद्ध, ते अन्ननो आहार अशुद्ध, तेवडे शरीर अशुद्ध अने तेवा शरीरवडे करेलुं कृत्य पण उखर भूमिमां वावला वीजनी जैम सफल थटुं नथी. जो आ विषे भतीति न आवती होय तो छ मास सुधी कूट वेपारनी वृत्ति छोडी न्यायवृत्तिथी व्यापार करो. एटले खबर पडशे." वधूनां वचनथी श्रेष्ट्रीए तेम कर्युं तो छ मासमां तेणे पांचशेर सुवर्ण उपार्जन कर्युं.

सत्य व्यवहारेथी लोको तेनोज विश्वास करीने तेने त्यांथींज लेवा देवा लागा अने सर्वत्र तेनी कीर्ति प्रसार पामी. शंडे ते सुवर्ण लावीने वधूने अर्पण कर्युं. वधूए न्यायोपार्जित द्रव्यनी परिक्षा करवाने माटे ते सुवर्णनी एक पांच शेरीं करावी. पछी तेनी उपर चामडुं महावी पोताना सासराना नामनी मोहर करी वे त्रण दिवस सुधी चौटामां रखडती मुकी पण कोइए लीधी नहीं. एक दिवस तेने उपाडीने एक जळाश्यक्षां नाखी दीधी. त्यां एक मत्स्य तेने गळी गयो. ते मत्स्य भारे थई जवाथी कोई ढीमरनी जाळमां आव्यो. तेने चीरतां पांच शेरीं

मीकळी. तने अमुक तो छुं जाणी ते माछी एज श्रेष्ठीनी दुकाने वेचवा स्नान्यो. श्रेष्ठीए तेनापर पोतानुं नाम होवाथी थो छुं द्रव्य आपी तेनी पासेथी वेचाती छी घी. पछी
तेना परथी चाम छुं काढीने जोतां पोताना सोनानी पांच शेरी जाणी तेने वधूना वचन उपर घणी प्रतीति आवी. पछी शुद्ध व्यवहार वडे तेणे घणुंद्रव्य उपार्जन कर्युं,
अने साते क्षेत्रमां अनेक प्रकार वापर्युं. अनुक्रमे तेनो यश घणी प्रौढताने प्राप्त थयो.
त्यार पछी सर्वे छोको ते हे छा शेठना द्रव्यने शुद्ध मानी व्यापार माटे तेनुं ज द्रव्य छवा
स्नाग्या. वाहाणोमां पण निर्विद्यताने माटे तेनुं द्रव्य छईनेज मुसाफरी करवा छाग्या.
आधी तेना द्रव्यनी घणी वृद्धि यह अने तेनुं नाम पण मंगिलक गणाव्या छाग्युं. अद्यापि वाहाण चलावती वस्तते सिलासी छोको हे छासा, हे छासा एम कहे छे. ए
प्रमाणे ते हे छा शेठनुं पवित्र नाम अद्यापि जगत् प्रसिद्ध छे.

आ प्रमाणे शुद्ध व्यवहार आलोकमां प्रतिष्ठानो हेतु छे अने परलोकमां पण महा सुखकारी थाय छे. एवी रीते परमार्थपणे न्यायज द्रव्योपार्जनना जपायभूत छे एम जाणवुं. शुद्धाशुद्ध व्यवहारना फळने वतावनार आ हेला श्रेष्ठीनुं दृष्टांत सर्वे अव्य प्राणीओए मनन करवा योग्य छे.



# व्याख्यान ८३ मुं.

इवे उपर कहेळुं व्रत न पालवाथी शुं फळ प्राप्त थाय ते कहेळे.

परस्वं तस्करो गृण्हन्, वघबंधादि नेक्षते ।

ळगुडं दुग्धपायीव, बिडाल उपरिस्थितम् ॥ १ ॥

व्याधधीवरमार्जारादिभ्यश्रीरोऽतिरिच्यते ।

निगृह्यते नृपतिभिर्यदसौ नेतरे पुनः ॥ २ ॥

#### व्याख्या

ग परद्रव्यने ग्रहण करवा इच्छतो चोर, चोरीवडे प्राप्त यनारा वघ वंघनादि देखतो नथी. जेम बुध पीवाने इच्छतो मार्जार पोतानी उपर छगामी रहेसी छाक-

डीने जोतो नथी तेम. पारिष्व, ढीमर अने मार्जार विगेरेथी पण चोरी करनार अधिक अपराधी छे, कारण के, चोरनो राजा निम्नह करे छे अने वीजा पारिष्व विगेरेनो निम्नह करतो नथी. " आ उपर एक नीचे प्रमाणे दृष्टांत छे---

श्रेणिकना पिता प्रसेनजित राजाना राज्यमां राजगृहीनगरीने विषे लोहसुर नामे एक चोर रहेतो हतो. एक वखते तेणे द्युतकी डामां जिते छुं द्रव्य याचकोने आपी दीधुं. पछी त्यांथी जतां मार्गे सुधातुर थयो एटले पोताने घेर भोजन करवा माटे जवानी इच्छा करी. तेवामां राजाना मेहेलमांथी सरस रसोईनी सुगंध आवी-एटले तत्काळ तेने विचार थयो के, मारी पासे अंजनविद्या छे, तेथी मारे शुं अशक्य छे, माटे अंजनविद्याथी राजगृहमां जर्डने राजभोजन करुं. आवं विचारी ते अदृश्य वि-द्यायी राजमहेलमां गयो अने राजानी साथे एक थाळमां वेसी तेमांथी भोजन जमीने पोताने घेर गयो. पछी तो रसगृद्धि थवाथी एवी रीते नतिदिन करवा लाग्यो. शास्त्रमां कहां छे के, " सर्व इंद्रियोमां जिव्हा इंद्रिय दुर्जय छे, कर्ममां मोहनी कर्म दुर्जय छे, वर्तमां ब्रह्मचर्य ब्रत दुष्कर छे अने त्रण गुप्तिओमां मनोगुप्ति पाळवी मुश्के-ल छे. " घणा दिवस सुधी तेम चालवाथी ओछो आहार थवाने लीधे राजानुं अंग कुज थई गयुं. एक वखते मंत्रीए राजाने पुछ्युं के, हे स्वामी, तमारुं शरीर ग्लान केम छे? शुं तमने अन्न उपर अरुचि थइ छे । कारण के, "अन वगर शरीर, नेत्र वगर मुख, न्याय वगर राज्य, लवणविना भोजन, धर्म विना जिवित अने चंद्र विना निजा ए शोभतां नथी. "अथवा तमने कांई चिता तो नथी ? कारण के, "शरी-रमां रहेली चिंता शरीरने वाळे छे, अने दुष्ट पिशाचिनी जेम नित्य रुधिर अने मां-सने वाळी नाखे छे. " राजा वोल्यो के, हे मंत्री! मने मोटुं आश्चर्य थाय छे, हुं इ-मेशां वमणुं त्रगणुं जमुं छुं, पण कोई अंजनसिद्ध पुरुष मारी साथे जमी जाय छे, तेथी नारकीना जीवोनी जेम मारो उदरायि शांत थतो नथी. आ सांभळी मंत्रीए रसो-डाना स्थानमां चोतरफ आकडाना सुकां पुष्पो वेर्यी. भोजन समये पेळा चोरना पगना आघातथी तेने खडखडता जोई ते विषे निश्चय थयो. पछी वीजे दिवसे ते चंपाता पुष्पनो ध्वनि सांभळी चोरने अंदर आवेलो जाणी तत्काळ ते स्थाननाद्वा-रने दृढ अर्गला आपी वासी दिधां अने अंदर मथमधी ग्रप्त राखेलो तीव धूमाडो कर्या. धूम्रयी व्याकुल थयेला चोरना नेत्रमांथी अश्रुधारा चाली तेथी तेणे करेलुं सिद्धांजन घोवाई गयुं. एटले सर्वे ए तेने प्रत्यक्ष जोयो. पछी तत्काळ तेने वांधीने राजापासे लई गया. ते वखते चोरे चिंतव्युं के, अहा, दैनयोगे मार्स्त तो भोजन अने घर वंने नष्ट पाम्युं. तेविषे कहेवाय छे के " कोई गजेंद्र, श्रीष्म ऋतुमां धामार्त अने तृषातुर थयो. तेथी एक पूर्ण सरोवरने जोई त्वराथी ते तरफ घाल्यो. परंतु तट उपर थयेला कादवमां ते खंची गयो, एटले दैवयोगे ते नीर अने तीर बंनेथी भृष्ट थयो." वळी कहां छे के, "सर्पना डरोला पुरुषो, मणिमंत्र अने औषधवडे स्वस्थ थयेला जोवामां आन्या छे पण दृष्टिविषसर्प जेवा दृष्टिमांविष वाळा एटले करडी नजरवाळा राजाओए डशेला पुरुषो फरीवार उठेला जोवामां आव्या नथी. "

पछी राजानी आज्ञाथी सुभटोए तेचीरने नगरना जाहेर जाहेर भागीमां फेरवी शूलीए चडाव्यो. पछी राजाना सुभटो गुप्तरीते संताई रहीने जीवा स्राग्या के, इवे जे पुरुष आ चोरनी साथे वातचित करे तेनी पासे सर्व नगरजननु चोरेलुं द्रव्य छे एम जाणीने तेने त्यां शोधवुं. तेवामां जिनदत्त नामे एक श्रेष्टी ते मार्गे नीकल्यो. तेणे चोरनुं आकंदन सांभळी चोर मत्ये कह्युं के, अरे चोर, पापरूपी वृक्षनुं आ भवमां आ वभ वंधन विगेरे फळ तने प्राप्त थयुं छे अने परलोक-मां नरक गतिनी वेदनारूप फळ प्राप्त थशे केमके प्राणीए ऊपार्जन करेलूं कमी अन्यथा थतुं नथी. परंतु इवे अंतकाळे पण तुं अदत्तादान (चोरी) ना त्यागरूपव्रत अंगीकार कर्य. ते सांभळी चोरे कह्युं, अरे शेट, मारा पग शीयाल खाई गया छे, अने कागडाओए मस्तकने ढोली नाल्युं छे. आ प्रमाणे मने पूर्वकर्मनुं फल उदयमां आव्युं हे, हवे हुं शुं करूं ? परंतु मने तृषा घणी छागी छे तथी कृपा करी मने पाणी छावी आपो. श्रेष्टी ते वात राजविरुद्ध जाणी मौन रह्यो. पुनः चोरे दीन आलापोवडे तेवीजरीते पाणीनी मागणी करी. जेथी श्रेष्टीए हिंमत लावीने कहूं के, हे भद्र, तुं तारा आखा भवमां करेला पापनी आलोचना कर्य. शेठना कहेवाथी चोरे पोताना आखा भवमां करेला पाप जणाव्या एटले जिनदत्ते चोरी प्रमुखना तेने पचलाण कराव्या, अने कहां के, "हे भद्र, एकत्व अने अन्यत्वभावना भाववाथी माणीना सर्व पाप झणार्द्धमां पण लय पामी जाय छे. तेथी तुं हवे ते भावना भाव्य सर्व जीवोने मैत्री भावे जो अने सर्व प्रकारनी आपित्तमांथी ऊद्धार करनार नम-स्कार महामंत्रनुं स्मरण कर्य. हुं जळ लेवाने जाउंछुं. " चीरे पुछ्युं के, कुपानिधि! आ पचलाणथी अने नमस्कारथी मारा महापाप जशे ? श्रेष्टी वोल्या के-

कृत्वा पापसहस्राणि हत्वा जंतुशतानि च। असं मंत्रं जिपत्वा च तिंथैचोपि दिवं गता ॥

" इजारो पाप करी, अने सैकडो जीवोनी इत्या करी, नवकार मंत्रने जपनारा तियीचो पण स्वर्गे गया छे. "

आ प्रमाणे तेने उपदेश करी जिनदत्त श्रेष्ठी जळ छेत्राने गयो. पछवाडे चोर समापियी मृत्यु पामी अंत समयेज आयुष्य वांधी सौधर्म देवछोकमां देवता ययो. "अहो, सत्संगतिनु फळ केवुं छे!" कहुं छे के,—

> महानुभावसंसर्गः कस्यनोन्नतिकारकः । गंगा प्रविष्ट रथ्यांबुः निदशैरिप वंद्यते ॥

"महानुभाव पुरूषनो संसर्ग कोनी उन्नित करतो नयी ? गंगामां भळेडुं शेरी खोनुं जळ देवताओयी पण वंदाय छे." जिनदत्त श्रेष्टी जळ लडेने आव्या, त्यां तो तेने मृत्यु पामेलो जोयो. परंतु पाते राजिवरुद्ध कर्यु छे एवं जाणी ते शकावतार चैत्यमां जईने कार्यात्समें रह्यो. सुभटोए सर्व वृत्तांत राजाने जणाव्युं. एटळे राजाए आज्ञा करी के, हे सुभटो, ए मुर्ख गाय जेवा पण कृत्ये वाय जेवा श्रेष्टीने चोरनी जेम विडंवना करीने मारी नाखो. सुभटोए तत्काळ श्रेष्टीने राजानी आज्ञा जणावी, तयापि ते ध्यानथी चलित ययो नहीं. पछी तेओ तेने अनेक मका-रनी विडंवना करवा लाग्या. ते वखते पेलो 'लोइखुरदेव' भवमत्यय अवधिकानवरे पोताना धर्मगुक्तनी एवी अवस्था जोईने विचार करवा लाग्यो के,—

अक्षरस्यापि चैकस्य, पदार्थस्य पदस्य च । दातारं विस्मरन् पापी, किंपुनर्धमेदेशिनं ॥

"एक अक्षर, अर्घपद के पद मात्रने भणावनारा गुरुने जे भुली जाय ते पापी करेधाय छे तो धर्मने वतावनारा गुरूने भुली जनार पापी कहेवाय तेमां तो शी नवाई?"
आवुं विचारी प्रतीहारनो वेप छई तरत ते त्यां आज्यो अने दंडाधातवडे सुभटोने
पूर्छित करी नाख्या. ते हकीकत सांभळी राजा चतुरंगसेना छईने त्यां आज्यो. देवे
तेमने कहां के, तमे धणां छो तथी शुं धई गयुं. कहां छे के, "धणां गजेंद्रो होय
पण ते एक दुवला सिंहनी वरावर पण थइ शकता नथी. कारण के, सत्त प्रधान
छे, कांइ मांसनो राशि प्रधान नथी. वनमां रहेला अनेक गजेंद्रो पण शुं एक सिंहना
नादवडे महने तजी देता नथी ? तजी दे छे. "आम कहीने एक राजा शिवाय
धीजा वधाने तेणे पृथ्वी उपर पाडी नाख्या. पछी आखा नगर उपर आकाशमां
शिला विकुर्वीने ते उपद्रव करवा लाग्यो. एटले राजा अने मंत्रीओ अंजिल जोहीने घोल्या के, हे देव! अमारो अपराध क्षमा करो. देव वोल्यो-अमारा धर्म गुरु
श्रीजिन्दन्त श्रेष्टीने तेना अपराध विना तमे शा माटे पीडा करो छो ? ते महाश्रयना महिमाथी मने आ देव समृद्धि प्राप्त थइ छे. एम कहीने तेणे बधो पोतानो

वृत्तांत कही संभळाव्यो. राजाए कहुं के साहित्य शास्त्रमां कहुं छे, के, नारीएसमा वृक्षो पोताने प्रथम पायेला थोडा जळने याद करीने पोताना मस्तकचपर भार वहन करता सता पोताना जिवीत पर्यंत माणसने अपृत जेवुं जळ आपे छे, तेज प्रमाणे करता सता पोताना जिवीत पर्यंत माणसने अपृत जेवुं जळ आपे छे, तेज प्रमाणे साधुपुरुषो करेला उपकारने जिवितसुधी मुली जता नथी. पछी प्रसन्न थयेला देवे साधुपुरुषो करेला उपकारने जिवितसुधी मुली जता नथी. पछी प्रसन्न थयेला देवे साधुपुरुषो करेला उपकार गंजितसुधी मुली जता नथी. पछी प्रसन्न थयेला देवे साधुपुरुषो करेला उपकार जिवितसुधी मुली जता नथी. पछी प्रसन्न थयेला देवे साधुपुरुषो करेला उपकार गंजितसुधी मुली जता नथी. पछी प्रसन्न थेला नवकार मंजिला करेला चारी विगरेना वतने अहण करो. सर्वेष तेम कर्युं अने जिनदत्त श्रेष्टी मोटा स्तमविद्ये पोताने घर आव्या. लोको पण प्रत्यक्ष जैनधर्मनी प्रशंसा करवा छाग्या.

जपर प्रमाणे लोह्खुर चोर लोहानी जूलीए परोवायो हतो, कतां अल्प काळना पण नियमने घारण करी जिनदत्त श्रावकनी सहायथी आद्यविमानने विषे

देवसमृद्धिन प्राप्त थयो.

\*

# व्याख्यान ८४ मुं.

हजु ए त्रीजा व्रतनीज प्रशंसा करे छे. अदत्तादाननैयम्य । ग्रहणैकरतो नरः । लक्ष्मीपुंज इवाप्रोति । भवद्वये महत्पदम् ॥ १ ॥

#### व्याख्या

"अदत्तादानना नियमने ग्रहण करवामां तत्पर एवो पुरुष लक्ष्मीपुंजनी जेम बन्ने भवने विषे महत्पदने पामे छे." अदत्तादान सामान्यपणे वे प्रकारतुं छे. सिचत्त अने अचित्त. सिचत्त पटले मनुष्य, पशु विगेरे अने अचित्त पटले आमृषणादि. ते बन्नेना ग्रहणनो नियम एटले विरति-विराम पामवुं ते. आ विषे लक्ष्मीपुंजनो प्रबंध छे, ते आ प्रमाणे.

लक्ष्मीपुंजनी कथा.

"इस्तिनागपुरने विषे सुधुर्मा नामे वणिक अने धन्या नामे तेनी स्त्री, बन्धे द्वारिद्रपणाना दुःस्वयी काळ निर्गमन करता इता. एकड्रा राज्यिक स्वाप्तां धन्याम

पद्मन्द्रमां कमळने विषे रहेला लद्मीदेवीने जोया. प्रातःकाले ते हकींकत पोताना पितने निवेदन करी. ते घणो खुशी ययो. तेणे कहां के, हवे आपणुं दारिद्र दूर थशे. ते समयं कोई देव स्वर्गमांथी चवी धन्यानी कुक्षिमां अवतयों. ते वलते तेना पूर्वभवना मित्रदेवोए तेना घरमां सुवर्ण विगेरेनी वृद्धि करी. पूर्ण मासे पुत्रनो प्रसव थयो. स्वजनोए मळी तेनुं लक्ष्मीपुंज एवं ययार्थ नाम पाडचुं. ते वालक शुक्ल्पक्षना चंद्रनी क्योत्स्नानी जेम वृद्धि पाम्यो. अनुक्रमे ते स्वयंवरमां मोटा धनाढ्यनी आठ कन्याओ परण्यो. ते रमणीओनी साथे स्वयहमां सुखानुभव करतां एक दिवस त्यां कोई देवे प्रगट थइने तेने कहां के, हे मित्र! तारा पूर्वभवनो वृत्तांत सांभळ:—

पूर्वे मणिपुरमां गुण्धर नामे तुं सार्थवाह हतो. एक वसते ते गुणधरे आ प्रमाणे एक मुनिनी वाणी सांभळी के, "प्राणिओने द्रव्यनुं हरण मरणधी पण विशेष दुःखदायक थाय छे, तेथी मुकृति पुरुषोए चौर्य त्यागनुं वत अवश्य अंगीकार करतुं." वळी छौकिक शास्त्रमां पण कहेल छेके, "कुडी साक्षी पूरनार, मित्रनो द्रोह करनार, कृतन्नी अने चौरी करनार, ए चार कुर्मचांडाल कहवाय छे, अने पांचमो जाति चांडाल छे." मनुए जमीनपर जळ छांटती कोई चंडालणीने पूछ्युं के, "महिरा मांसनी भक्षण करनारी हे चंडाळी! तारा एक हाथमां तो मनुष्यनी खोपरी छे, ते छतां जमणा हाथवडे जमीनपर जळ केम छांटे छे?" चंडाळी उत्तर आपे छे:—

मित्रद्रोही कृतन्नश्च । स्तेयी विश्वासघातको । कृदाचित्रिक्षतो मार्गे । तेनेयं क्षिप्यते छटा ॥

"मित्रनो द्रोह करनार, कृतव्री, चोरी करनार अने विश्वासघाती कार्द आ मार्गे चाल्यो होय (तो तेथी अपवित्र थयेली जमीनने पवित्र करवा माटे) तेबुं धारीने आ जळनो छंटकाव करुं छुं." वळी—

कूटसाक्षी मृवावादी । पक्षपाती झगट्टके । कदाचित्रिक्तो मार्गे । तेनेयं क्षिप्यते छटा ॥ २ ॥

"त्रोटी साजी पूरनार, असत्य वोलनार अने झगडामां पक्षपात करनार आ मार्गे चाल्यो होय तेवं घारी जळनो छंटकाव करुं छुं." "अग्निनी शिखानो स्पर्श करवो सारो, सर्पना मुखनुं चुंवन करवुं सारुं अने हाळाइल झेरने चाटवुं सारुं, पण परद्र-व्यने हरण करवुं ते सारुं नहीं." आ प्रमाणे देशना सांभळी गुणधर अदत्तादानथी विराम पाम्यो. एकदा विशेष धनना लाभने अर्थे ते गुणधरसार्थवाह घणो सार्थ लड़ देशांतरे चाल्यो. मार्गमां वेगवाळा घोडाने लीधे ते सार्थश्रष्ट यह महा

अरण्यमां नीकळी गयो. एकाकी अश्वपर वेसीने चाल्या जतां छझ मूल्यवाळी एक सुवर्णमाळा पृथ्वीपर पडेली तेना जोवामां आवी. परंतु ते लेवाथी अंगीकार करेला त्रीजा वतनो भंग यशे एवा भयथी तेणे ते लीधी नही. त्यांथी आगळ चालतां अश्वनी खरिओथी उखडी गयेली भूमिमां द्रव्यथी पूर्ण एवो एक ताम्रकुंभ जोवामां आव्यो. तेने पण कांकरा तूल्य मानी ते आगळ चाल्यो. त्यां अकस्मात् अश्व मूर्छी साईने भूमिपर पड्यो. ते जोईने तेणे मनमां विचार्य के, जो कोई आ अश्वने सज्ज करे तो हुँ तेने मारुं सर्व द्रव्य आएं. आवुं चितवी पोते तृपातुर यवायी जल शोध-वाने आगळ चाल्यो. तेवामां एक वृक्ष साथे वांधेलो पाणीनो पोटलीओ अने पासे पांजरामां रहेको पोपट तेना जोवामां आव्या. पांजरामां रहेळा शुक पक्षीए तेने कर्छुं के, हे सुभग! तुं आ पोटलीआमांथी जळ पी, हुं तेना स्वामीने कहीश नहीं. सार्थ-पित बोल्यों के, किद दुषाने लीधे पाण चाल्या जरों तो ते अनेक भवने विषे पाछा आप्त थशे पण हुं परनुं अदत्त तो यहण करीश नहीं. कहुं छे के, "हास्यथी, रोषथी के छळथी पण जे प्राणी अदत्त ग्रहण करे ते तेनुं फळ प्राप्त करे छे." जेम कुष्ण चासुदेवनी स्त्री सृक्षिमणीए वनमां मोरना इंडाने छड़ने हाथमां गोपवी राख्युं हतुं, तेने शोधवाने मयूरी सर्वत्र भमती जोई सोळ यडी सुधी राखीने पछी तेणे पाछुं मुक्युं, पण ते इंडुं हाथमां लागेला अलताना रंगथी रातुं थयेलुं जोई मयूरीए घणीवार सुधी सेव्युं नही. तेवामां वर्षाद आव्यो अने तेना जळथी ज्यारे ते घोवाई गयुं त्यारे तेने सेन्युं. आ कर्मथी रुक्मिणीने सोळ वर्ष सुधी पुत्रनो वियोग थयो. आ प्रमाणे हास्यथी पण अदत्तादान लेवावडे तेनुं कप्टकारी फल प्राप्त थयुं. आ दष्टांत हास्य उपर छे अने रोपथी अदत्तादान लेवाना संवंधमां देवानंदा अने त्रिशलानुं दृष्टांत छे, तेथी हे शुक! हुं स्वाम्यदत्तने यहण करतो नथी.

आवी वत पाळवाने विषे तेनी दृढता जोईने शुक पक्षी तुष्टमान थयो, अने तत्काळ पोतानुं स्वरूप फेरवी दिव्यरूप करीने वोल्यो के—हुं सूर्य नामे विद्याधर छुं, तमे गुरु पासे त्रीजुं वत छीशुं तथी विस्मय पामी द्रव्यनिधि देखाडवा विगेरेथी में तमारी परीक्षा करी, पण तमे तमारा छीधेछा व्रतमां दृढ रह्या, आ प्रमाणे कही तेणे तेनी पासे घणुं धन मुक्युं. सार्थ पति वोल्यो के—जे द्रव्य में शुद्ध व्यवहारवडे उपार्जन कर्युं होय तेज मारा सुखने अर्थे थाय, आ तमारुं धन मारे शा कामनुं, ते हुं छेवानो नथी. परंतु मारुं सर्व धन तमे प्रहण करो, कारण के प्रथममें धारणा करी हती के—जे मारा अश्वने जीवाडको तेने हुं मारुं धन आपीश. तेथी आ मारुं धन ते तमारुंज छे. विद्याधर बोल्यो के, में आ वधुं मायाथी बताव्युं हतुं तो तमे जे देवाने माटे धार्युं ते धन मारायी केम

छेवाय, माटे हे सार्थवाह! आपण वसेनुं द्रव्य कोई शुभ स्थाने वापरी नाखवुं. सार्थेश कहां के, तेवुं स्थान तो धर्मज छे, तेथी आपण जीणोंद्धारादि कार्यमां वापरीने आ द्रव्यने छतार्थ करीए पछी ते वसे जणाए तेम कर्युं. सार्थवाह सार्थनी साथे पोताने घर आव्यों. अनुक्रमे मुनिधर्मने स्वींकारी आयुष्य पूर्ण थतां मृत्यु पामीने तुं लिक्षमी पुंज थयो छं, अने सूर्य विद्याघर ते हुं व्यंतर देव थयो छं. तारा महिमायी अने भाग्यथी प्रेराएको हुं तारा गर्भ दिवसधी मांडीने आज दिन सुधी रत्नादिकनी वृद्धि करं छुं.

आ प्रमाणेनी इकीकत सांभळतांज लक्ष्मीपुंजने जातिस्मरण शान उत्पन्न यपुं. अनुक्रमे तेणे दीक्षा ग्रहण करी. अने मृत्युपामीने अच्युत देवलोकमां गयो. त्यांथी च्यवी मनुष्यपणुं प्राप्त करी शिवसुखने संपादन करतो हवो.

खपरतुं दृष्टांत सांभळी जे प्राणी स्थिरपणाथी अद्त्तादाननो नियम महण करे छे तेने धन तथा सुवर्णनी उत्तम समृद्धि प्राप्त थाय छे. ते सार्थवाह पण परघननो त्याग करवाना नियमथी देवताओंने पूजवा योग्य थयो इतो. तेथी है भन्यो ! आ वत महण करवाने प्रयत्न करो.

# व्याख्यान ८५ मुं.

हवे स्वदारसंतोष नामे चोथुं अणुव्रत कहेछे. संतोषः स्वेषु दारेषु त्यागश्चापरयोषिताम् । गृहस्थानां प्रथयति चतुर्थे तदणुवतम् ॥ १ ॥

#### व्याख्या

"पोतानी विवाहित स्तीमां संतोष अने परस्तानो त्याग ए गृहस्थने चांधु अणुव्रत कहेवाय छे." गृहस्थोए पोतानी विवाहित स्तीमांज संतोष करवा. बीजानी एटले पोताथी जुदा जे मनुष्य, देव, अने तिर्यंच तेनी स्त्राओंनो तेमज अन्यपरिणीत संग्रहीत अने विधवास्त्रीओनो पण त्याग करवा. जो के अपरिगृहित देवीओ अने तिर्यंचनी स्त्रीओं कोईए ग्रहण करेली नथी तेमज विवाहित नथीं

तथापि तेओ वेश्यातुल्य तेमन परजातिने भोग्य होनाथी परस्त्री कहेवाय तेथी तेनो त्याग करवो चेज योग्य छे. जे स्वदारसंतोषी छे तेने तो वधी परस्रीओन छे. दार शब्द्यी उपलक्षणवडे स्त्रीओए पण पोताना पति शिवाय बीजा सर्व पुरुषोने वर्जी देवा. ए भावार्थ जाणगो. गृहस्योने माटे आ चोथुं अणुवत श्रीजिनेश्वर भग-चेंते कहेलुं छे.

मैथुन वे प्रकार्तु छे. सूक्ष्म अने स्युल. कामना उदयथी जे इंद्रियोनो जरा विकार ते सूक्ष्म अने मन वचन, कायाथी औदारिक देहधारी स्त्रीसाथे जे संभोग करवो ते स्थूल. अथवा मैथुनत्यागरुप ब्रह्मचर्य वे प्रकारनुं छे. सर्वथी अने देश्रयी. तेमां सवथी विरित स्वीकारवाने अशक एवा उपासके (श्रावके) देश-यी आ ब्रन ग्रहण करवुं. आ वतिषे एक प्रवंध आ प्रमाणे छे. "अहो, ब्रह्मचर्यन्त्रत केंद्रं उत्तम छे के जे मुक्तिनुं कारण कहेवाय छे. वळी ते नागिलने विपत्ति नुं विनाशक पण थयुं हतुं." अब कथा.

नागिलनी कथा.

भोजपुर नामना नगरनां सर्वज्ञ धर्ममां तत्पर लिंदीण नाम एक विणक इतो. तेने नवतत्वने जाणनारी नृंदा नामे एक पुत्री इती. एक वखते वरने माटे बोध करतां पिताने तेणीए आ प्रमाणे जणाव्युं के "हे पितानी! जे पुरुष काजल वगरनो, वाटथी रहित, तेलना व्यय विनानो अने चंचळपणा रहित दीवाने धारण करे ते मारो पित थाओ." पुत्रीनुं आ वचन सांभळी तेनो दुष्कर अभिग्रह जाणीने चिंतातुर थयेला लक्षण बोडे ते वार्ता नगरमां लट्घोषणाथी जाहर करी. आ खबर नाशिल नामना एक खुनकारे सांभळी एटले कोई यक्षनी सहाययी तेणे तेवो दीपक कराव्यो. ते नजरे जोई श्रेष्टी हर्प पाम्यो अने पोतानी पुत्री नंदा ते नागिलने परणावी. नंदा पोताना पितने व्यसनासक्त जाणी घणी कचवावा लागी, तथापि नागिले ते व्यसन छोड्युं नही. तथी इंग्रेशां द्रव्यनो व्यय यवा लाग्यो. लक्षणकेट पुत्रीना स्त्रहथी तेने द्रव्य पूरतो हतो अने नंदा पितनी साथे मन विना पण निरंतर परिचय राखती इती. एक वखते नागिलना मनमां एवो विचार यथों के, अहो, आ स्त्रीनुं केवुं गांभीर्घ छे के जे हुं मोटो अपराधी छतां मारी लपर कोप करती नथी.

अन्यदा नागिले कोई ज्ञानी मुनिने भक्तिपूर्वक पुछ्युं के, हे महामुनि, आ मारी पिया शुद्ध आश्यवाळी छतां पण मारी उपर मन धरती नथी तेनुं शुं कारण? मुनिए ते नागिलने योग्य जाणी तेनी यासे अंतरंग दीपकनुं स्वरूप आ प्रमाणे क्युं- तारी स्त्रीनी एवी इच्छा इती के " जे पुरुषना अंतः करणमां माया रूप काजल न होय, जेमां नवतत्व विषे अस्थिरता रूप वाट न होय, जेमां स्त्रेहना भंगरुप तेल ने च्यय न होय अने जेमां समिकितना खंडन रूप कंप (चंचळता) न होय तेवा विवेक रूपी दीपकने जे धारण करतो होय ते मारो पित याओ " आ प्रमाणे दीपना मिषथी ते स्त्रीए जे अर्थ धार्यो हतो, ते कोई जाणी शक्युं नहीं अने तें तो धूर्त-पणार्थी यक्षने आराधीने कुत्रिम बाह्य दिपक वताव्यो एटले श्रेष्टीए पोतानी पुत्री तने आपी. हवे तुं के जे महा व्यसनी छे तेनी उपर शीळादिगुणे युक्त एवी ए तारी स्त्रीनुं मन लागतुं नथी. तेथी जो तुं वतने अंगीकार करीश तो तारं इच्छित पूर्ण थशे.

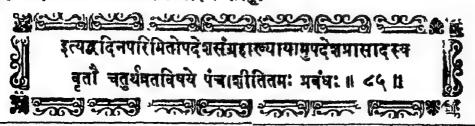
नागिले पुछ्युं, भगवान्! सर्व धर्ममां कयो धर्म श्रेष्ठ छे? मुनि वोल्याने हे भद्र! श्रीजिनेंद्रमभुए पोताना सुगंधवडे त्रण भुवनने सुगंधमा करनार समित्वपूर्वक शील धर्मने सर्वधर्ममां श्रेष्ठ कहेलो छे. ते विवे शास्त्रमां कहुं छे के, " ले पुरुपे पोताना शीलक्ष्प कपूरना सुगंधवडे समस्त भुवनने सुगंधी करेलुं छे तेवा पुरुपने वारंवार नमीए छीए. " वली कहुं छे के, " क्षणवार क्षणवार भावना भावनी, अमुक वखत दान देवुं अने अमुक तपस्या करवी ते स्वल्प काली होवायी सुकर छे, पण याविज्ञिवित सुधी शील पालवुं ते दुष्कर छे." ' नारद सर्व देकाणे हेश करावनार, सर्व जननो विध्वंस करनार अने सावद्य योगमां तत्यर एवो छतां जे सिद्धिने पामे छे ते निश्चे करीने शीलनुंज माहात्म्य छे." इत्यादि गुहवाक्य सांभळी नागिल प्रतिवोध पाम्यो. ,अने तत्काल सप्रकित, शील अने विवेकक्ष्प दीपकने स्वीकारी ते दिवसथी ते श्रावक धर्मने आचरवा लाग्यो.

एक वसते नंदाए कहुं के, हे स्वामी! तमे वहुं सारूं कर्युं के आत्माने विवेक प्रत्ये पमाड्यो. शास्त्रमां कहेल छे के, "जिनेश्वरनी पूजा, मुनिने दान, साधर्मीनुं वात्सल्य, शीलपालन अने परोपकार ते विवेकरूपी वृक्षना पछ्छवो छे." नागिल बोल्यो-प्रिया! सर्वने आत्माना हितने अर्थे विवेकवडे धर्म करवानो छे. विवेकरूप अंकुश विनानो मनुष्य सर्वदा दुःखी होय छे. देवो मुर्ख पकराना युथना स्वामी, (भरवाड)नी जेम इंमेशां इसतो होय तो पण तेनुं हत्वापणुं कांई कामनुं नथी."

आ प्रमाणें सांभळी नंदा घणो हर्ष पामी अने भावथी तेनी सेवा करवा लागी. अन्यदाते पिताने, घेर गई हती अने नागिल एकलो चंद्रनी उयोत्स्तामां मुतो हतो, तेवामां कोई पितिवयोगी विद्याधरनी पुत्रीए तेने जोयो. तेथी तत्काल कामानुर थई त्यां आवीने तेणे कह्युं के, '' हे महापुरुष ! जो मने स्त्रीपणे स्वीकारको तो हुं तमने बे अपूर्व विद्या आपीश. आ मार्छ लावण्य जुवो, मारा वचनने अन्यया करको

नहीं. " आ प्रमाणे कही श्रारी धुजती ते वाळा नागिलना चरणमां पडी एटले नागिले जाणे अग्निथी बळ्यो होय तेम पोताना पगने संकोचीदीधा, एटले ते बाळा एक लोढानो अग्रिमय रक्त गोळो विकुर्वीने वोली के, अरे अश्रम ! मने भज-नहींतो हुं तने भस्मीमृत करी नाखीश. ते सांभळी नागील निर्भवपणे विचार वा लाग्यों के "दश अवस्थारूप होवाथी दशमस्तकबाळा रावणनी जेवो काम. देवरूप राक्षस के जे देवदानदोथी पण दुर्जय छे तेपण शीलरूप अस्रयी साध्य थाय छे." आम विचार करे छे तेवामां सूत्कार शब्द करती ते बाळाए जाज्वल्यमान स्रोदानो गोळो तेवा मस्तक उपर नाल्यो. ते वखते नागिस्रे नमस्कार मंत्रन् स्मरण कर्युं एटले ते गोळो खंड खंड चूर्ण थई गयो. एटले ते वाळा लजाथी अहरूय थई क्षणवारमां नंदानुं रुप लईने एक दामीए उघाडेला द्वारमांथी त्यां आवी अने मधुर वाणीवडे बोली के-हे स्वामी, मने तुमारा विना पिताने घर गम्युं नहीं तेथी रात्री छतां अहीं आवती रही. तेन जोई नागिल विचारमां पडया के, नंदा शियळ संबंधी स्वपतिना संबंधमां पण संतोपवाळी छे, तेथी तेनी आवी चेष्टा होय नहीं. आनुं रुप तो तेवुं छ पण परिणाम तेवा जणाता नथी, तेथी एनी परिक्षा कर्या विना विश्वास करवो योग्य नथी. आम विचारी नागिले कह्युं के, हे प्रिये! जो तुं खरेखरी नंदा होय तो मारी समीप अस्खिलतपणे चाली आवय. ते सांभळी ते खेचरी जेवी तेनी सामी चाली तेवीज मार्गमां स्खलित थई गई. धर्मना महिमाथी नागी है तेनुं सर्वे कपट जाणी लीघुं पछी विचार्य के, कदि बीजाना कपटथी आबी रीते बीछनी भंग पण याय, माटे सर्व विरतिपणुं अंगीकार करवुं तेज योग्य छे. आवुं धारी तेणे तत्काळ केश्वनो छोच कर्यो अने पेला यक्षदीपने कहुं के, तुं इवे तारस्थाने जा. यहे कहुं के, हुं यावज्जीवित तारी सेवा करीश्व. मारा तेजथी तमने जजेही नहीं पड़े. पछी सूपनो उदय थतां नागिले नंदानी साथे गुरु पासे जई वत ग्रहण कर्युं अने यक्षदीपनी साथे आश्चर्य सहित पृथ्वीपर विहार करी, संयम पाळी, त दंपती इरिवर्ष क्षत्रने विषे युगलिआ थया. त्यांथी देवता यह पुनः नरभवने पामी मोक्षने माप्त यया छे.

"आ नागिले द्रव्यदीपयी शुभ एवा भावदीपने चितव्यो अने स्वदारासंतोष वतमां दृढ प्रतिका रांखी तो ते विद्याधरीयी पण कंपायमान थयो नहीं." माटे सर्व माणीए स्वदारासंतोपवत दृढपणे धारण करवें.



१ मुनिने दीपकनी चजेही पडे तेस्थान बर्च्य छे तथी यहे आ प्रमाणे कह्युं छे.

# व्याख्यान ८६ मुं.

पुनः ए वतनीज प्रशंसा करे छे.

यः स्वदारेषु संतुष्टः, परदारपराङ्मुखः । स यही ब्रह्मचारित्वाद्यतिकृष्टपः प्रकृष्पते ॥ १ ॥

#### व्याख्या

"ने मनुष्य पोतानी विवाहित स्नीमां संतुष्ट यई परस्नीयी विमुख रहे छे, ते गृहस्य छतां पण ब्रह्मचारीपणायी यति समान कहें नाय छे. " आ विषे नीचे प्रमाणे प्रवंध छे. श्रीर नगरमां कुमार अने देवचंद्र नाम वे राजकुमार वंधु हता. एक वखते तेश्रो धर्म गुरुनी वाणी सांभळवाने माटे च्यानमां गया. त्यां गुरुए देशनामां कहुं के, "कोई मनुष्य कोटी सोनैयानुं दान दे अथवा श्रीवीत-रागनो कंचनमयं प्रासाद रचावे तेने तेटलुं पून्य नथाय के जेटलुं ब्रह्मचर्पधारी पुरुषने याय छे." केटलाएक प्राणी शीलवतीनी जेम दु:खमां पण पोतानुं शिलवत छोडता नथी. ते कथा आ प्रमाणे छे.

#### शीलवतीनी कथा.

लक्ष्मीपुर नगरमां समुद्रद्त्त नामे श्रेष्टी इतो. ते पोतानी शीलवती नामनी िमयाने घेर मुकी सोप्रभृति नामना एक ब्राह्मणनी साथे परदेशमां गर्या. वित्र तो केटलाएक दिवस रही श्रेष्टीनो संदेशपत्र लई पोताने घेर पालो आव्यो. आ खबर थतां शीलवती पोताना पितए मोकलेल संदेशपत्र लेवाने सोमभूति घेर गई. वित्र ते सुंदर खींने जोईने कामातुर थयो, तेथी वोल्यो के, हे कुशोदरी! प्रथम मारी साथे क्रीडा करे तो पछी तारा पितनो संदेशपत्र आपुं. ते चतुर खी विचारीने बोली के, हे भद्र! रात्रीना पेहेला पोहोरे तमारे मारे घर आवर्चुं. आ प्रमाणे कहीने ते सेनापित पासे आवी अने कह्युं के, हे देव, सोमभूति मारा पितनो संदेशपत्र लाव्यो छे, पण मने आपतो नथी. ते सांभळी अने तेनुं स्वरूप जोतां मोह पामी ते बोल्यो के, हे सुंदरी! प्रथम हुं कहुं ते कबुल करो तो पछी तमने ते पत्र अपानुं. वतमंगना भयथी तेने बीजे पोहारे पोताने घेर आववानुं कही ते मंत्रीपासे गई, तेनी पासे फर्याद करतां तेणे पण मोह पामी डपर प्रमाणे मांगणी करी एटले तेने जीजे पोहोरे घेरे आववानुं कही ते राजापासे गई. राजाए पण तेवीज पार्थना करी

एटले तेने चोथा पोहोरे आववानुं कहुं. पछी घर आवी पोतानी सासुनी साथे संकेत कयों के, तमारे मने चोथे पोहोरे वोलाववी. आ ममाणे संकेत करी ते पोताना एकांतवासमां तैयार थईने रही. पहेले पोहोरे पेलो ब्राक्षण आव्यो तेनी साथे स्नानपान विगेरेमांज पेहेलो महर निर्ममन कर्यों, तेवामां करेला संकेत ममाणे सेना-पात आव्यो. तेनो शब्द सांभळतांज ब्राह्मण भयथी कंपवा लाग्यो. एटले तेने एक मोटी पेटीना खानामां नाख्यो. एवी रीते सेनापित, मंत्री अने राजाने पण पेटीना जुदा जुदा खानामां पूर्यो. आ ममाणे चारेने पूरी मातःकाले रुदन करवा लागी. एटले तेना कुटुंवीओए आवीने पूछ्युं के, भद्रे, केम रुदन करे छे ते वोली के, मारा स्वामीनी दुःखवाची सांभळीने रुदन कर्ह्युं. ते सांभळी तेना संवंधीओ आ शेढ अपुत्र मरण पामेलो होवाथी तेना खवर आपवामाटे राजा, मंत्री, अने सेनापितनी पासे गया, पण तेओ तो तेमने स्थाने मळ्या नहीं एटले तेओए राजपुत्र पासे जईने विज्ञान करी के, हे कुमार ! समुद्रद् श्रेष्टी पर-देशमां अपुत्र मृत्यु पाम्या छे. माटे तेनी समृद्धि आप महण करो. कुमार तेने घर गयो तो घरमां वीजुं तो कांई जोयुं नहीं मात्र एक मोटी पेटी तेना जावामां आवी. एटले ते राजभुवनमां लई जई उघडांनी तो तेमांथी विम्न विगेरे चारे जण लज्जा पामतासता वहार नीकल्या. राजाए ब्राह्मण, सेनापित अने मंत्री त्रणेने देशपार कर्या अने शीलवतीनो सारी रीते सरकार करी तेनी घणी मशंसा करी.

आ प्रमाण गुरुपासे धर्म सांभळीने कुमारे स्वदारासंतोष वत ग्रहण कर्यु. देवचंद्रे दीक्षा ग्रहण करी. शुद्ध आहार ग्रहणने करतो हतो ते महा तपस्वी थयो.

एक वसते देवचंद्रमुनि विहार करतां करतां श्रीपुरनी निजकना एक देवाल-यमां थावीने रह्या. ते सामळी कुमारचंद्र राजा तेमने वांद्वा गयो अने पाछो आव्यो. ते सवर जाणी राणीए एवा अभिग्रह कर्यों के, '' काले सवारे दवचंद्रयितने वांद्या पछी मोजन करीश." प्रभाते मुनिने वंदन करवा नीकळी त्यां वचमां नदीए पूर आवेलुं इतुं अने उपर जल वृष्टि पण थती इती. तेथी राणी स्खलित थईने नदीने कांढेज उमी रही एटले राजाए तेने वोलावीने कह्युं के, हे प्रिया! तमे नदीने एम कहों के, हे देवी नदी! जे दिवसे मारा दीयरे ब्रत लीधुं ते दिवसथी मांडीने जो मारा पित खरेखरी रीते ब्रह्मचर्य वतने घारणने करी रह्या होय तो मने मार्ग आपो. ते सांभळी राणीए चिंतव्युं के, मारा पित आम कहे छे, पण तेना ब्रह्मचर्यनी वात हुं शुं नथी जाणती! तोपण ठीक छे, जे हशे ते त्यां जणाशे, माटे हमणां तो पितनुं वाक्य स्वीकारुं; केमके जो पितना वाक्यनां शंका लावुं तो मारुं पितवत खंडित थाय. ते विषे कह्युं छे के,

## सती पत्युः प्रभोः पत्ती ग्ररोः शिष्यः पितुः सुतः। आदेशे संशयं कुर्वन् खंड्यत्यात्मनो वतं॥

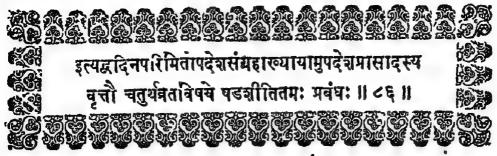
" जो सती श्ली पतिना वाक्यमां, सेवक राजाना वाक्यमां, शिष्य गुरुना वा-चयमां, अने पुत्र पिताना वाक्यमां शंका छावे तो तेओ पोताना वतने खडित करे छं. " आवुं चितवीने ते नदीनी पासे गई अने विनयशी पोताना पतिनुं वाक्य कहुं एटले तत्काल नदीए मार्ग आप्यो. ते मार्गे नदी उत्तरी सामे कांढेना देवालयमां जइ पाताना दीयर मुनि पासेथी धर्म सांभळ्यो. मुनिए पुछयुं, तमने नदीए शी रीते मार्ग आव्यो १ देवीए जे वन्युं हतुं ते यथार्थ कहीं संभळाव्युं, एटले मुनि बोल्या के भद्रे! सांभळो, मारा सहोदर वंधु पण मारी साथेज वत छेवाने इच्छता इता पण स्रोकोना अनुग्रहने माटे तेमणे राज्यनो स्वीकार कर्यो. तेओ व्यवहार्थी जो के राज्यनो अने इंद्रीयोना भोगनों अनुभव करे छे, तथापि ते निश्चयथी ब्रह्मचारीज छे. कादवमां कमळनी जेम गृहवासमां रहेता एवा पण ते राजानुं मन निर्लेप होवाथी तेने विष ब्रह्मचारीपणुं घटे छे. पछी ते राणीए अभिग्रह पूरी थवाथी वनना एक भागमां जई साथे लावेला गुद्ध आहारवडे पोताना दीयरने पतिलाभित कयी अने पछी पोते पण भोजन कर्युं. पछी ज्यारे तेनी जवानी इच्छा थइ एटले चालती वखते देवीए मनिने पुछर्युं के, मारे नदी शी रिते उत्तरवी ? मुनिए कह्युं के, तमे नदीनी आप्रमाणे प्रार्थना करों के, हे नदी देवी! जो आ मुनि वत ग्रहण कर्युं त्यारथी सदा उपवासी रहीने विचरता होय तो मने मार्ग आयो. आथी विस्मय पामी राणी नदीने तीरे गइ, अने मुनिनुं वाक्य संभळावतांज नदीए मार्गे दीधो. ते मार्गे नदी जतरीने ते पोताने घर आवी. विस्मय पामेली राणीए राजाने ए वृत्तांत जणावी पुछयुं के, हे स्वामी! आ-जेज में तमारा बंधु मुनिने पारणुं कराव्युं ते छतां तेओ उपवासी केम कहेवाय ? राजा बोल्या-देवी! सांभळो, ते विषे शास्त्रमा कहुं छे के, "साधु निरवद्य आहार करता होवाथी नित्य उपवासी छे, मात्र उत्तर गुगनी बृद्धि करवाने माटे तेओ शुद्ध आहार ले छे तथापि ते उपवातीन छे." वळी वीने पण कहां छे के;

## अकृताकारितं शुद्धमाहारं धर्महेतवे । अञ्चतोपि सुनेर्नित्योपवासफलसुच्यते ॥

" नहीं करें छो अने नहीं करावेलों एवो शुद्ध आहार मुनि, चारित्र धर्मना प्रतिपालनने माट वापरे छे, तेथी तूने नित्य उपवासनुं फळ प्राप्त थाय छे."

इत्यादि वचनाथी पोताना भत्ती अने दीयरनुं माहात्म्य जाणी राणीए मन

खपर प्रमाणे अविलवतना महहात्म्यथी जेम नदीए राजानी प्रियान मार्ग आप्यो, तेम जे प्राणी ते वतने मनमां धारण करे छे, तेने कर्मरूप समुद्र अक्षर एवा शिव मार्गने आपे छे.



## व्याख्यान ८७ मुं.

आ चोथा व्रतमां पण जे वर्जवा योग्य पांच अतिचार छे ते कहे छे.

इत्वरात्तागमोऽनात्तागतिः परविवाहनम् । मदनात्याग्रहोऽनंगकोडा च ब्रह्मणि स्मृता !! ﴿ ॥

### **ठ्या** रूया

"थोडा काळ माटे कोइए राखेळी वेश्यानो संगम, कोइए नहीं ग्रहण करेली एत्री वेश्या स्त्रीनो संगम, पारका विवाहनुं कराववुं, काम भोगमां तीम अनुराग अने अनंग कीडा ए पांच ब्रह्मचर्य वतमां अतिचार छे तेने स्थजी देवा."

इत्वरा एटले पत्येक पुरुष पासे जनारी वेश्याने कोइए अमुक काळ माटे पोन्तानी करी राखी होय तेनुं ग्रहण अथवा कांइ मूल्य टरावी अमुक काळ सुधी पोते स्त्री तरीके स्वीकारवी ते. ए प्रमाणे पोतानी करी राखेली वेश्यानुं सेवन करनार पुरुष पोतानी बुद्धि कल्पनाथी तेने पोतानी स्त्री समान गणी मनमां वतनी सापेक्ष वृत्ति धरावे के मारे तो परस्त्रीनो मात्र त्याग छे अने आ तो आटलो काळ मारी स्त्री थएली छे, तेथी मारा व्रतनो भंग थयो नही पण ते थोडा काळ सुधी परिग्रहभूत थयेली होवाथी वस्तुताए तेने वीजानी स्त्रीज जाणवी. तेथी ए अतिचार छे. इति पथम अतिचार.

वीजा अतिचारमां अनात्ता एटले कोइए नहीं ग्रहण करेली वेश्या अथवा ज्यभिचारिणी स्त्री के जेनो पात विदेशे गयेलो होय, तेवी स्त्रीनुं आसेवन करवुं, अने तेमां एवी वृद्धि करवी के, आ स्त्री कांइ परस्त्री न गणाय. पण ते धारणामां अज्ञा-चता होवाथी अतिचार लागे छे. इति द्वित्तीय अतिचार.

आ वे मात्र परस्ती त्यागरूप वतवाळाने अतिचार छे पण जेने स्वदारासंतोष वत होय तेने तो अनाचारज छे अर्थीत् तेम करवाथी तेना वतनो भंग याय छे.

त्रीजा अतिचारमा वीजानी संतितनो कन्यादानना फळनी इच्छाथी अथवा संबंध विगरे कारणथी जे विवाह करावी आपवो ते अतिचार जाणवो. श्रावके ते पोतानी संतितने विषे पण संख्या परिमाण करवा रूप अभिग्रह करवो. एम संभळाय छे के, कृष्ण अने चेटकराजाने पोतानी संतितनो पण विवाह संबंध करवानो नियम हतो. आ पण सर्चित अंतर्सद्रावपणुं होवाथी अतिचार छे. इति तृतीय अतिचार.

काम भोगने विषे जे तीव अनुराग ते चोथो अतिचार छे. इतिचतुर्थ अतिचार.

हवे पांचमो अतिचार अनंग क्रीडा काम प्रधान क्रीडा ते परस्तीना अचर चुंवन, आछिंगन विगेरे करवुं ते अथवा स्वस्तीना संवंधमां वात्स्यायन मुनिए रचेला कामशास्त्रमां वतावेला चोराशी आसन विगेरेने सेववा ते. इति पंचम अतिचार.

आ प्रमाणे चोया ब्रह्मचर्य वतमां ए पांच अतिचार त्याग करवा योग्य छे, आ ब्रतने । दे गेहिणीनुं उदाहरण छे ते आ प्रमाणे:—

रोहिणीनी कथा.

पाटलीपुरमां नंद राजा राज्य करता हता, ते वलते ते नगरमां धनावह नामे एक श्रेष्टी रहेतो हतो. तेने रोहिणी नामे शिलवती प्रिया हती. अन्यदा धनावह श्रेष्टी समुद्रयात्रा करवा गयो हतो अने घर रोहिणी एकली हती. तेवामां एक वलते एवं वन्युं के, राजाए रोहिणीने तेना गोलमां वेटेली जोई. तेने जोई राजा कामानुर थयो. तेथी तत्काल एक दासीने रोहिणीनी पासे मोकली. दासीए त्यां जहने कहुं के, हे रोहिणी! तर्मीरुं पुण्य मोटुं लागे छे के जेथी नंद राजा तमांह आलिंगन करवाना अभिलापी थया छे. आ सांभळी रोहिणीए विंतव्युं के, "अहो, मूद लोको पोताना कुलधर्मनेपण त्यनी देता शरमाता नथी" आ राजा जनमत्त हस्तीनी जेम मारा शिलक्ष वृक्षने छलेडी नालशे, तेथी तेने कोई छपायथीन समनाववो योग्य छे. आम विचारी तेणीए दासीने कहुं के, भद्रे! आज रात्रे तुं राजाने मार्त्यां मोकलजे. दासीना वचनथी राजा हर्ष पामीन रात्रे तेने घेर आव्यो. रोहिणीए सूमितरफ दृष्टि राली तेनो योग्य सत्कार कर्यो. पछी भोजननेमाटे पोताना गृहमांथी जुदाजुदा वेप धरनारी स्त्रीओपांसे सुवर्णना, रूपाना, अने कांसा विगेरेना नवीनवी जातना पात्रो मुकाव्या, अने तेमां ते दासीन

श्रीए खावामां एक व रम आपे एवा जुदाजुदा वर्णना भोज्य पदार्थो जुदाजुटा अनेक ओरडामांथी लावी लावीने मुक्या. राजाए जुदा जुदा पात्रोमांथी रसनी स्वाद लेवा मांडयो, तथारि वधा पात्रमांथी एक ज स्वादवाळो रस आववाथी ते विस्मय पामी गयो, जेथी तेणे रोहीणोने पुछपुं के, मुग्धे! आ जुदा जुदा पात्र छतां अने तेमां जुदा जुदा वर्णवाळी वस्तु छतां तेनो रस एक ज प्रकारनो आवेछे, तमुं शुं कारण ?

रोहिणी बोली के, राजेंद्र! जे विवेकी होय ते तो एकज पात्रनांथी स्वाद हो, कारण के, सर्वनो स्वाद एकजछे जेम एमां स्थान ने वर्णनो भेद छतां रसतुं विशेषपणुं जजातुं नथी, तेमज एकज स्त्रीजातिमां क्ष्र के वेषादिना भेदथी शो फेर पढ छे १ जेम कोई माण र स्रांतिथी आकाशमां अनेक चंद्र जुए, पण वस्तुताए चंद्र एकज छे, तेम कामीकामस्रमथी स्रांत थई एकज स्त्रीजातिने अनेकपणे जुए छे.

हे राजा, लोकिक शासमां पण लिगपुराणने विषे अत्रह्म विषे लखे छ के, " एक माससूची निराहार रहेतो अने पारणाने दिवसे कंदमूल खातो एवो तापम पण मनमां तापसीने इच्छत्राधी कमाडमां मुख नाखीने मृत्यु पाम्यो हतो " ए कथा एवी छे के, सेलकपुरना उचानमां एक मटने विषे मासोपवासी तापम रहेतो हतो. एकदा त्यां कोई तापसी आवी चडी. तामसे तेणीने रात्रिवास करवा आश्रय आप्यो, पण पोताना शीलभंगना भयथी तेणे सूचन्युं के, "भो ता त्सी ! रात्रे तमारे मजबूत रीते कमाड वासीने शयन करतुं. कारण के अहि एक राक्षस आवे छे ते कदि मारा जेवा स्वर्थी तने बोलावे अने एधाणी पण आपे, तथापि तमारे कमाड उघाडवा नहीं, जो तुं उघाडींग तो ते राक्षस तारा देहने गळी जशे. " आ प्रमाणे कही तापस यहनी वाहार सूतो. अर्धरात्रे काम विकार उत्तव थवाथी तेणे अनेक रीते आछाप करी तापसीने वोछानी, पण पूर्वशिक्षत तापसीए द्वार उघाडयुं नहीं. छेदटे अंदर पेसवाने छिद्र पाडी तेमां मुख नारूगुं, परंतु ते दवावाथी तापस त्यांज मृत्यु पामी गया परंतु तेना शीलनुं खंडन नहीं थयेल होवायी ते देवता थयो. माःतकाले सर्वनी समीप प्रगट थई ते देवे पोतानुं स्वरुप कही बताबीन मेथुनना निषेध कर्यो. वळी विष्णुपुराणमां पण लखे छे के, ''वाराणसीमां गंगाना तीर उपर नंद नामना तापसे घणां वर्षसुधी तपस्या करी इती एक वसते गंगायां स्नान करती कोई दीने जोईने मोह पायी गयो. तेनी पाछळ पाछळ तेने घेर जई तेनी पार्थना करी त्यारे ते वोली के, हे तपस्वी! हुं चांडाछी छु, अने तमे तपस्त्री छो; तो मारा जेवी नीच साथे तमारे व्रत खंडन करवुं योग्य नथी तेना ए वचनने नही गणकारीने ते कामार्त तापसे तेनी साथे रतिक्रीडा करी. पछी आंखो उघडीं, एटले तेने घणो पश्चाचाप थयो. तेथी कामने

<sup>?</sup> कामांभपणे नेत्र विचायेला हता ते सिद्धिचार आववाथी उघड्या एम समजबुं.

धिकार करतो पोतानुं मस्तक शिलाजपर पटकीने मृत्यु पाम्यो. ते वखते ते आ ममाणे वोल्यो इतो.

# श्री रामराम धिग्धिग्मे जन्मना जीवितस्य च। याश्चरं दुश्चरं तप्त्वा चांडालोसंगमं गतः ॥

" अरे राम, राम, मारा जन्मने अने जीवितने धिक्कार छे, के जे हुं दुश्चर सपस्या तपी प्रांते चांडालीना संगमने प्राप्त थयो."

श्रीवीतरागना शासनमां पण कहुं छे के, "जेम किंपाकना फळ खाती वखते सारां अने मीठां छागे छे, पण परिणामे मृत्यु आपे छे, तेम विषयभोग पण भोगवती वखते सारां छागे छे, पण परिणामे अनेक भवमां मृत्यु आपे छे" आवां ते रोहिणीनां वचना सांभळी नंदराजाए अन्यायरुप ज्ञणने रुझवनारी एवी ते रोहिणीने खमावीने कहां के,

# संति विश्वे दुराचारोपदेष्टारः पदेपदे । हिताथेमुपदीकर्जी विरला एव केचन ॥

"आ विश्वमां दुराचारनो उपदेश करनारा तो स्थाने स्थाने छे, पण हिता-र्थनो उपदेश करनारा कोई विरला छे." एम कही स्वदारासंतोप वत महण करी नंदराजा पोताने घेर आव्यो.

हवे धनावह शेठ परदेशथी घणुं धन कमाई घर आव्यो. घर आव्या पछी एक वखते दासी पासेथी राजाना आववाना खबर मामळी तेणे चितव्युं के, जरुर मारी स्त्रीए पोताना शीलने खंडित कर्युं हशे. अही वीजा मनुष्य विनाना स्थानमां आवेलो राजा आवी सुंदर स्त्रीने केम छोडी दे. आखी रात आवा संकल्प विकल्प करतो राजा रोहिणीनी उपर निःस्त्रेह थयो. ते अरसामां रोहिणीना पुण्योदयथी एवं वन्यं के, वर्षादने लीधे नदीमां मोटं पूर आव्यं अने तेथी सर्व नगर रुंघाई गयुं. ते वखते रोहिणी सर्व लोकोनी समक्ष गोपूर (दरवाजा) उपर चडी हाथमां जळ लईने वोली के, हे सरिता, गंगाना जळनी जेम जो मारुं शील निर्मल होय तो तुं आ नगर पासेथी पाछी ओसर. तत्काल नदीनुं पूर उत्तरी गयुं अने सर्व जने।ए तेना शीलनी मोटी प्रशंसा करी. धनावह श्रेष्टीए स्नेह सहित थइ तेना शील धर्मने प्रणाम कर्यों.

खपर प्रमाणे महासती रोहिणीए शिल्नवतनी दृढतावडे जैनधर्मनी प्रभावना करीने भने पोताना मनुष्य जन्मने कृतार्थ करीने सुकृतनी मोटी प्रतिष्ठाने प्राप्त करी

इतिजपदेशमासादस्यवृत्तौ चतुर्थव्रतातिचारविषये सप्ताशीतितमः प्रवंधः ॥ ८७ ॥

## व्याख्यान ८८ मुं.

इवे ब्रह्म वर्यव्रतनुं रक्षण करवाथो शो ग्रण थाय ते कहे छे. ज्ञानादिसर्वधर्माणां जीवितं शीलमेव ये। रक्षन्ति प्राणिनस्तेषां कोर्तिमीति न विष्टपे॥ १॥

#### व्याख्या

" ज्ञानादि सर्व घर्मनुं जीवित शील छे. जे पाणीओ ते शीलनी रक्षा करे छे तेआनी कीर्ति आ जगतने विवे माती नथी." ज्ञानादि ए वाक्यमां आदि शब्दवडे दर्शन चारित्र विगेरे ग्रहण करवा. तेना प्राणक्ता ब्रह्मचर्य शील छे, अथीत् ते विना सर्व धर्म व्यर्थ छे. ते विषे अन्यदर्शनीना शास्त्रमां पण कह्युं छे के, "हे ग्रुधिष्टिर! जे एकरात्रि पण ब्रह्मचारी रह्यो होय, तेने जे गति मळे ते गति हजारो यहाथी पण मेळवी शकाती नथी."

जिनागममां तो ब्रह्मचारीने स्त्रीना विकारी अंग सामुँ जोवा विगेरेनो पण निषेय करेलो छे. कहुं छे के, " स्त्रीना ग्रप्त अंग रागोत्पादक होवाथी ब्रह्मचारीए जोवा नहीं, तेम स्पर्शवा नहीं. किद ते जोवाई गया के स्पर्शाइ गया तो तेमां राग चुद्धि न करवी. कहुं छे के, स्त्रीनुं रूप नजरे पड़ी जाय तो जोया वगर रहेवाय नहीं, पण डाह्या माणसे तेमां राग के द्वेष करवानुं छोड़ी देवुं. वळी गायनी योनिनुं मर्दन करीने गोमुत्र छेवुं नहीं. पण ज्यारे ते स्वेच्छाए मृत्रोत्सर्ग करे त्यारे छेवुं. किद खास काम होय तो तेमां चित्तनी एकायता न करवी. जो किद स्वप्रमां स्त्रीनो भोग थाय तो तत्काळ उठी ईर्यापिय मितक्रमण पूर्वक एकसो आठ श्वासोच्छ्वासं नो काउसाण करवी वळी स्त्रीओनी इंद्रियो जोवामां अने तेमनी साथ भाषण करवा विगेरेमां सर्वत्र यतना पूर्वक निवृत्ति करवी किवहुना. आ प्रमाणे जे प्राणी-ओ ब्रह्म व्रतने पाछे छे तेओनी कीर्ति आ विश्वमां मान्नी नथी." आ विषयमां जिनपाछनो प्रवंध छे ते आ प्रमाणे—

## जिनपाळनी कथा.

चंपानगरीमां माकंद नाम एक विशव रहतो हतो. तेने भद्रा नामे स्त्री हती. अने जिनपाल अने जिन्सक्षक नामे वे पुत्र हता. तेमणे अग्यार वस्त्रत समुद्रमां सफर करीने निर्विन्ने पुष्कळ द्रव्य उपार्जन कर्युं. अन्यदा आग्रह

१ चार लोगस्सनो, सागर वरगंभीरा सुधी .

करीने वारमी वखत मुसाफरीए जवाने तैयार थया. मातारिजानी आज्ञा रुई वाहाण भरीने चाल्या मार्गमां प्रतिकुल पवनवडे वाहाग जिलासाथे अयबाई भागी गयुं. वंने एक पाटीयुं मळवाची तरीने रत्नद्वीपे पहोच्या. त्यां एक दनमां क्रीडावापीनी अंदर तेओ जळकीडा करवा लाग्या. तेवामां ते रत्नद्वीपवासी देवीए प्रत्यक्ष थईने कह्युं के, तमे वंने मारीसाथे भोग भोगवी. नहींतर आ खड़-थी तमारो शिरच्छेद करीश. वंनेए भयथी ते स्वीकार्युं. पछी तेना शरीरमां शुभपुद्-गलो संक्रमावी अशुभ पुर्गाळोने दूर करीने ते तेमनी साथे भोग भोगववा लागी. एक वसते ते रत्नद्वीपनी देवीने मौधर्मइंद्रे आदेश कर्यों के, एकविशवार काष्ट विगेरे काढीने छवण समुद्रने निर्मळ करवी. आवी आदेश आवतां ते देवीए वंनेने शिखामण आपी के, तमारे यंनेए दक्षिण वाजुना वनमां जबुं नहीं. कारण के, त्या दृष्टिविष सर्प छे. तेथी अहीज रहेवुं, कदि जवुं होयतो वीजी बाजुना वनमां जबुं. आ प्रमाणे कहीने देवी पातान कामे गई.

पछवाडे वंने जणे विचार्यु के, आपणने देवीए दक्षिण वाजुना वनमां जवाने शामाटे अटकाव्या हशे, माटे ते वाजु जतुं तो खरूं. आम विचारी तत्काल तेओ कोत्कथी तेज वनमां गया. तो त्यां अस्थिनो मोटो समूह जीवामां आब्यो. आगळ जतां एक पुरुषने शूलीए चडावेलो जोयो. वंनेए तेने पुछयुं के, तुं कोण छे ? ते वोल्यों के, " हुं विणक पुत्र छुं, वाहाण भांगवाथी अहि आवी चडयो हतो. आ द्वीपनी अधिष्टायक देवीनी साथे में भोग भोगव्या हता, पण ज्यारे नम् आव्या स्यारे ते देवीए मने थोडा अपराधमां आवी द्वाए पोहोंचाह्यो छे. " था प्रमाणे सांभळी तेओ भय पामीने विचारवा लाग्या के, जेवी अती गात यई तेवी गति आपणी पण यवानी. पछी पुनः तेने पुछतुं के, अवारो छुटको अहींची शी-भीं। थाय ? ते वोल्यों के, अहिंथी पश्चिम दिनामा एक शैलक यह छे, ते पर्वति-िग् मोटा शब्दयी वोलें छे के, हुं कोने तारूं अने कोनुं पालन करुं? तमारे निनी पासे जई तेनी पूजा करवी अने जे समये ते वोले ते वखते कहेनुं के, हे य राज! अमने तारों ने अमारूं पालन करो. आ ममाणे लांभजी तेओर ते यक्ष पासे जई ते प्रमाणे कर्यु, एटले ते यक्ष बोल्यों के. "हे भद्रो! ते व्यंतरी महा दृष्टा छ, परंतु तमारे तेनाथी थय पामबुं नही. में विकुर्वेला आ अखनी पृष्ठ उपर तमे वेसी. न देवी तमारी पासे आवीने सराग अने मयुर वाणीयी तमने शोभ पमाडशे, तथापि तमारे चारेत थवुं नहीं. तेम करतां जेनुं मन तेनी वाणीयी क्षोभ पामक्षे तेने हुं समुद्रमां पाडी नाखीश " यहानो आ टराव तेमणे कवुल कर्यो. पछी यह अश्वरूपे थई पोतानी पीठ उपर तेमने वेसारी ने त्यांथी चारयो. अहि रत्नद्वीयनी देवी

इंद्रनी आज्ञा प्रमाणे काम करी पोताना वासगृहमां आवी. त्यां तेओने जोया नहीं एटले ते तेनी पछवाडे दोडी अने समुद्रमार्गे तेओ यक्षाश्वनो पीटपर वेसीन जता हता, त्यां आवी राग भरेली मध्र वाणीवडे वोली के,—अरे प्राणवल्लमो! मने अवलाने तनी दईने तमारे चाल्युं जवुं घटित नथी, मारा अपराधने क्षमा करो. इत्यादि अनेक आलापयी तेने पूर्ण रागी जाणी जिनसक्षित क्षोभ पामी गयो. यक्षे अवधिज्ञानवडे जिनस्क्षितना चित्तने विषयामक जाण्युं, एटले तत्काल पोतानी पीठजपरथी पाडी नाल्यो. एटले रत्नदेवीए खड़थी तेना कटके कटका करी नाल्या. जिनपाले हढ प्रतिज्ञाथी तेनी सन्मुख पण जोयुं नहीं. तेथी तेने क्षेम कु जल चंपा नगरीमां पोहोंचाडी यक्ष पोताने स्थानके गयो.

जिनपाछे सर्व वृत्तांत पोताना मातापिताने जणाव्यो. पछी वैराग्य पामी श्रीवीरमभु पासे दीक्षा छईने ते सौधर्म देवलोकमां देवता थयो त्यां वे सागरोपम आयुष्य भोगवी महाविदेह क्षेत्रमां सिद्धिने पामको. उपरना दृष्टांतमां तत्वक्ष जे उपनय छे ते छहा अंगमां विस्तारथी कह्यो छे. ते आ प्रमाणे—तेओ आ संसारमां रह्या सता निरंतर विषयभोगनी आकांक्षा राखे छे, तेओ घोर संसारसागरमां पडेछे अने जेओ भोगनी अपेक्षा राखना नयी तेओ संमार अटवीनो पार पामे छे. आ संसारमां दुःखी जीवने श्रीजिनाज्ञाना वचन ते सेलक यक्षना पृष्ट समान छे, जे समुद्र ते संसार छे, अने जे पोताने घर पोहों पवानुं ते सिद्धिगमन तृत्य छे. जे देवीं ते मोहिनीक्ष छे, तेमां जे छुव्य यई क्षोभ पामे ते जिनरक्षितनी जेम संसारसागरमां नहीं पडतां ते जेम पाताने घरे पहोंच्यो तेम प्रमतो नथी ते जिनपालनी जेम संसारसागरमां नहीं पडतां ते जेम पाताने घरे पहोंच्यो तेम प्रयान सुत्व—सिद्धिसुखने प्राप्त करे छे. आ प्रमागे ते कथानो उपनय छे.

उपरनी कथा उपरथी समजवानुं ए छे के, रत्नद्वीपनी देवीमां दृढ कामना-ने राखनार अने भोगस्रृहा करनार जिनरक्षित द्रव्य भाव वंने प्रकारना समुद्रमां पड्यो अने विषयमां निरपेक्ष रहेनार जिनपाळ श्री परमात्नानी सभामां यश्चनुं पात्र थयो.

## ठ्याख्यान ८९ सुं.

चोथा व्रतनो भंग थवाथी बोजा वधा व्रतोनो भंग थाय छे ते कहे छे.

वतानामिप शेषाणां चतुर्धवतभंगके। लीख्या भेदतामाहुः तस्माहुशोलतां त्यज ॥ ९ ॥

#### **ठ्या**ख्या

" चोथा वतनो भंग थवाथी वाकीना बधा व्रतनो सहेज भंग थइ जाय छे तेथी हे जीव, तुं दुःशीलपणानो त्याग कर." चोथा वतनो भंग थतां वाकीना प्राणातिपात विरमण विगेरे चार वतोनो पण अवस्य भंग थाय छे ते विषे श्रीजिने-श्वर भगवंत कहे छे के,—

स्तीनी योनिमां एक वे त्रण लाखधी मांडी उत्कृष्टा लक्ष प्रथक्तव वेइंद्रिय जीव उत्पन्न याय छे पुरुपनी साथे संयोग थतां जेम वांसनी युंगळी रुथी भरी होय तिमां लोढानी तपावेली सळी नाखतां रु वळी जाय, तेम ते जीवोनी हिसा थाय छे. बळी पंचेंद्रिय मनुष्य एवा एक पुरुषे भोगवेली स्त्रीना गर्थमां एक साथे उत्कृष्टा नव लाख गर्भज जीवी उत्पन्न थाय छे. ते नव लाख जीवोमां एक वे जीव जे विशेष आयुवाळा होय छ ते जीवे छे, वाकीना त्यांज विलय पामे छे. आवां ज्ञानीनां वचन उपरथी जीलवतनो भंग थवां प्राणातिपात विरमण नामे पहेलुं व्रत भंग थाय छे. तेम वीजुं मृपावाटना त्यागरूप व्रत पण नाश पामे छे, कारण के कामीजन सत्यवाटी होता नथी. ते विषे नीतिमां छखे छे के, विश्वक, वेश्या, चोर, धूतकार, व्यभिचारी, द्वारपाल अने कौल (नास्तिक) ए सात पृषाबादना मंदिररूप छै. तेम त्रीजा वतनो भंग पण थाय छे. अहीं कोइ शंका करे के, पिता विगरेनी आज्ञाथी परणेली स्त्रीनुं सेवन करतां त्रीजुं व्रत जे अदत्तादानना त्यागरूर छे, तेनो भंग केम कहेवाय? तेना उत्तरमां कहे छे के, अब्रह्म (दु:शील) सेवन करवाथी तीर्थिकर अदत्त लागे छे, कारण के, तीर्थंकरोए मुमुधु पुरुपोने सर्वथा अन्नह्म सेववानो निषेध कर्यो छे स्वामी जे मंडला थिपित तेनुं पण अटच छे. वाकीना वे प्रकारना अदच पोतानी मेळे तर्कथी जाणी लेवा. ए प्रकारे त्रीजा व्रतनो पण भंग थाय छे. चोथा व्रतनो भंग तो खुङ्कोज छे. पांचमुं जे परियहना त्यागरूप व्रत तेनो भंग कर्या शिवाय स्त्रीनो संबंध यद्योज संभवतो नथी. दंडकाचार्यंथमां छखे छे के, जे पोताना आत्माने स्त्रीना संगगां स्थापे छे, तेणे नव वाडने भांगी नाखी अने दर्शन गुणनो घात कर्यों समजवो वळी तेनाथी वीजा सर्व व्रतोनो पण भंग थाय छे.

आ प्रमाणे घणां दोपथी दूपित एवं अत्रह्म ( दु:शील ) छे, एम जाणीने हे जिन , तुं दु:शीलताने छोडी दे. हवे कोइ गृहस्य छतां पण प्रथम ध्यथी ते याव-ज्ञीवित त्रह्मव्रतने पाळे छे ते विषे कहे छे के, " कोइ उत्तम पुरुप बाळवयथी मांडीने ते व्रतने आदरे छे. जेम एक दंपतीए शुक्लपक्ष अने छुष्णपक्षना नियमथी ब्रह्मच्य पाळ्युं हतुं" तेनी कथा निचे प्रमाणे छे—

कच्छदंशमां एक नगरने विणे अहिंदास नामे श्रेष्टी रहेतो हतो तेने अहिंदासी नामे पत्नी हती. तेमने विजय नामे एक पुत्र हतो. ते गुरुनी पासे भणतो हतो. एक वखते ते विजये कोई मुनिना मुखर्थी आ प्रमाणे शीलनुं माहातम्ब सांभळ्युं के,

# अमराः किंकरायंते सिद्धयः सहसंगताः । समिपस्थायिनी संपत् शीलालंकारशालिनां ॥

" जेओए शीलहप अलंकारने धारण करेलो छे तेओने देवताओ सेवक यहने रहे छे, मिद्धिओ साथे आवी मळे छे अने संपत्ति तो समीपेज हाजर रहे छे." आवी देशना सांभळी विजये स्वदारा संतोष व्रत ग्रहण कर्युं, अने तेमां पण शुक्ष पक्षमां तेनुं पण सेवन करवुं नहीं एवो नियम लीधो.

तेन नगरमां बीजो धनावह नामे श्रेष्टी रहे छे. तेने धनश्री नामे खी छे. तेनी पुत्री विजयाए एक वसते शिल्नुं वर्णन सांमळी एवं व्रत लीधुं के कृष्ण पक्षमां पोताना पितने पण सेववो नहीं. धुगाक्षर न्यायथी एवं वन्युं के, तुल्य रूपवाळा ते विजय अने विजयानोज परस्पर संवंध थइ विवाह थयो. विजया सोळ शृंगार सजी, नवीन भव्य वस्त्रो धारण करी हर्ष पामती एकांते पोताना पित पासे आवी. एटले विजये पोतानी ते सलोचना प्रियाने कहां के, "अरे प्रिया, तुं मारुं हृदय छे, तमज मारो तुं जिब, श्वास अने प्राण छे; आ संसारमां प्राणीओने प्रियाजन तेज संसारसुखनुं सर्वस्व छे. हे चकोराक्षी, जो तारा जेवी प्रिया होय तो पछी रवर्गसुखनुं शुं काम छे ? अने जो तारा जेवी प्रिया न होय तो स्वर्गनुं सुख पण शा कामनुं छे ? पण हे अभे! में पुर्वे एवो नियम लिथों छे के, शुक्क पक्षमां मन, वचन, कायाथी शील पाळवुं. तेना हवे मात्र त्रण दिवस वाकी छे, ते व्यतित थया पछी कृष्ण पक्षमां आपणे रित

सुखने अनुभवर्शुं." आ प्रमाणेनां पोताना पतिनां वचनो सांभळी विजया अत्यंत ग्लानि पामी गइ. विजये ग्लानि थवानुं कारण पुछ्यं एटले ते बोली के हे स्वामी ! मारे क्रप्य पक्षमां बिल पाळवाना नियम छे. ते सांभळतां विजयने घणा खेद थयो. त्यारे विजयाए कहुं के हे स्वामीनाय! तमे वीजी खा परणीने तेनी साथे सुख भोग भोगवो, खेट करती नहीं. पुरुषोने तो वधारे खिंथों होय छे. वसुदेवने वींतेर हजार लीओ हती अने चक्रवर्तींने एक लाख ने वाणु हजार खीओ होय छे. ते सांभळी विजय वोल्यो के. हे सुजी है! मने आ वातमां कांइपण खेद थतो नथी. कारण के मारा माता पिताए मने दीक्षा लेतां लेतां वळात्कारे परणाव्यो हतो. वळी विषय सेववाथी कांड आयुष्यनी चुद्धि थती नथी, तेमज तेथी जगतमां महत्व के सर्व जीवोमां आधिक्य प्राप्त थतुं नथी. केंबळ ते मननी उत्सुकता मात्र छे, ते विषे श्रीविशेषावश्यक वृत्तिमां लखे छे के, ''मेतनी जेम खीने वळगी सर्व अंगने महान् प्रयास आपी आ प्राणी जे कीडा करे छे तेनाथीं तने सुखी केम कहेबाय ?" वळी पशु पक्षीओ पण विषयने तो सेवे छे तो तेमां ज्ञुं तत्त्व छे ? हे सुंदर्श ! आ जीवे देवताना भवमां असंख्याता वर्ष सुवी अगणित विषयों भोगव्या छे. ते विषे लोकप्रकाशमां कहुं छे के, "कल्पवासी देवताओंने एकवार भाग भोगवतां वे हजार वर्ष वही जाय छे. तेवी रीते वीजा देवताओंने पांचसो पांचसो वर्ष अनुक्रमे ओछा करवा एटले पंनरसो वर्ष ज्योतिपीने, एक हजार व्यंतरने अने पांचसो वर्ष भुवनपतिने एक वार भोग भोगवतां वही जाय छे." हे कमलाक्षी, आ संसारमां जे पुष्पमाळा, चंदन, तथा स्त्री विगेरेनुं पुद्गलजनित सुख छे ते नाज्ञदंत छे. अने चीजाना संयोगधी थयेलुं जे सुख ते वस्तुताए दु: खरूपज छे. कारण के ते मनना संकल्पथी अने उपचारयीज उत्पन्न थयेलुं छे. ते विषे श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमण कहे छे के, "जेम आफरो चडे तथा संनिपात रोग थाय त्यारे क्वाथ विगेरे असत्य उपचार करे ते दुःखरुप थाय छे, तेम विषयसुख ते प्रमाणे असत्य उपचार मात्र होवाथी दुखःरुपज छे." अर्थात् त्रिपयसुख ते क्वाथ, तथा डांभ देवानी चिकित्सानी जेम उपचारपणे सुखरुप लागे छे, पण ते दु:खरुप छे. पारमाधिक सुख तो श्रीसिद्ध परमात्माने न थाय छे. आत्मीक आनंदने रोध करनार सातासाता वेदनी कर्मथी उपजेला संयोग वियोग स्वभाववाळा सुखने मुख कोण कहे ! ते विषे कहुं छे के, साता अने असाता ए वंने सोनानी ने लोढानी वेडी पेहेची तुल्य छ खरुं सुखतो ते वंकेना विरह्यीज पाप्त थाय छे. लोकीक सुख देहने इंद्रीयनी अनुकुळतावडे गणाय छे पण वास्तविकसुख देहना अभावथीन छे. माटे हे मुगाक्षी ! दुखदायक विषयमां मारुं मन रुचि करतुं नथी. ते विषय छपर कहुं छे के,

## विषस्य विषयाणां च, पश्यतां महदंतरं । , उपभुक्तं विषं हंति, विषयाः स्मरणादिप ॥ -

" विष अने विषय ए वे वच्चे मोटुं अंतर छे, विष तो खावाथी मारे छे एण विषयों तो स्मरण मात्रथी मारे छे. " तथी हे सुंदरी ! हवे गंगाना जळ जेवुं निर्मळ शीळ मारे त्रिविधे जन्मपंथत रहो. पण आगणे आ वृत्तांत आपणा माता पिताने जणाववो नहीं. छतां तेमांथी ज्यारे कोइ आ वृत्तांत जाणे तो पछी आपणे अवस्य दिला छर्श्युं. आवो निश्चय करी ते दंपती पोताना जीवितनी जेम शीछनुं रक्षण करवा छाग्या. वंने जणा रात्रे एक श्रूच्यामां सुवे छे तथापि तेओमांथी कोइने कामोहीपन थतुं नथी. इंमेशां एकांतमां पण तेओ शीळ गुणनुंज वर्णन करता हता. आ ममाणे भावचारित्र पाळतां तेमने घणो समय चाल्यो गयो.

अन्यदा विम्नळ नामे कोई केवलीमुनि चंपानगरीमां समोसर्या, तेमनी देशना सांभळीने जिनदास श्रेष्टीए कहुं के, भगवन्, में एवा अभिमह लीधा छे के, मारे चोराशी हजार साधुओने पारणुं कराववुं. आ मारा मनोरथ च्यारे सफल थशे? केवली बोल्या के. एवा मुमुक्षु साधुओनो एक साथे संगम शीरीते थाय, कदि देवयोगे तेटला साधुओ मळी जाय तोपण आकाशपुष्पनी जैम तेटला शुद्ध अझ-पाननी सामग्री मळवी ते पण दुर्लभ छे. तेथी हे श्राद्ध! तुं कच्छ देशमां जा अने त्यां रहेला विजया अने विजय दंपतीनी भात पाणी विगरेथी भक्ति कर्य, तेथी तने तेटलुं पुण्य थाय. कहुं छे के "चोराशी हजार साधुओने पारणुं करावतां जेटलुं पुण्य थाय तेटलुं पुण्य शुद्ध अने छुष्ण पक्षना शिलवत घारी एवा दंपतीने भोजन कराववाथी थाय छे." आ प्रमाणे सांभळी जिनदासे ते दंपतीनो वृत्यांत पुछ्यो एटले केवलीए तेने सर्व वृत्तांत कही संभळाव्यो. ते सांभळी जिनदास अटी भक्तिथी भरपूर हृदये कच्छ देशमां आव्यो अने ते दंपतीनी अनिर्वाच्य भक्ति करी. तेमज नगरजनोनी आगळ तेमनुं दुश्वर चरित्र प्रगट कर्युं. ते चखते तेममः माताापेताए पण ते वात जाणी. श्रावक जिनदास घारेलो मनोरथ पूर्ण करी पोताने घर गयो. अने ते दंपती पण प्रतिज्ञा पूर्ण थवाथी दीक्षा लई मुक्तिने प्राप्त थया.

आ प्रमाणे शीलना प्रभावयी ते दंपती मुनियीपण विशेष प्रशंसाने पात्र थया. तेथी सर्व भव्य प्राणीकोए सौभाग्यनां हेतुरूप अने संसारदुःखनुं निवारण करनार श्रीलव्यतने सर्वदा पाळवुं.

> इत्यद्विनपरिामितोपदेशसंयहारूयायामुपनेशमासादयंथस्य वृत्ती चतुर्थवनविषये एकोननवितमः पर्वथः ॥ ८९ ॥

## व्याख्यान ९० मुं.

हवे स्त्रीओमां अनेक दोष छे एम जाणीने आ
चतुर्थ वत ग्रहण करतुं तेविषे कहे छे.

स्त्रीषु कापट्यमूलेषु, नरो धीमान् न विश्वसेत्॥ वदंत्यन्यं ग्रहंत्यन्यं, तृप्तिने विषये कदा ॥ १ ॥

#### व्याख्या

"कपटनुं मूळ एवी स्त्रीओनो बुद्धिमान पुरुषे कदि विश्वास करवी नहीं. स्त्री ओ बीजाने बोलावे छे अने वळी बीजाने स्वीकारे छे, तेने किंद्रिण विषयधी क्ति थती नथी." स्त्रीओने विषयमां किंद्रिण तृप्ति थती नथी ते उपर नीति शास्त्रमां कहुं छे के, "स्त्रीओने पुरुषथी वमणो आहार होय छे, चार गणी लज्जा होय छे, छ गणो व्यवसाय होय छे अने आट गणो काम होय छे" आ श्लोकना भावार्थ उपर भन्तृहिर राजानुं दृष्टांत छे ते आ प्रमाणे—

### भर्तृहारिराजानी कथा.

अवंती नगरमां भृतृहिर नाम राजा हतो. तेना राज्यमां मुकुंद नामे एक निर्धन ब्राह्मण रहेतो हतो. तेण लक्ष्मी मेळववाने माटे हरसिद्धि देवीनी आराधना करवा मांडी. देवीए संतुष्ट थइ तेने अल्प पुण्यवान जाणीने अमर फळ आप्युं अने कहुं के, तारा भाग्यमां अल्प पुण्यने लीधे द्रव्य नथी माटे आ अमर फळ ले. आ फल्नुं मक्षण करवाथी तुं घणुं जीविश्व अने शरीरे नीरोगी रहीश. मुकुंद ते फल लड़ने घर आव्यो. पछी फल खावानी इच्छा करतां तेने विचार थयो के, आ फल मारे खाइने शुंकरवुं, मारे तो वधारे जिववाथी उल्टी हानी छे, तेथी जेजगतना आधारभुत होय तेने आपुं तो तेनी छतार्थता याय. आ ममाणे विचारी तेणे अवंतीपति भर्तहरिने ते फल आप्युं. राजाए पोतानी पहराणी पिंगला उपर घणी मीति होवाथी तेने आप्युं अने तेनो समग्र मभाव जणाव्यो. राणीए पोतानो जारपित जे हाथीनो महावत हतो तेने तेनो प्रभाव जणाव्यीने ते फल आप्युं. महावते विचार्यु के, मारे वधारे जीवीने शुं करवुं छे, माटे मारी प्राणामिया जे वेश्या छे तेने आपुं के जेथी ते मारी उपर प्रसन्न रहे. आम विचारी तेणे वेश्याने आप्युं. वेश्याए चिंतव्युं के, मारे आफल खाईने शुं करवुं छे, माटे आ फल सर्व प्रजाना नाथ भर्तहरिने आपुं. आम विचारी तेणीए ते फल राजाने आप्युं

राजा भर्तहरिए ते फळ ओळखी वेश्याने पुछ्युं के, आ फळ तने क्यांथी मल्युं ? राजदंडना भययी वेश्याए यथार्थ हकीकत जगावी. एटले राजाए हायीना महा-वतने वोलावीने पुछ्युं. ताडनादिकना भयथी तेणे राणीनुं नाम आप्युं. एटले राणीने पुछ्युं, परंतु तत्काळ भयथी विद्वुल बनेली राणी कांइपण उत्तर आपी शकी नहीं. राजा स्त्रीने अवध्य जाणी संसारनी असारताविषे विचार करी आ प्रमाणे बोल्यों के—

यां चिंतयामि सततं मिय सा विरक्ता, साप्यन्यमिच्छति जनं स जनोन्यसक्तः ॥ अस्मत्कृते च परितुष्यति काचिदन्या, धिक् तांच तंच मदनंच इमांच मांच ॥

"जे स्तीने माटे हुं इंमेशां चिंतवन करूं छुं ते स्त्री मारामां विरक्त छे अने ते बीजा पुरुषने इच्छे छे, ते पुरुष वीजी स्त्रीमां आसक छे अने ते स्त्री वळी मारे माटे संतुष्ट थाय छे. माटे ते राणीने, ते जारने, कामेरेवने, आ वेश्याने अने मन थिकार छे."

संमोहयंति मदयंति विडंबयंति, निर्भर्त्सयंति रमयंति विषादयंति ॥ एता प्रविश्य सदयं हृदयं नराणां, कि नाम वामनयना न समाचरंति ॥

" स्त्रीओ मोह उत्पन्न करे छे, मद चडावे छे, विडंवना करे छे, तरछोडी नांखे छे, रमाडे छे अने खेद करावे छे. अहो! सुंदर नेत्रवाळी स्त्रीओ पुरुषानो दयाळु हृदयमां पेशीने शुं शुं नथी करती?" सर्व करे छे. आ प्रमाणे विचारी राजा भर्चृहिरिए माळवानुं राज्य तणवत् छोडी दई ब्रा ग्रहण कर्यु अने योगी संन्यातीनो वेष छई पृथ्वी उपर फरवा छाग्यो. एक वखते पृथ्वीपर फरतां फरतां ते राजा कोई वनमां रहेता तायसना आश्रममां गयो. तायसने नमी आगळ वेटो. तायसे राजा छतां तेनी अनादर कर्यो एटले राजाए विचार्यु के, जरूर आ कोई मायावी छागे छे; तेथी छुपीरिते आनी मायानुं अवलोकन कर्कं. आवुं घारी राजा एकांते छुपो रह्यो. रात्रि पडतां ते तापसे पोतानी जटामांथी एक डावली काढी. ते उघाडीने तेमां जलनी अंजलि छांटी एटले एक सुंदर स्त्री उत्पन्न थई. तेनीसाथे कामसेवन करीं ते तापस सुई गयो. पछी थोडीवारे ते स्त्रीए पोतानी वेणीमांथी एक डावली काढी अने तेने जळनी अंजिल छांटी एटले तेमांथी देवकुमार जेवो एक

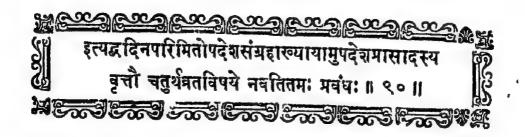
पुरुष उत्पन्न थयो. तेनी साथे भोग विलास करी पाछी ते डावली तेणे पोतानी वेणीमां गोपवी दीधी. पछी तापसे जागीने पण ते ज्ञीने डावलीमां गोपवी दीधी. आ ममाणे तेनुं चरित्र मत्यक्ष जोई राजाए चितव्युं के—

> मत्तेभकुंभदलने भुवि संति शूरा, केचित् प्रचंडमृगराजवधेपि दक्षाः ॥ किंतु ब्रवीमि बलीनां पुरतः प्रसह्य, कंदर्पद्पदलने विरला मनुष्याः॥

"अहो, आ पृथ्वी उपर उन्मत्त हाथीओना कुंभस्थलने तोडी पाडनारा शूरवीरो छ अने प्रचंड केशरीसिहनो वय करनारा वीरो पण छे परंतु मारे तेवा वळवंतोनी शागळ आग्रहथी केहेर्नुं जोईए के, कामदेवना गर्वने तोडनारा तो .विरला मनुष्योज छे. " आ प्रमाणे विचारी राजा भर्त्तृहिर श्रीपुरनगरना उद्यानमां जई कोई वृक्षनी नीचे सुई गयो. आ अरसामां एवं वन्युं के, ते नगरनो राजा अपुत्र मृत्यु पामेलो हाबायी तेना मंत्रीओए पांच दिव्य प्रगट कर्या. ते अही सुतेला राजानी पासे आवीने डभा रह्या. मंत्रीओए नगरजनसाथे त्यां आवी राजाने जगाड्यो अने राज्य लेवाने द्धं. राजाए जणाव्युं के, मारे राज्यनुं कांई पण प्रयोजन नथी. नगरजनोए विनंतिपूर्वक कहुं के. हे महाराज ! आप आ राज्य स्वीकारा अने अमोने कृपा करीने जीवितदान आपो एटले राजाए दयाथी ते राज्य स्वीकार्यु अने न्यायपूर्वक राज्य चलाववा लाग्यो. पछी सर्वजनोए वलात्कारे प्रथमना राजानी एक पुत्री हती ते तेने परणावी. ते नवयौवना राणी एक वखते राज महेलना गोखमां वेढी हती, त्यां कोई श्रेष्टीनो सुंदर पुत्र तेना जोवामां आन्यो. तेने जोइ ते वालाए कटाझ वाणवडे तेनुं हृदय घायल कर्युं. श्रेष्टीकुमार पण ते राणीने मळवा उत्सुक थयो. तेथी ते इच्छा पूर्ण करवाने माटे एक पुरुपना प्रमाणनी अने सहस्र दीवाओनी श्रेणीवाळी एक पोली दीवी तेणे करावी, तेमां पोते पेठो अने संकेत करी राखेला पुरुषोए ते दीवी राजाने भेट करी. राजाए ते अंतःपुरमां मुकावी. पछी ज्यारे समय आव्यो त्यारे ते तेमांथी नीकळ्यो अने राणीनी साथे विषयभोग भोववी पाछो तेमां पेशी गयो. एवी रीने हमेशां करवा लाग्यो. एक समये तेना वल्लनो दोरो दीवीना काष्ट्रना सांधानी वहार रही गयेलो ते राजाना जोवामां आव्या. तेने खेंचतां ते दोरो लांबो लाग्बो, एथी तेने तेमां कोई जारपुरुष छ एवा निश्चय थयो. पण ते वखत ते कांई वोल्यो नही.

पछी एक दिवसे पोतानी पटराणीने हाथे रसवती करावी पेछा योगीने भोजन करवाने निमंत्रण कर्यु. ते भोजन करवा आव्यो एटछे तेनी आगळ छ पत्रावळी मांडी. तापस भोजन करवा बेढो एटछे राजाए कह्युं के, महाराज! तमारी जटामां रहेछी स्त्रीने बहार काढो. तापसे भयथी तेम कर्यु. पछी ते स्त्रीने राजाए कह्युं के, हुं पण तारी डावछीमांथी पुरुषने काढ. स्त्रीए पण तेम कर्यु. पछी पोतानी राणीने कह्युं, तुं पण आ दीवीमांथी तारा पितने बहार छाव्य, शामाटे तेने कारागृहमां राख्यो छे? तेनी साथे भोजन कर्य. राणीए पण भयथी तेम कर्यु पछी ते सबने भोजनादिवडे संतुष्ट करी अंतरमां ऊप वैराग्यने धारण करता राजा भर्तृहरिए सर्व मंत्री अने नगरजनोने बोछावीने जणाव्युं के, आवा विषयने धिकार छे. पछी तेवी आघोषणा आखा नगरमां करावी भर्तृहरिराजाए वीजीवार राज्य छोडी दइ निश्चळ शील वत ग्रहण कर्यु अने ते एकज वतना आराधनथी देवपणानें प्राप्त थया. ए महाराजा भर्तृहरिनो रचेलो वैराग्यशत्क ग्रंथ अद्यापि लोकमां विख्यात छे.

" मृगना जेवा लोचनवाळी ख्रीओना चार्त्र जोइने कयो पुरुष तेनाथी विरक्त न थाय. जुओ! राजा भर्त्रहरिए पण पोताना अमर फळने जोईने योग भारण कर्यो इतो "



"श्री चिंतामणी पार्श्वनायना महिमाबडे अने श्रीविजय सौभाग्य सूरिना प्रसादवडे पोताना गुरुभाई प्रेमविजयने अर्थे श्री विजयलक्ष्मी सूरिए आ उद्यम कर्यों छे. तेनो छहो स्थंभ सोळ अधिकारवडे पूर्ण थयो.

# इति षष्ठः स्तंभः समाप्तः ।

"वर्षना दिवस जेटला अविकारवाळा आ ग्रंथने रचतां जे पुण्यनी पाप्ति यह होय ते पूण्य-कर्चा कहे छे के-पारा कर्मना क्षयमाटे अने महोदयनी प्राप्ति-माटे थाओ."

# ॥ सप्तमः स्तंभः ॥

---0:000:00-

## व्याख्यान ९१ मुं.

हवे कामदेवथी अतृप्त एवी स्त्रीनो त्याग करनार पुरुष श्रेष्ठ छे, ते कहे छे. स्त्रीणां कामस्य वांछासु, संतोषो जायते नहिं। तस्मात्तासु विरक्ततं, भजेत्स पुरुषोत्तमः ॥ १॥

#### व्याख्या

" ज़ीओने कामनी इच्छाओमां संतोष थतो नथी, तेथी स्त्रीओमां जे विर-क्तपणुं राखे ते पुरुष उत्तम कहेवाय छे. "

आ संबंधने विषे एक भिछ्नो प्रबंध छे ते आ प्रमार्थ-

#### भिछनी कथा.

एक समये श्रीवीरियमु कीशांबी नगरीना उद्यानमां समोसर्या. ते खबर सांभळी चंडप्रद्योतन राजा अने शतानीक राजानी पत्नी मृगावती प्रभुनी देशना सांभळवा आव्या. भगवंत देशना आपवा लाग्या. तेवामां कोई भिछे आवीने प्रभुने पुछ्युं, के, या सा? अर्थात् जे हुं घारूं छुं ते ते छे ? प्रभु वाल्या. सा सा एटले ने नुं घारे छे ते तेज छे. अरवो जवाव सांभळी गौतम गणघरे प्रभुने पुछ्युं के, हे भगवंत! आ भिछे आपने शुं पुछ्युं अने आपे शुं जवाव दीघो ते अमे कांई समज्या नहीं. 'भु बोल्या को गौतम! सांथळ. आ भरतक्षेत्रमां चंपा नामे नगरी छे. ते नगरीमां अनंग नामे एक सोनी रहेतो हतो. ते अत्यंत कामगृद्ध होवाथी जे जे रूपवती कन्या देखे तेने घणुं द्रव्य स्वरचीने पण परणतो हतो. एम करतां तेने घर पांचसो स्त्रीओ एकठी थई. ते सर्वने तेणे सरस्ता आयूपणो कराव्या हता, परंतु जे दिवसे जेनो वारो होय ते दिवसे ते स्त्री खीओ तेनी आज्ञा प्रमाणे साधारण वेष धरीने रहेती हती. आ प्रमाणे तेमनो काल निर्णमन थतो हतो. तेम करतां करतां अनुक्रने एवं थयुं के, ज्यारे ते सोनी आडो अवळो जाय त्यारे बीजी स्त्रीओ हर्षथी शूंगार धारण करवा लागी, पण तेवा वस्तमां कदाि जो ते आवी चडतो तो ते तेमने ताडन करती

इतो. आवी रीते ते इषीना भरपूर पणावडे करीने ते स्त्रीओ उपर एवी अविश्वासी थयो के, तेमांनी कोइ स्त्रीने कोईने घेर भोजन करवा पण मोकलतो नहीं. छेवंट तेमने भाटे एक स्तंभवालो आवास करावी तेमां तेमने राखी. अने जेम मूत पीपलाना स्थानने छोडे नहीं, तेम ते गृहद्वारने नहीं छोडतां त्यांज बेसी रहेवा लाग्यो. इत्यायी दग्ध यमें स्त्रींनी जेम ते कोईने घेर जमवा जतो नहीं अने कोईने पोताने घेर जमवा स्थानतो पण नहीं.

एक वखते कोई मित्र तेने आग्रह करी बलात्कारे भोजन करवा पोताने घर तेडी गयो. त्यां ते पोताने शत्रुए कारागृहमां नाख्यो हाय तेम मानवा लाग्यो. था समयनो छाग जोई तेनी स्त्रीओ हुई पामी अने तस्काछ तेमणे स्नान विलेपन करी सर्व अंगे वस्त्रामूषणो धारण कर्या. पछी मीतिपूर्वक जेवी ते दर्पणमां पोताना रूपने जोती हती तेवामां ते।पिशाचना जेवो क्रूर गृहपति सोनी आवी चढयो. पोताना घरना द्वारपासे आवतांज स्त्रीओनी तेवी चेष्टा जोइने ते तेमनी उपर घणो गुस्से थयो. एटछे तेमांथी एक स्त्रीने तेणे एवी मारी के ते तत्काल यमराजना गृहनी अतिथि थई गई. ते देखाव जोईने सर्व स्त्रीओने एक साथे भय उत्पन्न थयो, तथी तत्काळ तेमणे चिंतन्युं के, 'आ पापी आपणने पण आ स्त्रीनी जेम मारी नास्त्रको, माटे आपणे एकत्र थईने तेनेज मारिए आवो विचार करीने ते सर्व श्लीओए पोताना हाथमां रहेका दर्पण दूरथी तेनापर फेंक्या. समकाळे चारसो ने नवाणु दर्पणीना महारथी ते सोनी मृत्यु पाम्यो. पछी सर्व स्त्रीओ पश्चात्राप करी घर बाळी ते सोनी-नी साथेज बली मुई. ते चारसोने नवाणु स्त्रीओ पश्चात्ताप अने अकामनिर्जराथी मृत्यु पामी काँहे अरण्यमां चोर कुछमां पुत्रपणे उत्पन्न धई. अनुक्रमे ते सर्व छोकोने छुटनारा महातस्कर थया. जे स्त्री पहेळां मरण पामी हती, ते कोइ गाममां दरिद्री ब्राह्मणने घेर पुत्रपणे प्रगट थइ. अनुक्रमे ते पुत्र पांच वर्षनो थयो. पांच वर्षसुची पेला सोनीनो जीव तिथेच योनीमां भमी तेज दरिद्री ब्राह्मणने घर पुत्रीपणे उत्पन्न थयो. भातापिताए पेला पुत्रने आ वास्त्रिकानो पालक कर्यो. ते वालिका हमेशा बहु रोती इती, थोडीबार पण रूदन करवाथी विराम पामती नहीं. एक वखते तेना बधुए तेना उदर उपर हाथ फेरववा मांडयो. एम करता तेना गुहाभागपर स्पर्श थई जवाथी तत्कास्त्र ते रोती बंध पढ़ी अने इसवा लागी. आधी बेना बंधुए तेना रूदनने गांत करवानों ते उपाय मेळल्यो. त्यारथी ज्यारे ते वाळा रुवे के ते तेनी योनी चपर पोतानो हाथ अडाडतो एटले तरतज ते शांत थती. एक वखते आवो उपाय करतां ते पुत्रने तेना मातापिताए जोयो. क्षेत्री तरतज तेने मारीने घर वहार काढी मुक्यो. त्यांथी वनमां जतां ते पुत्र पेका चारसोने नवाणु चोरने मळ्यो, त्यारथी तेओ वरावर पांचसो भ्रयाः

पेली वाला वास्यवयथीज कुलटा थइ. एक वलते ते वाळा कोई गामे गई हती. ते दिवसे पेला चारोए ते याम लुट्युं अने ते वालाने पकडीने लइ गया. अने सर्वए मलीने तेने पोतानी स्त्री करी. ते एकली सर्वनी साथे भोग भागववा लागी. अन्यदा केटलाएक चोरोए तेनापर दया आववायी विचार्यु के, आ वाळा एकली जो सर्वेनी साथे निरंतर भोग भोगवने तो जरूर ते मृत्यु पामी जने. तेथी तेनी मीतिने माटे कोड़ बीजी स्त्री हरी लावीए तो टीक. आवो विचार करी ते चोरो एक बीजी स्नीने इरी लाव्या. पछी सर्व चोरो ते वंने स्त्रीओनी साथ भागसुख अनुभवता काल निर्गमन करवा छाग्या. केटलाक दिवसो गया पछी प्रथमनी स्त्री के जे प्रणी कामी इती तेणे पारवृद्धिथी विचार्यु के, " आ वीजी स्त्री मारा कामविलासमां विघ्न कर-नारी सपत्नी यई छे, तो कोई चपायवढे हुं तेने मारी नाखुं तो सारुं " आवो विचार करीने ते तेना छिद्र जोवा लांगी. एक दिवसे एवं वन्युं के, वधा चारो घाड पाडवा गया, तेथी घर निर्जन थयुं एटले ते इपांलु अने क्रोधीष्ट पापी स्त्रीए पेली सरळ स्त्रीने छेतरीने कोई उंडा कुवामां नाखी दिधी. थोडीवारे पेला चोरो चोरी करीने आन्या अने पुछयुं के, तारी सपत्नी वेन क्यां गइ छे ? ते वोली-त्यां गइ ते हुं जाणती नथी. चोरोए चिंतव्युं के, जरूर ते वीचारी मुग्धाने आ पापणीए मारी इशे. ते समये पेला विमनोरे विचार्य के, आ दुर्मति स्त्री मारी वेन तो नहीं होय ? पण ते शीरीते जणाय. जो कोई ज्ञानी आवे तो पुछी जोड. आ प्रमाणे ते चितवतो इतो तेवामां ( श्रीवीर प्रभु कहे छे के ) तेणे अमारुं आगमन लोकोपासेथी सांभळ्युं. एटले तत्काळ ते अहि आव्यो अने पोतानी बेन संबंधी प्रश्न करवामां लजा आबी तेथी तेणे गूदरीत पुछ्यं एटले तेनो उत्तर पण अमे गूदरीते आप्यो.

आ प्रमाणे तेनुं वृत्तांत संभळावीने प्रभुए कह्युं के, हे भविप्राणीओ ! आ संसारमां पांच इंद्रियो तेने वश थयेला प्राणीओने घणी विडंबना करे छे अने भवोभव संसारमां रखडावे छे.

आवा वीर प्रभुना वाक्य सांभळी ते विषे संवेग पामी प्रभुनी पासे नारित्र श्रीषुं. पछी ते चोरनी पछीमां गयो त्यां ते विष्रमुनिए प्रतिवोध पैमाडेला वीजा ४९९ चोरोए पण तेनी पासे वत ग्रहण कर्युं.

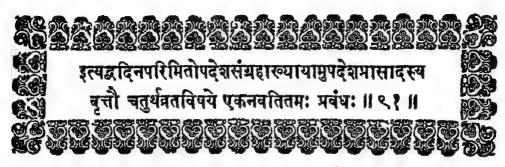
अहीं वीरप्रभुनी तथाप्रकारनी चाणी सांभळी मृगावती वोली के, हे स्वामी! चंडप्रद्यातन राजानी आज्ञाथी हुं पण दीक्षा लहें के, प्रजी तेणे चंडपद्योतन राजाने कहुं के, हे राजेंद्र! को मने आज्ञा आपो तो हुं श्रीवीरप्रभुनी पासे व्रव धारण कहं ? प्रभुना प्रभावथी वैर राहित थयेला चंडपद्योतने आज्ञा आपी एटले मृगावतीए पोताना पुत्रन चंडप्रद्योतन राजाना उत्संगमां वेसारी श्रीवीरप्रभुनीपासे

दीक्षा लीधी. ते समये चंडप्रद्योतन राजानी अंगारवती विगरे आढ स्त्रीओए पण मृगावतीनी साथे दीक्षा लीधी. चंडप्रद्योतन राजाए मृगावतीना पुत्र उदयनने कौ- शांबीना राज्यउपर स्थापित कर्यो अने पोते पोताना अवंतिदेशमां चाल्यो गयो.

पेलो अनंगसेन सोनीनो जीव स्त्रीपणे उत्पन्न यई कामना परवशपणाथी

भणा भवोमां परिश्रमण करते."

"यासा एवा शन्दवडे संदेहने पुछता एवा चोरने प्रभुए सा सा एवा इसर आप्यो तथी प्रतिवोध पामी तेणे दीक्षा छई बीजा चोरोने प्रतिवोध पमाड्या अने तेओए व्रत ग्रहण कर्युं."



## व्याख्यान ९२ मुं.

स्त्रीओ स्वभावथीज बहु कामी होय छे छतां कोई कोई स्त्रीओ स्वीकार करेला बतने आपितमां पण छोडती नथी.

आपद्रेप महत्यग्री । नयंति शीलकांचनं । नैर्मल्यं याः स्त्रियः काश्चित्ताः स्युः केषां न चित्रदाः ॥ १ ॥ ठयाख्या

जे कोई स्त्रीओ आपत्तिरूप मोटा अग्निमां शीलरूप सुवर्णने निर्मल करे छे, तेवी स्रीओ कोने आश्चर्यन पमांडे ? आ विषे अंजना सतीनो प्रवंध छे. ते आ प्रमाणे-

अंजनासतीनी कथा.

जंबूद्वीपमां आवेला मंल्हादन नामना नगरने विषे प्रल्हादन 'नामे राजा अने प्रह्लादनवती नामे राणी हती. तेमने प्वनंज्य नामे कुमार हतो. ते समये वैताक्यगिरि उपर अंजनकेतु राजा अने अंजनवती राणीने अंजना नामे पुत्री यई हती. ते यौवनवती यतां तेनुं पाणीयहण कराववाने अंजनकेतु राजा अनेक

कुमारोना चित्रे। पटचपर आलेखावी मंगावी तेने बतावतो हती; तथापि कोइ कुमा-रना रूप चपर तेने मीति थती नहोती. एक वखते राजाए भिविष्यदत्त अने पव-नंज्य कुमारना रूप चित्रपटचपर आलेखी मंगावी तेणीने बताव्या. वंने कुमारना कुल, शील, वळ अने रूप सुंदर जोइ ते चित्रों तेणे पोतानी पासे राख्या.

एक वखते राजा अंजनकेतु मंत्रीओनी साथे ते कुमारोना गुण विगेरेनो वि-घार करवा लाग्यो. तेणे मुख्य मंत्रीने पुछयुं, के आ वंने कुमारमां विशेष कोण छे १ मंत्रीए कहुं " महाराज ! भविष्यदत्त कुमारमां जोके घणा गुणो छे तथापि श्री-भगवंते कहुं छे के, ते भविष्यदत्त अढार वर्षनी वये मोक्ष पामशे, तथी ए आपणी कन्याने योग्य वर नथी. पण सर्व रीते आ पवनंजय कुमारज योग्य छे." आ प्रमाणे मंत्रीना कहेवाथी राजाए तेनी साथे अंजनाना लग्न निर्धार्था.

आ सवर पवनंजय कुमारने यतां ते रुष्भद्त्त नामना पोताना मित्रने साथे छइ अंजनानुं लावण्य तथा तेनो प्रेम जोवा माटे त्यां आव्यो. वंने नील वस्त्र धारम करी रात्रे ग्रुप्त रीते श्वसुरगृहना अंतःपुरमां दालल थया. त्यां मधुर आलाप थतो सांभळवामां आव्यो. कोइ सखी अंजनाने कहेवा लागी—स्वाधिनी! तमे छेवटे जे बे कुमारोना चित्र जोया हता, तेमां जे भविष्यदत्त छे ते गुणोथी अधिक अने धर्मझ छे, पण ते अल्प आयुष्यवाळो छे एवं जाणी तेने छोडी दीधो छे; अने वीजो पवनंजय दीर्घायु होवाथी तेनी साथे आपनो संवंध थये। छे ते सांभळी अंजना वोली, "सखी! अमृतना छांटा थोडा पण मीटा अने दुर्लभ होय छे. अने विप हजार भार होय तोपण ते कशा कामनुं होतुं नथी." ते सांभळी पवनंजय कुमार तेना उपर क्रोधायमान थइ खड्ड खेचीने तेने मारवा तैयार थयो. तेने मित्रे वार्यो अने कहुं, मित्र! आ वखते रात्र छे, आपणे पारके घेर आव्या छीए, वळी आ कुमारी कन्या छे, ज्यांसुधी तेने तमे परणी नथी त्यांसुधी ते परकीया छे, तेथी तेने हणवी योग्य नथी. पछी ते वंने त्यांथी पोताने स्थानके चाल्या गया. त्यारथी पवनंजय तेनी रणर अत्यंत खेद वहन करवा लाग्यो.

पछी तेनी साथे पाणी ग्रहण करवाने ते इच्छतो नहीं हतो, तथापि तेना पिता विगेरेए तेने मांडमांड समजावीने तेने परणाव्यो. परंतु चोरी मंडपमां पवनंजय कुमारे रागथी तेना मुख सामुं पण जोग्रं नहीं अने परण्या पछी पण तेणीने तेणे बोळावी नहीं. आथी ते निरंतर दुःखी स्थितिने अनुभववा लागी. घणा उपाये पण तेने भक्तीनुं सुख प्राप्त थयुं नहीं. एवी रीते वार वर्ष वीती गया.

ए अवसरे प्रतिवासदेव रावण वरुण विद्याधरने साधवा गयो हतो. त्यांथी तेनो एक दूत प्रह्ळादन राजाने वोळाववा माटे आव्यो. प्रह्ळादन राजाने त्यां अवा तैयार थता जोई पवनंजय तेमनुं निवारण करी, तेमनी आश्चीष छई, दृष्टि मागें रहेळी अंजनानी सामुं पण जोया वगर त्यांथी चाळी निकळ्यो. प्रयाण करतां मागें मानससरोवर आव्युं त्यां पडाव कर्यो. त्यां कमळवनने विकाश पामेळुं जोई ते आनंद पाम्यो. रात्रीए एक चक्रवाक पक्षीनी स्त्रीने करुणस्वरे विळाप करती तेणे सांभळी ते आ प्रमाणे:—

आयाति याति पुनरेति पुनः प्रयाति । पद्मांकुराणि वितनोति धुनौति पक्षौ ॥ उन्मादित भ्रमति कुंजित मेदमंदं । कांता वियोग विधुरा निशि चक्रवाकी ॥ १ ॥

ते स्ववती हती के, "पतिना वियोगथी आतुर एवी आ चक्रवाकी रात्रीने विषे आवे छे, जाय छे, फरीवार आवे छे, कमलना अंकुरने ताणे छे, पांखो फफडावे छे, छन्माद करे छे, भमे छे अने मंदमंद वोले छे." आ प्रमाणे सांभळी तेणे पोताना मित्र ऋषभदत्तने तेनुं कारण पुछयुं, एठले ते बोल्यों के —िमत्र! देवयोंगे आ पक्षीओंने रात्रे वियोगज थाय छे. आ पिक्षणी आम पोकार करती करती मृतपाय थई जशे अने प्रातः काल पडशे एटले तेनो पति ज्यारे तेने मळशे त्यारे पाछी ते नवीन देइवाळी थशे.

आ वस्तते अंजनानुं पूर्वे वांधेलुं भोगांतराय कर्म क्षीण थई गयुं, तेथी पवनंजयना मनमां तत्काळ एवो विचार आव्यो के, अरे! मारी पत्नी अंजनाने छोड्या मने वार वर्ष वीती गया छे तो ते वीचारीना ते वर्षों शी रीते व्यतीत थया इते! माटे चाल अहीथी एकवार पाछो घेर जई तेने मळी आवुं. आम विचारी कुमार रात्रे गुप्त रीते पाछो घेर आव्यो अने ते दिवसेज रुतुस्नाता थयेली अंजनाने तेणे मेमपूर्वक भोगवी. पछी पोताना नामथी अंकित मुद्धिका तेने निशानी माटे आपी ते पाछो पोताना कटकमां आव्यो. तेना गया पछी अनुक्रमे अंजनाने ऊदर वृद्धि थतां तेनापर कलंक आव्युं. तेणीए पोताना पतिना नामथी अंकित मुद्धिका वतावी, तथापि ते कलंक उत्तर्युं नहीं. अने तेने एक दासीनी साथे गृहनी वहार काढी मुकी. त्यांथी निकलीने ते पोताना पिताने घेर आवी, परंतु त्यां पण कलंकनी वार्षो जाणीने तेणे राखी नहीं एटले तेणीए मात्र एक दासी साथे वनमां भटकवा मांडयुं. पूर्ण मास थतां तेणे एक पुत्रने जन्म आप्यो, अने मृगवालनी जेम ते तेनुं पाल्न करवा लागी.

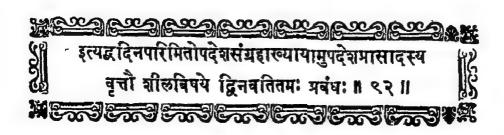
एक वखते दासी जल लेवा गई हती. त्यां तेणे मार्गमां एक मुनिने कायोत्मों रहेला जोया. तेणे अंजनाने ते वात करी एटले अंजना तेनी पासे जई नमस्कार करीने घेडी. मुनिए कायोत्सर्ग पारी धर्मदेशना आपी ते सांभळी अंजनाए पोताने पडेला दुःखनुं कारण पुछयुं. मुनिए अवधिज्ञानथी तेनो पूर्वभव जणाव्यो के, है अंजना! कोई गाममां एक धनवान् श्रेष्टीनी तुं मिध्यात्वी स्त्री हती तारे एक बीजी सपत्नी इती ते परमथाविका इती. ते मतिदिन जिन मतिमानी पूजा करीने पछी भोनन लेती इती. तुंतेनी उपर द्वेष धारण करती सती इंमेशा तेना अपवाद दर्शावती अने तेना पर्मनुं ऊट्घाटन करती इती. एक वखते तें तेनी जिन प्रतिमान कचरामां संताडी दीधी. तेथी जिनपूजा कर्या वगर तेणीए मूखमां जळ पण नाल्युं नही, पण ते घणी आकुळ व्याकुळ थइगइ. एटले तेण जेने तेने प्रतिमा विषे पुछवा मांडचूं. तेवामां कोइए कचरामां रहेली प्रतिमा बताबवा मांडी, पण तें बताबवा न देतां तेनी उपर धुळ नाखी. एवी रीते वार मुहूर्च सुधी राखतां ज्यारे ते घणी दु:खी धइ, त्यारे तें द्या लाबी तेने प्रतिमा लाबी आपी. ते पापथी तारे तारा पति साथे बार वर्पनी वियोग थयो इतो. इवे ते कर्म क्षीण थवाथी तारो मामो अहीं आवी तने पोताने घेर छड़ जरो त्यां तारी स्वामी पण तने मळशे. आ प्रमाणे मुनि कहेता हता तेवामां एक विद्या धर उपर थइने जतो हतो तेनुं विमान त्यां स्खिलत थयुं. विद्याधरे तेनुं कारण जा-णवा नीचे जोयुं त्यां पोतानी भाणेज अंजनाने तेणे ओळखी. एटले तत्काळ नीचे उतरी दासी अने पुत्र सिहत तेने पोताना विमानमां वेसाडी आकाशमार्गे चाल्यो.

अंजनानो वाळक घणो चपल अने उम पराक्रमी हतो. तेथी चालता विमाननी मुघरीओनो नाद सांभळी ते वाळकने मुघरी लेवानुं कौतुक थयुं, तेथी तेणे मुघरी लेवा चपलताथी आगल आगल हाथ लंवाववा मांड्यो. एम करतां अकस्मात् विमानमांथी निषे पडी गयो. आ जोइ अंजनाने महा दुःख उत्पन्न थयुं. तेणे आकंद स्वरे रुदन करवा मांड्युं के, "अरे प्रमु, आ शो गजन! अरे हृद्य! शुं तुं वच्चथी घडा- एलुं छे! अथवा वच्चना जेवुं छे? के पतिना वियोगे पण तुं खंडे खंड थइ गयुं नहीं." आ सांभळी तेनी पछवाडे तेनो मामो मूमिपर उत्यों. तेणे शिलाना चूर्ण (रेती) उपर पडेला वाळकने तत्काळ उपाडी तेनी माताने आप्यो पछी ते विद्याघरे पोताने घरे पहोंची अंजनाने वाळक सहित घर मुकी पोतानुं कोइ कार्य करवा माटे अन्य स्थानके गयो. अही पवनंजय वरुण विद्याघरने साधी घर आव्यो. माता पिकाने प्रणाम करी पोतानी पत्रीना वासगृहमां गयो. तो त्यां स्त्रीने जोइ नहीं. तत्काळ माता पिताने पुछयुं, त्यारे तेमणे कलं ह लागवाथी काढी मुवया संबंधी वार्ची कही. ते साभळी पवनंजय विरह न्याकृळ थः मरणने माटे चंदननी चिता र शे वळवा

तैयार थयो. ते समये तेना मित्र ऋष्भदत्ते कहां, सखे, जो त्रण दिवसमां अंजनाने न छावं तो पछी तारे अवश्य चितामां चळवं. आ प्रमाणे कही तेनुं निवारण करी ऋष्भदत्त विमानमां बेसी आकाशमार्गे परिश्रमण करतां त्रीजे दिवस सूर्यपुरे आती पहोंच्यो. त्यां उपवनमां खीओनी तथा बालकोनी गोष्टी थती तेणे सांभळी. ते वखते कोइ बालके कहां, मित्रो! अहीं अंजना नामे कोइ सुंदरी पुत्र सहित आवेली छे. ते आपणा राजा सूर्यकेतुनी सभामां दररोज आवे छे. आवा शब्दो अकस्मात् सांभळी ऋषभदत्त हर्ष पाम्यो अने तत्काल तेने आवीने मळ्यो. अंजना तेने जोई लज्जायी नम्न मुख करीने पोताना मामानी पाछळ उभी रही. ऋषभदत्त पासेथी पतिना दिग्विजयनी तेमज तेना विरद्द व्याकुळपणानी वार्त्ता सांभळी त्यां जवानं उत्सुक थई. पछी तेणे मामानी आज्ञा लीधी. विद्याधरे पण पुत्र सहित तेने सोंपी एटले ऋषभदत्त तेने लई वेगथी पवनंजयना नगरमां आव्यो. तेना आव्याना खवर सांभळी पवनंजय घणो हर्ष पाम्यो, अने मोटा उत्सवधी तेणे स्त्री पुत्रने नगर प्रवेश कराव्यो. सर्व लोको पण परम आनंद पाम्या.

पवनंजय अने अंजना बन्ने दंपतीने प्रतिदिन प्रीतिमां वृद्धि अवा लागी. ते पुत्रनुं नाम तेमणे हृतुमान् पाडयुं. ते अतुल वलवान् थयो. एक वलते वीश्रमा ती-धिकर श्रीमुनिसुत्रत स्वामीना तिर्थना कोई मुनिओ त्यां प्रधार्या. तेमनी देशना सांभली पवनंजय अने अंजनाए वैराग्य पामी दीक्षा लीधी. पृ महावीर श्रीहनुमान राजा थयो. ते अति हृडलो अने वाचाल हतो. तेथी ते श्रीरामचंद्रनी सेनानो अध्यक्ष तथा महावलवान् थयो. पवनंजयमुनि अने सती अंजना साध्वी निरतिचार त्रतने पाली स्वर्गे गया.

" आ प्रमाणे सती अंजनानुं सुंदर चरित्र सांभळी तेने हृदयमां धारण करीने भन्य प्राणीओए शीलना सुगंधथी हृदयने सुगंधी करवुं."



# व्याख्यान ९३ मुं.

हवे स्त्रीओना अंग जोईने मोह पामे छे तेओने शिक्षा आपे छे, वामांगीनां सुखादीनि, किंवीक्ष्य वीक्ष्य दृष्यसि। क्षणं हर्षमिषादत्ते, श्रुआदिषु रुजं पराम् ॥ १॥

#### व्याख्या

"अरे मूर्ल ! सुंदरस्तीओना मुखिवगेरे जोइने तुं शुं हर्प पामे छे? ते सणवार हर्प आपवाना मिपथी नरकादिकमां महा मोटी पीडाने आपे छे." आ विषे एवी भावना करवी के किव स्तीना मुखिन चंद्रनी उपमा आपे छे, पण ते श्लेष्म अने शुंक विगेरे निय वस्तुओथी भरपूर छे. अने ते मुख रत्नप्रभादि नारकीना प्रयाणनुं मुख छे. स्तीना काला केशनी वेणी मोक्षमार्गे जतां आडी सर्पणीक्षप छे. तेनो सुंटर सीमंत (सेंथो) सीमंत नामना नरकावासने आपनार छे. तेनी नासिका स्वर्गनी नाशिका (नाशकरनारी) छे. स्तीना विवाधरनुं पान करनार पोताने सर्वस्व मळेलुं माने छे, पण तेथी क्षणे क्षणे यमराज तेनुं आयुष्य पिवे छे ते जाणतो नथी. मूढ कामी तेना कुचकुंभने आलिंगन करी सुवे छे, पण ते तेनाथी यनारी कुंभीपाकनी वेदनाने मूळी जाय छे. अब माणस स्तीने भुजानुं आलिंगन दइने सुवे छे अने तेमां वहु सुख माने छे, पण गर्भनी वेदना अने योनिमांथी नीकलतां थयेलां दु:खनुं तेने विस्मरण थइ जाय छे. आ सर्वनो विचार करीने जे वामांगीनो त्याग करे तेने खरेखरो विवेकी समजवो. कहुं छे के,—

दर्शनात् स्पर्शनात् श्लेपात् या हंति समजीवीतं । हेयोग्रविषनागीव, वनिता सा विवेकीभिः ॥ १ ॥

"जे स्री दर्शनथी, स्पर्शयी अने आहिंगनथी समतारूप जिनितने हणे छे, ते सर्पिणी जेबी स्री निवेकी पुरुषोए तजी देवा योग्य छे." स्त्रीओना संसर्गथी थतुं दुःख तो सिहादिकना संबंधथी थता दुःखथी पण अधिक छे. कहुं छे के,—

निरंकुशा नरे नारी, तत्करोत्यसमंजसा ॥ यत्कृद्धा सिंहशाईलाः, व्याला अपि न कुर्वते ॥

"निरंकुश वयेली स्त्री पोताना पुरुपउपर ने अघटित आचरे छे तेवुं क्रोधा ययेला सिंह, शार्दुल के सर्पो पण आचरता नथी." आ विषे सुकुमालिका स्त्रीनो प्रवंध छे ते आ प्रमाणे—

<sup>?</sup> हदं महत्-इत्यपि पाठ:-तेनो अर्थ-महा हदन करांवे छे.

### सुकुमालिकानी कथा.

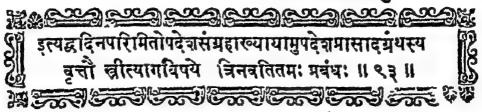
चंपापुरीमां जितशत्रु नामे राजा इतो. तेने यथार्थ नामवाली सुकुमालीका नामे राणी इती. राजा जितशत्रु तेनापर एटलो बधो आसक्त इतो के, ते राज्या-दिकनी पण चिंता करतो नहीं. आवी राजानी वर्त्तणुकथी प्रधानवर्गे राजाने स्त्री सहित मदिरापान करावी अरण्यमां तजिदीधो अने तेना पुत्रने राज्यउपर वेसार्यो. ज्यारे मद्यनी नीसी जतरी गयो त्यारे ते बंने राजाराणी विचार करवा लाग्या. अरे, आपणे अहि क्यांथी! आपणी महा कोमळ शय्या क्यां गई! आपणा राज-वैभवनुं शुं थयुं! आम विचारतां वंने त्यांथी आगळ चाल्या. थोडे दूर जतां सक्मालिकाने तथा लागी. तेना कंड अने ताळु सुकाइ गया. तेणे राजान कहुं, स्वामी! मारा जिवितने बचाववा जळ लावी आपो. राजा जळ लाववाने गयो पण कोई ढेकाणे जळ जोवामां आव्युं नहीं. पछी खाखराना पत्रनों पडीओ करीं तेमां पोताना वाहुनी नसमांथी रुधिर काढी ते पडीओ पूर्ण भयों. ते लावी राणीने क्रं के, प्रिये! आ खाबोचीआनुं जळ अती मलीन छे तथी नेत्र मीचीने पी जा. राणीए तेम करीने पान कर्यु. पछी क्षणवारे ते बोर्छी-स्वामी! मने क्षुधा बहु लागी छे. तेथी राजाए दूर जइ छरीवडे पोताना साथळनुं मांस छेदी तेने अग्निमां पकावी राणीने पासे मुक्युं अने पक्षीनुं मांस कही तेणीने खबराव्युं. अनुक्रमे त्यांथी कोई देशमां आवी पोताना आभूषणो वेची कांइक व्यापार करीने राजा तेनं पाषण करवा लाग्यो.

एक वसते राणीए कहुं, स्वामी, ज्यारे तमे व्यापार करवा बहार जाओ छो त्यारे हुं एक छी घरमां रही शकती नथी. आवां वचन सांभळी राजाए एक पांगला माणसने चोकीदार तरीके घरपासे राख्यो. ते पांगला माणसनो कंड घणो मधुर हतो, तेथी राणी मोह पामी अने तेने स्वामी तरीके स्विकार्यो. त्यारथी सुकुमालीका पोताना पतिने मारवाना छिद्रो जोवा लागी. एक वस्तते राजा राणीने लईने वसंतऋतुमां जलकीडा करवा माटे गंगातटे गयो. राजाए मधुयान कर्यु. ख्यारे राजा वेभान थयो त्यारे राणीए तेने गंगाना मवाहमां वहेतो मुकी दीघो. पछी राणी सुकुमालिका पेला पांगलाने स्वेच्छाथी गायन करावती कांधजपर वेसारी भीख मागती भमवा लागी. ते जोई लोको तेने पुछवा लाग्या के, आ कोण छे रयारे ते कहेती के, मारा मातापिताए आवो पति जोयो छे, एथी तेने स्कंघ चपर वहन करं छुं.

अहिं जितशत्रु राजाने गंगामां तणाता एक काष्ट प्राप्त थयुं. तेनायोगे ते तरीने बहार नीकल्यो अने नदी कीनारे कोई एक वृक्षनी तले सुई गयो. ते समये

त्यां समीपे आवेला कोई नगरनो राजा अपुत्र गुजरी गयो, तेथी तेना मंत्रीओए पंचिद्वय कर्या. ते त्यां आवीने उभा रह्या एटले राजाने जागृत करी मंत्रीओए तेने राज्य उपर बेसायों. देवयोगे पेली सुकुमालिका पंगुने लईने तेज नगरमां भावी चडी ते बंने सतीपणायी अने गीतमाधुर्यथी ते नगरमां विल्यात थया. ते विल्याती सांभळी राजाए तेमने पोतानी पासे बोलाव्या. तेने जोतांज राजाए ओलखी लीधा. तेथी तत्काल ते बोल्यों के, हे बाई! आवा विभत्स पांगलाने उपाडीने तुं केम फरे ले? ते बोली मातापिताए जेवो पति आप्यो होय तेने सतीओए इंद्रना जेवो मानवो. ते सांभळी राजा बोल्यों—हे पतिवता ! तने धन्य छे. पतिना वाहुनुं रुधिर पीधुं अने साथळनुं मांस खाधुं तोपण छेवटे गंगाना प्रवाह मां नाखी दीधो. अहो, केवुं तारुं सती।णुं! आ प्रमाणे कही ते न्यायी राजाए स्त्रीने अवध्य जाणी पोताना देशनी हदपार करी. अने आवुं प्रत्यक्ष स्त्रीचिर्य जोई तेणे सर्व स्त्रीओनो त्याग करवारुप महावत लीधुं.

" मुकुमालिकानुं चरित्र जोई जितशत्रु राजा विषय मुखयी विरक्त थवीं अने काम कोषादि शत्रुओनो जय करी तेणे पोतानुं जितशत्र नाम सार्थक कर्युं."



व्याख्यान ९४ मुं.

स्रीजाति अनेक ग्रणनी हानि करे छे ते कहे छे. ग्रणिनां ग्रणतोभ्रंशं कर्जुं कूटं रचेद्दहु । या सा स्त्री परिहर्त्तव्या विव्नकर्त्री शुभे पथि ॥ १ ॥

#### व्याख्या

"जे स्ती गुणी पुरुषोने गुणमांथी अष्ट करवा बहु कपट रचे छे तेवी स्तीने शुभ मार्गमां विल्ल करनारी जाणी दूरथी छोडी देवी." छोकिकमां गुणी पुरुषो शंकर विगेरे कहेवाय छे. तेने तेमनी स्त्रीप भीछडीनेरुपे मोहित कर्या हता. ते स्त्रीना वचनथी नृत्य करता शंकर देवताने हास्य करवा योग्य बन्या हता. सेवाळ अने जलमात्रना आधार बडे निर्वाह करनारा तापसों पण स्त्रीओना विलासथी आंत यह शिलअष्ट थयेला छे. ते विषे तेमना शास्त्रमां कहेवाय छे के,—

# सुग्रप्तानामपि प्राय, इंद्रियाणां न विश्वसेत् ॥ विश्वामित्रोपि सोत्कंठः, कंठे जग्राह मनका ॥ १ ॥

" इंद्रियो भले प्रकारे गोपवेली होय तोपण तेनो विश्वास करवो नहीं. कारणके विश्वामित्र जेवाए पण उत्कंढित यईने मेनकाने कंडवडे ग्रहण करी हती." ते विथे नीचे प्रमाणे कथा छे.

महाशय विश्वामित्र सूष्क फळ अने जळनो आहार करी सूर्यसामे नेत्र राखीं तप्ता करता हता. तेथी तेमनामां नवुं स्वर्ग वसाववानीं शक्ति उत्पन्न थई हती. आ खबर इंद्रने थवाथी तेणे तेमने तपथी अष्ट करवा मेनकाने त्यां मोकली. मेन-काना विविश्व विलासथी मुनि ध्यान अष्ट थया अने तीव अनुरागवडे तेने भोगवी, चिरकाल ध्यानभंग स्थितिमां रहेतां पाछुं चैतन्य माप्त थवाथी जामत थयेला मुनिष् मेनकाने पुछ्युं के, तमे माहं ध्यान भंग कर्युं त्यारपछी केटलो समय व्यतीत थयो. मेनका बोली-नवसो अने सात वर्ष नवमास अने त्रण दिवस वीती गया. आवी नीते वारंवार अप्सराओ मोकलीने इंद्रे तेना तपनो भंग कर्यों हतो जेथी ते बक्ति हीन थई गया हता. ते विषे विस्तारथी वृचांत भारतमांथी जाणी लेवो.

वली ते विषे लोकोत्तर (जैन) शास्त्रमांपण आषादभूति, आर्द्रकुमार अने अर्रिंगिक विगेरे गुणवान मुनिको पण स्त्रीओना रचेला कपट जालमां पढेलाना दृष्टांतो छे. तेथी तेत्री स्त्रीओ त्याग करवा योग्यज छे. वली वल्कलचीरीए पण स्त्री संगमां घणा दीषो जाणी तेनो त्याग कयों इतो. तेनो प्रबंध आ प्रमाणे—

### श्री वल्कलचोरि मुनिनो प्रबंध.

योदनपुरनामना नगरमां स्वीमचंद्र नामे राजा हतो, तेने धारणी नामें पत्नी इती. एक वखते धारणी पोताना पित सोमचंद्रना माथाना केश कांक्षीथी ओ लती हती. एक वखते धारणी पोताना पित सोमचंद्रना माथाना केश कांक्षीथी ओ लती हती. ते मस्तकपर श्वेत केश जोई वोलीके—हे स्वामी! आ जरावस्थाना द्व आव्यो. राजा पोताने आवेला घोला केशने जोईने विचावा लाग्यो के, मारा वृद्ध विद्याप तो पोवच वयमां वत ग्रहण करेलुं छे, मने धिकार छे जे हुं अद्यापि माथे पली आव्या तोपण धर्म आवरतो नथी. ते सांभळी राणी बोली हे स्वामी, अद्यापि धर्मकार्यमां विलंब करो नहीं, ते सांभळी राजा सोमचंद्रे पोताना पुत्र प्रसन्नचंद्रने राज्य लपर वेसारी तत्काळ तापस व्रव धारण कर्युं. धारणी राणी गर्भवती-हती- तथापि एक धात्रीने-साथे लई पित साथे-चाली नीकली. समय पूर्ण यत्तां अनुक्रमे धारणीने पुत्र थयो परंतु प्रसवनी उग्र पीडामां ते मृत्यु पामी एट छे

सोमचंद्र तापसने चिंता थई पडी के, हवे आ माता वगरनो पुत्र शी रीते उछरशे ! स्वर्गमां गयेछी देवी धारणी अवधिक्षाने पोताना तापसपितनी चिंता जाणी भेंसनुं रूप छई त्यां आवी अने पोताना वालकने धवराव्यो. एवी रीते देवमाता अने धात्रीए पालन करेलो ते वालक मोटो थयो. तेना तापसपिताए ते वालकने बलकले वस्नोमां वींटाळी तेनुं वल्क्लचीरो एवं नाम पाडयुं. अनुक्रमे त्रण वर्षनो थयो त्यारे भेंसरूपे आवेली पूर्वभवनी माता देवलोकमां चाली गई. पछी तापसे वनफल तथा धान्य-थी पोपण करेलो ते वालक अनुक्रमे सोळवर्पनो थयो. ते पुत्र मात्र तात, तात, एटलुंज बोलतो अने तेना पिताने नमस्कार करतो हतो. तेमज वनफल लावी पितानुं पोपण करता शील्यो हतो.

एक वखते प्रसन्नचंद्र राजा कोइ भिल्लना मुखथी पोताना सहोदरनो प्रवंध जाणी तेने मलवाने उत्सुक थयो. तेथी तेणे वेश्याओंने वोलावीने कहां के, तमे कोईपण उपाये लोभावी मारा वधुने अही लावी आपो. पण तमारे तेने दूरथी जोवो, नहींतो सोमचंद्र तापस तमने शापथी भस्म करशे. आवा तेना वचनथी ते बेइयाओं तापसोनो वेप लई सोमचंद्र तापसना आश्रमपासे आवी. वल्कलचीरीए तेमने दूरथी आवती जोई एटले तेणीओ तापसरुपे दोवाथी तेमने तापस जाणी तेणे नमस्कार कर्यो. पछी वनमांथी लावेलां फल तेमना आहारने माटे आगल धर्या. ते फलोने जोईने कपट मुनिओ बोल्या, 'महाराज, आवां नीरमफलोने अमे शुं करीए? अमारे तो पोतनपुरनां फलो जोइए. हे मुनि ! तमे अमारा आश्रमना फलनी वानकी जुवो. ' एम कही ते कपटी वेश्याकीए तेने एकांतमां वेसारी खांड, साकर, अने द्राक्ष विगरे मधुर मेवा विगरेनो आग्रहभी आहार कराव्यो. ते मधुर फलना स्था-दथी हर्ष पामी ते मुनि बीला, आंमली अने कोठीनां फलो जे नोते खातो हतो तेना स्वादमां उद्वेग पाम्यो. जेम जेम ते मुनि लोभायो तेम तेम तेओ विशेष स्वादवाली वस्तुओ तेने खावा आपवा लागी. पछी ते मुनिना हाथने पोताना स्तन अने कोशल गाछ विगेरे उपर मुक्यो. तेथी ते तापस बाल्यो के महाजय! तमारुं शरिर आवुं कोमळ केम छे? अने आं तमारा हृदय उपर वे वेदिका शेनी छे? ते बोली अमारा पोतन आश्रमना फळोनुं आस्वादन करवाथी खावा अंग थाय छे. तेथी तमे पण षा आश्रमने छोडी पोतनाश्रममां आवो. पछी वल्कलचीरी तेमनी साथे त्यां जवानो संकेत करी पोताना पात्रो एकांते गोपिनने फरीवार तेमनी पासे थाव्यो. महां छे के:--

१ ब्राइनी छारुना बमावेला बस्रो.

## तावनमौनी यति ज्ञानी, सुतपस्वी जीतेंद्रियः। यावन योषितां दृष्टि, गोचरे यांति पुरुषः ॥

"ज्यांसुधी पुरुष सुंदर स्त्रीओने दृष्टिगोचर थयो नथी त्यांसुधी ज ते मुनि, यति, ज्ञानी, तपस्वी अने जितेंद्रिय रहे छे. " भा समये सोमचंद्रऋषि आम तेम फरतां त्यां आवता इता. तेमने दूरथी आवता जोई अगाउथी संकेत करीं वृक्ष चपर राखेका पुरुषोए ते स्त्रीओने तेवा खबर आप्या एटके तत्काल तेओ शापना भयथी नाशी गई अने राजानी आगल आवीने ते वृत्तांत जणाव्यो. ते सांभळी राजाए "अहो ! मारो बंधु बंनेथी भ्रष्ट थयो, तथी तेना शा हाल थशे ? " आवुं चितवी तेनी दिलगीरीमां आखा नगरमां गीत नृत्धादिकनो मतिषेथ कर्यो.

इवे अहि बल्कळचीरी वनमां ममतो हती. त्यां कोई रथवाळाए तेने दींठों एटले पुछ्युं के-मुनि! तमे क्यां जाओ छो ? ते बोल्यो, हुं पोतनाश्रममां जवा इच्छुं छुं. एटले रथवाळाए कहुं के-हुं पण त्यांज जडं छुं. तेथीं वलकलचीरी रथनी पछवाडे चाल्यो. ते स्थमां रथवाळानी स्त्री वेठी इती तेने मुन्ने 'हे तात' 'हे तात' एम कहेवा लाग्यो. स्यारे ते स्त्रीए तेना पतिने कहां के, आ मानि, स्त्री पुरुषनी भेद पण जाणतो नथी. पछी रथिक तेने मुग्यजाणी मोदक खावा आप्या. तेनो स्वाद छई मुनि बोल्या हं हं जाणवामां आव्युं, आ फल पूर्वे मने पेला महाशयोए आप्या हता तेज छे. पछी आगल जतां रिथके एक चोरने युद्ध करी जिती लीघो. चोरे रिथकने घणुं धन आप्युं. ते लई रियंक पोतनपुरमां आव्यो. त्यां रथीए मुनिने कहां के, दे बाल-मुनि, आ धनल्यो. धन वगर अहीं आ स्थान भोजन मळशे नहीं. पळी तेने केटलुंक भन आपी आ "पोतनाश्रम" एम कही ते रथी त्यांथीं चाल्यो गयो. हवे बालमुनि नगरमां चाल्यी. त्यां दुकानीनी श्रेणी अने इवेलीओं जोई विचार करवा लाग्यों के दुं क्यां आव्यो? बा आवुं शुं इशे ? वळी मार्गे कोई नर के नारी मलें तो ते तेने 'तात! वंदना करं छुं' एम कहेवा लाग्यो. लोको तेने तेम करतां जोईने इसवा लाग्या. आम करतां कोई वेश्या तेना जोवामां आवी, एटले तेने मुनि जाणी मूल्य आपीने 'निवास तथा फळादिकनी तेणे याचना करी. तेणीए तेने पोला-ना घरमां वोलावीने अभ्यंगस्नान कराव्युं. मुनिए उपसर्गनी जेम ते सहन कर्युं. पछी तेणीए तेनी साथे पोतानी पुत्रीनुं पाणी ग्रहण कराव्युं. सोमचंद्रना पुत्र बालमुनि वेश्याना गीत नृत्य सांभळी अने जोड़ चितवन करवा लाग्या के आ बधा हुं भणे छे ? तेओ मने फळ केम आपता नथी ? आ वखते राजाए ते वेश्वाने घेरू थतो मृदंग ध्वीन सांभल्यो. तेथी तत्काल तेने बोलावी राजाए पुछपुं के मारे घे शोक छतां तुं वाद्य केम वगाडे छे ? वेश्या बोली-दैवड़ (जोपी)ना मचनर्थ'

एक तापस कुमारने कन्या आपी छे तेना हर्षमां मारे त्यां वाद्य वानां छे. आ बार्ता सांभळी तेज बखत राजानुं दक्षिण आंग फरक्युं ने तथी तेने निश्चय थयों के, जरुर मारो वंधुंज त्यां आव्यो हशे—आथी राजा तरत ते वेश्याने घेर गयो. त्यां पोताना अनुज वंधुने जोई राजाए प्रेमथी नेनुं विवाहमंगल कर्युं अने पोताना बंधुने ते स्त्री सहित दरवास्मां लाव्यो. अनुक्रमे ते सर्व कळामां कुशल थयो पछीं राजाए आ सर्व वृत्तांत परेताना पिता सोमचंद्रने जणाव्यो. तथी ते शोक रहित थयो.

हवे राज्यमां रहेतां अने स्त्रीं साथे विषयमुख भोगवतां वल्कलचीरीने वार वर्ष बीती गया. एकदा अर्थराके जागृत थतां बल्कलचीरीने विचार आन्यो के, 'अहो, मत्सा अकृतज्ञपणाने धिकार छे अने मारा अभितेदियपणाने पण धिकार छे, के जिथी हं मारा पिताने मुखी जईने अहीं पड़्यो रह्यों छुं. आ प्रमाणे विचारीन ते पोताना पिताने जीवा अति उत्सुक थयो. तेथी पातःकाळे भाईनी आज्ञा रुईने पिता पाम जवा चाल्यो. वडीलमाई पण लघुवंधुनी साथे जवाने तैयार थयो वंन भाईए वनमां जई पिताने मणाम कर्यो. सोमचंद्रमुनिए पोतानाः लघुपुत्रने उत्संगमां बेंसारी तेना सर्व समाचार सांभळया. ते वखते हर्पना अश्रु आवतां तेमना नत्रना पडल इतरी गया. पछी वल्कलचीरी पूर्वे गौपवी राखेला तापसपणाना उपकर-णी काढी तेने उत्तरीयवस्त्रना छेडाधी संमार्जन करतां विचारमां पड्या के, अहो, में पूर्वे आवुं जोयुं छे, ए प्रमाणे उहापोह करतां तेर्ने भातिस्मरणज्ञान उत्पन्न थयुं तेथी तेणे पातानीं पूर्वभव दीटो एटले तेणे जाण्युं के-अहो, हमणा गतभवगांज मुकेर्छुं साधुपणुं पण मारा जाणवामां आन्युं नहीं. माटे सीविषयना लंपटपणाने धिकार छे. आ प्रमाणे शुभ ध्यान ध्यातां तेने त्यांज केवलज्ञान उत्पन्न थयुं. तेनी देशनाथी तेना पिताए पण दीक्षा लीधी. अने पसन्नचंद्र ब्रह्मचर्य वत अंगीकार करी घेर गयो.

पत्येकबुद्ध वल्कल्चीरी मुनि श्री वीरमभुनी पासे गया अने अनुक्रमें मोर्क्षे भगा. एवी रीते वल्कलचीरी मुनि पोताना आत्मप्रदेशने लागेली कर्मनी वर्गणानुं भाषा प्राप्ताना वल्कलादि उपकरणोनी रचनी साथे मार्चन करी द्रव्य अने भावशी भूभ पणाने दूर करता सता कामदेवने जितनारा अने प्रत्येकबुद्ध थया.

शुक्रके अक्षेत्रक अक्षेत्

# व्याख्यान ९५ सुं.

मातरं स्वसुतां जामिं रागांधो नैव पश्यति। पशुवद्रमते तत्र रामापि स्वस्तादिषु ॥ १ ॥

व्याख्या.

" कामरागथी अंघ थयेलो पुरुष पोतानी माता, पुत्री के वेनने पण जीती मथी, तेनीसाथ पशुनी जेम रमे छे, तेवीरीते स्त्रीपण पण पोताना पुत्र पितादिनी साथे पशुनी जेम रमे छे." जेम पशु पोतानी माता विगेरेनी साथे अविवेकीपणाने लीधे स्वेच्छाए कीडा करे छे, तेवी रीते कामांध एवो पुरुष के स्त्री पण अविवैकी-पण पुत्रपुत्र्यादिकमां मवर्त्ते छे. आ विषे अहार नातरानी प्रबंध कहेवाय छे. ते था प्रमाणे:---

अदार नातरानों प्रबंध.

मथुरापुरीमां कामदेवनी सेना जेवी कुन्नेर्सेना नामे एक वेश्या इती. ते भथम गर्भना भारथी खेदित थई त्यारे तेण पोतानी माताने ते दु:ख जणाव्युं. माताए कहुं, वत्से ! तारो गर्भ पाडी नाखुं जेथी तने खेद दूर थाय. वेश्या वोली के, तेम करवुं तो अयुक्त छे. पछी समय आवतां तेणीए एक पुत्र अने पुत्रीने जन्म आप्या. ते वखते तेनी माता घोली के, वत्से! आपणा उद्यम मात्र यावन उपर छे, अने आ वे स्तनपान करनारां वालको तारा यौजनने हरी लेशे. कहुं छे के"वश्या चाति यौवन उपर जीवनारी छे तथी तेणे जिवनी पेटे यौजननी रक्षा करवी." माटे आ जोडलाने विष्टानी जेग वहार स्वजी दे. वेश्याए ते स्वीकांयु. पछी दश दिवस सुधी तेनुं पालन करी, कुबेरदत्त अने कुबेरदत्ता एवा वे नामथी अंकित वे मुद्रिका करावी तेमनी आंगळीमां पहेरावी, अने तेमने एक पेटीमां पूरी ते पेटी यमुनानदीना मवाहमां वहेती मुकी टीधी.

जलना तरंगोना प्रवाह साथे तणाती तणाती ते पेटी सौर्यपुर समिपे आवी. त्यां कोई वे गृहस्य श्रेष्टीओए ते पेटी ग्रहण करीं अने ते वालकोने वंने श्रेष्टीए पुत्र पुत्रीपणे राखीने मोटा कर्यी. अनुक्रमे ज्यारे तेओ यौवनवयने प्राप्त थया त्यारे ते वंनेने परस्पर योग्य जाणी तेमनो मोटा उत्सवथी विवाह कर्यो. ए दंपती परस्पर अति स्नेह्थी रहेवा लाग्या.

एक वखते तेओ सोगडावाजी रमता इता तेवामां कुवेरदत्तना करमांथी नीकळीने पेली नामांकित मुद्रिका कुवेरदत्ताना उत्संगमां पडी. ते लईने जोतां कुवेरदत्ता विचारमां पढी अनं वोली के, आ वंने मृद्धिका आकृति विगरेथी तुल्य के तथी एम जणाने छे के, आपण वंने सहोदर युगलीआ हई जुं, परंतु देवयोगे आ-पणां विवाह थई गयो छे. पछी तें वंनेए जरने पोतपोतानीं माताने पुछ बु त्यारे माता तें तमने पूर्व वृत्तांत जणाव्यो. तें सांभळी वंने वोल्या के, हे माता ! तमें आवुं अकृत्य केम कर्युं ! माता वोली—वत्सो, हजु तमारुं मात्र पाणी ग्रहणज थयुं छे बीजुं कांई पाप थयुं नथी. तथी ए संवंभ त्यजी द्यो अने कुवेरदत्तने कर्हुं के, तुं व्यापार करवा माटे परदेश जवा इच्छे छे तो हाल परदेश जा. त्यांथी कुवळक्षेम पाछो आव्या पछी तारो वीजी झीनी साथ विवाह कर्शुं. ते सांभळी कुवेरदत्ताने पोतानी वेन गणी वेचवा माटे अनेक प्रकारना करीयाणा लड़ने कुवेरदत्ताने पुरीए गयो. अनुक्रम केटलेक दिवसे त्यां पेली कुवेरसेना वेदयानी साथक तेन संवंध थवों. तेनीं साथ सुलभोग भोगवतां तेनाथी एक पुत्र उत्पन्न थयो.

अहीं कुनेरदत्ताए निपयनिरक्त थईने दीक्षा लीधी. उद्य तपस्या करतां तेने अविधिक्षान प्राप्त थयुं. तेथी तेणे कुनेरदत्तने मातानी साथे निलास करतो जोयो. तेने प्रतिनोध करना माटे ते साध्वी मथुरापुरी आव्या अने तेना घरनी निलक आनेला एक छपाश्रयमां निनास कर्यों, त्यां रहीने तेणीए धर्मदेशना आपी. एक निलते ते नेश्यानो पुत्र पारणामां सुतो सुतो रोतो हतो तेने साध्वी आ प्रमाणे हुलानती सती हालरहां गाना लागी. ते निषे भी परिशिष्ट पर्त्रमां आ प्रमाणे हले छेके:-

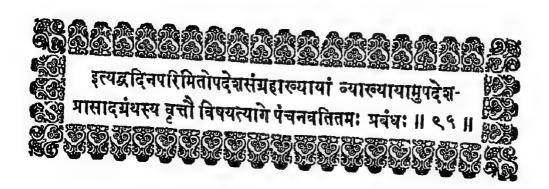
"हे बत्स! रो नहीं, तुं मारो माइ थाय छे, पुत्र थाय छे, दीयर थाय छे, भत्रीजो थाय छे, काको थाय छे, अने पुत्रनो पुत्र थाय छे. हे बालक! जें तारो पिता छे, ते मारो सहोदर बंधु थाय छे, पिता थाय छे, पितामह थाय छे, स्वामी थाय छे, पुत्र थाय छे अने सासरो थाय छे. हे बालक! तारी जे माता छे, ते मारी माता थाय छे, मोजाई थायछे, बहु थाय छे, सासु थाय छे अने सपत्नी थाय छे.

ते सांभळी कुनेरदत्त नोल्यों के, हे साध्नी! आनुं अघटित केम नोलों छों रे साध्नीए कधुं के, सांभळो—आ नालक मारो सहोदर नंधु छे, कारण के अमें ने एक उदर्थी उत्पन्न थया छीए, नर्ली आ नालक मारा पितनों पुत्र होनाथी मारो एण पुत्र थाय छे, तेमन मारा पितनों अनुन नंधु होनाथीं मारो दीवर एग थाय छे, नर्ली ते मारा भाईनो पुत्र छे, तेथीं मारो भन्नीं पण थाय छे, तथा ते मारीं माताना पितनों (पिता) भाई छे तेथीं मारो काको पण थाय छे, अने मारी सपत्नीं जे कुनेरसेना तेनो पुत्र जे कुनेरदत्त तेनो आ पुत्र छे तेथी ते मारा पुत्रनों पुत्र पण

कहेवाय छे. इवे तेना पितानी साथे जे मारे छ संबंध छे ते आ प्रमाणे-आ बाल-कनो जे पिता ते मारो भाई थाय कारण तेनी अने मारी एक माता छे. तथा आ वालकानो ने पिता ते मारो पिता थाय कारण के ते मारी मातानो स्वामी छे वळी ने आ वालकनो पिता ते मारो पितामह थाय कारण मारी माता कुवेरसेना तेनो पति कुवेरदत्त तेनो आ वालक अनुजवंधु छे तेथी काको अने तेनो पिता कुवेरदत्त तेथी ते वृद्ध पिता थाय, तथा जे आ वालकनो पिता ते मारो स्वामी थाय कारण के तेनी सार्थ मारो विवाह थयेलो छे. वळी ए मारी शोक्यनो पुत्र छे तेथी मारो पुत्र पण थाय. तथा जे आ वालकनो पिता ते मारो सासरीपण थाय कारण के ते मारा दीयरनो पिता छे. वळी मारे आ बाळकनी माता साथे छ संबंध छे ते आ प्रमाणे-जे आ बालकनी माता ते मारी पण माता थाय कारण तेणीथी मारो जन्म थयेलो छे. तथा जे आ वालकनी माता ते मारी पितामही थाय कारण ते मारा काकानी माता छे. तथा जे आ बालकनी याता ते मारी भोजाई थाय कारण मारा भाईनी स्ती थाय छे. तथा जे आ वालकची माता ते मारी पुत्रवधू पण थाय कारण मारी शोक्यना पुत्र कुवेरदत्त तेनी ते स्त्री थाय छे. तथा जे आ वालकनी माता ते मारी सास पण थाय कारण के मारा पातिनी माता थाय छे. तथा एनी माता मारी श्रोक्य पण थाय कारण मारा पतिनीज ते बीजी स्त्री थाय छे.

आ प्रमाणे सांभळी कुवेरदत्ते तेनो सर्व वृत्तांत पुछ्यो. साध्वीए कही बताव्यो, ते सांभळी वैराग्य पामीने वेणे दीक्षा लीधी. अने कुवेरसेनाए पण श्रावि-कापणुं स्वीकार्युः

आ अमाणे जे विवेकी पुरुष विषयना दिण्येन चित्तमां धारी रागांधपणाने मुकी दे अने शुभशीलनुं आचरण करे ते कुवेरदत्तानी जेम जगतमां उत्तम संपत्तिने पामे छे.



# व्याख्यान ९६ मुं.

हवे विषयमां सुख अल्प छे अने विडंबना घणी छे ते बतावे छे. सुखं विषयसेवाया मत्यल्पं सर्षपादिष । दुःखं नाल्पतरं क्षोद्र विद्वास्वादकमर्त्यवत् ॥ १ ॥

## व्याख्या

" विषयसेवामां मर्पवना दाणाथी पण घणुं थोडुं सुख छे अने दुःख घणुं छे. जेम मधुना टीपाना आस्वाटन करनारने थयुं इतुं तेम. 17 विपयसेवामां अल्यसुल छे, ते विषे आगममां पण कहां छे के, "जेमां सुख क्षणवार छे अने दु:ख बहुकाळ पर्यंत छे, दु:ख अत्यंत मळे छे अने सुख दृर रहे छे. एवं अनर्थनी खाणरूप कामभोगजन्य संसारसुख मोक्षनुं प्रतिपक्षी छे. " वळी कतुं छे के, "कंप, खेद, अम, मूर्छी, फेर, ग्लानि, बळनो क्षय, अने राज्यक्मा (क्षय) विगेरे रोग मैथुन सैवाथी उत्पन्न थाय छे. " वळी उपदेशमालामां कहां छे के, " जेम पामा ( लस ) रोगवाळा मनुष्यने मीठी खुजळी आवे ते वखते खंजवाळवाथी परिणामे दु:ख याय छ इतां ते वलत सुल माने छे तेम मोहातुर पुरुप विषयसुलने परिणामे दुःसहप छतां सुखरूप माने छे. " पामाने खुजली करनार जेम ते बखन सुख माने छे पण ते दु:खरूप छे तेम पुरुपने विषयसेवानुं सुख पण दु:खरुप जाणवु. वळी कहुं छे के "हे गौतम, देव द्रव्या अक्षण करवाथी अने परस्त्रीनी सेवाथी माणी सानवार सात्री नारकीए जाय छे. " वळी कहुं छे के " कोइएण पुरुष पास्त्रीनी साथे जेटला आंखोना भीचकारा करे तेटला हजार कल्पमुधी ते नरकामिवडे पचाय छे. " आ प्रमाणे विषय जन्यसुख मधुविद्वेन आस्वादन करनार पुरुवनी जेम दुःखरूप छनां सुलह्म लागे छे ते मधुनिंदुनुं दृष्टांत आ प्रमाणे छे.—

मधुविंदुतुं दृष्टांत.

कोई पुरुष सार्थथी मुलो पडी मोटा अरण्यमां पेठो त्यां जाणे साहात् यमराज होय तेवा कोई हस्तीए तेने अवलोकन कर्यो. ते उन्मन्त हाथी ते पुरुपनी सामे दोड्यो. तेना भयथी दडानी जेम उछळतोने पडतो ते पुरुप नाठो. थोडे जतां आगळ एक कूवो जोवामां आव्यो. तेथी तेणे विचार्यु के, आ हाथी जरूर मारा प्राण लेशे तेथी आ कुवामां झंपापात करवो सारो. आवुं धारी ते कुवामां पड्यो. ते कुवाना कांठा उपर एक वडनुं वृक्ष उग्युं हतुं. तेनी वडवाईओ कुवामां लटकी रही हती, तेथी पडतो एवो ते पुरुप ते वडनी वडवाई साथे वचमां लटकी रह्यो. तेणे

भींचे इृष्टि नांखीने जीयुं तो कुवानी अंदर जाणे बीजो कुवो होय तेवो एक अजगर मुख फाडीने रहेली जोवामां आव्यो. वळी ते कुवाना चारे खुणामां धमणनी जेम फुंफांडा मारता चार सर्पी जीवामां आव्या. उपर नजर करतां तेणे आलंबन करेली चडनी शाखाने छेदवाने माठे काळो अने घोळो एवा वे उंदर पोताना करवतना जेवा दांतथी प्रयत्न करता नजरे पड्या. तेमज उन्मत्त गर्जेंद्र पण तेने मारवाने माटे चडनी शाखाने सुंडवेंड वारंवार इलाववा लाग्यो. तेथी ते वृक्षनी शाखा उपर रहेला एक मधपुडामांथी उडीने केटलीक मिलकाओ पेला पुरुषने दंश करवा लागी. आ प्रमाणेनी पीडायी दुःखी यता ते पुरुषे कुवामांथी निकळवाने माढे उंचुं मुल कर्युं. तेवामां पेला मधपुंबामांथी मधना विंदु टपकवा लाग्या. ते पेला पुरुपना छडाट उपर पडीने मुखमां आव्या तेनो स्वाद पामीने ते सुख मानवा लाग्यो. त चलते कोई विद्याधर तेने आपित्तमांथी मुक्त करवाने माटे विमान महित त्यां आवी क्रुपाथी बोल्यो के, हे मनुष्य ! चाल, आ विमानमां वेसीने सुखी था तेणे कहुं के, हे देव ! क्षगवार राह जुवो, जेटलामां हुं आ मधुनां विद्व चाटी लंड. पछी विद्याधरे फरीवार पुछ्युं, तथापि तेणे तेबोज जवाव आप्यो. छेवटे विद्याधर कंटाळी पोताने स्थानके चाल्यो गयो.

उपरना दृष्टांत विषे एवा उपनय छे के, जे उन्मित्त हाथी ते मृत्यु समजवुं. ते सर्व जीवीनी पछवाडे भम्या करे छे, ते विषे श्रीवस्तुपाळ चरित्रमां कहां छे के,

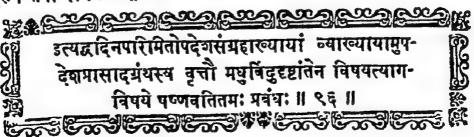
> लोकः पृच्छति मेचार्ची, शरीरे कुशलं तव ॥ कुतः कुशलमस्माकं, आयुर्याति दिने दिने ॥

" कोइ प्रसंगे नगरजनोए मंत्री वस्तुपालने कुशळता पुछी, त्यारे मंत्री बोल्या के, छोको मने बरीरनी कुशलता पुछे छे, पण मारी कुशलता शी रीते कहेवाय ? कारणके आयुष्य तो दिवसे दिवसे चाल्युं जाय छे. " वळी अन्यत्र कह्यं छे के-"आ विश्व शरण वगरनुं, राजा वगरनुं अने नायक विनानुं छे के जेथी कोईपण खवाय न चालं तेम यमराजरूप राक्षसथी तेनो यास थया करे छे." "वळी जुओ के जे श्रीणकराजाने इंद्र स्नेहयी आहिंगन करीने पोताना अर्थासन उपर बेसाडतो इतो, तेवो श्रेणिकराजा पण अश्वरण यह अश्रोतव्यदशा (मरणदशा) ने पामी गयो. " " वळी जेम पसुओ मृत्युनो उपाय जाणता नथी, तेम विद्वानो पण तेनो उपाय जाणता नथी. आवी उपाय जाणवानी मूहताने धिक्कार छे. " इवे जे कुवे। कहा ते संसार जाणवी. ते गमनागमनहृप जलवी भरेलो छे. जे अजगर ते

भयंकर नरकभूमि समझवी. चार खुणे के चार सर्पो इता ते कोधादि चार कषायो जाणवा. जे व्ह्वृक्ष ते मनुष्यनं आयुष्य समझवं. जे काळो अने भोळो वे उंदर कहा ते मनुष्यना आयुष्यने छेदन करनारा शुक्ष्पक्ष अने रुष्णपक्ष समजवा. जे मिक्षकाओं ते ज्वर, अतीसार, वाचु विगेरे ज्याधिओं समजवा. जने जे मध्विंदु ते विवयरात समजवो, के जे मात्र सणवार सुख आपनार छे.

अहि कोई शंका करे के, ने देवताने सुख मळे छे ते अल्पनयी, पण घणुं छे; केमके ते घणो काळ रहे छे. देवताने एक भवमां अनेक स्त्री साथे संभोग प्राप्त याय छे. ते विषे शास्त्रमां कहुं छे के, "इंद्रना एक अवतारमां वे कोडाकोडी पंचाशी लाख करोड, एकोतेर हजार करोड, चारसो कोड, एकवीश कोड, सत्तावन लाल, नौद हजार, बसो अने पचास देवीओ याय छे" एथी देवताने विषयनुं मुख मधुविंदुना सुखनी लेम अल्प केम कहेवाय ? ए सत्य छे पण हे बत्स, अनादिकाळपर्यंत भोगवेडां निगोदादि दुःखने आश्रीने देवनुं सुख पण तेना जेबुंज अल्प छे. वळी देवतामांयी चवेलो प्राणी तिर्येचादि गतिमां अनंतकाळ सुधी चारंवार भम्या करे छे, एथी ते अपेक्षाए पण तेनुं सुस मधुविंदुना जेबुं स्वल्पज छे. लेम कोई पुरुषे कंटसुधी मिष्टास खायुं होय ते विकार पामी अलीर्णह्रप यतां वमन, विरेचन, अने लंघन विगेरेनुं घणुं दु ख ते अनुभवे छे. तेम कामभोगादि सुख देवादिकने पण परिणामे महा भयंकर छे एम जाणी ग्रनिजनो मनयी पण ते सुखने इच्छता नयी.

" आ प्रमाणे काम भोगसंबंधी सुल किंपाकना फलनी जेम परिणामे दाहण अने मधुविंदुनी जेवुं अलप छे; एवुं मनमां विचारी कयो सद्वुद्धिमान् अने शीलदृष्टि-बाळो पुरुष तेमां रागने प्राप्त याम ?"



# व्याख्यान ९७ मुं.

हवे महासती तुं लक्षण कहे छे. या शीलभंगसामग्रीसंभवे निश्चला मतिः। सा सती स्वपतौ रक्तेतराः संति गृहे गृहे ॥ १ ॥

#### व्याख्या

" शिलनो भंग थवानी सामग्रीनो संभव छतां पण जेनी बुद्धि निश्रल रहे अने जे पोताना पतिमांज रक्त होय ते स्त्री सती कहेत्राय, बाकी बीजी (असती ) स्त्रीओ तो घेर घेर छे " आ उपर शीलवतीनी कथा छे ते आ प्रमाणे-

## शोलवतीनी कथा.

जंबुद्वीपने विषे नंदन नामना नगरमां रत्नाकर नामे श्रेष्टी इतो. तेने पुत्र नहोतो तेथी तेणे अजितनाथ भगवंतनी शामनदेवी अजितवलानी आराधना करी. एथी अजितसेन नामे पुत्र थयो. ते मोटो थइ शीलवती नामे स्त्रीनी साथे परण्यो. शीलवती शकुनशास्त्रादि भणेली इती, तेथी शकुनशास्त्रने अनुसारे अनेक वस्तत द्रव्य बतावी आपवाथी ते घरनी अधिष्टात्री थइ पडी इती. तेनो स्वामी अजितसेन बुद्धिना प्रवळथी राजानो मंत्री थयो इतो. एक वखते राजाए कोई सीमाडाना रा-जा उपर चढाइ करवा जतां पोतानी साथे आववा मंत्रीने पण आज्ञा करी मंत्रीए शीलवतीने पुछ्युं के, " प्रिया! मारे राजानी साथे जबुं पडशे पाछळ तुं एकाकी घर शी रीते रहीश? कारण के स्त्रीओनुं शील तो पुरुष समीपे होवाथीज रहेले. जे स्त्री मोषित भर्तुका ( जेनो पति परदेश गयो होय तेवी ) होय छे ते जन्मत्त गर्जेद्र-नी जेम घणीवार स्वेच्छाथी ऋीडा करे छे. " पतिना आवां वचनो सांभळी नेत्रमां अश्रु लावीने शीलवतीए शीलनी परिक्षा वतावनारी एक पुष्पनी माळा स्वह्रस्तवडे गुंथी पतिना कंटमां आरोपण करी अने बोली के, हे स्वामी, ज्यांसुधी आ माळा करमाय नहीं, त्यांसुधी मारुं शील अखंद छे एम समजवुं. पछी मंत्री निर्श्वित थइने राजानी साथे वहार गाम गयो.

एक वसते राजा अजितसेन मंत्रीना कंडमां वगर करमायली माळा जोई वि-स्मय पाम्यो, अने ते विषे पासेना माणसोने पुछ्युं; त्यारे तेणे तेनी स्नीनुं सतीपणुं वर्णवी वताव्युं. पछी कौतुकी राजाए सभावचे आवी परस्पर हास्यवात्ती करनारा मंत्रीओने कहुं के, आपणा अजितसेन मंत्रीनी सीनुं सतीपणुं खरेखरुं छे. ते सांभ-

ळी एक वीजो मंत्री वोली उठ्यो-महाराज! तेमने तेमनी स्त्रीए भमाव्या छे. स्त्रीओ-मां सतीपणुं छेज नहीं. शास्त्रमां कहां छे के, " ज्यांमुधी एकांत के वस्तत मळे नहीं त्यांसुधीज स्त्रीनुं सतीपणुं छे." माटे जो तमारे परीक्षा करवी होय तो मने त्यां मोकलो. पछी अशोक नामना ते हास्य करनारा मंत्रीने अर्थ लाख द्रव्य आपीने राजाए शीलवती पासे मोकल्यो.

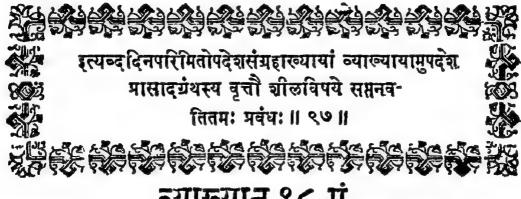
अशोक उज्वल वेश धारण करी नगरमां गयो. त्यां कोई माळीनी स्त्रीने मळीने कहीं के, तुं जीलवतीनी पासे जइ कहे के, कोई सौभाग्यवान पुरुप तने मळवाने इच्छे छे. मालणे कहां, ते वात्तीमां द्रव्य घणुं जोईशे. कारण के धन एज मनुष्योनुं उत्तम वशीकरण छे. अशोक कहुं के जो ते कार्य सिद्ध थशे तो हुं अध लक्ष द्रव्य आपीश. आयी मालण संतुष्ट थइ शीलवतीनी पासे गइ अने शीलवतीने वधो वृत्तांत जणाव्यो. शी-छवतीए मनमां विचां धु के, परस्तीना शीलनुं खंडन करवा इच्छनार आ पुरुष तेना पापनुं फळ भोगवो. एम विचारी तेणे ते वात कवुळ करी, अने मालणनी पासे अर्थ लक्ष द्रव्य माग्युं. मालणे ते स्वीकार्यु एदले मळवानो दिवस नकी कर्यो. पछी शील-वतीए पोतानी बुद्धिथी विचार करी घरना एक ओरडामां कुवा जेवो उंडो खाडो कराव्यो अने तेनी उपर पाटी वगरनो मांचो मुकी तेनी उपर ओछाड पोचो पोचो बांधी राख्यो. मलवानो समय थतां अशोक मंत्री पोताना आत्माने कृतार्थ मानतो अर्ध लक्ष द्रव्य साथे लड़ त्यां आव्यो. अगाउथी शिखवी राखेली दासीए कहां के, ला-वेलुं द्रव्य मने आपो अने अंदर मांचा उपर जहने वेसो. अशोक अर्ध लाख द्रव्य तेने आपी उतावळो ते अंधकारवाळा ओरडामां जइ मांचा उपर वेठो तेवो तरतज संसारमां वहुकर्भी प्राणी पडे तेम ते खाडामां पड्यो. "रावणनी जेम व्यसनीने आपत्तिओ सुस्रम छे. " खाडामां पडेलो अशोक ज्यारे क्षुधातुर थतो त्यारे जपरथी शीलवती खप्परपात्रमां अन आपती इती. एवी रीते वहु दिवस तेमां रहेवाथी 'अ' उडी ज-वाने लीवे अशोक मंत्री शोक्रूप यह रहो.

एक मास वीत्या छतां अशोक मंत्री पाछो न आववायी क्राम्नांकुर नामे घीजो मंत्री तेवीज प्रतिज्ञा छईने आव्यो. शीलवतीए तेनी पासेथी पण अर्थ लक्ष द्रव्य छईने तेज खाडामां तेने नाख्यो. पछी एक मासे लिलितांग नामे त्रीजो मंत्री आव्यो. तेने पण अर्थ लाख द्रव्य लइ तेज खाडामां नाखी दीधो. चोथे मासे रिति-केलि नामे मंत्री आव्यो. तेने पण अर्थ लक्ष द्रव्य लइ तेज खाडामां नाख्यो. आ प्रमाणे ते चारे मंत्रीओ चतुर्गति रूप संसारमां दुःखनो अनुभव करता जीवोनी जेम ते पाताळ जेवा खाडामां दुःखनो अनुभव करता जीवोनी जेम

अनुक्रमे सिइराजा शत्रुनो जय करी पाछो आव्यो. अने मोटा उत्सवथी तेणे नगरमां प्रवेश कर्यो. ते समये पेला मंत्रीओए शीलवतीने कह्यं, हे स्वामिनी! अमे तमारुं माहात्म्य जोयुं, तेम अमारा कृत्यनुं फल पण भोगन्युं, माटे हवे अमने ब-हार काढी. शीलवतीए कहुं के, ज्यारे हुं "भवतु (थाओ)" एम कहुं त्यारे तमारे बधाए साथे "भवतु" एम कहेवुं. मंत्रीओए ते कबुल कर्युं. पछी शीलवतीए पोताना पतिने कहीने राजाने भोजननुं आमंत्रण कर्युं. आगले दिवसे सर्व रसवती तैयार करी ते खाडावाळा ओरडामां गुप्त रीते राखी मुकी. भोजन करवा आववाने दिवसे रसोडामां अग्नि पण सळगाव्यो नहीं अने जळने स्थाने जळ पण राख्युं नहीं, तेम कांई पण भोजननी सामग्री पण त्यां रसोडामां राखी नही. राजा भोजन करवाने आव्यो पण तेणे भोजननी सामग्री कांई जोई नहीं. तेथी चमत्कार पामी राजा भी-जन करवा वेठो. पछी शीलवती स्नान करी पेला ओरडामां जइ पुष्यमाला हाथमां राखी धूप दीप करी बेठी अने अंदरथी बोली के-राजा भोजन करवाने माटे आ-व्या छे माटे नाना प्रकारना पकाल "भवन्तु" (यइ जाओ.) एटले खाडानी अंदरथी ते चारे मंत्रीओए उंचे स्वरे कहुं के, " भवन्तु " ( यइ जाओ ). पछी मो-दक विगेरे सामग्री ते ओरडामांथी वहार छाववामां आवी. पछी घृत विगेरेने माटे पण उपर प्रमाणे कहां, वली विलेपन, तथा शाक विगेरेने माटे पण तेमज कहां, ते बधी वखते तेओए " भवन्तु " ए शब्द कह्यो. एवी रीते राजानुं भोजन संपूर्ण थयुं. पछी तांबूल विगेरे आपीने मंत्री अजितसेन राजाना चरणमां पड्यो. एटले राजाए पुछयुं के, मंत्री आ प्रमाणे रसोई विगेरे शाथी तैयार यइ? मंत्रीए कह्युं के - ते ओर-डामां मने पसन थयेला चार यहां छे ते जे मागीए ते आपे छे. राजाए कहुं के ते अमने आपो. कारण के ज्यारे नगरनी वहार जबुं पडे छे, त्यारे त्यां जे भोजन मा-गीए ते वचन मात्रमांज यह जाय. राजाना आग्रह्यी मंत्रीए आपवानुं कवुल कर्यु. पछी गुप्त रीते ते चारेने खाडामांथी काढी सारा मोटा कंडीआमां तेमने नाल्या. अने सारा वस्त्रथी तेने ढांकी आ यक्षोनुं स्वरूप कोईने वताववुं नहीं, एम कही रा-जाने अर्पण कर्या. राजा ते कंडीआने रथमां मुकी पोते आगळ पेदल चाली रस्ते पवित्र जळ छंटावतो दरवारमां लाव्यो. अंतःपुरनी स्त्रीओ पाछळ पाछळ चालती ते यसोना गुण गावा लागी. आवी रीते तेमने दरवारमां लावीने एक पवित्र स्थानके राख्या; अने सवारने माटे रसोई तैयार करवानी रसोईयाने ना पाडवामां आवी. मभातकाल थतां भोजन वसते पवित्रपणे तेमनी पूजा करी राजाए विक्रिप्ति, करी के, स्वामी, पनवान्न तथां दाळ भात आपो, अने जातजातना शाक अने भोज्य पदार्थ आपो. एटले ते चारे जणे "भवंतु" एम कहाँ, पण कांई थयुं नही. एटले राजाए कंडी-

आ उघाड्या. त्यां तो तेमां चार पिशाचना जेवा मनुष्यो जोवामां आव्या. दादी मुंड अने माथाना केश वध्या इता, डाचां मळी गया इता, हुधाथी कृश थइ गया इता अने नेत्र उंडा गया इता. राजाए तेओने ओळख्या, एटले ते हास्य मंत्रीओ कागडानी जेम उपहास्यने पात्र थया. राजाए इकीकत पुछी एटले तेमणे सर्व वृत्तां-त जणाव्यो. तेथी राजा आश्चर्य पामी मस्तक धुणाववा लाग्यो. अने शीलवतीनं शील, तेनी बुद्धिनो प्रकाश अने पुष्पमाळा ग्लानि न पामी तेनुं कारण राजाना जाणवामां आव्युं. आथी लोकमां शीळवतीनी मोटी प्रतिष्ठा थइ. पछी ते दंपित अनुक्रमे दीक्षा लइ पांचमे देवलोके गया अने अनुक्रमे मोक्षने पण प्राप्त थशे.

66 आ प्रमाणे निर्मल शीळने धारण करी ते दंपती चिरकाल चारित्रनी धुरानुं वहन करी पांचमा देवलोकमां गया अने त्यांथी चवी मनुष्य थह केवलकान पामीने मोक्षे जहा.



# व्याख्यान ९८ मुं.

शीलवतना महिमाथी छेदायला अंगो पण पाछा प्रगट थाय छे ते कहे छे.

छेदात्पुनः प्ररोहंति, ये साधारण शाखीनां । तद्रच्छीनानि चांगानि प्राहुर्यीति सुशीलतः ॥ १ ॥

"जेम अनंतकाय वनस्पतिने छेदवाथी तेपाछी फरीने उगे छे, तेम उत्तमशीलपी छेदाएला अंगो पण पाछा उत्पन्न थाय छे." ते उपर कुलावतीनो संबंध छे. ते आ प्रमाणे—

## कलावतीनी कथा.

शंखपूर नगरमां शृंख् नामे राजा इतो. ते एक वखते सभा भरीने वेढो इतो तेवामां दत्त नामे श्रेष्टी मुसाफरी करीने त्यां आव्यो. राजानी पासे भेट धरी आग- क बेटो. एटले राजाए देशांतरनुं स्वरूप पुछ्युं, तेणे देशांतरनुं स्वरूप कहींने एक चित्रपट बताव्युं. राजा ते जोईने आश्र्य पाम्यो. पछी पुछ्युं के, आकोनुं चित्र छे रे देचे कहुं के, स्वामी, विशाळपुरना स्वामी, विज्ञयसेन राजानी पुत्री कुटावतों नुं छे. ते बाळाए प्रतिज्ञा करी छे के, जे पुरुष मारा चार प्रश्नोनो उत्तर आपी निर्णिय करशे तेने हुं वरीश. ते सांभळी राजाए सरस्वती देवीनी आराधना करी अने तेमने प्रसन्न कर्या. शारदा प्रत्यक्ष थड़ने चोल्या के, हे वत्स, तारा करस्पर्श्यी काष्ट्रनी पुतळी पण तने पुछेछा प्रश्नोनो निर्णय करशे. पछी कुतार्थ थयेछो राजा विशाळपुर नगरे जड़ स्वयंवर मंडपमां चेटो. एटले कलावती राजकन्या जाणे लक्ष्मीदेवी होय तेम सखीओथी परवरेली त्यां आवी. पछी कन्यानी आज्ञार्थी सर्व राजाओना साम्यळतां प्रतिहारिए उंचे स्वरे कहुं के, "हे राजाओ, आप सर्वे आ चार प्रश्नोनो एतर आपो. देव कोण? गुरु कोण! तत्व शुं? अने सत्व शुं? आ चार प्रश्नोनो उत्तर आपो. देव कोण? गुरु कोण! तत्व शुं? अने सत्व शुं? आ चार प्रश्नोनो उत्तर कर्या वतावशे, ते आ कलावतीनी वरमाळाने योग्य थशे." पछी सर्वे राजाओए पोतपोतानी वुद्धि प्रमाणे उत्तर आप्यो पण कलावतीए ते मान्य कर्यो नहीं, एटले शंखराजाए मंडपना स्तंभ उपर रहेली एक पुतळीना मुखयी आ प्रमाणे उत्तर अपाव्यो.

वितरागः परो देवो, महात्रतधरो ग्रुरः । तत्वं जीवादयो ज्ञेया, सत्विमिद्रियनिग्रहः ॥

"ने वीतराग होय ते परम देव, जे महाव्रतथारी होय ते गुरु, जीव अजीवा दि तत्व अने इंद्रियोनो नियह ते सत्व." आवो उत्तर सांभळी वाजित्रोना ध्वनिसाये सत्य सत्य एवो उच्चार करी राजकुमारी कळावतीए तेमना कंडमां स्व-यंवरमाळा आरोपण करी. पछी तेनुं पाणियहण करीने शंखराजा कळावती साथे पोताने नगरे आव्यो.

अन्यदा कलावती सगर्भा थइ. ते खबर सांभळी तेना भाइए तेने तेडी लाव-चा माटे एक सेवकने मोकल्यो अने तेनी साथे वे बाजुवंध मोकलाव्या. ते माणस शंखराजाने मळ्या अगाज कलावतीनेज मळ्यो अने तेना भाईए आपेला वाजुवंध आप्या. कलावती ते वाजुवंध दाथे पेहेरी घणो हर्ष पामी अने ते सेवकने विदाय कर्यो. ते वाजुवंधनी शोभा जोई तेणे पोतानी सखीने कह्युं के, "जेणे आ वाजुवंध मने मोकलाव्या छे तेनी उपर मारो घणो स्तेद्द छे. ते दीर्घायु थाओ." कला-वतीटुं आ वाक्य राजाए गुप्त रही सांभळ्युं. तेथी राजाना मनमां अन्य पुरुष साथे तेनो स्तेद्द छे एवी शंका आवी, तेथी क्रोध मिद्दस थयो. तेणे विचार्युं के,

# अंतर्विषमया ह्येतत् बहिरेव मनोहरा। ग्रंजाफलसमाकारा, योषितः केन निर्मिता॥

"अहो, स्त्रीओ अंदर विषमय छे अने वहारथी मनीहर लागे छे. आवी स्-नोठीना फळ जेवी स्त्रीओ कोणे वनावी हुगे," आवी कुळवान उत्तम जणाती स्त्री पण कुलटा छे. परंतु शास्त्रमां कहां छे ते सत्य छे के, " जलमां जेम माछलाना पग-लां अने आकाशमां पक्षीओना पगलां जोवामां आवता नथी. तेम स्त्रीओना चारित्र-नो ब्रह्मा पण पार पामी शकता नथी." आ प्रमाणे चितवी राजा शंखे वे चंडाळीने आझा करी के, तमारे कलावतीने हुं वनमां मोकलावुं त्यां जहने तेनी वाजुवंधस-हित वंने मुना छेदीने मारी पासे लाववी. पछी राजानी आझाथी शब्यापालक कळावतीने रथमां वेसारी कोई वनमां मुकी आव्यो. एटले पेडी वे चंडाळणीओए आवी तेना वे हाथ छेदी नाल्या. अने राजानीं पासे लावी हाजर कर्या.

कलावतीए हाथनी पीडाथी तत्काल एक पुत्रने जन्म आप्यों. ते वलते तेने पित्रत्र करवाने हाथ न होवाथी पगे पगे समिप रहेली नदीने कांढे लइ गइ. तेवामां ते नदीमां पूर आव्युं. तेथी पुत्रनुं रक्षण करवुं मुश्केल थइ पड्युं. आ ममाणे सर्व तरफ्यी आपित आवेली जोई कलावती नवकार मंत्रनुं स्मरण करीने वोली के, "जो में तिकरण शुद्धिए शील पाळ्युं होय तो आ नदीनुं पूर तिगेरे आपित्रओं दूर थइ जाओं." तत्काळ गासन देवीए तेना भुज नवपछ्ठवित कथी अने नदीनुं पूर शांत करी आका-श्वमां रहीने पुष्पवृष्टि करी. तेवामां कोई तापस त्यां आवी कलावतीने पोताना आश्वममां लई गयो अने पुत्रीनी जेम तेनीं रक्षा करी तेनुं तथा पुत्रनुं लालन पाल्न करवा लाग्यो.

अहि राजाए पोताना मित्र श्रेष्ठीपुत्र दत्तने पुछयुं के, आजकाल पटराणीना पियरथी कोई आव्युं छे? श्रेष्ठी पुत्रे कहुं, स्वामी! आजेज एक माणस आवेल छे तेनी साथ पटराणीने माटे तेना भाई जयसेने वे वाजुवंध मोकलाव्या छे ते में पटराणीनेज पहोचाड्या छे. आ खबर सांभळी शंख राजा मूर्छा खाईने पृथ्वी उपर दळी पड्यो. तेना भित्रे चंदन विगेरेथी तेने सावधान कर्यो; एटले ते पोतानी मूर्खताने निंद्या लाग्यो. अरे! मारा जेवा अविचारीने धिक्कार छे. नीतिमां कहुं छे के:—

## अविमृश्यकृतं न्यस्तं, विश्वस्तं दत्त माहतं । उक्तं भुक्तं च तत्प्रायो, महाऽनुशयकृन्नृणां ॥

"जे विचार्या वगर करे, स्थापे, विश्वास करे, आपे, आदरे, वोले अने जमे ते प्रायः माणसने पश्चात्ताप करावनार थाय हो. " वळी कह्युं छे के, " जे कांई कार्य गुणवान् के गुणरहित करवामां आवे तेमां पंडित पुरुषे तेनुं परिणाम प्रयत्न पूर्वक मथम विचार रवुं कारण के जे कार्य अतिसाहसधी करवामां आवे छे तेनुं परिणाम एवी विपत्ति-मां आवे छे के जेनो विपाक हृदयने दहन करे तेओ शल्य रुप थइ पडे छे. "वळी राजा विचारे छे के—हवे हुं कोने मुख वतावीश ? तेथी चितामां आ देहने दग्ध करी नाखुं. आ प्रमाणे विचारे छे तेवामां कोई मुमुक्ष मुनि उपवनमां आवीने देशना आपे छे ते खबर सांभळी शंख राजा ते सांभळवा माटे त्यां गयो.

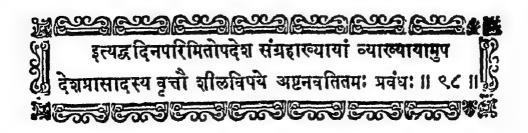
मुनिए देशनामां कहां के, "आ संसार रूप अरण्यमां जीव पूर्व कर्मने वश थई मृनत्वणानी जेम आंतिए भरेला थई मृगनी जेम वृथा भम्या करेले." आ देशनाने अते राजाए पोतानी पत्नीने मळवानो जपाय पुछ्यो. अने पोताने आवेला स्व-चनी वात कही मुनि वोल्याके, "तने आवेला स्वप्नने अनुसारे ते राणीए एक पुत्रने जन्म आप्यो हशे अने ते तने थोडा दिवसमां मलशे." आप्रमाणे सांभळी राजा मसन्न थईने नगरमां आव्यो. अने तत्काल तेनी शोध करवा जवानी दत्तश्रेष्ठीने आज्ञा करी.

दत्तश्रेष्टी फरतो फरतो पैला तापसना आश्रममां आन्यो. त्यां कलावती तेनां जोवामां आवी. श्रेष्टीए कह्यं, हे सुशीले ! अग्निमां प्रवेश करता तारा पांतने आवीने बचाव. तत्काळ कलावती कुळपतिनी रजा लड्ने पोताना नगरमां आवी. तेने जोड़ने राजा नीचुं मुख करीने रह्यो. अने पोतानां दृष्ट आचरणनी निदा करी मिथ्या दुष्कृत आप्युं. कलावती पण ते सवळुं पोतानाज करेला कर्मोंनुं फळ मानी सुखे रही.

एक वखते ते दंपतीए कोई ज्ञानीने पोताना पूर्वभवनो वृत्तांत पुछ्यो. मुनिए ज्ञानहिष्ट्यी जोईने कहेवानो आरंभ कर्यो—"पूर्वे श्रीमहाविदेह क्षेत्रने विषे नर्विन क्रम नामे राजा हतो. तेने सुलोचना नामे पुत्री हती. तेणीए क्रीडा कर-वाने माटे एक पोपट पांजरामां राख्यो हतो अने हमेशां मधुर मथुर फळ खबराबीने तेनुं पोषण करती हती. एक वखते ते सुलोचना पोपटने साथे लई सोमंधरप्रसुन ना विवने वांदवा माटे गई. वीतरागना विवना दर्शन थतांज शुकने जातिस्मरण ज्ञान थयुं. तेथी पूर्वभवे वत्ता विराधना करेली तेना जाणवामां आवी. तेने याद आन्युं के, में पूर्वभवे विहरमान एवा श्रीसीमंधरादि प्रभुनी स्तुति अने वर्णन श्रद्धार्थी कर्युं हतुं. ते आप्रमाणे—"मेरुथी पूर्वे महा विटेह क्षेत्रने विषे पुष्कळावती विजयमां पुंडरिकिणी नामे नगरी छे. त्यां कुंथुनाथ अने अरनाथना आंतरामां श्री-सीमंधरस्त्रामीनो जन्म थयो. श्रीमुनिसुव्रवस्वामी अने निमनाथना आंतरामां राज्य

छोडीने दीक्षा लीघी. अनागत चोवीशीना खदय अने पेढाळ जिनने आंतरे ते मोस पामशे. विहरमान एवा विशे तीर्थिकरोने दरेकने सो कोटी साधुओ अने दशलाल केवलज्ञानीनो परिवार छे. सर्व संख्याए वे कोटी केवलज्ञानी वे हजार कोटी साधुओं थाय छे. तेओने हुं अहर्निश नमुं छुं. " (तेमना श्रावक श्राविकानी संख्या तो सांभळी नथी.) इत्यादि जिनगुणना पठन पाठनमां हुं तत्पर इतो. पण मुनिनी कियामां शिथिल इतो तेथी चारित्रनी आराधना करी शक्यो नहीं. मांते ते पापनी आलोचना कर्या वगर काळ करवाथी हुं पोपट थयो छुं. हुं मारी मनुष्य जनम अने रत्नत्रय फोगटमां हारी गयो छुं. हवेथीं हुं हंमेशा ए प्रमुने नमीने पछी भोजन करीश-अावो तेणे अभियह धारण कर्यो-सुलोचना ते पोपटने पांजरास-हित लईने घेर आवी. वीजे दिवसे भोजन समये ते पक्षी राजकुमारीना कर-मांथी उडीने सत्वर श्रीतीर्थेकरने नमवा चाल्यो गयो. ते पक्षीना वियोगर्थी सुलोचना वारंवार विलाप करवा लागी. ते खवर जाणीने राजाए तेने पकडी लाववा सेवकोने आज्ञा करी; एटले पक्षीने पकडनारा पुरुषोए कोई वृक्ष ऊपर रहेला ते पोपटने गुप्तरीते पकडी लीघो. अने राजकुमारीने सोंप्यो. सुलोचनाए फरीवार उडीजाय नहीं तेवुं धारीने तेनी वंने पांखों छेदी नाखी. एथी ए पक्षी समाधिथी मृत्युपामीने सौधर्म देवलोकमां देवता थयो. अने पूर्वना प्रेमधी ते राजकुमारी पण तेनी देवांगना थई. त्यांथी चवी ते कीरपक्षी शंखराजा थयो अने सुलोचना राजकन्या ते आ कलावती थयेली छे."

आ प्रमाणे पोतानो पूर्वभव सांभळी जेमने जातिस्मरण थयुं छै, एवा ते दंपतीए कर्मना फळनो निश्चय करी घेर जई राज्यऊपर पुत्रने वेसारी दीक्षा ग्रहण करी. सुशीलपणे घणा काळ सुधी निरतिचार चारित्र पाळी तेओ देवलोक गया. ते धर्मशील दंपती त्यांथी चवी कुकर्मना लेशमात्रने क्षीण करी अनुक्रमे मोक्षने प्राप्त थशे.



व्याख्यान ९९ मुं.

हवे तत्वने जाणनारा दंपती संकटने विषे पण पोतातं ब्रह्मबत छोडता नथी ते विषे कहे छे. कुत्रचिद्दपतीयोगः स्थाच्छीलबततत्परः । तेन सर्वसुखावाप्तिः प्राप्ते दुःखेऽपि जातुचित् ॥ १ ॥ ठयाख्या.

"शीलव्रत पालवामां तत्पर एवा दंपतीनो पण कोई ठेकाणे योग थाय छे. तेवा दंपतीने पूर्व कर्मना उदयथी कदि दुःख प्राप्त थाय तोपण प्रांते सर्व सुखनी प्राप्ति थाय छे." ते उपर चंदनमलयागिरिनो प्रवंध छे. ते आ प्रमाणे—

चंदन मलयागिरिनी कथा.

कुसुमपुर नामना नगरमां चंदन नामे राजा राज्य करतो इतो. तेने मलया गिरि नामे शीलवती पत्नी इती. तेमने सायर अने नीर नामे वे पुत्रो इता. एक वलते राजा वासगृहमां सुतो हतो; तेवामां कुलदेवीए आवीने कह्युं के, हे राजा, तारी माठी दशा थशे; माटे सत्वर राज्य छोडीने वीजे चाल्यो जा. कारण के, "मनु-ष्यने सुख के हु:ख जे प्राप्त थवानुं होय छे ते अवस्य प्राप्त थाय छे. देव पण तेनुं इ-छंघन करवाने समर्थ नथी. " आ प्रमाणे सांभळी राजाए चितव्युं के, " मित्रने के शत्रुने आपत्ति तो अवस्य थवानी, तेथी जे तेनी सामे चाले ते सुभट अने जे नाक्षी जाय ते हीन सत्व कहेवाय." आवुं विचारी वे पुत्र अने स्त्रीने लड़ राजा रात्रे चाली नीकळ्यो. फरतो फरतो अनुक्रमे कुशस्थळ नगरे आव्यो. त्यां राजा चंदन देवनो पूजारी थयो अने राणी मलयागिरि वनमांथी काष्ट्र लाबी नगरमां वेचवा लागी. एक बेंसते काष्ट वेचवा गयेली मलयागिरि कोई सार्थवाहनी दृष्टिए पद्धी. सार्थवाह तेना रूप अने स्वरयी मोह पामी गयो. तेथी ते तेना इंधणा लईने दररोज तेनुं अधिक मूल्य आपवा छाग्यो. एवी रीते तेणे तेना मनमां विश्वास वेसारी दीधो. एक वखते प्रया-ण करबुं हर्तुं त्यारे तेने मूल्य आपवाना मिपथी आगळ करी प्रपंचथी छोभावीने दूर लइ गयो. पछी वलात्कारे रथमां वेसारी दुई मार्गे चाल्यो. मलयागिरि पति वियो-गथी निश्वास नाखवा लागी. त्यारे सार्थवाहे कहुं के, "हे सुश्रु! मारी साथे सुख भोगवो. अने मारा कामसंतापने शांत करो " मलयागिरि वोली---

"अग्नि मध्य जलवो भलो; भलोज विषको पान। शील खंडवो नहिं भलो, नहि कुछ शील समान" ?

माटे हे वीर, तुं मने छोडी दे, शा माटे तुं मारो अंत लेखे? किंद कुतांत कोपे तोपण हुं आ भवमां शील खंडन करीश नहीं. "

अहं राजा चंदने वखतसर न आववाथी मलयागिरिने चारे तरफ जोधी पण ते मली नहीं. तेथी ते वे पुत्रनी साथे विलाप करवा लाग्यो.—" ज्यारे देव प्रतिक्ळ थाय छे त्यारे अपृत पण झेर थाय छे, रज्जु सर्प थाय छे अने उंदरनुं टर पाताळहूप थाय छे." पछी राजा तेनी जोधने माटे ते नगर छोडी पुत्रसिहत गामे गाम फरवा लाग्यो. मार्गे एक नदी आवीं. तेने उत्तरवा माटे एक पुत्रने आ कांठे वृक्ष साथे वांधी राखी एक पुत्रने स्कंध उपर चडावी नदी उत्तरी गयों. पछी वीजा पुत्रं ने लेवा आववा माटे नदीमां पेटो. अंतराले आवतां नदीमां प्रवल पूर आव्युं. एटले ते तणायों. ते समये स्त्री अने पुत्रना विरहथी पीडित थड़ने ते वोल्यों के—

"किहां चंदन मलयागिरि, किहां सायर किहां नोरः, जो जो पडे विपत्तडी, सो सो सहे शरीर" १

आम बोलतो आमतेम फांफां मारवा लाग्यो, तेवामां एक काष्ट्रनो खंड तेना हाथम-आव्यो, तेने आधारे तरी कांठे नीकली ते विचार करवा लाग्यो के, अहो, में राज्य भोगव्युं ते पण मने देवयोगे विपाकने अर्थे थयुं. "देव दुष्कृति प्राणीओने दुः खने मांट जीवित आपे छे, जेम कीरमजनो रंग वनाववा माटे पकडेला मनुष्योन्नं पोपण ते दुः ख उपजाववा माटेज होय छे." हवे मारे जीविने शुंकरबुं, वळी तेणे फरीने विचार्युं के, मृत्यु पामतां पण जीवने कर्म छोडतां नथी. कह्युं छे क, "मृत्यु पामतां पण पोतानुं करेलुं पाप तो अवस्य भवांतरे पण भोगवयुं पडे छे, त्यारे ते अहिज थोगवयुं सारुं छे." आयुं विचारी ते मृत्यु न पामतां आनंदपुर नामना नगरमां आव्यो.

आनंदपुरमां कोईना घरमां जईने चंदने विश्राम कर्यो, त्या कोई एक स्त्री तेने जोईने मोह पामी. ते तेनी सेवा चाकरी करीने वोली के,

दोहा—''तुम परदेशी लोक हो, हओ न कोसो साथ। जओ रहो तब जन्म लगे, हमतुम एकउ साथ '

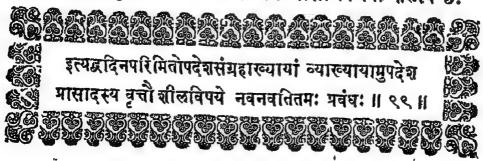
आवां वचन सांभळी पोताना शीलव्रतनो भंग थशे एवी वीकथी तेणे टुंकामांज तेने उत्तर आप्यो. के 'हे सुंदरी, जेनुं चित्त स्थीर नथी एवा दुःखी नरनी साथे प्रीति करवाथी तमने शो लाभ थवानो छे." आवो उत्तर आपी ते त्यांथी अन्यत्र जवा चाल्यो. मार्गमां श्रीपुर नगरनी नजिक आवेला कोई वृक्ष नीचे जईने ते वेटो क्षण-वार वेसीन ते निद्रादश थई गयो. तेवामां ते नगरना राजा अपुत्र मृत्यु पामवाथी मंत्रीओए पंच दिन्य कर्यी. ते पांच दिन्य आ राजानी उपह थया तथी तेने राज्य

मळ्युं. चंदन राजा न्यायथी राज्य करवा लाग्यो. एक वखते प्रधानोए तेना चरणमां

पडी स्त्री परणवा कहुं तथापि तेणे कोईनी साथे पाणियहण कर्युं नही.

अहि सायर अने नीर जे नदीने वे काढे वे वृक्ष पासे रह्या हता. तेमने को-ई सार्थवाहे जोया. तेथी पोताना पुत्रनी जेम तेमनी सार संभाळ करतो ते तेमने पो-ताना नगरे छई गयो अनुक्रमे सायर अने नीर यौवन वयने प्राप्त थया. त्यारे तेओ सार्थ-वाइनी आज्ञा लई श्रीपुर नगरे जईने कोटवालना तावामां नोकर रह्या. ए नगरमां तेमनो पिता चंदन राज्य करे छे. तेवामां पेलो सार्थवाह के जे मलयागिरि उपर मोह पामीने तेने उपाडी गयो इतो ते फरतो फरतो मलयागिरिने लईने श्रीनरमां आन्यो. ते केटलीएक भेटो लई चंदन राजाने मलवा गयो. भेट आगळ धरी एटले राजा खुशी थईने बोल्यो. सार्थवाह! तमारे जे जोईए ते मागी ल्यो. सार्थवाहे रात्रे पोताना सार्थनी अने सामाननी रक्षा करवाने माटे पेहेरेगीरोनी मागणी करी. राजाए कोट-वालने आज्ञा करी एटले तेणे पेला व भाई सायर अने नीरने त्यां रक्षा करवाने मोकल्या. ज्यारे रात्रि पढी अने सर्व पहेरेगीरो भेगा यई पोतपोतानो वृत्तांत कहेवा लाग्या. ते वखते सायर अने नीरे पण पातानुं सर्व वृत्तांत कही संभळाव्युं. ते वृत्तांत र्तवुमां वेंढेली मलयागिरीना सांभळवामां आन्युं, तेथी तत्काल तेमने पोताना पुत्र जाणी ते बहार आवी अने हर्षथी भेटी पडी. पुत्रोए पण पोतानी माताने नमी तेर्नु वृत्तांत सांभळ्युं. अने कहुं के माता! प्रभातमां सर्व सारुं थशे, चिंता करशो नहि. मातःकाल थयो एटले ते माता अने पुत्रो राजानी पासे गया अने पोतानी सर्व हर्की-कृत कही. राजा चंदने तेमने पोताना परिवार पणे ओळख्या. एटले पेला अन्याय करनारा सार्थवाहने शिक्षा कर्राने नगर वहार काढी मूक्यो. पछी वार वर्षनो वियो-ग दूर करी बंने राज्यना सुखने अनुभव तो चंदन राजा आनंदथी रहेवा लाग्यो. छेवटे ते दंपती शीलनुं प्रतिपालन करीने स्वर्गे गया.

" मनुष्य पूर्व पुण्यना योगयीज समान धर्मवाळुं दांपत्य पार्मे छे. तेओ दुःखमां पण जो पोतानुं शाल मुकता नथी तो तेमनो यग आखा विश्वमां फेलाय छे. "



## व्याख्यान १०० मुं.

' एक रूपवंत स्त्रीने घणा पुरुषो इच्छे छे ' एम मानी जे स्त्रीनो त्याग करे छे तेज ज्ञानी छे ते विषे कहे छे.

श्लोक-मिथो हिंसां समीहंते एक स्त्री स्पृह्या नराः। ततस्तां परिमुंचंति त एव विबुधेश्वराः॥ १॥

#### व्याख्या

" पुरुषो एक स्त्रीने माटे परस्परने मारी नाखवानी चाहना करे छे, आई घा-रीने जेओ तेवी स्त्री जातिनोज त्याग करे छे तेज श्रेष्ट ज्ञानी कहेवाय छे." ते विषे इलायची कुमारनो प्रवंध छे ते आ प्रमाणे—

## इलायची कुमारनी कथा.

वसंतपुर नगरमां अग्निश्मि नामे ब्राह्मण इतो. तेने प्रीतिमती नामे एक स्त्री इती. ए दंपतीए धर्म वाणी सांभळीने योग्य अवसरे जिनोक्त बतने (वारित्रने) अंगीकार कर्युं. तेओ विविध जातिना थयेला मुनिओने जाणी शौचाचारमां तत्पर रही अंतःकरणमां जाति मद करवा लाग्या. मांते ए दुष्कृतनी आलोचना कर्या वगर अनशनवडे मृत्यु पामीने तेओ वैमानिक देवता थया.

विष एलावर्धन नगरमां इभ्य नामे श्रेष्ठी हतो. तेने धारणी नामे स्नि हती. तेना उदरमां अग्निश्चर्मानों जीन पुत्रपणे उत्पन्न थयो. धारणीए ग्रुभ मुहूर्ते पुत्रने जन्म आप्यो, इलादेनीना नरदानथी ते पुत्र थयों हतो तेथी ते इलापुत्रना नामधी प्रख्यात थयो. अनुक्रमे मातुापिताए भणाव्यो अने यौनन वयने प्राप्त थयो. तेना पूर्व भवनी स्त्री स्वर्गथी चनीने जाति मद करेल होवाथी नटकुलमां उत्पन्न थई. ते विलास हास्य- युक्त सारी नर्तकी थई. एक वखते नृत्य करती मृगाक्षी इलापुत्रना जोनामां आवीं. तेणीना सुंदर नेत्र, मुल, स्तन अने हाथ, पग विगरे जोई हाथिणीना दर्शनथी हाथी नी जेम ते दुमदानस्थाने प्राप्त थयो. "कामी पुरुष कांईपण कृत्याकृत्यने जाणतो नथी." ते विषे कहां छे के, "ल्यां सुधी मृगाक्षीना लोचनना कटाक्ष तेना पर पड्या नथी त्यां सुधीज विद्वाननीं बुद्धि अने तेनो निर्मल विवेक रुपी दीपक स्फुरे छे." कामरुप सर्पे उसेला इलापुत्रे जांगुली विद्यानी जेम ते नटीनुंज स्मरण करता सता एवी प्रतिज्ञा करी के, " जो आ विकसित कमल जेना लोचनवाली स्नी साथे मारो विवाह न थाय तो प्राण उपर पण रोष धारण करीने हुं अग्निमां प्रवेश करीश."

आवा माटा संकल्पवडे व्ययचित्तवाळो थयो सतो ते घर आव्यो तेने चपळ चित्त-वाळो जोइ मातापिताए आयहथी पुछयुं एटले तेणे पोताना हृदयनी वात करी. संभळावी. ते सांभळो मातापिता जाणे वज्रथी हणाया होय तेवा थइने बोल्या के, पुत्र ! तुं इंस जेवो थइ कागडाने योग्य कर्मनी इच्छा करतां केम लाजतो नथीं ? ते वोल्यो—" मारुं मानस ( मन अथवा सरोवर ) ए स्त्री विना आनंद पामतु नथी. एटलामां जाणी लेजो. ते विषे बहु कहेवाथी सर्यु." आ प्रमाणेना तेना वचन सांभळी ते पुत्रने सुधारवानुं अश्ववय धारी '' श्रेष्टी मौन धरीने रह्यो.

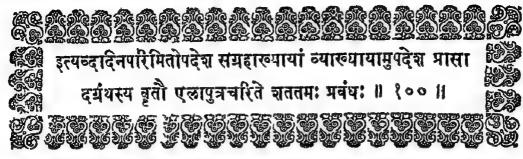
एलाकुमारे तो लज्जा छोडी दइने पोतानी मेळेज नट लोकोने घणुं द्रव्य आपवावडे ते नर्त्तकीनी मागणी करी. नट बोल्यो के—आ कन्या तो अमारो अक्षय भंडार छे तेने शी रीते आपी शकाय ? ते छतां जो तमारी इच्छा एनी उपरज होय तो नट थइने ज्यां जमे जइए त्यां त्यां अमारी साथे चालो. एलापुत्र लज्जा छोडी ते नट लोकोनी साथे चाली नीकल्यो. थोडा दिवसमां तेमनी पासेथी नृत्य पण शीखी गयो. पछी ते नट बोल्यो के, "हे पुरुष ! हवे नृत्य करीने धन उपार्जन करी आपो जेथी अमे तमारो विवाह करीए. एला कुमार ते बात कवुल करीने तेओनी साथे कमावा नीकल्यो.

चट फरता फरता वेणातटे पहोंच्या अने ते नगरना राजानी मासे नाटक करवा गया. त्यां तेमणे आकाश सुधी उंचा एक वांस खोड़्यो. तेनी उपर मोटुं एक काष्ट मुन्युं. तेमां वे मजबूत खीला रोप्या. पछी एलापुत्र पगमां पादुका पेहेरीने ते वांसपर चड़्यों अने एक हाथमां तीष्ट्रण खर्ज अने बीजा हाथमां त्रिशूल लड़ ते बांस उपर रमवा लाग्यो. तेनुं अद्भुत नृत्य जोइ सर्व लोको बहु खुशी थया पण राजानी पेहेलां कोइए दान आप्युं नहीं. राजानी दृष्टि पेली नटी उपर पड़ी. तथी ते तेना जमर रागथी मोह पामी गयो अने चित्वन करवा लाग्यों के, जो आ नट वांसना अम्पनाग उपरथी पढ़े तो हुं नटीने स्वाधीन करुं.

आवी बुद्धियी नाटक करीने नी वे आवेला इलापुत्रने तेणे कहां के, ' अरे कट, ! तुं फरीथी खेल कर्य के जेथी हुं सारी रीते जोऊं. तेणे विशेष धन मल-चाना लोभधी फरीवार खेल करी वताव्यो. तथापि शहपणाथी राजाए कांई आप्युं नहीं. एवी रीते एलापुत्रने वांसपरथी पाडवानी इच्छाए राजाए त्रीजी वार पण नृत्य कराव्युं. त्रीजीवार नाटक करीने उत्तर्या पछी वळी राजा ए कहुं, इवे चोथी वखत नृत्य कर्य, हुं. तारा दारिद्रने दूर करीश. तेणे लोभथी तेम क्युं. बीजा लोको राजानो आभिपाय जाणीने तेनी निंदा करवा लाग्या. एलापुत्रे पण विचार्युं के, जरुर राजानुं मन आ नटीमां कामार्च थयुं छे कारण के, आकार अने मनोभावथी ते जणाई आवेछे. माटे अहो, आ कामावस्थाने, मने अने राजाने धिक्कार छे. अरे, में मारा उत्तम कुछने मछीन कर्युं. आ प्रमाण तेना मनमां पूर्ण वैराग्य उत्पन्न थयो. तेवामां वांस ऊपर रहेछा एछापुत्रे कोई धना ह्याने घर इंद्रियोने जितनारा मुनिने एपणापूर्वक गोचरी फग्तां सुंदर स्त्रीथी प्रतिछाभित थता अने वंदाता जोया. ते जाई एछापुत्रे चितन्धुं के, अहो, जी-वाजीवादि नवतत्वने जाणनारा, स्त्रीसंभोगथी पराङ्मुख रहेनारा, पोताना देहनीं पण दरकार नहीं राखनारा अने केवछ मोक्षाभिछापी एवा आ मुनिओने धन्य छे, के जेओने आवी सुंदर शरीरवाळी, मारी नटीथी पण असंख्याधिक रूपवाळी स्त्री मोदक विगेरे पदार्थी आपवाने विनंति करे छे, तथापि ते मुनि, कागडाना मैथुननी जेम तेनी सामुं पण जोता नथी, अने हुं केवो रागांघ छुं, के जे आ नीच कन्या ऊपर आसक्त थइ पडचो छुं. अहो! मारा आवा छत्यने धिक्कार छे, तेमज आ संसारना स्वरुपने पण धिक्कार छे—आ प्रमाणे विषयमां तदन विरक्त थई शुभ ध्यान घ्यातां एछापुत्रने सामायिक चारित्रथी मांडीने यथाख्यात चारित्र पर्यंत फरसी गया. तेना प्रभाववंड तेना घाटा घातीकर्मनो क्षय थवाथी छोकाछोकने प्रकाश करनाहं केवछ झान, जाणे संकेत करी राखेछ होय नेम तेने उत्पन्न थयुं.

पछी वांस ऊपरथी नीचे आवतां इलापुन केवळींने देवताओए साधुनो बप अर्पण कर्यो. ते धारण करीने एलापुत्रे धर्मदेशना आपी. ते सांभळी राजा प्रमुख सभ्योए तेमने नटी उपर थयेला रागतुं कारण पुछ्युं. कैवलीए पोताना पूर्वभवनी वात्ती कही संभळावी. तेमां जणाव्युं के. पूर्वे ब्राह्मणना भवमां में स्नीसार्थे दक्षि लीधी हती. पण अमे वंनेए जातिमद कर्यो हतो ते पापनी आलोचना कर्या दगर मृत्यु पामीने हुं वणिक कुळमां जन्म्या छतां नट थयो अने मारी पूर्वभवनी स्त्री जातिमदथी आ नटी थयेली छे. पूर्वभवमां मारो कामराग तेनी उपर गाढ इतो तेथी आ भवमां पण मने तेनापर अतिराग थयो कारण के प्राणीओने वैर अने स्नेह भवांतरगामी थायछे. आ प्रमाणे पोतानो पूर्वभव सांभळी ते नटीने जाति-स्मरण ज्ञान उत्पन्न पयुं. तेणे विचार्यु के, मारा रूपने धिक्कार छे के जेने लिधे आवा धनाढ्यना पुत्रो अने राजा प्रमुख घणा लोको पण दुर्ब्यसनमां आवी पडे छे. इवे मारे विषयसुखर्था संर्यु. आवी भावना करतां ते नटींने केवल ज्ञान उत्पन थयुं. ते वखते नाटक जोवा वेठेली राजानी राणीए चिंतव्युं के, अहो ! आ राजा थइने पण महाअधम कुलमां जत्पन थयेली नटी ऊपर मोह पाम्या. माटे एवा विपय विलासने धिक्कार छे. आवी भावना भावतां तेने पण केवलझान उत्पन्न थयुं. राजा ए पण चितव्युं के, पोताना उत्तम कुछने छोडी आ एलापुत्र नट जातिनी स्त्रीपर मोह पामी घननी इच्छाथी आ मारी पासे रमवा आव्यो अने में

पण तेवी नीच जातिनी स्नीनी इच्छा करी. माटे कामदेवने धिक्कार छे. आवी भावना भावतां ते पण केवळी थया. आप्रमाणे महाज्ञानी एलापुत्रे घणा जीवाने तार्या. जे एलापुत्र उत्तम वंशमां उत्पन्न थयेला होवाथी शुभवंश (वांस) नो आश्रय करतां कुवंश (नढाराकुल) ना आचारक्षप संसार नृत्यने छोडी दई मुनिनुं आचरण जोई छेवटे चिदात्मक्षपे तद्भुप थई गया.



# व्याख्यान १०१ सुं.

ए शीलब्रतनो श्रीजिनेंद्र भगवंते पण आदर करेलो छे तेथी ते आचरवा योग्य छे ते विषे कहे छे. येषांमुक्ति र्धुवं भावि, शीलं चरंति तेऽपि हि। तदा संसारि जोवानां, कार्योऽजसं तदादरः ॥ १॥

#### व्याख्या

" जे जिनेंद्रोनी अवश्य तेज भवे मुक्ति थवानी छे, ते जिनेंद्रो पण शीलने आचरे छे, माटे संसारी जीवोए तो शील पालवामां इंमेशा आदर करवो. १" आ विपे श्रीमिक्किप्रभुनो संबंध छे ते आ प्रमाणे—

### श्री मिछनाथनी कथा

अपर विदेह क्षत्रने विषे सिललावती विजयमां वीतशोका नगरीने विषे महाबल नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने विश्रमण, चंद्र, धरण, पूरण, वसु अने अचल नामे छ मित्रो हता. अन्यदा ते वालिमत्रोनी साथे तेणे दीक्षा लीधी, अने तेमनी साथे मासक्षपण विगेरे तपस्या करवा लाग्यो. परंतु तेमनाथी तपमां वधवा माटे रोगनुं वानुं काढी तपने अंते पण ते पारणुं करतो नही. अने तपो वृद्धि करतो हतो. आवी रीते मायाथी अधिक तप करवावडे पोताना मित्र सां-धुनी वंचना करवाथी तेणे स्तिवेद वांध्यो. अने विश्व स्थानकनी आराधना निमित्ते खग तप करवाथी तीर्थंकर नाम कर्म पण संपादन कर्यु-अंते ते छ मित्रो साथे वारित्र पाळी मृत्युपामीने जयंत विमानमां देवता थया.

महावलनो जीव त्यांथी चवीने विदेह देशनी भिथिला नगरीमां कुंभराजानी स्त्री प्रभावतीनी कुक्षिमां पुत्रीरुपे उत्पन्न थया. जन्म्यापछी माता पिताए मिल्लि एवं नाम पाड्युं. वीजा छ मित्रो जुटा जुदा देशमां उत्पन्न थया. मिल्लि कुमारी कांईक उणा सो वर्षना थया, एटले अवधिशानथी पोताना पूर्व मित्रोनी स्थिती जाणी तेमने प्रतिवोध करवाने माटे जेनी फरता छ गर्भगृह (अंदर देखी शकाय तेवा ओरडा) छे एवा एक घरमां एक पोतानी सुवर्णनी पोली प्रतिमा करावीने मुकी. ते प्रतिमाना मस्तक उपर छिद्र कराव्युं इतुं. अने तेने कमळवडे ढांकेलुं इतुं. पछी प्रतिदिन एक एक यास मिल्ले कुंवरी तेमां नाखवा लाग्या.

अचळ नामना मित्रनो जीव साकेत नगरने विषे प्रतिबुद्धि नामे राजा थयो हतो. एक वखते ते राजा प्रिया साथे नागदेवनी यात्राने अर्थे गयो. त्यां अतिमोटी पुष्प दामना आभूपणथी भूषित पोतानी भियाने जोई विस्मय पार्भीने राजाए मंत्री ने कहुं के, हे मंत्री, तमे आवुं पुष्प आभूषण कोई ठेकाणे जोयुं छे? मंत्री वोल्यो—हे देव! तेमां शो आग्रह! त्रण जगतमां कुंभ राजानी पुत्री मिल्ल कुमारीनुं स्वरूप घणुं आश्र्यकारी छे. तेना जेवी पुष्पाभरणनी शोभा कांईपण जोवामां आवती नथी. मंत्रीना आवां वचन सांभळी राजा प्रतिबुद्धिने तेनापर प्रेम उत्पन्न थयो, नेथी मिल्ल कुमारीनी मागणी करवा माटे एक दूतने मोकल्यो.

विजा मित्र धरणनो जीव चंपा नगरीमां चंद्रछाय नामे राजा थयो हतो.
एक वस्तते अहिन्नक नामे कोई वाहाणवटी श्रावके आवी राजाने दिन्य कुंडल भेट
कयी. राजाए पुछ्युं पृथ्वीपर फरतां कांई आश्रयं तारा जोवामां आन्युं! ते बोल्यो—
स्वामी! हुं समुद्रमां वाहाण छईने जतो हतो त्यां कोई देवताए आवी मारा वाहाणने डोलावीने कहुं के, तुं जैन धर्म छोडीने मारो आश्रय कर्य तो हुं तारा वाहाणने
तारुं. बीजा पण घणा उपसर्ग कर्या तथापि हुं निश्चल रह्यो. तथी तेणे प्रसन्न थई मने
चार कुंडल आप्या. तेमांथी एक कुंडलनी जोडी में कुंभ राजाने भेट करी. तेणे
पोतानी पुत्री मिल्ल कुमारीना हाथमां ते आपी. ह राजा ! ए कन्या विश्वने आश्रयं
करनारी मारा जोवामां आवी छे. ते सांभळी राजा चंद्रछाये तेनी मागणीने माटे
दूत मोकल्यो.

त्रीजा मित्र पूरणनो जीव श्रावस्ती नगरीमां रुक्मी नामे राजा थयो इतो. एक समये तेणेपोतानी पुत्रीने सुवर्ण मंडपमां स्नान कराववानो मोटो महोत्सव कर्यो. ते समये कोई पुरुष घणा देशमां मुसाफरी करीने त्यां आव्यो. तेने राजाए पुछ्युं के, तें कोई ढेकाणे आवो श्रेष्ठ महोत्सव जोयो छे ? तेणे कहुं हे देव ! विदेह राजानी पुत्री मि कुमारीना जन्मोत्सव आगळ लाखमेअंशे पण आ रमणीय नथी. ते सांभळी राजाए तत्काळ तेने माटे दूत मोकल्यो.

चोथा मित्र वसुनो जीव बाराणसी नगरीमां शुंख नामे राजा थयो इतो. अहीं अईनके आपेला मिल्ल कुमारीना देवार्षित कुंडल भांगी गया, तेने समा करवा माटे सुवर्णकारोने बोलावीने आप्या. पण सोनी कोको ते सुधारी शक्या नही, तेथी राजाए तेओने नगरनी वहार काढी मुक्या. तेओ शंख राजानी सभामां आव्या. शंख राजाए तेमने पुछ्युं, एटले तेओए पोताने मिथिला नगरी छोडवी पड्यानुं वृत्तांत सविस्तर कही संभळाव्युं. तथी आश्चर्य पामी राजाए तेमने पुछयुं के, ते माछि कुमा री केवी छे ? एटले तेओए तेनुं अलौकिक स्वरूप वर्णवी वताव्युं. ते सांभळी शंख राजाए तेने माटे दूतने मोकल्यो.

पांचमा मित्र वैश्रवणना जीव हस्तिनापुरमां अदीनशत्रु नामे राजा थयो इतो. अही मिल्ल कुमारीने मुल्लिदिन नामे एक अनुज वधुं इतो. ते चित्रकारोनी पासे पोतानो खानगी सभा मंडप चित्रावतो इतो. त्यां कोई चतुर चित्रकार के जेने देवतानुं वरदान इतुं, तेणे पडदामांथी मिछकुमारीनो अंगुठो जोईने तेमनुं बधुं रूप यथार्थ चित्रमां आलेखी लीघुं. तेवामां मछदिन कुमार पोतानी स्त्रीनी साथे ते चित्रशाळामां आव्यो. त्यां पोतानी मोटी वेन मिछ कुमारीने मत्यक्ष जोई लज्जाथी पाछो वळ्यो. त्यारे तेनी धात्रीए कहुं के, तेतो चित्र छे. तत्काल पेला चित्र करना-रने पकडीने तेनो वध करवानी आज्ञा करी. वीजा चित्रकारीए तेनुं कारण समजा-वीने तेने मांड मांड छोडाव्यो. तथापि कुमारे ते चित्रकारनी आंगळी छेदीने देश वहार काढी मुक्यो. ते त्यांथी नीकळीने इस्तिनापुरमां रहेला अदिनशत्रु राजाने मल्यो. राजाए तेन मिथिलामांथी नीकळवानुं कारण पुछ्युं. त्यारे तेणे पोतानो वृत्तां-त कहेतां मिळ्कुमारीना अद्भूत रूपनुं पण वर्णन करी वताव्युं; तेथी मोह पामी रा-जाए तेने माटे दूनने मोकल्यो.

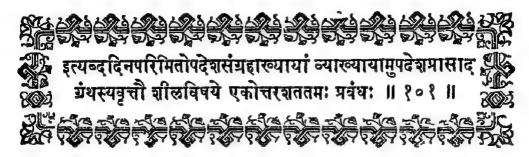
छढा भित्र अभिचंद्रनो जीव कांपिल्य नगरमां अजितशत्रु नामे राजा थयो हतो. अहीं एकदा मिळकुमारीए कोई तापसीने वादमां इरावी तेथी ते कोप करीने कांपि-ल्य नगरमां अजितशत्रु राजा पासे आवी अने मिछकुमारीना अनुपम रूपनुं तेनी पासे वर्णन कर्युं. जे सांभळी राजाए तेने माटे दूत मोकल्यो.

आ प्रमाणे ते छए दूतोए एक साथे आवीने कुंभ राजा पासे मिछिकुमारीनी मागणी करी. राजाए ते नहीं स्वीकारतां छए दृतीने अपद्वारथी काढी मुक्या दृतीना अपमानयुक्त वचन सांभळी ते छए राजाओंने कोप उत्पन्न थयो. तेथी सर्वेण् मिथि-ला उपर चडाइ करी. कुंभ राजाने तेमने जितवानो उपाय सुज्यो नही. तेथी चित-मां आकुल व्याकुल थवा लाग्यो. पिताने तेवी स्थितिमां जोई महिकुमारीए आश्वा मन आपीने कहुं के, हे पिता! तमे दृत मोक छीने ते छए राजाओने कहेवरात्रों के, तमने हुं कन्या आपीन, एटले विश्वास आपीने तेओ जुदा जुदा अहीं आवशे, ए-टले हुं तेने समजावीश. कुंभराजाए ते प्रमाणे कहेवराववा साथे एवी गोठवण करी के जेथी तेमने प्रथम माछि कुमारीए पेला गर्भगृहमां जुटा जुदा द्वारथी प्रवेश करा-व्यो, तेमां पूर्वे युक्तिथी बनावेली मल्लिकुमारीनी प्रतिमाने जोई तेओ ' आ मल्लिकु-मारीज छे ' एम मानता तेना रूपने विषे मोह पामी निर्निमेपपणे ते प्रतिमाने जोई इहा. एटलामां मल्लिकुमारीए आवीने तालुस्थाने राखिला ढांकणाने दूर कर्युं एटले नेमांथी प्रत्यु पामेला सर्पादिकना तथा मनुष्यना गंथयी पण महा उत्कर दुर्गेव उछ-ळ्यो. तेथी ते छए राजाओ पोतपोतानी नामिका ढांकवा लाग्या. त्यारे मिछकुमा-रीए कहूं के, अरे राजाओं! तमे आम पराङ्गुख केम थया? तेओ बोल्या के, अमे आ दुर्गिथथी पराभव पामी गया छीए. मिल्लिमारी बोल्या. अरे, देवानु मियो! इंमेशा उत्तम आहारनो एकेक कोळीओ क्षेपन करवाथी आ मुवर्णनी पुतळीमां पण तेनो पुरुगळ परिणाम आवा दुर्गीय रूप थयो. तो आ औदारिक देह के जे मांस रुधि-रादि सात धातुओथी वनेलों छे तेमां दररोज नखातां अन्नना ३२ कवळथी केवो पुद्गळ परिणाम थाय ते विचारो. हे राजाओ! तमे मारा पर माह पामी छो पण वि चारों के आ स्त्री देहमां सारभूत शुं छे ? वळी हे राजाओ ! तमे पूर्वे मोटुं देवसंबंधी आयुष्य भोगव्युं छे तेना सुखना ममाणमां आ मनुष्य भवनुं मुख शी गणत्रीमां छे. आ प्रमाणे कहीने तेमनी पूर्वभव कही संभळाव्यो. त सांभळी तेओने जातिस्मरण ज्ञान खल्पन थयुं. पछी मिळिकुमारी वोल्या के, अरे भाईओ! हव मारे तो दक्षा लेवी छे. नमे शुं करको ? तेओ वोल्या के अमे पण दीक्षा रूईगुं. आ प्रमाणे कही संसार-मांथी निर्वेद पामी तेओ पोतपोताना राज्यमां गया अने पोतपोताना पुत्रोनो राज्य इपर अभिषेक कर्यो.

श्री मिछित्रभुए सांवत्सिरिक महादान आप्या पछी पोप गुक्क एकादशीने दिवसे अप्टम भक्त करी अश्विनी नहाजनो चंद्र थतां जनमधी सो वर्षनी वये जणसो राजाओं अने जणसो खीओ साथे सिद्ध भगवंतनी साक्षीए महावतने अंगीकार कर्या. तेज दिवसे तेमने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं. पेला छ राजाओए पण तेमनी पासे दीक्षा ग्रहण करी. तेमना शासनमां भिष्म विगरे अद्वावीश गणवर, चालीश हजार साधुओ, पंचावन हजार साध्वीओ, जणलाल ने सीतंर हजार श्राविका, अने

एकलाखने एशीइजार श्रावको थया. पोताना परिवार साथे मिल्लप्रमु विहार करी पंचावनहजार वर्षनुं आयुष्य भोगवी पांचसो साधु अने पांचमो साध्वीओ नी साथे फाल्गुन शुक्त द्वादशीए भरणी नक्षत्रमां श्रीसमेतशिखरागिरी उपर मोक्षने प्राप्त थया.

" आप्रमाणे अवस्य मोक्षने पामनारा श्रीमछिनाथ प्रभुए पण जेम सीलने पालन कर्युं तेम भन्य प्राणीओ ए अवस्य शीलनुं पालन करवुं."



# व्याख्यान १०२ मुं.

हवे मैथुन सेववाथी घणाग्रणनो हानि थाय छे ते कहे छे. वाक्यमंत्ररसादीनां, सिद्धिः कीर्त्यादयो ग्रणाः। नश्यन्ति तत्क्षणादेव, अब्रह्मसेवनान्नुणाम्॥ १॥

#### व्याख्या

''अब्रह्म (मैथुन) सेवन करवाथी मनुष्योना वचनिसिद्धि, मंत्रसिद्धि, रसादि-कनी सिद्धि अने कीर्ति विगेरे गुणो तत्काल नाश पामी जाय छे." ते विषे सृत्यिकि विद्याधरनो संवंध छे जे आ प्रमाणे.

## सत्यिक विद्याधरनी कथा.

चेटक महाराजानी पुत्री सुज्येष्ठा नामे साध्वी हती. ते एकदा आतापना करती हती. ते वखते तेनुं सौंदर्य जोई पेटाळ नामे विद्याघर तेनापर मोह पामी गयो. तेथी तत्काळ धूमाडो विकुर्वी तेने दिग्मूह करी तेणे अमर रुपे तेने सेवी तेनाथी स्तत्यिक नामे एक पुत्र ययो. ते अनुक्रम विद्या ग्रहणने योग्य थयो. त्यारे सोनाना पात्रमां वाघनुं दुध राखवानी जोम विद्याओं आपवा सारु पेढाळ विद्याघरे साध्वी पासेथी अपहरीने तेने विद्यामंत्र आप्या. रोहिणी विद्याए सत्य-

'कीना जीवने तेनुं आराधन करतां पांच जन्मसुधी मृत्यु पमाड्यो हतो, छठे जन्मे छ मास आयुष्य वाकी रह्युं ते वसते प्रसन्न थई पण तेणे आदरी नहोती; ते आ सातमे भवे पूर्व जन्मना साधनथी वगर आराध्ये संतुष्ट थइ अने छछाटमां छिद्र करी ते द्वारा हृद्यमां जईने रही. दिव्य अनुभावथी ते छछाटनुं छिद्र दिव्य नेत्र रूप थई गयुं. पछी पोताना पिता पेढाळने साध्वीना शिलनो छोप करनार जाणी सत्यकीए मारी नाख्यो. अने माताना तथा जिनेश्वरना वचनथी तेणे हढ समिकत अंगीकार कंयुं. पछी त्रिकाळ जिनपूजा करवाथी तेणे तीर्थंकर नामकर्म संपादन कर्युं. श्रीः छोक्प्रकाशमां कह्यं छे के " सत्यकी महोदेव एवा नामथी विख्यात अग्यारमो रुद्र थया. ते सत्यिक विद्याधरनो जीव आवती चोवीशीमां सुद्रत नामे अग्यारमा तीर्थंकर थशे."

सत्यकी अविरतिपणाने लीधे स्त्रीओमां आसक्त थई अनेक राजादिकनी स्त्रिओने वलात्कारे सेवन करतो इतो. तेथी एकदा उज्जियनी नगरीना चंडप्रद्योत राजाए एवा पड़ो वगडाव्यों के, सत्यिकने वश करी शके तेवी कोई स्त्री छे? ते वखते उमा नामनी वेश्याए कहुं के, हुं ते निशाचरने वश करीश पछी राजाए तेने तेनी इच्छा प्रमाणे करवानी आज्ञा आपी. एक वखते उमाए चंद्रशाळा (अगाशी) उपर रही तेने पोतानु सैंदिय वताव्युं. ते जोतांज सत्यिक सत्वर त्यां आवी तेने सेववा लाग्यो. एक वखते वेदयाए एकांतमां पुछयुं के, तमारीपासे कई कई विद्या छे? तेणे कहां के, "मारीपासे रोहिणी विगेरे विद्याओं छे अने तें सर्वदा मारा अंगमांज रहे छे. पण ज्यारे हुं मैथुन करुं छुं त्यारे ते विद्याओंने अने खड्गने दूर मुकुछुं, ते वखते मारामां जरापण वल रहेतुं नथी. " आ वात वेश्याए राजानी आगल निवेदन करी. अने कहां के " जो कोई शब्द वेधी पुरुष ज्यारे ते मारी साथे मैथुनासक्त होय त्यारे जो तेने मारेतो ते मरी जाय अन्यथा मरके नही. पण ते पुरुष एवो चतुर होवो जोईए के, जे मारो वचाव करीने तेने एकलानेज हुणी शके. तेवो पुरुष कोई छे? " पछी तेवा पुरुषनी शोध करतां राजानी पासे रहेनारा केटलाक शस्त्र कुशल पुरुषोए पोताना चातुर्यनी परिक्षा आपी. ते एवी रीते के, कमलना पत्रो उपराउपर राखीने राजाए कहुं के, उपरना आटला पत्र वींधवा अने नीचेना आटला बचाववा. एटले तेओए उपरना तेटलाज वीध्या अने नीचेना बचाव्या. पछी राजाए ते कळा वेश्यांने वतावीने कह्युं के, आ युक्तिथी तारुं रक्षण करशुं. वेश्या ते वात स्वीकार करीने पोताने घेर गइ. पछी ते सुभटोए संकेत प्रमा-णे गुप्त रही उमा वेक्या साथे मैथुन करता एवा सत्यिकने जोई ते युक्तिथी तेने

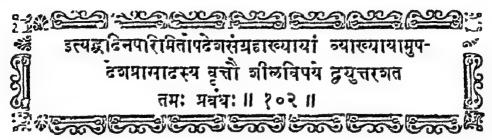
षारी नाल्यो. ते साथे जमाने पण विषकंदळी रूप जाणी मारी नाखी. सत्यिक मृत्यु पामीने नरके गयो.

पछी काळ संदीपक नाम सत्यकीना मित्र विद्याधरे उज्जयनी आखीं नगरी चूर्ण करी नाखवा माटे आखी नगरी उपर शीला रची. एटले राजाए तेने भोगादिक धर्या. ते विद्याधरे आकाशमां रहीने पोताना मित्र सत्यकीनुं महत्व चधारवा माटे सत्यकीना नामथीज कह्युं के तमे मने कामभोग करतां मारी नाख्यों छे तथी जो मैथुनाशक अवस्थाने रूपे मारी मूर्ति करीने मारी पूजा करों अने शंकर पार्वतीना नामथी अमारा गुण गाओतो जिवता मुकुं. अन्यया मुकीश नही. लोकोए ते प्रमाणे करवुं कवुल कर्यु. " मृत्युना भयथी प्राणी शुं करता नथी । अनुक्रमे इश्वरनुं लिंग जलाधारी रूप योनीमां राखीने तेनी पूजा प्रवर्ती. " विषयलंपट पणाने धिकार छे के जेनी आसक्तिथी आवो बळवान् सत्यकी पण पोतानी शक्तिने कुंडित करी नाखीने नरके गयो."

#### ॥ इति सत्यकी विद्याधर प्रवंध. ॥

इवे सुज्येष्टाए केवी रीते दीक्षा लीधी तेनुं वृत्तांत आप्रमाणे-विशाला नगरीमां चेटक राजानी एक पुत्री सुज्येष्ट्रा नामे इती. एक वखते तेणीए मिध्यात्वने स्थापन करती कोई एक तापसीने वादमां जिती लीधी. ते तापसीए तेनुं स्वरूप चित्रपट उपर आलेखी श्रीणक राजाने वतान्युं. ते जोइ श्रीणक राजा मोह पामी गयो. तेनी मरणायी तेना मंत्री अभय कुमारे विशाळा नगरीमां आवी राजमहेळ पासे एक दुकान मांडी. तेमां चित्रपट उपर श्रेणिक राजानुं चित्र आलेखी नित्य तेनी पूजा करवा लाग्यो. एक वसते ते चित्र सुज्येष्टानी दासीओना जोवामां आव्युं. तेमणे ते लइ जइने सुज्येष्ठाने बताव्युं. श्रेणिकनुं स्वरूप जोई सुज्येष्ठा मोहपामी गइ. एटले तेणे पोतानी अभिप्राय अभयकुमारने जणान्यो. पछी अभयकुमारे तेना महेलथी राजगृहीना सीमाडा सुधी एक सुरंगा करावी. श्रीणक राजाएँ ते द्वारा त्यां आवी तेने लड़ जवानुं जणान्युं. सुज्येष्ठा चिल्लणाने लड् तैयार थईने आवती हती तेवामां पाताना आभूषणनो डावला भूली गइ ते लेवाने पाछी गइ राजा श्रीणक चेटक राजाना भयथी तत्काल मुज्येष्ठाने वदले चेद्मणाने लड्ने कागडानी जेम नाशी गयो. सुज्येष्ठा संकेत स्थले आवी त्यां तो चेल्लणाने के राजाने जोया नहीं एटले तेणे इंचे स्वरें पोकार कर्यों के कोइ चेल्लणाने इरी जायछे. ते सांभळी चेटक राजा त्यां दोडी आव्यो. तेणे श्रेणिक राजाना अंग रक्षक सुलसाना वत्रीश पुत्रोने एक बाणे मारी नाख्या. कारण के तेओ सर्व साथे जन्मेला अने समदायी के कभ

वंधवाला हर्ता. पछी चेटक महाराजाए पोताना नगरमां आवींन सुड्येष्टाने मार्टे विवाहनी सामग्री तैयार कराववा मांडी. त्यारे सुज्यष्टाए पिताने वारीने टीक्षा ग्रहण करी. कारण के ते सती होवाथी वचन साक्षीए श्रीणक राजान वरेली होवाने लींब वीजा पुरुपने वरी नहीं. पण पेढाल विद्याधरे कपटथी तेने भोगवी जैयी तेने गर्भ रहो। एटले गणधर तेना सतीनुं विषे वीर भगवंतने पुछयुं. वीर भगवंते कहुं के ' ते मुज्येष्टाना दोप नथी ते तो निश्रलवालि वालीज रहेली छे. श्रेणिक राजाना संगना अभावथी तेणे मनसाक्षीए सर्वथा भील अंगीकार कर्यु छे. " पछी सुज्यष्टा साध्वीए यावज्जीवसुधी मन, वचन, कायाथी ग्रुद्ध एवं शील वत पाळ्युं. ते विषे कहेवाय छे के. " चेटक राजाने सात पुत्रीओ हती, ते सर्वे जीलवती हती एम तीर्थ-करोए तमनी श्लावा करेली छे. " इति सुज्येष्टा प्रवंध.



# ज्याख्यान १०३ <u>म</u>ुं.

स्त्रीचरित्र जाणवाने कोईपण कुशल नथी ते विषे कहे छे. सुश्ठिष्टामपिच स्त्रीणामहो कपटनाटकम्। न स्याद्वेधापि मेधावो तस्य तत्वावबोधने ॥ १ ॥

#### <u>ज्याख्या</u>

" स्त्रीओनं कपट रूप नाटक एवं योजाएलं होय छे के जेनं तत्व समजवाने बुद्धिवान्नुं डहापण पण काम लागतुं नथी. '' ते विषे नुपूर पंडितानुं दशांत छे ते आ प्रमाणे.—

तुपूरपंडितानी कथा. राजगृह नगरमां देवदन्त नाम एक सानी हतो. तेने देवदिन्न नामे एक पुत्र हतो. तेने दुर्गिला नाम स्नी हती. एक वसते ते झीणा अने आद्र वस्त्र पेहेरी नदीमां स्नान करती हती. तेवीज स्थितिमां कोइ नागरिक पुरुपना जोवामां आवी. ते जोड़ मोहपामीने ने पुरुष आ प्रमाणे वोल्यो. " हे सुंदरि! आ नदी अने वृक्षों ते

सारी रीते स्नान कर्युं १ एम पुछे छे अने हुं तो तारा चरण कमलमां पडीने पुछुं हुं. " दुर्गिलाए तेने उत्तर आप्यो के-" मने स्नान विषे पुछनारा नदी तथा वृक्षोतुं कल्याण थाओ; अने मने ते विषे पुछनार पुरुषनुं मन इच्छित हुं पूर्ण करीश. "आ सांभळी ते नागरिक तेने मळवाने उत्सुक थयो. पछी ते कोइ तापसीने मळ्यो अने तेने पोतानी इच्छा समजावी दुर्गिलाने घेर मोकली. तेणीए दुर्गिलाने पेला नागरिकना प्रेमनी वात करी एटले दुर्गिला वोली-" अरे पालंडीनि, तुं आवुं अश्रान्य केम बोले छे, मारा घरमांथी चाली जा. " आम कही निकलती ते ताप-सीना पृष्ट अपरं तेणे कज्जलनो थापो आप्यो. तापसीए नागरिक पासे आवी पोताना अपमाननुं वृत्तांत जणाव्युं; अने पृष्ट भाग वताव्यो. ते जोइ नागरिक, समजी गयो के, ते चतुराए मने कुष्मपक्षनी पंचमीनी रात्रे मळवानो संकेत् आप्यो. पण ते कया स्थळे मळबुं ते जणाव्युं नथी तेथी तेणे तापसीने पुनः भिक्षा मागवाना मिषे तेने घर मोकली. तापसी त्यां जइने बोली के हे सुंदरी, ते नागरिकने मळवानुं स्थळ कहे. एटले दुर्गिलाए रोष करी तेने हाथे पकडी पछवाडेना वाडामां आवेला अशोक वृक्ष तळे थइने पाछले द्वारे काढी मुकी. तापसीए ते वात पेला पुरुप आगळ जणावी एटले तेणे जाण्युं के, कृष्णपंचमीए वाडामां अशोक वृक्ष तळे तेनुं मळवुं थशे. ज्यारे संकेतनो दिवस आन्यो त्यारे ते त्यां गयो. वंने त्यां मळ्या अने विनोद करतां तेमना नेत्र मुद्रित थइ गयां. ते वखते तेनो सासरो देवदत्त मूत्रोत्सर्ग करवाने त्यां आन्यो. त्यां पुत्र वधू साथे वीजा पुरुषने जोइ तेना डावा पगमांथी एक नुपूर काढी छी थुं. तत्काळ दुर्गिलाना जाणवामा ते वात आवी, एटले तेणीए वेला जारने जगाडी शिखडावीने तेने घेर मोकल्यो. पछी पोताना घरमां जइ पोताना पतिने मधुर वाणीथी जगाडीने कहा के, प्राणेश, चालो, आजतो आपणे अशोक वृक्ष नीचे जइने निद्रा लइए. पतिए कवुल कर्यु, एटले वंने जण त्यां जइने सुता, थोडी वार पछी निद्रा पामेला पतिने जनाडीने तेणीए कहां के, तमारा कुळमां आ केवी रीत कहेवाय के सासरो जाते आवी पुत्र वधूना पगमांथी नुपूर काढी छे. ते सांभळी तेना पतिने क्रोध चड्या तेशी प्रातःकाळे तेणे पोताना पिताने कहां के, अरे पिता, रात्रे हुं मारी स्त्री साथे सुतो हतो, ते वखते तमे नुपूर छइ गया ते क्षुं ? पुत्र वधूनुं गुह्य सासराए जोवुं योग्य नथी. पिताए कहुं, अरे पुत्र ! कोइ जार तेनी साथे सुतो हतो तथी में तेम कर्यु हतुं अने पछी त्यां छइ जइ तने सुवारीने तेणे आ कपट करेलुं छे.

ते सांभळी दुर्गिला वोली के, ते वात असत्य छे, हुं मारुं सत्य देवतानी आगळ वतावीश. एम कही ते सर्वने लड़ नगर वाहेर रहेला कीइ प्रभाविक यसनी

पासे पोतानुं सत्य वताववा चाली. मार्गमां प्रथमथी संकेत करी राखेलो पेलो जार जुदो वेप लड़ गांडो वनीने आव्यो, अने दुर्गिलाने गळे वृक्षने जेम वानर वळगे तेम वळगी पड़्यो. तेने दूर करी यक्षना मंदिर पासे आवी पवित्र यह तेने पूजीने बोली के, "हे देव, आ गांडो पुरुप अने मारो पित ते शिवाय जो कोई त्रीजो पुरुप मने लग्न थयो होय तो तमे मने योग्य शिक्षा करजो" ते सांभळी यक्ष विचारमां पड़्यों के आनं सत्य असत्यरुप छे माटे तेनुं शुं करवुं ? तेवामां तो ते स्त्री तेनी वे जंघा वचे यहने नीकळी गइ, एटले लोकोए तेनी प्रशंसा करी अने त्यारथी नुपूरपंडिता एवा नामथी ते प्रख्यात थइ. आवा तेना चरित्रथी विरुपय पामेला देवदत्त सोनीनी ते दिवसथी निद्रा चडी गइ.

देवदत्तना ते गुणथी राजाए तेने पोताना अंतः पुरनो अधिकारी रहक निम्यो. राजाना अंतःपुरनी मुख्य राणी कोइ हाथीना महावत साथे आसक्त हती. तेना मेहेलनी पासे हाथी रहेता तेथी रात्रे ते द्वारा ते माहावतने मलती हती. आजे आ नवीन सोनी पहेरेगीर थवाथी अंतःपुरमां जागतो हतो. एटले ते राणी बारंबार तेने जोवा आवती पण तेने जागतो जोइ पाछी फरती हती. पछी राणीनुं वृत्तांत जाण-वानी इच्छायी देवदत्त कपटनिद्राधी सुइ गयो. एटले राणी तेने सुतेलो जोइ मेहे-लना गोख पासे आवी. त्यां पेला जार महावते हाथी जभी करी राखेली हती तेणे पोतानी शुंढवडे राणीने नीचे उतारी. एटले महावत तेना वांसामां हाथीनी सांकळ मारीने बोल्यों के, मोडी केम आवी ? त्यारे तेणे नवा नीमायेला पेहेरेगी-रनी वार्त्ता कही. पछी रात्रिना छेछा पोहोरे पाछी महावते तेवी रीतेज उपर पो-होंचाडी दीधी. आ सर्व चरित्र देवदत्तना जोवामां आव्युं तेथी तेणे विचार्यु के, च्यारे राजानी स्त्रीओनुं पण आवं आचरण छे तो पछी वीजा साधारण माणसोनी स्त्रीओं कुशीळ होय तेमां शुं आश्रयं! आ ममाणे विचारवाथी ते चिंता रहित यह गयो तेथी तेने छमासे तेज रात्रीए पूरी निद्रा आवी गइ. तेनी निद्रानो वृत्तांत जाणी ज्यारे ते जाग्यो त्यारे राजाए तेनुं कारण पुछ्यं. तेणे सर्व वृत्तांत स्पष्टपणे कही जणाव्युं. पछी राजाए ते राणीने ओळखी काढवा सारु अंतःपुरनी सर्व स्तिओंने कहूं के, तमे सी उघाडे वांसे चभी रहो, अने हुं कमळना दडानो महार करं ते सहन करो. सर्व स्त्रीओए ते स्वीकार्यु. अनुक्रमे ते प्रमाणे करतां ज्यारे पेली कुलटा राणीनो वारो आव्यो, त्यारे कमलपुष्पथी तेनापर महार करतांज ते कपटवडे मूछी खाइने पृथ्वीपर पडी गइ. राजा तेना स्त्री चरित्रने जाणीने वोल्यो के, "अरे स्ती ! तुं मदोन्मत्त हाथी साथे रमे छे छतां कर्तम हाथीथी वीहे छे, अने लोढानी सांकळनो मार खाइ हर्ष पाय छे छतां आ कमलपत्रना घातथी मूर्छा खाय छे." आ

प्रमाणे कही राजाए क्रोधथी आज्ञा करी के, आ हाथी, महावत अने राणीने पर्व-तना ऊंचा शिखर उपर चडावीने झंपापात करावों पछी महावत ते राणीने हाथी उपर बेसाडी हाथीने पर्वतना शिखर उपर छड़ गयो. त्यां हाथीनो पहेछां एक पग ऊंचो कराव्यो, पछी वे पग ऊंचा कराव्या अने छेबटे त्रण पग उंचा रखाबी एक पगे उभो राख्यो. हाथीनी आ कळाथी रंजित यथेछा छोकोए राजाने विनंती करी के, स्वामी, आवा गर्जेंद्ररत्नने मारवो योग्य नथी. राजाए तेने अभयदान आप्युं, अने महावतने कह्युं के, ते हाथीने गिरिथी नीचे उतारी दे. महावते कह्युं के, जो अमने अभयदान आपो तो हुं तेने कुश्चळताथी नीचे उतारें. राजाए तेने पण अभयदान आप्युं एटछे तेणे हाथीने हळवे हळवे क्षेमकुश्चळ नीचे उतार्थों. पछी राणीने अने महावतने राजाए देशपार कर्या.

राणीं अने महावतने त्यांथी नीकळीने आगळ जतां मार्गमां एक देवालय आव्यं, त्यां रात्रि पडवाथी ते बंने सुइ गया. तेवामां कोइ चोर गाममांथी चोरी करीने त्यां आव्यो. कोटवालने तेनी खबर पडतां तेणे आधीने देवालयने घेरी लीधुं. अंदर महावत तो निद्रावश थइ गयो हतो. पण पेला चोरना कर स्पर्शथी राणी जा- यत थइ, अने तेने जोइने बोली के, तुं मने स्वी तरीके अंगिकार कर. चोरे कहुं के, जोतुं प्रातःकाळे कोटवाल पासे मने तारो स्वामी कही मारा जीवितनी रक्षा करे तो हुं तारो स्वामी थइ तने स्वीकारुं. तेणीए तेवात कबुल करी. प्रातःकाळे कोटवाल सुभटो साथे अंदर प्रवेश करीने पुछयुं के, तमारामां कोण चोर छे? राणीए दिश्नी संज्ञा करीने महावतने बताव्यो. एटले तेओए तेने पकडी गुन्हो साबित गणीने सूळीए चडावी दीधो. यूळी उपर रह्या सता तेने तृषा लागी, तेथी मार्गे चाल्या जता कोइ श्रावकने देखीने तेणे तेनी पासे जळ माग्युं. श्रावक तेने नवकार मंत्रनुं पद आपी जळ लेवा गयो. तेना आव्या अगाउ शूळी उपर नवकार मंत्रने स्मरण करतो महावत मृत्यु पामीने व्यंतरनी कायमां देव थयो.

आई पेली दुष्ट राणी चोरनी साथे चाली नीकळी. मार्गमां एक नदी आवी. नदीमां पूर जोड़ चोरे कहुं के, मथम तारा वस्तादि मने आप तेने पेले तीर मुकी आबीने पछी हुं तने सुलेथी लड़ जड़श. हुं ज्यां सुधी आवुं त्यां सुधी तुं आई रहेज; तेणीए तेम कर्युं. चोरे नदीने सामे तीरे जड़ने विचार्युं के, आ स्त्री पोताना पतिनी जेम मने पण दु:लमां पाडशे तेथी एनो संग करवो योग्य तथी. आवुं विचारी ते चोर पोतानो स्वार्थ साधी तेने छोडीने परभायों चाल्यो गयो.

अहिं राणी नम्रपणे इताशा यह सतीवनमां भमती पोकार करवा लागी. एवामां व्यंतर थयेली तेनी पति शीयाळनुं रूप लड्ने तेने प्रतिवीध करवा आव्यी. तेणे मुलमां मांस राल्युं हतुं, ते मांसनी पेशी नदीना तीर उपर मुकी नदी कांठे आवेला मत्स्यने पकडवा दोड्यो. एटले मत्स्य तो नदीना जळमां पेशी गयो, अने पेलुं मांस हतुं ते समडी उपाडी गइ. ते वलते शीयाळ वीललो यह आमतेम जोवा लाग्यो. ते जोइ दुर्गिला वोली के—अरे, मूर्ल ! तुं उभय अष्ट थयो, हवे शुं जुवे छे ? शीयाळ वोल्यो—अरे, स्त्री ! तुं तो अणयी अष्ट यइ छुं, हवे वीजाना दोप शामाटे जुए छे ? ए प्रमाणे कहीने तेणे दिव्यरूप प्रगट करी कह्युं के, अरे पापिणी ! ते जेने मारी नखाव्यो हतो ते हुं महावत छुं. जैन धर्मना प्रभावथी मने आ उत्तम गति प्राप्त थई छे. माटे तुं पण ते धर्मने अंगीकार कर्य. राणीए ते वात स्वीकारी. एटले तेणे तेने कांड माध्वी पासं मुकी. त्यां तेणे दीक्षा ग्रहण करी अनुक्रमे सद्गतिने पामी.

" आ प्रमाणे ते राणी प्रांते पवित्र शीलवतने पाम्या छतां नुपूर पंडितानी असतीपणानी अपकीर्त्तिनो नाद अद्यापि विराम पामतो नधी."

इत्यद्विनपरिमितोपदेश मंग्रहात्यायां न्यात्यायामुपदेशमासाद १ इत्यद्विनपरिमितोपदेश मंग्रहात्यायां न्यात्यायामुपदेशमासाद १ स्यवृत्तों स्त्रीचरित्रविषयं त्र्युत्तर्गततमः प्रयंधः॥ १०३॥

## व्याख्यान १०४ मुं.

चोथा वतने धारण करनार श्रावक आपाढ चातुर्मास्यना सत्कृत्यो अवस्य करे छे, तेथी हवे चातुर्मास्यना कृत्योनं वर्णन करे छे.

आपाढाख्यचतुर्मास्यां विशेषाद्विधिपूर्वकम् ॥ अभिग्रहाः सदाग्राह्याः सम्यगर्हा विवेकिमिः॥ १॥

#### व्याख्या

" विवेकी पुरुषोए आपाढ चातुर्मासने विषे हंमेशा पोताने योग्य एवा अभियहो विधिपूर्वक विशेषे धारण करवा." आनो भावार्थ एवो छे के, प्रथम द्वादश झननुं उच्चारण करवा वखते जेणे पांचमुं वत आद्र्युं होय तेणे अवश्य करीन ते नियमोमां दरेक चातुर्मासे संक्षेप करवो एटले मोकलुं राखेल होय तेमांथी ओखुं करी ते नियमा पाळवा अने जेणे पांचमुं वत अंगीकार कर्युं न होय तेणे पण प्रन्येक चातुर्मासे योग्य अभियहां स्वीकारवा. तेमां पण आपाढादि चानुमास्यमां तो ते विशेषपणे विधिपूर्वक यहण करवा.

वर्षाम्तुमां गाडां हांकवा, रथ जोडवा, हळथी खेड करवी, घोडेस्वार थइ फरवुं विगेरे निषेध करवा योग्य छे, कारणके भूमि साथे मेवना जळनो स्पर्श थवाथी लीला घासना अंकुरो, सूक्ष्म संमूर्छिम देडकीओ, पांचे वर्णनी लीलफुल, अळसीया, शंखजातिना जीवो, ममोला, कात्रा, चुडेलना गुच्छो अने भूमि छत्र (बीलाडीना टोप) विगेरे अनेक जीवोनी उत्पति थवानो संभव छे. तेथीं चातु-मीस्यमां एवा जीवनी रक्षाने माटे पूर्वोक्त शकटखेटनादिनो अभियह धारण करवो योग्य छे. कदि जो कृषि कर्म विगेरेयीज आजीविका होय तो एक वे विगेरे क्षेत्र खेडवानी छुट राखी तेथी विशेष क्षेत्र खेडवानी त्याग करवी. मुख्यरीते 'ती वर्पा-काळमां सर्व दिशाओमां गमनागमन करवानो निषेध करवो उचित छे, जेवो नियम कुष्ण वासुदेवे अने कुमारपाळे लीघो हतो. कहुं छे के, " सर्व जीवोनी दयाने मं। टे वर्षारुतुमां एक स्थाने वसवुं " पूर्वे श्री नेमि प्रभुना उपदेशथी श्रींकृष्ण वासु-देवें चातुर्मास सुधी द्वारकानी वहार जवानो नियम लीधो हतो अने कुमारपाळे श्रीहेमचंद्रसूरिना वचनथी तेवी नियम लीधो हतो. ते आ प्रमाणे-' सर्व चैत्योनुं दर्शन अने गुरुनुं वंदन मुकीने पायः नगरने विषे पण भमीश नहीं."

एकवचनीपणामां युधिष्ठिर जेवा कुमारपाळ राजाए अंगीकार करेळा पूर्वोक्त नियमने मोदं कार्य पड़ये छते पण छोडी दीधो नहोतो. शकदेशनो म्लेच्छ राजा कुमारपाळना ए नियमनी वात जाणीने तेना देशनो भंग करवाने माटे आव्या छतां अभिग्रह धारी कुमारपाळ राजा वर्षारुतुमां तेनी सामे युद्ध करवा गयो नही. राजाने धर्ममां स्थिर करवाने माटे हेर्मचंद्रस्रिए देव शक्तिथी ते म्लेच्छराजने बांधी अणाव्यो अने पोताना राज्यमां छ मास पर्यंत जीव न इणवानीं कबुलत कराव्या पछी तेने छुटो कर्यो.

जो के वर्षीरुतुमां सर्व दिशाओमां गमन करवानी निषेध छे; छतां कदि सर्व दिशानी नियम न करी शकाय तो जे दिशामां गया वगर निर्वाह थाय तेम न होय ते शिवाय वींजी दिशाओमां जवानो नियम छेवो. एज प्रमाणे जो सर्व सचित्त वस्तुओनो त्याग थइ शंके नहीं तों जेना विना निर्वाह न चारु ते किवाय वीजी वस्तुओनो त्याग करवी. तेमजं जैने जें वस्तु प्राप्त थवा संभव न होय अथवा जे काळे जे वस्तु उत्पन्न थतीं न होय तेनो पण त्याग करवो. जेम निर्थनने हाथी घोडा अने मरुदेशमां नागरवेलं, तेमज पोतपोताना समय नगर आम्रफळ विंगेरे अमाप्य छे तेनो ते स्थितिमां, तेदेशमां, ते काळे पण त्याग थांय तो तेथी विरातिंस्प महांफळ प्राप्त थाय छे. अन्यथा ते ते वस्तुनुं यहण करवापणुं माप्त नही थतां छतांपण, पशुनी जैम अविरतपणुं लागे छे अने ते ते नियमना फलथी वंचित थवाय छे. जेम एकज वार भोजन कर्या छतां पण पचलाण कर्या वसर एकाशणानुं फळ मळे नहीं तेम समजवुं. अडती वस्तुनी पण नियम लीधो होय तो किद कोइ वार तेनी योग मळी जाय तोपण नियम ग्रहण करेलो होवाथी ते वस्तुनुं ग्रहण थतुं नथी, तेथी तेने नियमनुं फळ स्पष्टिति याय छे. जेम वंकुचूळ नामना चोरना स्वामीए गुरु पासे अजाण्या फळ न खाशा एवो नियम लीघो हतो; ते एकवार अरण्यमां वीजा चोर साथे गयो. त्यां सपळा श्रुधार्त्त थया, त्यारे चोर लोको किंपाक जातिना विष फळ लड् आव्या. ते खावानी बीजाओए घणी मेरणा करी तथापि अजाण्या फळना नियमने लीघे वंकचूले ते खाधा नहीं. अने बीजा साथेना चोरोए खाधा तेथी तेओ मृत्यु पामी गया अने वंक चूळ वच्यो. माटे एक पक्षनो, एक मासनो, वे मासनो, त्रण मासनो, वा एक, वे, के त्रण वर्ष सुधीनो यथाशक्ति नियम लेवो. जे माणस ल्यां सुधी नियमो पाळी शकी त्यां सुधीने माटे नियमो ग्रहण करवा. पण क्षणवार पण नियम वगर रहेतुं नहीं. कारणके विरतिनुं मोटुं फळ छे अने अविरतिथी घणा कर्मोनो वंध थवा विगेरे अनेक दोष छे.

वर्षा चातुर्मास्यमां विशेषपणे नियम महण करवा ते आप्रमाणे—दररोज बे बार त्रणवार अष्टमकारी पूजा करवी, संपूर्ण देववंदन करवं, (त्रणकाळ देव वांदवा) सर्व जिनविंवनुं अर्थन अने वंदन करवं, स्नात्र महोत्सवो करवा, गुरुने द्वादशावर्त्त वंदना करवी, अपूर्व ज्ञाननो अम्यास करवी, वैयावच करवी, ब्रह्मचर्य पाळवुं, प्रासुक जळ पीवुं, सचित वस्तुनो त्याग करवो; वळी वादळामांथी जळ वृष्टि याय त्यारे रायण, आंवा विगेरेना फळमां एळो पढे छे तेथी तेनो त्यागकरवो. आर्द्रा नक्षत्र वेसतां पक्व आम्र फळमां तेमज तेना रसमां कीडा जेवा तेना जेवाज वर्णवाळा जीवो उत्पन्न थाय छे. तेमज वासी कढोळथी वनेला पुडला, वडां विगेरेनो त्याग करवो. पापड, वडी, सुकी शाक भाजी, सर्व जातना तांजलजा विगेरे पंत्र शाक, खारेक, टोपरा, मुकी रायण, खजुर, द्राक्ष, नहीं घोयेली खांड अने सुंढ विगेरेमां लीलफुल अने कुंयुवा तथा येल विगेरे उत्पन्न थवानो संभव होवाथी ते ते पदार्थो त्यानी देवा. कदि औपधी विगेरेमां तेमांथी कोइ चीजनी जरुर पडे तो तेने यतनाथी शोधीने ग्रहण करवी.

वनीशकेतो चोमासामां खाटला उपर सुवं, दातण अने जोडा विगेरेनो त्याग करवो; वर्षा चातुर्मास्यमां पृथ्वी खोदवानो, नवीन वस्त्र रंगाववानो अने प्रामां-तर गमन करवा विगेरेनो निषेध करवो. वस्त्र धोवराववानुं पण परिमाण बांधवुं. वर्षाऋतुमां पृथ्वीउपर लिंपवानो अने छाणा थापवानो सर्वथा निषेध करवो. कारण के छाणमां वे घडी पछी अनेक जीवो उत्पन्न थाय छे, तेमांपण वर्षाऋतुमां तो

विशेषे थाय छे. वली घरनी भीतो, स्तंभ, पलंग. कमाड, पाट, पाटला, सींका-घी, तेल तथा जळविगेरेना पात्रो, इंबणा अने घान्यप्रमुख सर्व वस्तुओने लीलफुल-थीर हित रहेवाने माटे यथायोग्य लुङ्घी गरमीमां राखवी, रक्षा चोपडवी, चुनो चोप, डाववी, मेल कढाववी, इवाना भेजविनानी जग्यामां मुकवी, पाणीने वे त्रण वार गळवुं.तेल, गोळ, छास अने जळविगरेना पात्रोने सारीरीते ढाकवा. ओसामण अने स्नाननुं जळ नीळ फ़लरहीत अने जे दर विगेरेथी पोली न होय तेवी भूमिमां छुटुं छुटुं योडुं थोडुं दोळवुं. चुलो अने दीवा उघाडा न राखवा. खांडवुं, दळवुं, राधवुं, तेमज बस्त अने भाजनो घोवा-विगेरेमां सारी जतना करवी. अने जिन प्रासाद तथा उपाश्रय विगेरे धर्मालयो पण सारीरीते जोइ, समरावीने यथायोग्य जतना करवी.

अन्यमतीओना शास्त्रोमां पण आ वावत केटलाक नियमो कहेला छे. विश्वष्ट कहे छे के, " हे ब्रह्मा ! चोमासामां श्रीविष्णु भगवान् समुद्रमां जइने शामाटे सुवे छ ? ते समये कया कया कार्योंनो त्याग करवो ? अने ते प्रमाणे त्याग करवाथी शुं फल थाय ? ते कहो. " ब्रह्मा कहे छे के-"देवाधिपति विष्णु भगवान् सुता नथी तेम जागता पण नथी पण वर्षाऋतुमां तेवो उपचार करेलो छे. तेथी ज्यारे श्री विष्णु चोमासामां योग ध्यानमां लीन थाय छे, ते समये जे जे बर्जवा योग्य छे ते सांभळी-वर्षाऋतुमां प्रवास करवो नहीं, मृत्तिका खोदवी नहीं, वृंताक (रिंगणा), अडद, चोळा, वाल, कलथी, तुवेर अने कालींगडा, विगेरे वस्तुओ तथा मूळा, तांजलजा विगेरे पत्रशाक खावा नहीं. अने एकज बार जमबुं. चातु-मीस्यभा जे ए प्रमाणे वर्चे ते पुरुष चतुर्भुज थइ परमगतिने पामे छे. वळी कायम रात्री भोजन करवुं नहीं. चातुमीस्यमां तो विशेष करीने रात्रे खावुं नहीं. जे प्राणी ए प्रमाणे वर्षे ते आलोकना तथा परलोकनी सर्व कामनाने पामे छे. वळी विष्णु शयन करे ते समये जे मद्य मांसनो पण त्याग करे तेने मासे मासे सो अश्वमेधयहोनं फळ मळे छे. इत्यादि " वळी मार्केड मुनि कहे छे के, " हे राजा! जे माणस चातुर्मास्यमां तैल मर्दन करे नहीं, ते घणा पुत्र तथा धनवडे युक्त अने नीरोगी थाय छे. जे पुष्पादि भागनी त्याग करे ते स्वर्गलोकमां पूजाय छे. जे कडवो, खारो, तिलो, मीडो, कषायलो अने खारो ए छ रसने वर्जे छे ते कदिएण निर्भागीएणुं पामतो नथी. तांवूळ तजवाथी भोग अने लावण्यने पामे छे. जे पाका कंद मूळ

१ कार्लिंगडा वनस्पति नहीं पण कोइ जातिनुं कठीळ घान्य होवुं जोइए. मूळमां कालिंग शब्द छे.

फळ पत्र पुष्पादि तने छे ते दीर्घ वंशने पामे छे. ने पृथ्वी उपर संथारी करीने सुवे ते विष्णुनो अनुचर थाय छे. ने एकांतरे उपवास करे ते ब्रह्मलोकमां पूजाव छे. अने ने नख केश वधारे तेने दिवसे दिवसे गंगास्ताननुं फळ मळे छे. तेथी चातु-मार्स्यमां उपवासनो नियम धरवो अने पारणे सदा मौनपणे भोजन करवुं. ढुंकामां सर्व प्रयत्नवडे चातुर्मास्य व्रत धारण करवुं. " आ प्रमाणे भविष्योत्तरपुराणमां तथा अनेक लोक लोकोत्तर शास्त्रनेविषे चातुर्मासिक कृत्य संवंधी वर्णन करेछुं छे ते जाणीने तेनो अंगीकार करवानुं स्वीकारवुं ते विषे एक निचे प्रमाणे दृष्टांत छे—

विजयपुर नगरमां विजयसेन नामे राजा हतो. तेने घणा पुत्रो हता. तेमां विजयश्रो नामे पुत्र राज्यने योग्य होवाथी एने कोइ बीजो पराभव करवा न इच्छे अथवा मारी न नाखे एवं चिंतवीने राजा तेने आदर आपतो होतो. तेथी तेपुत्र दु:ख पामीने विचारवा लाग्यों के, मारें आहि रहेवुं शा कामनुं छे ? माटे हुं तो देशांतरे जाऊं-कहुं छे के, जे पुरुष घरमांथी नीकळींने पृथ्वीपर रहेला अनेक सुंदर देखावो अने आश्रयों न जुवे ते पुरुष कुवाना देखका जेवो छे. वळी जे पुरुष मुसाफरी करी पृथ्वीपर भमे ते विचित्र भाषाओं जाणे. अनेक प्रकारनी देश देशनी नीति रीतिओ समजे जोवे अने घणां आश्रयोंनुं अवलोकन करे-आवुं चिंतवी ते राजपुत्र एकलो हाथमां खड़ लइ रात्रे नगरनी वहार नीकली गयो. पृथ्वीपर स्वेच्छाए भमतां ते कोइ अर्ण्यमां आवी चड्यो. मध्यान्ह समय थवाथी सुधा अने तृपावडे पीडित धयो. तेवामां सर्व अंगे दिन्य आफृतिवाला कोइ पुरुषे प्रगट थइने तेने स्तेंहपूर्वक बोलावी एक सर्व उपद्रवने वारनारुं अने वीजुं सर्व इष्टनुं साधक-एवा वे रत्नो आप्या. कुमारे पुछयुं के, तमे कोण छो ? तेणे कहुं, पोताना नगरमां गया पछी कोइ मु-निना मुखेथी तुं मारुं चरित्र जाणीश. पछी ते कुमार ते रत्नोना प्रभावधी सर्वत्र विलास करतो कुसुमपुरमां आन्यो. ते नगरना राजा देवशामी ने तीन नेत्र पांडा **खत्पन्न थइ इती तेथी तेमटाडनार कोइ पुरुपनी जोधने माटे पडो वागतो इतो. कुमारे** ते पड़ो छ्वीने रत्नना प्रभावथी तेना नेत्रनी पीड़ा हरी छीघी. राजाए संतुष्ट थइने तेने राज्य आप्यु, पुण्यश्री नामनी पोतानी पुत्री परणावी, अने पोते दीक्षालइने चाली नीकळ्यो. अनुक्रमे तेना पिताए पण पोतानुं राज्य तेने सोंपीने दक्षिा लीधी. आ प्रमाणे विजयश्री कुमार वंने राज्यने भोगववा लाग्यों

एकदा देवशर्मा राजिष त्रण ज्ञानी थया सता त्यां पथार्या. तेमणे कुमारने तेना पूर्वभवनी वार्चा कही के, "क्षेमापुरी नामे नगरीमां सुवृत्त नामे एक श्रेष्टी हतो. तेणे गुरुपासे यथाशक्ति चातुर्मास्यसंवंधी नियमो यहण कर्यी. तेनो एक सेवक हतो तेणे पण प्रतिवर्षे वर्षाचातुर्मास्यमां रात्री भोजन, मद्य, मधु अने मांसचर

भोजननो त्याग कर्यो. ते सेवक मृत्यु पामीने तुं थयो छुं. अने जे सुवृत्त श्रेष्टी हतो ते महद्भिक देव थयो छे. तेणे पूर्व भवना स्नेहथी तने वे रत्नो आप्या हता. " आ ममाणे सांभळी विजयश्री कुमारने जातिस्मरण ज्ञान थयुं. पछी ते विविध मकारना नियमोने पाळीने स्वर्गे गयो. त्यांथी चवी महाविदेह क्षेत्रमां सिद्धिने पामशे. आ हष्टांतथी चातुर्मास्य संबंधी नियमोनो महिमा जाणी छेवो.

वळी बीजा चातुर्मास्यमां पण यथायोग्य नियमो घारण करवा. जेमके फालगुन मासनी पूर्णिमाथीं आरंभी कार्तिक सुदी पूर्णिमा सुधी प्रायः पत्रवाळुं शाक '
भक्षण करवुं नही. तेमज तेल विगेरे पदार्थों न राखवा. कारणके तेथी घणा त्रस जीवोनो विनाश थवा संभव छे. वळी सामान्ये कहेलुं छे के " अजाण्युं फल, नहीं शोधेलुं शाक पत्र, सोपारी विगेरे आखां फल, गांधीना हाटना चूर्ण, मलीन घी, अने परीक्षा वगरना माणसे लावेला बीजा पदार्थों—ते खावाथी मांस भक्षण तुल्य दोप प्राप्त थाय छे. "

जोके ए त्रणे चातुमस्यिमां यथायोग्य विधिए नियमो पाळवा. तेमां पण मथम तिथिओ तो अवस्य पाळवी. ते तिथिओना त्रण मकार छे. वे चौद्श, वे अष्टमी, अमास अने पूर्णिमा-ए छ चारित्र तिथि कहेषाय छे. वे बीज, वे एंचभी अने वे एकादशी ए छ ज्ञान तिथि कहेवाय छै-ए तिथिओमां ज्ञाननी आराधना करवी. वाकीनी दर्शन तिथियो कहेवाय छे, तेमां दर्भननो महिमा करवी. सामान्य पणे ए सर्व तिथिओमां देवार्चन तथा शास्त्र श्रवण विगेरे ऋियाओ करवी. तेमां पण चातुर्मासिक पर्वने दिवसे विशेषपणे करवी. कह्युं छे के, "सामायिक, आवश्यक (प्रति-क्रमण ) पौषध, देवार्चन, स्नात्र, विलेपन, ब्रह्मचर्य, दान अने तप-इत्यादि भव्य जनोने चातुर्गास्यना आमूषणो छे. " संक्षेपमां एटछुंज के, ए कार्यो चातुर्गास्यना अलंकार रुप छे. तेथी हे भव्यो, तमारे सेववा योग्य छे. तेमां प्रथम मृहूर्त्त (वे घडी) सुधी जे राग द्वेपना हेतुओमां मध्यस्थपणुं राखवुं ते सामायिक कहेवाय छे. तेवा सामायिकने आचरनारा श्रावको वे प्रकारना होय छे. ऋदिमान् अने ऋदि रहित. तेमां जे ऋदि रहित श्रावक होय ते चैत्यमां, साधुनी पासे, पौषध शाळामां अथवा पोताने घेर ए चार स्थानक्मां जे निर्विष्टन स्थळ होय त्यां सामायिक करे छे अने जे ऋद्धिमान् श्रावक होय ते जैन शासननी उन्नतिने माटे मोटा आडंवर साथ उपाश्रये जइनेज सामायिक करे छे. अढारसी धनाढ्योनी साथे कुमारपाळ राजा उपाश्रये जइने सामाधिक करता इता तेनी अने चंद्रावतंसकनी जेम. इवे जे आव-रयक किया छे ते उभय काळने विषे करवानी छे. ते विषे कहुं छे के, वस्त्रमां उत्तम

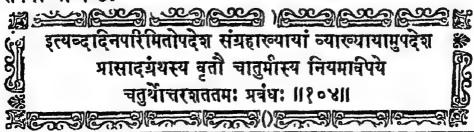
१ तांजळजो, मेथी, कोयमरी विगेरे भाजीओ अने अजमा, अळवी विगेरे पानो

गुं ? पृद्धी ( पृष्ट्यस्त ) मरुदेशमां दुर्लभ शुं ? क ( जळ ) प्रवन्धी पण चपल शुं ? मण् ( मन ) दिवसनुं पाप कोण हरे ? " पृद्धिक्रमण् " अर्थात् दिवसना पापने हरनार पृद्धिक्रमण् छे एम सिद्ध थाय छे. ते प्रतिक्रमण् महण्मिंह श्रावकनी जेम दृढताथी करतुं. पौपय चारे पर्वणीए चारे प्रकारे करवो. केसर वरास विगेरेथी अर्चन. जलादिकथी स्तात्र, अने कुंकुम विगेरेथी विलेपन ए त्रण पद्वहें समस्त पूजानो संयह जाणी लेवो. ब्रह्मचर्य सुद्श्मिश्रेष्ठीनी जेम पाळवुं. ते विषे एटले सुधी कह्युं छे के, परस्तीना अवयवनुं आभूपण पण जोतुं नहीं. ते वावतमां एक दृष्टांत छे के, ज्यारे रावणे सीतानुं हरण कर्युं त्यारे राम लक्ष्मण तेने पगले पगले वनमां शोधवा नीकळतां सुयीव विगेरे वानरोने मळ्या. तेमने सीतानी शोध विषे पृछतां तेओए कुंडल विगेरे सीताना आभूपणो जे तेणीए मार्गमां नास्ती दिवेला ते वताव्या. रामे ते ओळसवाने माटे लक्ष्मणने वताव्या त्यारे लक्ष्मणे कर्युं के,

कुंड्लैः नाभिजानामि नाभिजानामि कंकणैः।
तुपूरे स्वभिजानामि नित्य पादाब्जवंदनात्॥

" कुंडळवडे के करना कंकणवडे हुं ओळखतो नथी पण नुपूरवडे ओळखुं छुं के ते सीतानाज छे. कारणके हुं दररोज ते पूज्य भाभीना चरणमां वंदन करतो हतो तथी ते दिटेळा हावाथी ओळखुं छुं वीजा आभूपणावाळा अंगके ते परना आभुपण में कोई दिवस जोया नथी तेथी तेन ओळखतो नथी. " आ दृष्टातथी परस्त्रीना अंगडपरना आभूपणोपण जोवा योग्य नथी. एम समजवुं.

दान पांच प्रकारना प्रेसिद्ध छे. अने दुष्ट एवा आठ जातिना कर्मोंने हणनार तप कहेवाय छे. इत्यादि अनेक चातुर्मास्यना कृत्योछे. तेमां तत्पर एवा सूर्ययशा विगेरेना अनेक दृष्टांतो पणछे. ते पोतानी मेळे जाणी छेवा. आप्रमाणे उपदेश प्रासाद ग्रंथनी वृत्तिमां आ चातुर्मास्य क्रियानुं वर्णन श्री प्रेमविजयादिक मुनिने अर्थे (कर्ता कहे छे) म छखेलुं छे, "आ आषाद शुक्त चतुर्दशी संवंधी कृत्योके जे श्रीविजयल्डमी सूरिए चतावेला छे ते निर्वाणना साधनोने संपादन करनारा शुभचेतनावाला उपासकोए अवस्य सेववा योग्य छे."



१ अष्टमी, चतुर्दशी, पूर्णिमा, अमावास्या. ए चार मुख्य पर्वणी कहेवाय छे. २ आहार पोसह, श्रारेर सत्कार पोसह, अन्यापार पोसह, ब्रह्मचर्य पासह

# व्याख्यान १०५ म्रं.

इंद्रियना विषय भोगमां घणुं पाप छे अने तेथी घणुं दु:ख भोगवबुं पड़े छे ते कहे छे-

विषयात्तमनुष्याणां, दुःखावस्या दश समृताः । पापान्यपि बहून्यत्र, सारं कि मूढ पश्यसि ॥ १ ॥

<u> ज्याख्या</u>

'विपयपीडित मनुष्योनी दश दुःखावस्था कहेली छे, अने तेमां पाप पण वहु लागे छे. ते छतां हे मूढ तेमां तुंसार शुंदेखे छे ? " कामीओनी जे दश दु:खावस्था कही छे ते आ प्रमाणे-प्रथम अवस्था अमुक स्त्रीनो अभिलाप, वीजी ते मळशे के नहीं ते विषे चिंता, त्रीजी वारंवार तेनुंज रटण, चोथी तेना गुणोनुं कीर्त्तन, पांचमी ते विषे उद्वेग, छडी ते माटे विलाप, सातमी तेने लिधे उन्माद (गांडापणुं), आठमी रोगनी उत्पत्ति, नवमी जडतानी प्राप्ति अने दशमी मृत्यु-आ प्रमाणे कामी मनुष्यनी दश अवस्था थाय छे.

ते विषे सिद्धांतमां पण कहांुछे के, "कामी जनने सुखनो विपर्ययज थाय छे.-प्रथम तो ते जे जे स्त्रीने देखे तेनी उपर मन करे छे, अने तेथी वायुवडे चलायमान

थयेला वृक्षनी जेम तेनो आत्मा निरंतर अस्थिर रह्या करे छे."

साहित्यमां कहुं छे के, " कोइ कामी धयेलो पक्षी जलाशयना एक तीरथी बीजे तीरे जाय छे, दीन थइने चिंतामां पडे छे, योगीनी जेम निश्चल मनवडे नेत्र स्तब्ध करी ध्यान धरे छे, अने पोतानी छायाने जोइने शब्द कर्यो करे छे. कांतामां मुग्ध थयेला पक्षीनी पण आवी स्थिति थइ जाय छे तेथी आ पृथ्वीपर जेओए कामवा सना निवृत्त करी छे, तेवा पुरुषोने धन्यछ अने कामीना दुःखी जीवितने धिक्कार छे."

स्तीसाथेना विषयभोगमां पाप पण वहु छे ते विषे श्रीसिद्धांतमां कहेल छे के, "गर्भवती लाख खाओना निर्दयपणे पेट फाडे अने तेमांथी नीकळला सात आठ मा-सना तरफडता गर्भने मारी नाखे, तेथी जेटछुं पाप लागे ते करतां पण नव गणुं पाप साधुने एकवार स्त्रीने सेववाथी छागे छे. " साध्वीनी साथे एकवार काम सेववाथी तेथी हजार गणुं पाप लागे है, अने जो तीव रागथी काम किडा करे तो कोटी गणुं पण पाप लागे छे अने तेनुं वोधिवीज नाश पामे छे. इत्यादि पापो कहेला छे.

वळी योग शास्त्रमां पण कहेलुं छे के," योनि यंत्रमां जे सूक्ष्म जंतुओ उत्पन्न

थाय छे ते मैथुनवडे पीडित यइने मृत्यु पामे छे तेथी मैथुननो त्याग करवो."

कामशास्त्रना कर्ता दात्स्यायन पण योनिमां जंतुनी उत्पत्ति जणावे छे. ते कहे छे के, "योनिरक्तमां कोमळ मध्यभागे सूक्ष्म जंतुओ उत्पन्न थाय छे." ए प्रमाणे स्त्रीना संगथी असंख्य जीवोनो यात थाय छे. माटे हे मूद ! तुं ए विषयमां शुं सार जुए छे ? लौकिक शास्त्रमां पण कह्युं छे के,

भिक्षाशनं तदिप निर समेकवारं, शय्या च भू परिजनो निज देह मात्रं। वस्त्रं तु शीणपटखंडमयी च कथा, हाहा तथापि जंतुः विषयाभिलाषीः॥ १॥

"भिक्षायी भोजन मळे ते पण एकज वार अने नीरस मले छे, भूमिडपर सुवानुं छे, पोतानुं शरीरज मात्र परिजन होय छे, जीर्ण अने फाटेली कंथा ते बद्धमां होय छे तथापि खेदनी वात छे के, प्राणीओने विषयनी अभिलापा थया करे छे." ए काम भोगमां मात्र संकल्पज सारनो छे, परमार्थे जोतां तेमां वीजो कांइपण सार जांदामां आवतो नथी.

जे प्राणी भावथी स्त्री संगनो त्याग करे छे तेज ब्रह्मचारी कहेवाय छे तेविषे कहुं छे क-

रामा संगं परित्यज्य, व्रतं ब्रह्म समाचरेत् । ब्रह्मचारी स विज्ञेयो, नपुन वृद्ध घोटकः ॥ १ ॥

"श्लीनो संग भावथी छोडीने जे ब्रह्मचर्यपाळं तेज ब्रह्मचारी कहेवाय, कांड्र वांघेला अश्वनी जेम ब्रह्मचर्य पाळे ते ब्रह्मचारी नही." अर्थात् जे ख्लीमा आसक्ति छोडीने भावथी शीळ पाळे तेज खरेखर ब्रह्म ब्रतधारी जाणवो. ख्लीओने लौकि-कशास्त्रमां तेमज लोकोत्तर शास्त्र (जेन शासन) मां दोपनी खाणरूप कहेली छे. एटलुंज नहीं पण तेओ प्रत्यक्ष राक्षसी छे, स्वजन स्तेहनो विघात करावनारी छे अने घणी मायावी छे. तेविषे कह्युं छे के,

नसा कला न तत्ज्ञानं, न सा बुद्धिर्न तद्वलं। ज्ञायते यद्दशाहोके, चरित्रं चल चक्षूपां॥ १॥

"तेवी कोइ कला, तेवुं कोइ झान, तेवी कोइ वुद्धि अने तेवुं कोइ वल नथी के जेथी चपल नेत्रवाळी खीओनुं चरित्र जाणी शकाय." खीना संगथी मुंज राजाने मोटूं दुःख प्राप्त थयुं हतुं. तेनी कथा आ प्रमाणे—

### मुंजराजानी संक्षेप कथा.

मालव देशमां परमारवंशी श्रीसिंह भट नामे एक राजा हतो. ते एक वखते वन नीशोभाजोवाने शरकटना वनमां गयो हतो. त्यां एक तरतनो जनमेलो वालक मुंजना घा समां पडेलो तेना जीवामां आन्यो. तेथी तेनुं मुंज नाम पाडी पुत्रकरिन राख्यो. त्यार पछी सिंघल नामे ते राजाने पुत्रथयो. अनुक्रमें सिंहभट राजा गुजरी जवाथी मुंज राज्य उपर आन्यो. तेणे पोताना भाई सिंघलने उप पराक्रमवालो जाणीने कारा-प्रहमां नाख्यो. तिथलने श्रीभोज नामे पुत्रथयो. तेना जन्म वखते मुंज कोई निामित्ति. यानी पासे तेनुं भाग्य वल जोवरान्युं. निमित्तिए लग्नवळ जोइने कह्युं के 'आ भोजकुमार पचाश वर्ष सात मास अने त्रण दिवस सुधी गौडदेश सिंहत दक्षिणदेशनुं राज्य भोगनवंशे." आम्माणे सांभळी मुंजराजाना मनमां आन्युं के, आ भोजकुमार छतां मारा पुत्रने राज्य मळशे नहीं, तेथी भोजकुमारने मारी नाखवा माटे चंडालोने सोंपी दछं. आवुं विचारी तेने चंडाळने सोंप्यो. चंडाळो ज्यारे तेने वघस्थाने लई गया, त्यारे तेओए कह्युं के, तुं इष्टगुं स्मरण कर. वाळक भोजे वुद्धिथी विचारी पोताना काका योग्य एक पत्र उपर आ प्रमाणे काल्य लखी आप्युं.—

मांधाता च महिपति कृतयुगालंकार भुतो गतः सेतुर्येन महोदधौ विरचितः क्वासौ दशास्यां तकृत। अन्ये चापि युधिष्ठिरप्रभृतायो याता दीवं भूपते नेकै नापि समं गता वसुमति नूनं त्वया यास्यति॥ १॥

" कृतयुगना अर्छकार रूप मांधाता पण चाल्यो गयो, जेणे समुद्र उपर पाज बांधी इती एवा रावणना मारनार रामचंद्र पण चाल्या गया, ते शिवाय बीजा युधिष्टिर विगेरे राजाओ पण गया, परंतु ते कोइनी साथे आ पृथ्यी गइ नथी पण मने लागे छे के, तमारी साथे तो जरुर पृथ्वी आवशे. " चंडाळोने द्या आव-वायी मोजने वचान्यो अने पेलुं पत्र लइ जइ तेमणे राजाने आप्युं. ते वांची मुंज राजा तत्काळ क्रोध रहित थइ गयो. अने सत्वर मोजकु मारने बोलावी युवराजपद आप्युं.

एकदा मुंजराजा भोजकुमारने राज्य सोंपी तैलंग देशना राजानी साथे युद्ध करवा गयो. तैलंग भूपे तेने जिती लड़ कारागृहमां नाख्यो. त्यां मृणालवती नामनी ते राजानी वेन हती तेनी साथे वार्ता विनोद करतां मुंजने संवंध जोडायो. भोजकुमारे मुंजराजाने छोडाववा माटे कारागृह सुधी एक सुरंगा खोदावी अने ते

द्वारा मुंजने आववानो मंकेत आप्यो. एक वस्ते मुंजराजा दर्पणमां पोतानुं स्वरूप जातो हतो, तेवामां मृणाळवती पछ्वाडेथी गुप्तरीते आवी पोतानुं मुख पण तेमां जावा लागी. ते वस्ते पोताना मुख उपर जरावस्थानो आ भास थतो जोइ ते सेंद्र करवा लागी तेने मुंजे कहुं के, "हे मृणालवती, यौवन चाल्युं गयुं तेनो तुं सेंद्र कर नही; कारणके साकरने खांडीए तो पण तेनी मीठाश जती नथी." आ प्रमाणे तेने शांत करी मुंज पोताना स्थान पत्ये जवाने तैयार थया. परंतु मृणालवतीमां लुब्ध होवाथी तेने कहुं के, प्रिया! आहिथी एक सुरंगा करावी छे, तेवडे हुं मार्र स्थानमां जाऊं छुं, माटे जो तमे साथे आवो तो हुं तमने त्यां लइ जइने पटराणी करीश. मृणालवती वोली के, कांत! थाडीबार राह जुओ, हुं विचार करी लऊं. पछी तेणे विचार कर्यों के, जो आ त्यां जशेतो जरुर मने छोडी देशे, माटे ते आहंज रहे तेवी गोठवण करुं. आवुं विचारी तेणे आ सवर ग्रप्त रीते पोताना भाइने आपी दीधा. ते स्ववर जाणी राजाए तेनी उपर विशेष जापतो कर्यों; अने तेने प्रत्येक घरे भिक्षा मागवा मोकल्यो—घरेघरे भिक्षा माटे भटकतां कंटाली गयेलो मुंज आ प्रमाणे वोलतो हतो—

"इथ्यो पसंग मत को करो, तिय विसास दुःख पुंज; घर घर तिम नचावोओ, जीम मक्कड तिम सुंज ॥ १ ॥

" स्तीनो प्रसंग कोइपण प्राणी करको नहीं. तेमां पण स्ती जातिनो विश्वास तो दुःखना ढगछारूपन छे. जुओ तेनो विश्वास करवाथी मर्कटनी जेम आ मुंजने ते घरेघरे नचावे छे. '' वणी मोटा यतिओना वेप छोडी जेओ आ दासी जेवी स्तीओ उपर राचे छे, ते पुरुप आ मुंजराजानी पेढें घणा पराभवने सहन करेछे. वळी जे बुद्धि पछवाडे उपजी, ते जो पेहेळी उपजी होत तो आ मुंजराजानी मृणाळवतीए जे दशा करी ते थात नहीं."

एक वखते मुंजराजे कोइने घर जह स्त्रीनी पासे भिक्षा मागी, ते द्वीए गर्वथी मुंजनो तिरस्कार कर्यो, त्यारे मुंजराजे कह्युं के, "हे धनवती स्त्री, आतारा घरमां गायोना समुद्दने जोइने तुं आटलो वधो गर्व कर नहीं, केमके आ मुंजराजान चौट्सो ने छोंतेरे हाथीओ चाल्या गया छे." एकदा अक्षयतृतियाने दिवसे मुंज राज कोइने घर भिक्षा मागवा गयो त्यां कोइ गृहस्थनी स्त्रीए घीना विदृए टपकतो मांडो हाथमां लइ मोटावडे वटकुं भर्यु. ते जोइ मुंज वोल्यो के—

रेरे मंडक मा रोदी यदहं खंडितो न या। राम रावण मुंजाद्या स्त्रीभिः केके न खंडिताः॥ "अरे मांडा ! मने आ स्त्रीए खंडित कर्यों एम धारी तुं रो नहीं, कारणें राम रावण अने मुंज विगेरे कया कया पुरुषोंने स्त्रीओए खंडित नथी कर्या ?" आगळ जतां कोइ घरमां कोइ स्त्री रेंटीयो फेरवती हती तेनो अवाज सांभळी मुंज वोल्यों के—" अरे रेंटीआ, आ स्त्री तने भमावे छे तेम जाणी तुं रो नहीं, कारण के स्त्री कोने नथी भमावती ? एक खोटा कटाझना आक्षेप मात्रमां भमावी दे छे तो जेने इस्तवडे आकर्षण करे तेनी तो वातज भी करवी !" वळी ते चंद्रलेखानी जेवी कुटील छे, संध्यानी जेवी क्षण राग धरनारी छे अने नदीनी जेम निचा स्थळमां जनारी छे तेवी स्त्री सर्वथा छोडी देवा योग्य छे."

आ प्रमाणे मुंजराजाने घणा वखत सुधी भिक्षा मंगावी छेवटे तेने यमरा-

उपर प्रमाणे छौंकिक शास्त्रमां पण स्त्रीनो संग त्याज्य कहेलो छे तो जैन शास्त्रमां तो विशेष प्रकार कहेल छे एम समजबुं. स्त्रीना संगनो जे भावथी त्याग करे तेनेज खरा ब्रह्मचारी जाणवा, पण वांघेला घोडानी जेम निरुपाये ब्रह्मचयी पाळे तेने ब्रह्मचारी न जाणवा केमके वांघेला घोडा द्रव्यथी विषय सेवन नथी करता पण मनमां वारंवार घोडीनुं स्मरण कर्या करता होवाथी ते वहु कर्म वांघे छे. अश्व ब्रह्मचर्य उपर एक दृष्टांत कहेवाय छे ते आ प्रमाणे—

कोइएक राजानी पासे कोइ पुरुषे आवी एक उत्तम अश्व भेट कर्यो. राजाए तेने अश्वशाळामां बंधाव्यो. एकदा ते अश्वशाळानी पासे एकांत प्रदेशमां कोइ मुनि चातुर्मास रह्या. ते हंमेशा धर्मोपदेश करता हता, तेमां अन्यदा तेमणे कहुं के, "शील वतना द्रव्य अने भावथी चार भेद थाय छे. तेमां प्रथम भेद द्रव्यथी शील पाले पण भावथी नही. वस्तुनी अप्रिप्ति भवंदवनी पेटे. तेमज नैषधपित नळ राजा ए दिशा छीधी. त्यार पछी पूर्वे लाखो वर्ष सुधी सुख मांग भोगव्या छतां द्रम्यंति साध्वीन जोइ पाछो राग चसन थयो. दमयंतीए पोताना वतनुं खंडन थशे एवा भयथी अनश्य कर्छी. पृत्यु पामीने देवता थइ. पछी नळ राजाने प्रतिवोध करवा आवी. नळराजा पण पृत्यु पामी वैश्रमण (कुंवेर) मंडारी थयो. कह्युं छे के, "विधिथी धर्म आदयों होय पण जो तेमां सरागपणुं रहे तो ते धर्म मुक्तिने साधे नहीं. नळराजा स्थवीर (वृद्ध) थया छतां पण सरागपणुं रहेवाथी ते उत्तराधिपित कुवेर नामे लोकपाळ थयो." आ प्रथम भेद जाणवो. वळी कोइ जीव द्रव्यथी स्त्री संग (स्पर्शमात्र) करेपण भावथी शिळवतपाळे छे. एक श्रय्यामां सुनारा विजय शिष्ठ अने विजय राणीनी जेम तेमज

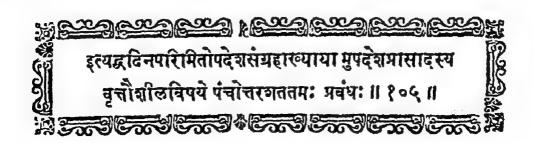
१ रागनो पक्षे रंग एवो अर्थ समजवा. २ तजवा योग्य.

पाणी ग्रहण समये जंबू स्वाभीनी जेम ए वीजो भेद जाणवो. कोइ जीव द्रव्य अने भाव वंनेथी शीळ पाळे राजीमतो अने महोनाथजीनी जेम ए त्रीजो भेद जाणवो. अने केटलाक जीवो द्रव्यथी पण शीलपाळे नहीं अने भावथी पण पाळे नहीं. आ भंगमां अमारा जेवा घणा जीवो जाणवा. ए चोथो भेद समजवो." ए प्रकारे धर्मदेशनाने सांभळता एवा अश्वे मनवडे ब्रह्मचर्य ग्रहण कर्छी.

एक वसते राजाए तेनी ओलाद वधारवाने माटे ते अश्वने घोडी साथे संगम कराववा मांड्या पण ते अश्वे ते कार्यमां उत्साइ कर्यो नहीं. तेथी राजाए विस्यय पामी गुरु पासे जहने पुछ्युंके भगवन, आ अश्व घोडीने केम सेवतो नथी ? मुनि वोल्याके, तेणे मनथी ब्रह्मचर्य वत ब्रहण कर्यु छे. राजा वोल्यो—महाराज ! आ अश्वे तो प्रथम घणीवार काम सेव्यो छे, फक्त आ वस्ततेज आम करे छे; पण मारा वीजा घणा अश्वो छे के जेमणे जन्मयी ब्रह्मचर्य पाळ्युं छे, तेथी आ अश्व करतां तो तेओ उत्तम अने प्रशंसनीय जणाय छे. गुरु वोल्या के, हे राजा, एम न समजवुं. कारणके ते तारा वांथेला घोडा ब्रह्मचारी कहेवाय नहीं केमके तेओ प्रतिदिन विषयने याद कर्या करे छे. तेथी तेओमां शीलनो एक अंस पण गणाय नहीं. वळी आ अश्व तो ब्रह्मचर्यी स्वर्गने पामशे ते सांभळी राजा प्रतिवाय पाम्यो. अने तत्काळ श्रावक धर्म अंगीकार कर्यो.

आ कथानी उपनय मनमां धारीने जे माणी ब्रह्म वतने ग्रहण कर तेने खरे खरे। गुणी समजवी.

ह्वे आ व्रत संबंधी वर्णननो उपसंहार करे छे के, " जण लोकमां पण ब्रह्म चारी जेवो कोइ गुणी नथी, माटे हे भन्नी प्राणीओ ! तमे ए ब्रह्म वतनुं आ चरण करो." आ चोयुं व्रत सूत्र वचनने अनुसारे घणा प्रवंधोधी में विवरी वतान्युं छे, ते लखनाथी मने जे पुण्य उपार्जन थयुं होय तेवडे मने सर्वदा सुखनी प्राप्ति थाओ



# श्री उपदेश प्रासादे.

# अष्टम स्तेम प्रारंज.

व्याख्यान १०६ मुं.

हवे परिग्रह परिमाण नामे पांचसुं वत कहे छे.

परिग्रहाधिकं प्राणी, प्रायेणारंभकारकः । स च दुःखखनिर्नूनं, ततः कल्प्या तदल्पता ॥ ว ॥

#### व्याख्या

"प्राणी प्राये अधिक परिग्रहने माटे आरंभ करे छे, अने ते प्राणीने किये करीने दुःखनी खाण रूप थाय छे. तेथी परिग्रहनी अल्पता करवी जोइए." समस्त प्रकार धनादिनुं जे ग्रहण करवुं ते परिग्रह कहेवाय छे. तेवा परिग्रहनंडे जे अधिक होय ते परिग्रहाधिक प्राणो कहेवाय छे. तेवा प्राणी प्राये अधिक आरंभ करे छे. कोइ प्राणी स्ंप्रतिराजानी जेम तेवा परिग्रह (धन) ने ग्रुभ क्षेत्रमां पण वावे छे. तेथी मुळ श्लोकमां प्रायेण—प्राये करीने ए पदनुं ग्रहण करेछुं छे. ते परिग्रह निश्चये दुःखनी खाण रूप छे माटे तेनी अल्पता (ओछापणुं) करवी. एट्छे आटछुंज धन राखवुं पत्रो नियम करवो. अहि एवी भावना छे के, परिग्रह वे प्रकारनो छे. वाह्य अने आस्यंतर. धनधान्यादि ते वाह्य परिग्रह अने रागद्वेपादि ते आम्यंतर परिग्रह, अथवा सचित्त अने अचित्त एवा पण परिग्रहना वे प्रकार छे. सचित्त पश्च दासी (द्वीपद, चतुष्पद) विगेरे अने अचित्त वस्न आगूषण विगेरे तेमां गृहस्थे (श्रावके) सचित्तादि परिग्रहना अपरिमाणपणाथी विराम पामवुं. एट्छे के ते संवंधी इच्छानुं परिमाण करवुं ए पांचमुं अणुव्रत कहेवाय छे.

हवे तेत्रं फळ बतावी परिग्रहनो नियम करवानी आवश्यकता बतावे छे. परिग्रहमहत्वाद्धि, मज्जत्येव भवांबुधौ। महा पोत इव प्राणी, त्यजेत्तरमात्परिग्रहम् ॥ २॥

#### व्याख्या.

"जेम घणा भारथी वहाण समुद्रमां हुवी जाय छे, तेम प्राणी परिम्रहना घणा वोजायी आ संसार सागरमां हुवी जाय छे. तेथी ते परिम्रहने तजी देवो. "अर्थात् परिमाणवगरना परिम्रहने धारण करनार प्राणी तेवा वहाणनी जेम आ संसारमां एटले के नरकादिक दुर्गतिमां हुवी जाय छे. तेथी गृहस्थे घनादिक परिमाह विषे इच्छा परिमाण करवं. ते विषे विद्यापितनो प्रबंध छे ते आ प्रमाणे—

#### विद्यापतिनी कथा.

पोतनपुर नगरमां सूर नामे राजा इतो. ते नगरमां विद्यापतिनामे धनाद्य अने जैन श्रेष्टी रहेतो इतो. ते श्रेष्टीने श्रृंगार्मंजरी नामे स्त्री इती. एकदा विद्या पितने स्वप्नमां लक्ष्मीदेविए आवीने कहुं के, " हुं तारा घरमांथी आजशी दशमे दिवसे चाली जइश. " विद्यापति तरतज जागी गयो. अने 'हुं निर्धन थइ जइश' एवी चिंता करवा लाग्यो. " आ लोकमां जे प्राणी प्रकृतियी (मूळथी) निर्धन होय तेने तेवी पीडा यती नथी के जेवी पीडा द्रव्य मेळव्या पछी निर्धेन थयेलाने थाय छे. " शृंगारमंजरिए पतिने उद्वेगनुं कारण पुछयुं. त्यारे तेणे स्वप्ननुं स्वरूप कही बताव्युं. अने जणान्युं के, "आलोक्यां जेनी पासे घन होय तेने शत्रु पण स्वजन याम छे अने दरिद्रीने स्वजन होय ते पण शत्रु थाय छे. जे अपूज्य छतां पूजाय छे, जे अमान्य .छतां मान पामे छे अने जे अवंद्य छतां वंदाय छे; ते धननो प्रभाव छे. " श्रृंगार मंजरी वोली-"स्वामी तमे शामाटे खेद करो छो. रुहमी धर्मवडेज स्थिर थाय छे. ज्यांसुघी पांचमुं परियद्द परिमाणवत न लिधुं होय त्यांसुघी त्रण मुबननी स्मीना परिग्रह्थी जे पाप थाय ते अविरातिवडे लाग्या करे छे." आवा प्रियाना वचनथी विद्यापितए पांचमुं वत अंगीकार कर्युं अने सात क्षेत्रमां लक्ष्मी वापरवा मांडी. आठ दिवसमां सर्व लक्ष्मी वापरी नाखी. आठमा दिवसनी रात्रीए तेणे विचार्यु के, हवे लक्ष्मीविना मातःकाळे याचकोने मुख शीरीते वतावीश काशे, तथी विदेशमां चाल्या जवुं तेज उत्तम छे. आवी चिता करतो ते सुइ गयो. निद्रामां पोतानुं घर लक्ष्मीथी परिपूर्ण तेना जोवामां आव्युं. जायत थयो एटले प्रत्यक्ष लक्ष्मीने जोइने तेण संघ काढी चतुर्विध संघने शत्रुंजयनी यात्रा क्राव्वामांधन व्यय करवानो संकल्प कर्यों. हवे ज्यारे नवमो दिवस पुरो थयो त्यारे तेणे विचार्य के, आवती काल दममो दिवस छ तथी कदि छश्मी जवानी होय तो भछे सुबेशी जाओ, आवुं विचारी ते सुइ गयो. लक्ष्मीए स्वप्नमां आवीने कह्युं के, हुं तारा पुण्यथी विशेष वधीने तारा घरमां स्थिर थइ छुं, कारजके,-

त्रिभिव धैसिमिमांसै स्त्रिभः पसैसिभिर्दिनैः। अत्युत्र पुण्य पापाना मिहैव फलमश्तुते ॥

" अति उम्र करेला पुण्य अने पापनुं फळ त्रण वर्षे, त्रण मासे, त्रण पखवा-डीए अथवा त्रण दिवसे आहेंज प्राप्त धाय छे. " एम शास्त्रमां कहेलुं छे. वळी ते विषे श्रीहर्ष कवि छले छे के, 'संपत्ति अने विपत्ति पूर्व पुण्यना वैभवना वंधयी अने नाश्यी माप्त थाय छे. अर्थात् पुण्य वैभवना बंधयी संपत्ति छे अने पुण्य वैभवना नाश्यी विपत्ति माप्त थाय छे; तेथी ए संपत्तिने सुपात्रना कर कमलमां अर्पण करवी. कारणके ते विधिए वतावेलुं तेनुं शांतिक पृष्टिक कर्म छे. अर्थात् संपत्तिने जो सुपात्रमां अपाय तो ते विपत्तिने अटकाववामां शांतिक पुष्टिक कर्मरुप थाय छे." माटे हे अष्टी! हुं हवे तारा घरमांथी नीकळी शकुं तेम नथी. तेथी यथेच्छ रीते मने भोगव जे. विद्यापतिए जाजत यह पोतानी प्रियाने कह्यं, िये! लहमी आपणा घरमां स्थिर यह छे, परंतु जो तेथी आपणा पांचमा व्रतनो भंग थाय तेम होय तो आपणे तेने छोडीने आहिंथी चाल्या जइए. स्त्रीए तेम करवावी संमति आपी एटले ते दंपित प्रातःकाळे घर छोडीने चाली नीकक्या.

नगरनी वहार नीकळताज पंचदिव्यथी राज्य मळ्युं. मंत्री विगेरे प्रार्थना करीने विद्यापतिने राज भुवनमा छइ गया. तेणे व्रत भंगना भयथी राज्याभिषेक कर्वानी नापाडी तेवामां आकाशवाणी यह के, " अरे श्रेष्टी ! अद्यापि तारे भोग्य कर्म छे, तेथी छङ्मीनुं फल ग्रहण कर. " आ प्रमाणे सांभळ्युं एटले तेणे राज्य सिंहासन चपर श्रीवीतरागनी प्रतिमा वेसारी, मंत्रीओने राज्य कार्य सोंपी दीधुं अने न्यायपूर्वक जे द्रव्य आवे ते वधुं जिन नामथी अंकित करवा मांडयुं. पोते

ग्रहण करेलों नियम छोड्यो नहीं.

अनुक्रमे पोताना पुत्रने राज्य उपर बेसारी पोते दीक्षा लड्ने देवलोके गया. त्यांथी च्यवी पाच भव करीने विद्यापाति श्रेष्टी मोक्षपदने प्राप्त थयो.

" आ प्रमाणे विद्यापितनुं दृष्टांत सांभळी धर्मनी स्पृहानाला भन्य प्राणीओए परिग्रह परिमाण रूप पांचर्युं वत ग्रहण करवामां तत्पर थवुं."

इत्यद्वदिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायांमुपदेशमासाद्रंथस्यवृत्तौ पंचम परिग्रह परिमाणवतानिषये षष्टोत्तरशततमः प्रवंशः ॥ १०६ ॥

# व्याख्यान १०७ मुं.

हवे वर्जवा योग्य पांचमा वतना पांच अतीचार कहे छे.

धनधान्यस्य कुप्यस्य गवादेः क्षेत्रवास्तुनः । तारस्य हेम्रश्च संख्यातिकमोऽत्र परिग्रहे ॥ १ ॥

#### व्याख्या

" १ धन धान्य; २ सामान्य धातुना पात्रादिक; ३ गाय विगेरे पशुओ तथा दासदासीओ; ४ क्षेत्र तथा वास्तु; ५ रुपुं अने सुवर्ण-तेनी परिमाण करेली संख्यानो जे अतिक्रम-ते पांच अतिचार छे. "

धन चार प्रकारनुं छे. १ गणिम, गणी शकाय तेवुं जायफळ, सोपारी विगेरे. २ घरिम, तोलनी धारण करीने वेची शकाय देवुं-केशर गोळ विगेरे. ३ मेटा, मापीने वेची शकाय तेवुं-घी, तेल, लूण, विगेरे. अने ४ परिच्छेटा, छेदिने-अथवा परिक्षा करीने वेची शकाय तेवुं-रत्न वस्त्र विगेरे. धान्य एटले डांगरिवगेरे चोविश प्रकारनुं धान्य. ते चार प्रकारना धन अने चोविश प्रकारना धान्यना करेला प्रमाणनो जे अिक्स ते प्रथम अतीचार. एटले तेनो मुडा माप विगेरेथी परिमाण वांधीने नियम करेलो होय तेना मोटा मूडा विगेरे वाधवा ते. इति प्रथम अतीचार.

कुप्य-एटले सोनारुपा शिवायनी त्रांबुं, कांसुं, पीतल विगेरे घातु, तेना पात्रो, माटीना वांसना अने काष्ट्रना पात्र तथा इळ विगेरे पदार्थों, शञ्ज, मांचा अने गालमसूरीआ विगेरे घरनो उपस्कर (घरवकरी) तेनुं परिमाण संख्यादिवडे थाय छे. जेमके आटलां थाळी, पात्रो अथवा कचोळां विगेरे राखवा. एवी नियमित संख्या राखी होय तेनो अतिक्रम करवो, संख्या वरावर राखवामाटे पात्र भांगीने मोटां कराववा विगेरे. ते वीजो कुप्यातिक्रम अतिचार कहेवाय छे. इति द्वितीय परिमहातिचार.

गाय विगेरे पशुओ, वळदो, भेंसो, आदि शब्दथी, वे पगा दास दासी विगेरे तथा चार पगा प्राणीओ पाडा विगेरे अने हंस, पोपट विगेरे पक्षिओनो समुह जाणवो. तेनी करेली संख्यानो अतिक्रम-ते गवादिअतिक्रम-जेमके अमुक संख्या प्रमाणे गाय, महिषी, घोडी, दास दासी विगेरे राखेलां होय तेमना गर्भथी थयेला वच्चां होय ते परिमाणयी अधिक संख्याए थता होय छतां न गणवा ते अतिचार. इति वृतीय गवादि परिग्रहातिचार.

हवे क्षेत्र एटले घान्यनी उत्पत्तिनी मूमि. ते सेतु, केतु, अने उभय-एवा भेद्यी त्रण प्रकारनुं छे. तेमां जेमां रेंटविगेरेथी पाणी पवाय ते सेतु क्षेत्र, जे वरसा-दना पाणीथी नीपजावाय ते केतु क्षेत्र अने ते वंने प्रकारे जेमां जळपवाय ते उभय क्षेत्र. वास्तु एटले घर विगेरे, तथा गाम नगर विगेरे, तेमां गृहादि त्रण प्रकारना छे. खात, उच्छित अने खातोच्छित-तेमां जे भूमि गृहादि ( मंयरा विगरे ) ते खात, मेहेल माळ विगरे ते उच्छित, अने मूमिगृह तथा तेनी उपर रहेला घर ते खातो-च्छित. ते क्षेत्र तथा वास्तुनी करेला परिमाणधी अधिक अभिलापावडे नानां मोटां करी संख्या सरखी राखवी चच्चेथी वाड के भित काढी नाखवी ते क्षेत्रवास्त इति चतुर्थ क्षेत्रवास्तु प्रमाणातिक्रम अतिचार.

हिरण्य ते सोनुं अने रजत ते रुपुं तेनुं परिमाण कर्युं होय तेथी अधिक थये छते स्त्री पुत्रोने आपी देवुं-तेना निमित्तनुं टराववुं, ते सुवर्ण रुप्यातिक्रमनामे परि-ग्रह्नो पांचमो अतिचार थाय छे. इति परियहनो पांचमो अतिचार.

आ पांचमा अणुव्रतमां ए पांच अतीचारनो त्याग करवो, कारणके अतिचार लगाडवाथी वतनी मलिनता थइ जाय छे. अहि एवी भावना छे के, विवेकी मनुष्ये मुख्य वृत्तिएतो धनधान्यादि परियह जे प्रथम पोतापासे होय तेनो पण संक्षेप करी नाखवो. परंतु जो तेम करवानी शक्ति न होय तो इच्छा परिमाण तो अवश्य करतुं. कारणके तेनुं पोतानी इच्छा प्रमाणे परिमाण करतुं ते तो सर्वने सेहेलुं छे. अहि कोइ शंका करे छे के, घरमां तो सो रुपीया पण न होय अने इच्छा परिमाणमां हजार, लाख विगेरेनी परिमाणनी मोकळाश राखे तो तथी शो गुण थाय ? तेना समाधानमां कहे छे के, जे परिमाण वांध्युं तेथी अधिक द्रव्यनी इच्छा न करवी, तेज मोटो गुण छे. कारण के जेम जेम अधिक द्रव्य मेळववानी इच्छा, तेम तेम अधिक दुःख छे. घरमां सुखे निर्वाह चालतां छतां जे माणस अधिक अधिक धन उपार्जन करवा पवर्ते छे ते निरंतर अनेक कलेशने अनुभवे छे. ते विषे सिंदूर प्रक्रणमा कहुं छे के-" आ प्राणी जे मोटी अटवीमां भटके छे, विकट देशमा भमे छे, गहन समुद्रमां पेसे छे, अतुल कलेशवाळी खेती खेडे छे, कृपण स्वामीनी सेवा करे छ, अने धनथी अंध थयेली वृद्धिवाळो गर्जेद्रोनी घटाथी दुश्चर एवी रणसूमिमां मरणने पण स्वीकारे छे. ते वधुं लोभनुंज चेष्टित छे. " तेथी जो परियह अलेप होय तो अलपदुःख अने अल्पांचता रहे छे, ते विषे धर्मशास्त्रमां छखे छे के--

> जहजह अप्पो लोहो, जहजह अप्पो परिग्गहारंभो । तहतह सुहं पवछइ, धम्मस्सय होइ संसिद्धि ॥

"जेम जेम अल्प लोम अने जेम जेम अल्प परिग्रहारंम, तेम तेम सुख वृद्धि पामे छे अने घर्मकार्यनी सिद्धि थाय छे." तेथी कोइपण मकारे इच्छानो मसार अटकावीने आ वतने स्वीकारवं. आ वत विषे पृथ्छ श्रावकनो प्रवंध छे—

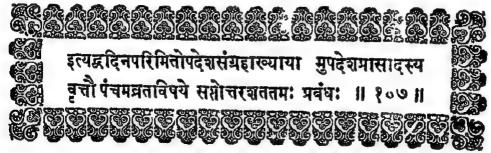
### पेथड श्रावकनी कथा.

कांकरेजनी नजिकना एक गाममां पेथुड नामे एक उर्ध्वकेश (ओसवाळ) जातिनो भलो वणिक रहेतो हतो. तेने पृद्धिनी नामे पत्नी हती. तेमने इंडाण नामे एक पुत्र थयो. ते वालक दरिद्र अवस्थाने लीधे दुःखी थतो इतो. एवामां श्रो धर्मघोष नामे आचार्य त्यां पधार्या. तेमनी पासे पांचमुं परिग्रह परिमाण व्रत अंगिकार करतां पेथंडे एक हजार द्रव्य उपरांत वधारे द्रव्य मारे राखवुं नहीं, एम कहुं; एटले गुरुए कहुं के-" ज्ञान अने चेष्टावडे तमारुं भाग्य वहु मोदं छे एम जणाय छे माटे हे आवक ! एटलाज द्रव्यथी तमारे शुं थशे ?" पेथड बोल्यो-" भगवन् ! हमणा तो मारी पासे कांइपण द्रव्य नथी. पण कदि आपना कहेवा प्रमाणे आगळ मळे तो मारे पांच लाख उपरांत द्रव्य धर्म मागे खर्ची नाखवुं." तेनी दृढता जोइ गुरुए तेने ते प्रमाणे पचलाण कराव्युं. त्यारपछी दरिद्रावस्थानुं दुःख वृद्धि पामतां पुत्रने सुंडलामां मुकी माथे उपाडीने ते माळवा तरफ चाल्यो. अनुक्रमे ते देशना मुख्य गाममां पेसतां आडो सर्पने उत्तरतो जोयो, एटले ते अटकीने डभो रह्यो. तेवामां एक शुकनवेत्ता त्यां आवी चड्यो. तेणे पेथडने पुछयुं के-केम उभी रह्यो ? तेणे सर्पने आडो उतरतो बताव्यो. शुकनज्ञाताए सर्प तरफ दृष्टि करीने जोयुं तो तेना मस्तक उपर कालदिव (चकली) ने वेठेली जोइ, तेथी तत्काळ ते वोल्यो के, " जो तुं अटक्यावगर चाल्यो गयो होत तो तने माळवानुं राज्य मळत तथापि आ शुकनने मान आपी हजु अंदर प्रवेश कर. आ शुकनवडे तुं महा धनवान् थइश. " शुकन शास्त्रमां कह्यं छे के, " जो गामथी नीकळतां डावो खर थाय, सर्प जमणो थाय, अने डावी तरफ शीयाळ वोले तो स्नी स्वामीने कहे छे के, स्वामीनाथ! साथे कांइ भातुं छेशो नहीं, आ शुक्रनज भातुं आपशे."

पोताने थयेला शुकननुं फळ सांभळी पेथड गाममां गयो. त्यां गोगा राणाना मंत्रीने घर सेवक थइने रह्यो. एकदा राजाए घणां अश्वो वेचाथी लीघा, तेनुं धन आपवाने मंत्रीने कह्युं, एटले मंत्रीए कह्युं के, मारीपासे धन नथी. एटले राजाए कह्युं के, धन क्यां गयुं ? नामुं वतावो. मंत्री दिग्मूद थइ गयो. तेथी कांइ बोली शक्यो नहीं. तत्काळ राजाए पहेरामां बेसायों. आ खबर मंत्रीनी स्त्रीने थतां तेणीए ते वृत्तांतपेथडनी आगळ जणाव्यो. पेयड राजानी पासे आव्यो अने बोल्योंके, स्वामी !मंत्रीने जमवा मोकलो. राजाए कहुं के, नामुं आप्यावगर मोकलीं नहीं. पेथंडे कहुं के, स्वामी ! एक वर्षनो हिसाव हुं आपींश. हुं पेथंड नामे तेनो सेवक छुं. पछी राजाए तेने छुटो कर्यों. मंत्री मोजन करी पाछो राजा पासे आव्योः त्यां पेथंडे युक्तियी आखा वर्षनो हिसाव राजा पासे रजु कर्यों. राजाए पेथंडने चतुर जाणी पोतानो मंत्री बनाव्योः तेथी अल्प समयमां पेथंडनी पासे पांच लाख द्रव्यनी संपत्ति एकटी यह गई. त्यारपछीं जे अधिक लाभ थयो तेवडे तेणे चोवींश तीर्थंकरोना चोराशी प्रासादो कराव्या. पोताना गुरु त्यां पघार्या त्यारे तेमने नगरमां प्रवेश करावतां चोतेर हजार द्रव्य वापर्युः वत्रीश वर्षनी वय यह एटले शिलवत ग्रहण कर्युः श्रृंजयथी गीरनार सुधीनी एक ध्वजा सोनेरी रुपेरी पट्टावाळी चडावी. वावन धडी प्रमाण सुवर्ण देवद्रव्यमां आपींने इंद्रमाळ पहेरी. अने सिद्धागिरि चपर श्री ऋषभदेव प्रभुना चैत्यने एकविश घडी सुवर्णवंडे मटीने जाणे सुवर्णनं शिखर होय तेवुं सुवर्णमय वनाव्युं. आ प्रमाणे तेणे घणुं द्रव्य धर्म कार्यमां वापर्युः.

" आ पांचमुं जे परिश्रह प्रमाण नामे वत छे ते धर्मने विषे संपत्तिनुं एक महत् स्थान छे, तेने संपादन क्रीने जेम पेथड श्रावके स्थाने स्थाने समृद्धि अने सुख

संपादन कर्यु, तेम तमे पण ते व्रतने दृढताथी धारण करवावडे करो."



# व्याख्यान १०८ मुं.

हवे परिग्रह परिमाण व्रत ग्रहण न करवाथी शुं दोष प्राप्त थाय ते कहे छे.

श्चता परित्रहक्केशं, मन्मणस्य गतिं तथा। धर्मान्वेषी सुखार्थी वा, कुर्यान्न च परिग्रहम्॥

व्याख्या.

रा परिश्रहथी थतो क्रेश अने तेथी थयेली मंगण नामना शेढनी गति सांभ॰ स्रीने घर्मने शोधनारा अथवा सुखार्थी पुरुषे (घणो) परिश्रह राखवी नहीं सम्मण शेढनो प्रवंध नीचे प्रमाणे छे—

राजगृह नगरमां श्रेणिक नामे राजा हतो, तेने चिल्लणा नामे पनी हती, एक वखते अर्घ रात्रे चेछणा गोखमां वेढी हती, तेवामां नदीना पूरमां तणाइ आवता काष्ट्रने वहार खेंची काढता एक पुरुष विजलीना प्रकाशथी तेना जोवामां थान्यो. ते जोइ तेणीए श्रेणिकराजाने कहुं के, " हे स्वामी ! तमे पण मेघनी जेम भरेलानेज भरो छो तमारा नगरमां आदो गरीव स्थितिनो माणस छे, तेनी तो तमे चिंता पण नथी करता. आ तो तमारी मोटी चतुराइ छे ! " आवा प्रियाना वचन सांभळी श्रेणिके माणस मोकली ते गरीव माणसने वोलावीने पुछ्युं के अरे तुं कोण छुं अने शामाटे अत्यारे नदीमांथी काष्ट खेंचे छे ? ते वोल्यो के-हुं मंमण नामे वणिक छुं.मारे घेर वे वळद छे, तेमां वीजा वळदनुं एक शीग्डुं ओछुं छे,ते पूरुं करवा माटेज आ प्रयास छे. आ प्रमाणे सांभळी राजा आश्चर्य पाम्यो अने कौतुकथी देवी साथे ते विणकने घर गयो. घरने त्रीजे माळे सुवर्णना वे मोटा वृषभ तेणे राजाने वताव्या. तेना शींगडा रत्न जडित इता ते जोइ विस्मय पामेला राजाए देवींने कहुं, प्रिया, आपणे घेर आवुं एक पण रतन नथी तो आने शुं आपवुं ? मंमण वोल्यो-स्वामी, आ शीगडाने माटे मारा पुत्रो वाहाणवटीनो व्यापार करे छे. मारे घर कोइ चोळा अने तेल विना कांइ खातुं नथी. जो हुं वीजो व्यापार करुं तो मारे दुकान विगेरे छेवी पड़े अने तेमां खर्च थइ जाय तेथी आ वर्षा समयमां रात्रे नदीमांथी काष्ट काढी, तेने वेची द्रव्य उपार्जन करं छुं:-आ प्रमाणे तेनी वेहद कुपणता जोइ राजा मस्तक घूणावतो पोताने घर गयो अने ममण शेठ छेवट सुधी अपूर्ण मनोरथवाळो रही मृत्यु पामीने नरके गयो.

#### इति मम्मण प्रवंधः

"आ प्रमाणे केटलाएक महा पापी अपरिमित परिग्रहनी इच्छावडे नरके जाय छे. तथी परिग्रहनुं परिमाण करवुं, ते उत्तम छे." ते विषे शास्त्रमां कहुं छे के, "सगर राजा पुत्रोथी द्वप्त थयो नहीं, कुचिकर्ण गायोना धणथी संतोष पाम्यो नहीं, तिलक्षेष्ठी धान्यथी द्वप्त थयो नहीं अने नंदराजा सोनाना ढगलाओथी पण द्वप्त थयो नहीं."

सगर राजानो प्रवंध आगळ कहेवामां आवशे. वाकीना त्रण प्रवंध हुंकामां आ प्रमाणे—मगध देशमां कुंचिकण नामे श्रेष्टी हतो. तेने लाखो गायो हती. अनेक गोवालो दिवसे दिवसे तेमने ऊछेरता हता. ते हंमेशा नव नवी गायोना दुध दहीं खातो हतो. एक वखते दुध विगेरे अतिशय खावाथी आकुळ व्याकुळ थह गायोनाज ध्यानथी मृत्यु पामीने तिर्थेच योनिमां उपन धयो.

अचलपुरमां तिलक नाम श्रेष्टी इतो. तेणे एक समये दुकाल पडवाथी पूर्वे करेला धान्यमां मोटो लाभ उपार्जन कर्यो. त्यारपछी फरीने वली कोइ निमित्तिकना चन्नथी अगाउथी दुकाल पडवानो जाणी तेणे गामोगाम धान्यना मोटा कोठार भराव्या अने घणा धान्यनो संग्रह कर्यो. तेमां अनेक कोडोगमे जीवोनी हिंसा थती तेने पण तेणे गणी नहीं. दैवयोंगे ते चषमां पाछळथी घणो वर्षाद पड्यो जेथी दुकाल पड्यो नहीं. अने तेना कोठारोमां पाणी पेशी जवाथी धान्य फुली गयुं एठले तेना सर्व कोठारो फुटी गया. धान्य वधुं तणावा लाग्युं. ते देखी तेनुं हृदय फाटी गयुं अने मृत्यु पानी नरके गयो.

पाटलीपुर नगरमां उदायी राजा राज्य करतो इती. तेना कोइ श्रत्रुए साधुने वेपे आवी तेने मारी नाख्यो. तेने कांइ संतान नहोतुं, तेथी तेनुं राज्य शून्य थइ गयुं. आ अवसरमां ते नगरने विषे एक नापित अने वेश्या थकी उत्पन्न थयेली नंद नामे छोकरो इतो, तेने एवं स्वप्न आव्युं के, तेणे पोताना आंत्रडाथी पाटलीपुरने वींटी लीधुं. पातःकाले तेणे पोताना उपाध्यायने ए स्वप्ननुं फळ पुछ्युं, जपाध्याए कहुं के, ' आ स्वप्नथी तने आ नगरतुं राज्य मळशे. ' तरतज जपाध्याये पोतानी पुत्री तेने परणावी नंद कन्यानुं पाणियहण करी मोटा महोत्सवथी पोतान घर जतां राजमार्गे आच्यो, तेवामां राज्यना मंत्रीओए मंत्रवडे अधिवासित करेला हायीए आवीने नंदनी उपर कळश ढोळ्यो; एटले तत्काळ तेने राज्य उपर वेसार-वामां आव्यो. केटलाएक सांमतो नंदनी आज्ञाने मानवा न लाग्या, एटले नंदे मेहेलनी भीत उपर चीतरेला सुभटोनी सामुं जोयुं. तथी तत्काळ तेओए भींतथी भूमिपर उतरीने तेमांथी केटलाकने मारी नारुया. पछी सर्व सामैता तेनी आज्ञा मानवा लाग्या. नंदे घणा आकराने अणघटता कर लड़ घणुं द्रव्य एकदुं कर्युः अने समुद्रने कांठे तेणे ते द्रव्यवडे सोनानी नवडुंगरीओ करावी. त्यारथी तेनुं नवनंद , एवं नाम पृथ्वीमां मरुघात थयुं. मजा उपर घणो जुलम करवाथी ते अपकीर्त्तनुं अने पापनुं भाजन थड्ने नर्के गयो.

" द्रव्य अल्प होय पण जो ते विश्वोपकारी थायतो ते प्रशंसा करवा योग्य छे, पण नंदराजानी जेम उपकारवगरनुं अपिरिमित द्रव्यपण शा कामनुं र जुओं र जगतमां जेवो हिमरुचि (चंद्र) प्रीतिकारक छे तेवो हिमसमूह नथी अने जेवो अल्पजल आपनार पण भेघ प्रिय छे तेवो घणां जलवाळो समुद्र प्रिय नथी."

हत्यद्वित्या हिन्या हिन्या हिन्या है हत्यद्वित्या पिताये हे संग्रहारू या मुपदेशमासाद मं यस्य हिन्या परिम्रहपरिमाणवतिषये अष्टोत्तरशततमः प्रवंधः॥ १०८॥ हिन्य हिन्य

ं( '१८६ !) ब्यारूयान १०९ मुं-सोम अने शिवदत्त नामे वे भाइओनो प्रवंध.

# व्याख्यान १०९ मुं.

परिग्रहमां आशक्त एवो पुरुष अनेक प्रकारना पापो करे छे, ते विषे कहे छे.

परिग्रहार्थमारंभमसंतोषा द्वितन्वते । संसारवृद्धिस्तेनैव गृह्णीततदिदं व्रतम् ॥ १ ॥

#### व्याख्या

"परिग्रहने अर्थे असंतोष होवाने लीधे आरंभ वधे छे अने तेथी संसारनी वृद्धि थाय छे माटे आ परिग्रह परिमाणवत अवश्य ग्रहण करवुं." एटले के धनने माटे ज्यारे संतोष थतो नथी त्यारे तेथी थयेली तृष्णानी वृद्धिवडे खेती विगेरे अनेक प्रकारना आरंभो करे छे. सगा वंधुनो एण वध करवा तत्पर थाय छे अने तेवा आरंभवडे संसारनी वृद्धि थाय छे, तेथी परिग्रहनो अवश्य नियम ग्रहण करवो. आ विषे वे भाइओनो प्रवंध छे ते आ प्रमाणे—

### सोम अने शिवदत्त नामे वे भाइओनो प्रवंध.

अवंती नगरीमां स्नोम अने शिवदत्त नामे वे भाइ रहेता हता, तेओ द्रव्य मेळववाने माटे सौराष्ट देशमां गया. त्यां अनेक जातना अधर्म तथा कर्मादानना व्यापारों करीने तेमणे केटलुंक द्रव्य उपार्जन कर्यु. पछी ते द्रव्यनी वांसळी कटीए वांधी वंने भाइ पोताना नगर तरफ चाल्या. मार्गमां वारा फरती वांसळी पोत-पोतानी केडे वांधतां ते ज्यारे मोटा भाइनी केडे हती त्यारे तेने विचार थयों के, जो हुं आ अनुज वंधुने मारी नाखं तो पछी मारी पासे कोइ भाग मागे नहीं. आवा कुविचारथी ते अनुजवंधुने लड्ने गंधवती नदीने तीरे आव्यो. एटले तेने विचार थयों के, अहो, आ धन केवुं अनर्थकारी छे के जेथी मने आवो कुविकल्प थयो. तेथी आनो त्याग करवों तेज योग्य छे. आवुं घारीन तेणे द्रव्यनी वांसळी नदीना धरामां नाली दिधी. अनुज वंधुए पुछ्युं के, भाइ! आम केम कर्युं ? त्यारे तेणे पोतानो माटो अभिमाय जणाव्यो. एटले नाना भाउए पण कह्युं के, तें घणुं सारुं कर्युं के जेथी मारी दुष्टवुद्धि पण नाश पामी. पछी तेओ पोताने घर आव्या.

हवे पेली द्रव्यनी वांसळी कोइ मत्स्य गळी गयो. ते मत्स्यने कोइ माछीए जाळमां पकड्यो. ते मत्स्य ते बंनेनी माताए वेचातो लीधो. माताए पातानी पुत्रीने

आप्या. मत्स्यने विदारतां तेणीए द्रव्यनी वांसळी दींडी, एटले, तत्काळ तेणे खोळामां गोपवी दीघी. माताए पुछ्युं, खोळामां शुं छे ? तेणीए कहुं के, कांइ नथी. पछी माता शंकाने लीघे जेवी ते जोवा तेनी पासे आवी तेवो पुत्रीए छरीनो घा कर्यों, तेथी तेनी माता घायछ थइने मृत्यु पामी. तेवामां तेना वंने भाइओ घरे आव्या. तेमणे बेनना खोळामांथी पडती पेळी द्रव्यनी वांसळी जोइ तेथी तत्काळ विचार्युं के, अहो, द्रव्य केवुं अनर्थदायक छे ! पछी वैराग्य पामीने तेओ गुरु पासे गया. त्यां गुरुना मुखथी आ प्रमाणेनी वाणी सांभळी—" आं जगतमां तृष्णारुपी खाण एवी ऊंडी छे के ते कोइथी पूरीशकाती नथी, तेमां मोटा मोटा पदार्थो नाखीए तो तेथी ते उलटी वधारे खोदाय छे. तृष्णावाळो जीव धन प्रगट करवाने माटे घणा पापो करे छे, पण तेथी शुं तेने कांइपण सुख थाय छे ? नथी थतुं. केम के पाप द्रव्यथी शुं सुख होय ? वळी धर्म ऋदि, भोग ऋदि अने पाप ऋदि-एम त्रण प्रकारनी ऋदि कहेवाय छे. तेमां धर्म ऋदि ते के जे धर्म कार्यमां उपयोगी थाय छं. भीग ऋदि ते के जे शरीरना भोगमां वपराय छे अने पाप ऋदि ते के जेथम कार्यमां वपराती नथी तेम शारिरीक भोगमां पण वपराती नथी पण मात्र अनर्थरुप फळनेज आपे छे. तेवी ऋदि पूर्वकृत पापना योगे माप्त थाय छे अने पुनः पाप करावे छे, ते उपर एक नीचे प्रमाणे दृष्टांत छे. ते सांभळी-

वसंतपुरमां ब्राह्मण, क्षत्रीय, वणिक अने सोनी ए चार ज्ञातिना चार मित्रों हता, तेओ द्रव्य मेळववाने माटे देशांतर चाल्या. मार्गमां रात्रि पडतां एक उद्या-नमां वड वृक्षनी नींचे तेओ विश्रांत थया त्यां ते वृक्षनी शाखा साथे छटकतो एक सुव-णंनो पुरुष तेओना जोवामां आव्यो. ते सुवर्ण पुरुष वोल्यो के, हुं अर्थ छुं पण अनर्थने आपनार छुं. ते सांमळी तेओए भय पामीने तेनो त्याग कर्यो. परंतु सोनीथी तेनो छोभ मुकायो नही, एटले सोनीए ते पुरुषने 'पड' एम कह्युं एटले ते पड्यो. सोनीए वीजाओथी छानो तेने एक खाइमां गोपव्यो, पण सर्वनी दृष्टि तेनापर पडी. पछी आगळ चाळतां वे जण कोइ गामनी बहार रह्या अने वे जणने गाममां भोजन लेवा मोकल्या. जे वे वहार रह्या हता तेमणे चिंतव्युं के, आपणे गाममां गयेला वे आवे के तेमने मारीने पेखुं सुवर्ण लेखुं. वे जणा जे गाममां गया हता तेमणे चिंतव्युं के, आपणे अन्नमा विष मेळवीने छइ जवुं. के जे खाइने बहार रहेला वे मृत्यु पामे तो आपणने वेने वधुं सुवर्ण मळे. आवा विचारथी तेओ विषाच छइने वहार आव्या. जेवा तेओ पेला वेनी पासे आव्या के ते बेनए संकेत प्रमाणे तेमने खन्नथी मारी नाल्या. पछी पेलुं विपाच तेओ जम्या के जेथी तेओ पण पृत्यु पामी गया. आ प्रमाणे चारे मृत्यु पाम्या. आवी जे ऋदि ते पार्याई सम्जवी.

#### (१८८) परिग्रहमां आंशक्त, पुरुषो अनेक मकारना पापो करे छे ते विषे.

जपरनुं दृष्टांत सांभळी भिव प्राणीओए इंमेशां पोतानी समृद्धि धर्म कार्यमां वापरवी-मारी पासे अल्प धन छे इत्यादि कारणने रूइने धर्म कार्य करवामां विरुंत्र करवो नही. कहुं छे के,

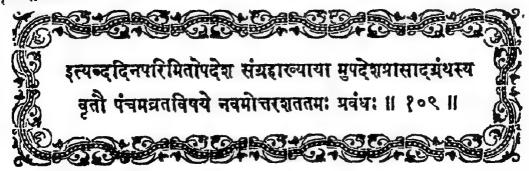
देयं स्तोकादिपस्तोकं, नव्यपेक्षो महोंदयः। इच्छानुसारिणी शक्तिः कदा कस्य भविष्यति॥

" थोडामांथी थोडुं पण धर्म कार्यमां वापरवं, वधारे द्रव्य थवा उपर मूलतवी राखवं नहीं. कारण के, इच्छा प्रमाणे द्रव्यनी शक्ति क्यारे थशे तेनो कांइ निश्रय नथी." वळी कहुं छे के,

स्वकार्यमद्यकुर्वीत, पूर्वान्हे वा परान्हिकं। नहि मृत्यु प्रतिक्षेत, कृतं वा सनया कृतं॥

"आवती कालनुं काम आजे करवुं, अने मध्यान्हें करवानुं होय ते सवारे करवुं, कारणके मृत्यु प्वीराह जोतुं नथी कं, आणे कर्यु छेके नथी कर्युं ? "केटलाएक जीवो छपणताथी द्रव्यनी हानिना भयवडे धर्म कार्यमां द्रव्यनो व्यय करता नथी तेमज परिग्रहनुं परिमाण पण करता नथी तेथी तेओ चक्रीपणा विगरेनी उंची पद्गीन पामता नथी. परंतु अतिलोभथी पराभव पामीने अशोक चंद्रनी जेम नरके जाय छे. घणा पुरुषो धननी इच्छाथी पारावार दु:खने पाम्या छे. आ प्रमाणे गुरुना वाक्यथी ते वंने भाइओ प्रतिवोध पाम्या. पछी ते वंने भाइओ पांचमुं व्रत अंगीकार करी, निरतिचारपणे पाळीने स्वर्गे गया.

"जे प्राणीओ परिग्रहमां आशक्त होय छे तेओ निर्द्यपणाथी असत्य, चौर्य विगेरे अनेक पापी आचरे छे, अने तेथी करीने तेओ संसार समुद्रमां अधो-गमन करे छे, माटे उत्तम पुरुषोए आ वतने अवश्य ग्रहण करबुं के जेथी शिवप-दन प्राप्त थवाय."



इत्युक्तं सातिचारं पंचमनतम् ।

### व्याख्यान ११० मुं. हवे छढुं दिग्विरति रुप बत कहे छे. दशदिग्गमने यत्र, मर्यादा कापि तन्यते ॥ दिग्विरताख्यया ख्यातं, तद्गुणव्रतमादिमम् ॥ १ ॥ व्याख्या

"जेमां दश्रदिशाओमां जवाने कांइक मर्यादा करायछे ते दिगित्रति नामे पहेलुं गुणवत कहेवाय छे." एटले जे वतमां पूर्व, अग्निं, दक्षिण, नैऋति, पश्चिम, वायन्य, उत्तर, ईश्चान, अधो अने उर्ध्व-ए दश्च दिशाओमां गमन करवाने कांइएण मर्यादा कराय छे ते प्रथम गुणवत छे. अने ते उत्तर गुणक्षप व्रत कहेवाय छे. गुणवतनो अर्थ एवो छे के, अणुवतनो गुण जे उपकार तेने अर्थे जे थाय ते गुणवत कहेवायः तेमां

पहेलुं गुणवत दिजिन्दिति नामे छे. आ वत छेवाथी पापस्थानोनी पण विराति थाय छे ते कहे छे—गमनागमननी मर्यादावडे स्थावर जंगम जीवोना मर्दननी निवृत्ति थती होवाथी तपावेला लोढाना गोळा जेवा गृहस्थे आ वत ग्रहण करवामां आदर करवो—एटले त्रस स्थावर प्राणीओनी गमनागमन करवाथी हिंसा थाय छे, ते हिंसानो गमनागमन वंध थयेल स्थानमां रोध थवाथी गृहस्थने आ वत आदरवा योग्य छे. हिंसानो निषेध थतां असत्यादिक वीजा पापोनो पण निषेध थइ जाय छे. अहं कोइ शंका करे के, त्यारे आ वत साधुए पण ग्रहण करवं जोइए, तो तेना

खुलासा माटे गृहस्थने लोढाना तपावेला गोळानुं विशेषण आपे छे के-गृहस्थ आरंभ परिग्रहमां निरंतर तत्पर होवाथी ते ज्यां जाय, खाय, सुवे, अथवा कांइ व्यापार करे, तेमां तपेला लोढाना गोळानी जेम अनेक जीवोनुं मर्दन करे छे, अने साधु तेम करता नथी. कारण के ते तो पंचसमितिने त्रिगुप्तिमान् होय छे, तथी तेमने ए

दोप लागतो नथी.

आ वतनो स्वीकार करनारा गृहस्थने त्रस तथा स्थावर जीवोने अभयदान तथा छोभ समुद्रनी नियंत्रणा इत्यादि महान् छाभ थाय छे. गृहस्थ तथावेछा छोढाना गोळा जेवोछे. ते विषे सर्वज्ञ भगवंते सिद्धांतमां पण कह्युं छेके—"अग्निना तणखाओथी अकाशमान छोढाना गोळा जेवो गृहस्थ निरंतर होय छे. अने अविरातिरूप पाप तेने पोताने तेमज समस्त जीवोने पण बाळे छे." बळी कह्युं छे के, " जीव सर्व स्थाने पोताना देहवडे जोके गमनागमन करतो नथी तो पण ते अविराति होवाथी तेने अविरातपणाथी बंधातुं पाप निरंतर छाग्या करे छे." बळी पूर्वभवमां तजी दीधेछा देहवडे जो कोइएग जीवोनो वध थाय छे तो तेनुं पाप पण अविरितवेडे ज्यां नवी देह धर्यों होय त्यां ते जीवने लागे छे. पण जो पूर्वनो देह विनाश पामी जाय तो अथवा वत लिधुं होय तो तेथी तेवा पापनो वंघ थती नथी; माटे विरित करवामांज कल्याण छे, एवं वृद्ध पुरुषोनुं वाक्य छे.

हवे पेहेला गुणवतनुं फळ कहे छे—'' जे माणी दिग्विराति वत लड्ने गमना-गमनमां संकोच करे छे, ते प्राणी सिंहनी जेम संसारनुं उल्लंघन करवामाटे फाळ मारवानी आरंभ करे छे." आ विषे सिंहश्रेष्टीनी कथा छे ते आ प्रमाणे—

वसंतपुर नामना नगरमां कीर्त्तिपाल नामे राजा हतो. तेने भीम नामे एक पुत्र हतो अने जेना हृदयमां जैन धर्मनी वासना हती एवो सिंह नामे एक श्रेधी मित्र हतो. ते पोताना कुमारथी पण राजाने विशेष पिय हतो. एक वखत कोइ एक पुरुषे राज सभामां आवीने कहुं के, हे देव ! नागपुरना राजा नागचंद्रने रत्नमंजरी नाम एक रुपवती कन्या छ. --तेना एक रोमरायना दर्शन करवाथी पण वे ब्रह्मनो अनुभव थाय छे अने तेनुं दर्शन न थवाथी वे कामदेवथी पूर्ण थवाय छे. ते कन्याने तुल्य कोइ वीजी कन्या नथी. ए कन्या तमारा कुमारने योग्य छे एवं चितवी तेमणे मने विश्वासी जाणी तमारी पासे प्रार्थना करवा मोकल्यो छे. माटे तेने वरवा सारु तमारा कुमारने मारी साथे मोकलो. दूतना आवा वचन सांभळी राजाए पोताना भिय मित्र सिंहने कहां, मित्र ! आपण वेनेमां कांइपण अंतर नथी, माटे तमे कुमारने लइने नागपुर जाओ अने तेनो विवाह करी आवो. सिंह श्रेष्टीए अनर्थ दंडना भयथी राजाने कांइ पण उत्तर आप्यो नहीं. एटले राजा जरा क्रोध लावीने बोल्यो के-शुं तमने आ संवंध रुचतो नथी ? श्रेष्टी बोल्यो, "राजेंद्र! मने रुचे छे पण में सो योजन उपरांत जवा आववानो नियम लीधो छे अने इहांयी नागपुर सवासो योजन दूर थाय छे. तेथी वत भंग थवाना भयथी हुं त्यां जइश नहीं." आ प्रमाणे साभळतांज घी होमवाथी अधिनी जेम राजाना कोपाप्रिनी न्वाला विशेष प्रज्वलित यइ अने ते वोल्यो के-अरे! शुं तुं मारी आज्ञा नहीं माने? तने ऊंट उपर वेसारी सहस्र योजन सुबी मोकली दहरा. सिंह वोल्यो-स्वामी! हुं तमारी आज्ञा प्रमाणे करीश. ते सांभळी तरत राजा हर्प पाम्यो. पछी पोताना पुत्रने सैन्य साथे तैयार करी अने सिह श्रेशीने सर्व कियामां आगेवान ठरावी कुमारसाथे रवाने कर्यो. मार्गमा सिंहे मितवोध आपीने भीमकुमारनी संसार वासना तोडी नाखी. सो योजन चाल्या पछी सिंह श्रेशे आगळ चाल्यो नही एटले सैनिकोए एकाते कुमारने जणाव्युं के, कुमार ! अमने राजाए गुप्तपणे आज्ञा करी छे के, जो

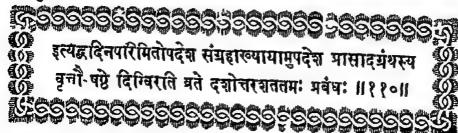
सिंहश्रेष्टी सो योजनथी आगळ न चाले तो तमारे तेने वांधीने नागपुर लइ जवो. आ विचार कुमारे पोताना धर्मगुरूने निवेदन कर्यों सिंहे राजकुमारने कहूं, कुमार! आ असार संसारमां प्राणीने श्ररीरपण पोतानुं यतुं नधी तो वीजुं कोइ शेनं याय ? माटे हुं तो अहीं पादपीपगम अनजन करीज. पछी तेओ मने बांधी छइ जइने शुं करशे आ प्रमाणे कहीने सिंह श्रेष्टी सिहनी जेम अनज्ञन लेवा चाल्यो. कुमार पण तेनी साथ गयो. एवामां रात्रि पडी. सैनिकोए कुमारने अने सिंहने जोया नही एटले तेओ चारे तरफ तेमने शोधवा लाग्या. एम करतां थोडे दूर आवेला कोइ पर्वतउपर ते बंने तेमना जोवामां आन्या. परंतु दीक्षा अने अनज्ञन आदरी बेडेला . तेमने जोइ सैनिको प्रमाण करीने वोल्या के—हे महाशयो ! अमारो अपराध क्षमा करो, पण हे स्वामी ! आ खबर जाणी महाराजा अमने घाणीमां घालीने पीली नाखशे. आ प्रमाणे तेमणे घणा कालावाला कर्या, तथापि तेओ जरा पण क्षोभ पाम्या नहीं. कहां छे के, " संतोषरुपी अमृतवृडे तम थयेला योगी भोगनी इच्छा करता नथी. कारण के ते तो माटी अने सुवर्णमां अने शत्रु तथा मित्रमां एक वृद्धि राखे छे."

अनुक्रमे आ खबर कीर्त्तिपाळराजाना सांभळवामां आवी तेथी तेने बहु क्रोध चड्यो. तेण निश्रय कर्यों के, कुमारने वाधीने परणाववी अने सिंहने शत्रुनी जेम मारी नाखवो. आवा विचारथी राजा तेमनी पासे आव्यो. त्यां तो व्याघादिक आणीने ते बंनेना चरणनी सेवा करतां जोइ राजा आश्वर्य पाम्यो अने विचार्युं के आ बंनेने भक्ति वचनोथीज बोलाववा-आवुं चितवीने तेणे चाटु वाक्योथी तेमने बोलाववा मांड्या परंतु दृढ प्रतिज्ञावाळा तेओ किचित् पण चलित थया नही. अनु-क्रमे मासोपवासने अंते केवलज्ञान पामी सुरासुरोए नमेला ते वंन मुक्तिने प्राप्त थया. तेमनं मुक्ति प्रयाण जाणी कीर्त्तिपाळ राजाए उंचे स्वरे कहुं के-

न योजन शतादुई यास्यामि तव निश्चयः। असंख्यैयोंजनैर्मित्रमां मुक्त्वा किमगाच्छिवं॥

44 हे मित्र ! तारो एवो निश्रय हतो के, मारे सो योजनथी वथारे जबुं नहीं पण आ वलते तुं मने मुकीने असंख्य योजन दूर रहेला शिवनगरमां केम चाल्यो गयो ? " आ प्रमाणे विलाप करतो की चिपाळ राजा पोतानी राजधानीमां आज्यो

पाण त्याग करवा ते सारा पण स्वीकार करेला वतनो त्याग करवो ते सारुं नहीं आवो दृढ विचार राखी भन्य प्राणीओए सिह श्रेष्टीनी जेम दिग्विरति वत ग्रहण करवं.



# व्याख्यान १११ मुं.

हवे दिग्विरित वतना पांच अतिचार कहे छे. स्मृत्यंतर्धानमूर्ध्वाधिस्तर्य ग्भाग व्यतिक्रमाः। क्षेत्रवृद्धिश्च पंचेति स्मृता दिग्विरितवते॥ १॥

#### व्याख्या

"करेला क्षेत्र प्रमाणनुं मुली जबुं, उंचानीचा अने तिरला निमेला क्षेत्रनुं उर्लु-घन करवुं, अने धारेली क्षेत्र मर्यादामां वधारो करवो-ए पांच छहा वतना आतंचार छे" भावार्थ एवो छे के, कोइए पूर्व दिशामां सो योजननुं प्रमाण वांध्युं होय पण जती वलते व्याकुळता विगेरेथी तेने विस्मरण थाय के, में पचाशनुं परिमाण कर्युं छे के सो नुं १ एवा संदेहथी ते पचासथी वधारे गमन करे तोपण तेने दोष लागे ते प्रथम अतिचार कहेवाय. जो के ए अतिचार सर्व अतिचारने साधारण छे पण पांचनी संख्या पूर्ण करवाने पृथक् ग्रहण करेलो छे तथी ग्रहण करेलां व्रतनुं वार्वार स्मरणं करवुं, कारण के सर्व आचरण स्मरण मूल छे. नियमित करेला क्षेत्रथी बीजें लाभ थतो होय तोपण ते त्यजी देवो. इति प्रथम आतिचार.

वीजा अतिचारमां उर्ध्वभागे एटले पर्वतना शिखर विगेरे पर जवाने करेली नियम, त्रीजा अतिचारमां अधो भागे एटले अधो गाम, भूमिगृह तथा कुप विगेरेमां जवानो करेलो नियम अने चोथा अतिचारमां तिर छुं पूर्वादि दिशाओंमां जवामाटे करेलो नियम, जे नियम वे त्रण योजनथी मांडीने अनुकुळता प्रमाणे करेलो होय तेनुं उद्घंपन करवुं. ए वीजो, त्रीजो अने चोथो अतिचार जाणवो. इति द्वितिय, हतीय अने चतुर्थ अतिचार.

जपर कहेला उर्घ्य दिशा विगरेना त्रण अतिचारोने माटे आवश्यक निर्युक्तिनीं वृत्तिमां आवो विधि कहेलों छे के, उर्घ्य दिशाए गमन करवानुं परिमाण करेलुं होय अने वानर के कोइ पक्षी वस्ताभरण लड़ने ते परिमाणथीं वधारे दूर जाय तो नियमने लीधे त्यां जवुं कल्पे नहीं; पण जो ते वस्तु त्यांथी पडे अने कोइ लावी आपे तो यहण करवी कल्पे. आवी हकीकत हाल पण संमेतिगिरि विगरे उपर संभवे छे. एवीरीते सर्व दिशाओं माटे जाणी लेवुं. योग शास्त्रमां तो एम कहुं छे के— जे प्रमाणे वत्त लीधुं होय ते प्रमाणे वर्त्तवुं.

हवे पांचमो अतिचार कहे छे-पूर्वीदि दिशानुं क्षेत्र नियमित कर्यु होय तेमां वधारो करवो. एटले जुदी जुदी दिशाओमां सो सो योजन जवानो नियम लीवेली

#### इपदेशमासदिभाषान्तर-भाग र जी. स्तंभ ८ मी. (१९६)

दीय पछी कोइ कार्य आवी पडवायी अयवा छोभने छीघे अमुक दिशाएं सी योजनयी वधारे जाय अने बीजी दिशामां तेंटला योजन घटाडे; आ प्रमाणे करें इंग प्रमाणमां वधारी करवी. ए भंगाभंगरूप पांचमी अतिचार छे. इति पंचम अतिचार.

उपर प्रमाणे दिग्विरति व्रतमां पांच अतिचार चर्जवा. एवत उपर क्रुमारपाळ

राजानो प्रबंध छे ते आ प्रमाणि-

#### कुमारपाळ राजाना प्रबंध.

एक वलते पारणमां श्रीहेमाचार्ये कुमारपाळ राजानी पासे छडा जत विषे आ प्रमाणे कहीं के, " हे राजेंद्र ! विवेकी पुरुषोए सर्वदा जीव दयाने माटे छटुं वत ब्रह्ण करवुं. तेमां पण वर्षाकाळमां तो विशेषपणे ब्रहण करवुं. कहीं छे के—

### द्यार्थं सर्व जीवानां, वृष्टीस्वेकत्र संवसेत्।

" सर्व जीवौनी दयाने माटे वर्षारुतुमां एक स्थानेज रहेवुं." पूर्वे श्रीनेमि प्रभुना उपदेश्वथी श्रीकृष्णे पोताना नगरनी वहार जवानो नियम लीधो हतो. आ प्रमाणे सांभळी चौलुक्यसिंह कुमारपाळे पण एवो नियम लीधो के, "सर्व चैत्योना दर्शन करवा जवुं अने गुरुने वंदन करवा जवुं, ते शिवाय हुं प्राये नगरमां पण भमीश नहीं." तेनो आ नियम सर्वत्र प्रख्यात थइ प्रसरी गयो।

आ नियमनी वार्चा वातमीदारो द्वारा गीम्ननीना राजा शक्यवनपति ( बादश्राह )ना जाणवानां आवी तेथी तत्काळ गुर्जर देशनी समृद्धि श्रहण करवाने अने
ते देशने भागवाने यवनपतिए जड़ाइ करी. आ वृत्तांत चरलोकोथी जाणी गुर्जरपति
कुमारपाळ मंत्री सहित मोटी चितामां पड्यो. पछी उपाश्रये आशी गुरुने कहुं के—
भगवन् ! जो हुं ते यवनपतिनी सामे नहीं जाउं तो तेथी देशनो भंग तथा लोकने
पीडा थशे अने जो जाउं छुं तो मारा नियमनो भंग पाय छे. गुरु वोल्या—हे राजन् !
तमे आराधेलो धर्मज तमारी सहाय करशे, माटे चिता करशो नहीं—आ प्रमाणे
राजाने घीरज आपीने श्रीहेमचंद्रसूरि पद्मासन करी कोई इष्टदेवतानुं ध्यान घरवा
बेटा—एक ग्रहुर्त्त व्यतित थयुं तेनामां आकाशमांथी एक पलंग उत्तरतो दीहो. ते पलंग्यमां एक पुरुष सुतो हतो, ते उटीने गुरुनी आगळ उभी रह्यो. राजाए पुछ्युं के, आ
कोनो पलंग छे ? त्यारे गुरुष जे हतुं ते यथार्थ कहुं, ते पलंगमां सुतेलो पुरुष ववन
पति बादशाह हतो, ते पलंगमांथी उटीन आसपास जोतां विचारमां पड्यो के, ते
स्थान क्यां गयुं के ज्यां मारुं सैन्य छे ? आ ध्यान घरनार कोण छे ? बळी आ
राजा पण कोण छे ? इत्यादि चितवन करतो जोइ सूरि बाल्या—हे यवनपति ! शुं
खं विचार करे छे ? जे पृथ्वी उपर पोताना धर्मनुं एक छत्र ऐक्प धारण करे, तेने

#### (१९४) व्याख्यान १११ मुं-कुमारपाळ राजानी प्रवंध.

देवतर पण सहाय करे छे. माटे जो तारे स्वंहित करवुं होय ती देवताओं पण जेनी शक्तिनुं उद्घंघन करी शकता नथी एवा आ वज्रपंजररुप धर्मात्मा राजानी शरणे जा. तत्काल यननपति भय, बद्धेग, अने लज्जाने प्राप्त थयो. पछी सूरिने प्रणाम करी श्रीकुमारपाळराजाने नम्यो. अने बोल्यो के-" हे राजन् ! मारा अप-राधने समा करो, आजयी हुं यावज्जीव तमारी साथे संधि करीश. अत्यारे मारा जीवनी रहा करीने 'जगज्जीव पालक ' एवा तमारा विरुद् ने सत्य करो. मथम तमारुं पराक्रम में सांभळ्युं हतुं पण ते मुखी 'जइने हुं अहिं आल्यो. हवे कदिपण तमारी आज्ञानुं उद्घयंन करीश नहीं. तमारुं कल्याण याओ; अने मने मारा आश्रममां पहोचाडो. " राजार्ष कुमारपाळ घोल्यो के-" हे यवन ! जो तुं तारा देशमां छ मास सुधी अमारी प्रवर्ताव तो हुं छोड़ं. तारे मारी एटली आज्ञानो अमल करवो. तेज मारी इच्छा छे. वळात्कारथी के छळथी जीव रहा कराववी एवो मारो निश्चय छे. अने एम करवाथी मने अने तने वंनेने पुण्य यहो. " यवनराज आई, ते बिल्ष्ट राजानं वचन उद्घंघन करवाने समर्थ थयो नहीं.पछी कुमारपाळ तंने पीताना मेहेलमां छइ गयो अने त्रण दिवस सुधी राखी घणो सत्कार करी, जीव दयानी शिक्षा आपीने पोताना आप्तजननी साथे तेने स्थानके पहोचाच्यो. कुमारपाळना सेवको गीझनीमां छ मास सुधी जीव रहा करावी, यवनपतिए आपेली अश्व विगेरेनी भेटो लड्ने कुमार पाळनी पासे पाटणमां आव्या. अने ते वार्ची कहीने चौ छुन्य पातन आनंद पमान्यो.

आ प्रमाणे सर्व राजाओए अने मुनिओए स्तुति करेला मार्गमां चालनारा कुमारपालराजाए सैकडो कष्ट भोगवीने पण छटा बतनुं पालन कर्युः



# व्याख्यान ११२ मुं.

लोभनो प्रसार पण छडा बतथी निवृत्त थाय छे ते कहे छे. जगदाक्रममाणस्य प्रसरहोभवारियेः । स्खलनं विद्धे तेन येन दिग्विरतिः कृता ॥ १ ॥

#### व्याख्या.

"जे प्राणी आ दिग्वरित रूप छटुं व्रत ग्रहण करे छे, ते आ जगत वधानुँ आ क्रमण करनार लोभहपी महा समुद्रनी स्वलना करे छे." भावार्थ एवो छे के, आ लोभहपी समुद्र विविध कल्पना करवाथी प्रसरे छे, ते आखा जगतने दवावे छे, कारण के, जे लोभने वश थाय छे तेने त्रण लोकनी संपत्ति अने इंद्र, चक्रवर्ती तेमज पाताळपति नागेंद्रनुं स्थान मेळववाना मनोरथ थाय छे. ए रिते ते सर्व जगतने, दवावे छे. एवा लोभहपी समुद्रनी स्खलना ते करीशके के जेणे आ दिग्वरित वत ग्रहण कर्यु होय. कारण के, ते प्रतिज्ञा करेली सीमाथी आगळ जवाने इच्छतो न होवाथी प्राये करीने करेली सीमानी वहार रहेला सुवर्ण, हपुं, अने धन धान्य विगेरेनो ते लोभ करतो नथीं; अने जेने तेवो नियम होतो नथी ते तृष्णावढे सर्वत्र श्रमण कर्या करें छे. आ विषे चाहदत्तनो प्रवंध छे ते आ प्रमाणे—

### चारुदत्तनी कथा.

चंपा नगरीमां भानु नामे श्रेष्टी रहेती हतो, तेने चारुद्त्त नामे पुत्र हतो. ते यौवनवयने प्राप्त वयो एटछे पिताए योग्य कन्या साथे परणान्यो. पण कोइ कारणने छड़ने वैराग्य आववाथी ते विषयथी विरक्त थड़ पोतानी ल्ली पासे एण जतो नहीं. अन्यदा तेना पिताए चातुर्य शीखववाने माटे तेने एक गुणिकाने घेर मोकल्यो. चारुद्त हळवे हळवे ते गुणिकापर आसक्त थयो. छेवटे तेणे वेश्याना प्रेमने वश्य थड़ पोतानुं घर पण छोडी दिधुं. अने बार वर्ष मुधी वेश्याने घर रह्यो. एक वखते तेना पिता भानु श्रेष्टीनो अंतसमय आन्यो, एटछे तेणे पुत्रने बोलावाने कह्युं के "हे वत्स! तें जन्मथी मांडीने मारुं वचन मान्युं नथी पण इवे आ छेवटनुं एक वचन मानजे ते ए के, ज्यारे तने संकट पडे त्यारे नवकार मंत्रने संभार जे." आप्रमाणे कही तेनी पिता मृत्यु पाम्यो. थोडा दिवस पछी तेनी माता पण मृत्यु पामी. चारुद्त्ते दुर्ज्यसनथी माता पितानी सर्व छङ्मी उडावी दीधी. चारुद्त्तनी ह्या तेना पिताने घेर गह.

अहीं ज्यारे धन खुटी गयुं त्यारे स्वाधीं वेत्याए तेने घरमांथी काढी मुक्यो. एटले ते सासराने घर आव्यो. सासरेथी थोडुं धन लइ कमानामाटे वाहाणे चड्यो. दैवयोगे वहाण भांग्युं, पण पुण्ययोगे पाटीयुं मेळवी कुश्रलक्षेम कीनारे आव्यो. त्यांथी पोताना मामाने घेर गयो. त्यांथी द्रव्य छइ कमावामाटे पग रस्ते चाल्यो. मार्गे घाड पड़ी एटले सघलुं द्रव्य चोर लड़ गया. पाछो दु:खी यह पृथ्वीपर भटकवा लाग्यो. एवामां कोइ योगी मळ्यो. तेणे अधीअध भाग ठरावी रस कृपिकामांथी रस लेवाने मांची उपर वेसारीने तेने उतार्थी. रसनो कुंभ भरीने उपर आव्यो एटले कुंभ छड़ने योगीए मांची कूपिकामां नाखी दीधी. चारुदच कुवामां पड़्यो ने योगी नाशी गयो. त्यां कोइ मृत्यु पामता पुरुपने तेणे नवकार मंत्र संभळाव्यो. त्रीने दिवसे चंदनघो त्यां आवी रस पीवा छागी. त्रण दिवसनो धुधातुर चारुदत्त तेने पुंछडे वळगीने घणा कप्टे बहार नीकळ्या. आगळ चालतां तेना मामानी पुत्र रुद्रदत्त तेने मळ्यो. रुद्रदत्ते कहां के, वे घेटा लड्ने आपणे सुवर्णद्वीपे जड्ए. चारुदत्ते हा पाडी एटले वे घेटा लड़ने तेओ समुद्रने तीरे आव्या. पछी रुद्रदत्ते कहां के आ वे घटाने हणीने तेना चर्मनी अंदर छरी छड़ने पेशीए. अहीं भारंड पक्षी आवशे ते मांसनी वृद्धिथी आपणने जपाडीने सुवर्ण द्वीपे छइजशे. एटले आपणे चामडाने छेदी वहार नीकळीने त्यांथी सुवर्ण लावशुं. चारुदत्त वोल्यो के-ए वात खरी पण आपणाथी जीवनो वध केम थाय ? एटलामां तो रुद्रदत्ते शास्त्रनो घा करीने एक घेटाने मारी नाख्यो. पछी जेवो बीजाने मारवा जाय छे तेवो चारुदत्ते ते घेटाने नवकार मंत्र संभळाव्यो. घेटाए अनशनवत ग्रहण कर्यु. पछी वेने जणा ते घेटाना चॅर्भनी धमणमां पेठा. एटले भारंड पशी त धमण लड्ने आकारो उड्युं. मार्गमां बीजुं भारंड मळवाथी तेनी साथे युद्ध यतां तेना मुखमांथी चारुदत्तवाळी धमण पड़ी गइ. धमण सहीत चारुदत्त एक सरोवरमां पड़्यो. तेमांथी वहार नीकळीने ते ठेकाणे देकाणे समवा लाग्यो. अनुऋमे एक चारण मृनि तेना जोवामां आव्या. मुनीने नमीने ते पासे वेठो. मुनि वोल्या-रे भद्र ! आ अमानुष स्थळमां तुं क्यांथी आव्या ? तेणे पोतानुं सर्व दुःख जणाव्युं एटले मुनिराजे छदुं वत वर्णवी बताव्युं. चारुदत्ते-प्रीतिथी ते वत ग्रहण कर्यु.

आ अरसामां कोइ देवे त्यां आवी प्रथम चारुदचने अने पछी मुनिने वंदना म्हा, ते समये कोइ वे विद्याधर ते मुनिने वांदवा आव्या हता. तेमणे पेला देवने पृछवुं के, हे देव ! तमे साधने मुकीने प्रथम आ गृहस्थने केम नम्या १ देव वोल्यों के— पूर्व पिंदप्लाद नामे ब्रह्मांचे घणा लोकोने यज्ञ करावी, पापमय बालो प्रश्मिन करके गयी हतो, (तेनी उत्पत्ति वीजा वतनी कथाना प्रसंगे कहेली छे.) ते पिंप-

छाद रुषि निरिक्तीमांथी निकळी पांच भव सुनी बकरो थयो. ते पांचे भवमां यज्ञमांज होमायो. छहे भवे पण बकरो थयो. परंतु ते भवमां आ चारुद्ते अनशन करावी नवकार मंत्र संभछान्यो. तेना महिमायी मृत्यु पामीने स्वर्गे गयो. ते हुं देव थयो छुं अवधिज्ञानथी पूर्व भव जाणीने आ मारा गुरुष आपेछा नवकार मंत्रनो महिमा कंहेवाने अने उपकारी गुरुने वांदवाने हुं आहं आन्यो छुं. पूर्वना मारापरना महान् उपकारथी में प्रथम तेने बंदन करीने पछी साधुने वंदना करी छे. आ प्रमाणेनी इंकीकत सांभळी चारुद्ते वैराय्य पामीने दीहा ग्रहण करी. अने अनेक प्रकारनी वपस्या करीने स्वर्गे गयो.

जेम चारुदत्त दिखिरति त्रत छीघेछुं न होवायी अनेक स्थाने भमी भमीने दु:स्वी थयो तेम जे माणी ते त्रत ग्रहण नहीं करे ते दु:स्वी थशे. तेथी भन्यप्राणी-

ओए छडुं दिग्विरति व्रत अवस्य ग्रहण करतुं.



# व्याख्यान ११३ मुं.

केटलाएक विकट संकट आवे तोपण आ छाउं वत छोडता नथी ते उपर कहे छे. स्वल्पकार्यकृतेऽप्येके त्यजंति तृणवद्गतम्। हढ वता नराः केचित् भवंति संकटेऽप्यहो॥ १॥

#### व्याख्या.

"केटलाएक हीनसत्वी जीवो अल्प कार्यने माटे पण ग्रहण करेला वतने तृणनी जैम छोड़ी दे छे अने केटलाएक पुरुषो संकटमां पण दृढवतवाळा रहे छे." ते विषे महानंद कुमारनी कथा छे ते नीचे प्रमाणे—

### महानंद कुमारनी कथा.

अवंती नगरीमां धनदत्त नामे एक कोटीश्वर श्रेष्टी रहेतो हतो. ते जैनधमी हतो. तेने पद्मा नामे प्रिया हती. सैकडो मनोरथ करतां तेमने जयकुमार नामे एक

पुत्र थयो. ते पुत्रना जन्म वस्तते, नाम पाडवाने वस्तते अने अन्नणाञ्चन विगेरे मंस्कान् रोमां पिताए मोटा महोत्सवो कर्या कहुं छे के— "राग, प्रेम, लोभ, अहं-कार, प्रीति, अने की त एटला स्थानोमां कोण द्रव्यनो व्यय नथी करतुं!" ज्यारे जयकुमार यावन वयने प्राप्त थयो त्यारे तेणे व्यसनासक्त यह पिताना ऐश्वर्यने उडावी दीघुं. कहुं छे के—" व्यसनरुपी अग्नमां द्रव्यरुपी घीनी आहृति पडवायी ते व्यसनाग्नि अधिक अधिक वधे छे, अने पछी ज्यारे दारिद्ररुपी जळनो योग याय छे त्यारे ते तत्काळ श्रमी जाय छे." एक वस्तते जयकुमार कोइ धनाढ्यना गृह्मां चोरी करवा गयो. त्यां अकस्मात् सर्पे दंश कर्यो. विष चडवाथी ते तत्काळ मृत्यु पाम्यो. प्रातःकाळ राजाए तेना पिताने पकडीने केद कर्यो. महाजने राजानी पासे जह तेना पुत्रनी हकीकत कहीने तेने छोडाव्यो.

धनदत्तने पहेली स्तिथी वीजो पुत्र थयो नहीं एटले ते स्तीए पोताना स्वामीने आग्रहथी कहुं के, 'स्वामी वीजी स्तिनुं पाणिग्रहण करो.' पण वळी रखे बीजो दुए पुत्र थाय एवा भयथी धनदत्ते ते वात ध्यानमां लीधी नहीं. कहुं छे के, "जेमनुं हृदय दुर्जनना दोपथी दृषित थयुं होय छे तेवा पुरुषोने एकाएक सज्जन उपर पण विश्वास आवतो नथी. उच्ण दृधर्या दाझेलो वालक दहीने पण फुंकीने पीने छे" एक दिवसे पद्माए वहु आग्रहथी कहुं के— "हे स्वामी, तमे शामाटे भय राखो छो ? वधा पुत्रो कांइ तेवा थता नथी. शास्त्रमां चार मकारना पुत्रो कहार छे—प्रथम अभिजात जे पिनाथी अधिक थाय ते, बीजा अनुजात पितानी तुल्य थाय ते, त्रीजा अपजात पिताथी कांइक न्यून थाय ते अने चोथा कुलांगार कुलां अंगाराहण थाय ते. तेओमां मथम मकारना पुत्र श्रीआदिश्वर मभु विगेरे जेवा, बीजा मकारना पुत्र सरतचकीना पुत्र सूर्ययशा विगेरे जेवा, त्रीजा मकारना पुत्र सगर चक्रवर्तीना पुत्र जनहुकुमार विगेरेजेवा अने चोथा प्रकारना पुत्र कौणिकराजा जेवा समजवा. वळी सर्व वृक्षो कांइ कांटाळा थता नथी मांटे हे स्वामी, तमे पुन: पाणिग्रहण करो."

आवा स्नीना युक्ति पूर्वक आग्रहवाळां वचनथी धनदत्ते कोइ धनवंत शहनी कुमुद्धित नामनी कन्या साथे पाणि ग्रहण कर्यु. अनुक्रमे कुमुद्धती सगर्भा यह, एकदा 'कोइए आवी रातुं कांसानुं कचोछुं छइ छीधुं' एवुं तेने स्वम थयुं. ते वार्चा धनदत्तने जणावतां तेणे कह्युं के, ' आपणो पुत्र बीजाने घर रहेशे. ' अनुक्रमे पुत्र प्रसन्थो. पूर्व पुत्रना भयथी धनदत्ते तेने एक जीणोद्यानमां जहने त्यजी दीधो. तेने छोडीने पाछा वळतां आकाशमां देव वाणी यह के हे श्रेष्टी! आ तारा पुत्रनुं तारे

एक सहस्र द्रव्यनं ऋण छे ते आपीने जा." भय पामेळा घनदत्ते तरतज तेटलुं द्रव्य छावीने त्यां मुन्युं. पछी ते बाळकने ते जद्यानना माळीए घेर लड़ जड़ पुत्र करीने राख्यो. कहुं छे के, " मनुष्यो जेनी इच्छा करता नथी तेवी वस्तु सहजमां प्राप्त करे छे अने जेनी इंमेशा इच्छा करे छे ते कदिएण प्राप्त थती नथी. अहो, विधानानुं विपरीतपणुं पण केवुं छे ?"

धनदत्त शेटने त्यार पछी पूर्वनी जेवाज स्वमंथी स्वित एवो वीजो पुत्र थयो. धनद्ते तेने पण पूर्वनी जेम छोडी दीधो. ते समये आकाश वाणी यह के, श्रेष्टी! आ कुमारनुं तारे दश हजारनुं करज छे, ते मुकीने पछी जा. तेणे तेवी रीते कर्धुं. ते त्यांग करें पुत्र कोइ धनपति छइ गयो. पछी शुभ स्वमंथी सूचित त्रीं पुत्र ययो, स्वीए घणुं वार्या छतांपण श्रेष्टी तेने खट्यानमां तजी देवा गयो. त्यां दिव्य वाणी यह के, अरे श्रेष्टी! आनी पासे तारं कोटानुकोटी द्रव्य छेणुं छे, ते छीधा वगर एने शामाटे छोडी दे छे आवी वाणी सांभळी हर्षांत थइने तेने पाछो छावी स्त्रीने अर्पण कर्यो. अने तेनुं महानंद पुर्वं नाम पाड्युं. महानंद कुमार प्रतिदिन वृद्धि पामतो सतो यीवनने पाप्त ययो. अनुक्रमे सर्व कळाओनुं पात्र थयो. बाल्यवयमांज तेणे समंकितमूळ श्रावकना वार व्रत ग्रहण कर्या. तेमां छटा दिग्वराति व्रतमां चारे दिशाए तिरछा सो सो योजननुं परिमाण राख्युं. योवन वयमां आवतां पिताए तेने एक धनाट्य श्रेष्टीनी कन्या परणावी. पछी व्यापार करतां अल्प दिवसमांज कोटी यमे द्रव्य तेणे संपादन कर्युं.

### दातन्यलभ्यसंबंधी वज्रबंधीपमी भ्रुवं । धनश्रेष्टीह हष्टांत स्निकुपुत्र सुपुत्र सुग् ॥

" आ संसारमां लेणा देणानी जे संबंध छे ते निश्चय बज्जबंघना जेशे छे. त्रेनी उपर त्रण कुपुत्र अने एक सुपुत्रवाळा धन श्रेष्टीनुं पूर्ण दृष्टांत छे. " महानंद कुमारे सात कोटी द्रव्य सात क्षेत्रमां वापर्धु.

एक वखते कोइ योगी आकाशगमनी विद्या साधवाने माटे कोइ उत्तर साधकने शोधतो इतो. तेणे महानंद कुमारने जोइने कह्युं के—हे पुण्यवान् ! तमे मने साहाय करों के जेथी मारी विद्यानी सिद्धि थाय. महानंदे ते कबुल कर्युं. अने रात्रे पर्वतना कोइ भागमां योगीनी साथे गयो. त्यां योगीना मंत्र जपना बळधी कोइ देवी प्रगट थइने बोली के, हे योगी! हुं तारा उत्तर सावधने विद्या आपुं खुं; तारा कर्ममां ते विद्या नथी. अने विधाता पण कर्ममां होय तथी अधिक आप-धाने समर्थ नथी. कह्युं छे के, ब्रह्मा येन कुलालवित्रयमितो ब्रह्मांड भांडोदरे । विष्णुर्येन दशावतारग्रहणे क्षित्रो महासंकटे ॥ रुद्रो येन कपालपाणिपिटके भिक्षाटनं कारितो । सूर्यो भ्राम्यतिनित्यमेव गगने तस्मै नमः कर्मणे ॥१॥

" जेणे आ ब्रह्मांडरुपी भाजन बनाववाने ब्रह्माने कुंभार करेली छे, विष्णुने दश अवतार लेवाना महा संकटमां नाल्यो छे, अने शिवने रंगपरीनुं पात्र लड़ शिक्षाटन करावेलुं छे. तेमज जे हमेशां सूर्यने आकाशमां भमावे छे, ते कर्मने मम-स्कार छे. " आ प्रमाणे कही ते देवी विजलीनी जेम अंतर्थान थह गह महानंद कुमारने तेवी महा विद्या माप्त थह तोपण संवरने धारण करनार साधुनी जेम तेणे ते वात कोइने जणावा दीधी नहीं. अने समुद्रनी जेम पोते करेली दिग् मर्यादानुं उल्लंघन पण कर्युं नहीं. अनुक्रमे महानंदने एक पुत्र थयो.

एक वखते ते वाळकने दुष्ट सर्पे दंश कथीं. त्यारे धनदत्त श्रेष्टीए तेने निर्विष ,करवा माटे आला शेहेरमां पडो वगडाव्यो. ते सांभळी एक विदेशी बाह्मणे कहां के, हे श्रेष्टी! अहींथी मारुं नगर एकमी दश योजन दूर छे, त्यां मारी सी घणी विद्यावाळी छे. जो कोइ तेने अहीं छइ आवे तो आ वाळक सद्यसनीवन थाय. ते सांभळी धनदत्ते महानंदने कह्यं के, हे एत्र ! विद्याना बळथी तुं सद त्यां जा अने ते लीने लइ आवा. महानंदे पोताने दि ग्विरति वतनो जे नियम छे ते कहो। धनदत्ते दरेक व्रतमां छ आगार रहेला छे ते समजावीने कहुं के आ कारणे जवामां तने दोप नथी तथापि महानंदे मान्युं नहीं. ते वात सांभळी ते नगरना राजाए आवीने कहुं के, हे महानंद ! आ नाना वाळकने जीवित आपवा जैंबो बीजो उत्कृष्ट धर्म कोइ नथी. अने तेवा धर्म कार्यमां अने तीर्थ यात्रामां एक इजार योजन जवामां पण गृहस्थने कोइ दोप लागतो नयी. तथापि महानंदे ते बात कबुल करी नहीं. त्यां रहेला वीजा अनेक लोको कहेवा लाग्या के, अरे आ महानंदनुं हृदय केवुं कठोर छे के आवी वाळहत्यायी पण ते भय मामतो नथी। महानंदे .राजाने प्रणाम करीने कहुं के, " स्वामी ! आ पुत्र मने प्राणथी पण प्रिय छ, पण तेथी मने धर्म अधिक भिय छे. माटे स्वीकार करेला वतने कल्पांते पण हुं छोडीश नहीं." ते सांभळी राजा बोल्यो-महानंद, जो तुं धर्मिष्ट ,होय तो तारुं महातम्य सर्वने बताव्य. ते समये विद्यादेवीनी वाणी थइ के-अरे कुमार ! जळनी अंजलिवडे -ते वाळकने तुं सिचन कर्य. आ सांभळी महानंदे तेम कर्यु एटले तत्काळ वाळक विष रहित थइ गयो. अने लोकोमां जैन धर्मनो घणो महिमा ययो.

एक वस्ते धनद्त्तशेदनी प्रेरणायी पोताना कुढुंबनो पूर्व भव पुछवाने माटे प्रहानंद कुमार आकाश मार्ग सीमधर प्रभुनी पासे गया. त्या प्रभुने प्रणाम करीने तेणे पोताना कुढुंबनो पूर्व भव पुछ्यों, प्रभु बोल्यान "धनपुर नगरमा सुधन नामे श्रेष्टी हतो. तेने धनश्री नामे सी हती. तेसुधन श्रेष्टीने धनावह नामे एक बाल पित्र हतो. तेओ बेने साथे व्यापार करता हता. सुधन पोताना मित्रने धन घरमा वापरतो. तेम वापरता तेणे सो सोनेया द्रव्यतेनुंबगाड्युं. बीजा कोइ एक विणिकना विश्व सोनेया आपवा नाहता ते तेणे उतावळ्यी आप्या नहीं एटले तेनी पासेज एही गर्या. त्रीजा कोइ विणक्ते सुधननुं लेणुंआपतांदश्व सोनेया आंतिथी वधारे आपी धीना. सुधनना जाणवामां ते वर्तत आवी, पण तेणे लोभथी पाछा आप्या नहीं. आज त्रण श्रुप्त आपीने यावज्ञीवित सुखी क्यों. कहुं छे के, " मूर्जीत थ्येला माणसने ते अवसरे जो एक अंजलि जळ आप्युं होय तो ते मरता वची जाय छ पण तेना मृत्यु पाम्या, पछी सो घडा पाणी रेड तोपण तेथी कांइ थतुं नथी. "

अनुक्रमें सुधन, धनश्री, तेनो मित्र, पेला, वे विणिक, अने पेलो साधमी, ए छे हैं जांगा श्रावकधमें पाली मृत्यु पामीने सीधमें देवलोकमां गया. त्यांथी चवीने ते ह्वी पुरुष धनदक्त अने कुमुद्रती नाम तारा पिता अने पेला साधमिकना जीव ते तुं. ध्यों छुं. तारा पिताने जे पेलो पुत्र थयो हतो ते धनावहनी जीव, हतो. पूर्व तारा पिताल पितान कि पेलो पुत्र थयो हतो ते धनावहनो जीव, हतो. पूर्व तारा पिताल पीतावा मित्र धनावहनी सी सोनेप्रानी हानि करी हती तथी तेण पुत्र थहने तुं सर्वस्व गुमान्युं. तेण मनमां धर्म निंदा करी हती तथी ते अल्प आयुष्यवालों ध्या. वे वचला पुत्र जे तारा पितानेथया हता, तेमनुं पूर्वभवनुं देवुं हतुं, तथी ते पचास गणुंने हजार गणुं आपवुं पड्युं. आ कुमुद्रतीए पूर्वभवमां एक वखते पीताना घरनी महिषा (भेंस) ने वे पाडा अवतर्या हता त्यारे पुत्र खुध्यान कुर्यु हतुं के, जो कोइ आ वे पाडाते हरी जाय तो सार्क, आवा दुध्यानथी आ भवमां तेने जनमतान वे पुत्रनो कियोग थ्यो. "

आ प्रमाणे श्री सीमंघर प्रमु पासेथी पूर्वभव सांभळी प्रहानंद क्रमार घणी आनंद पाम्यो, अने निःसंदेह थड़ने पोताने घर आज्यों त्यां ते सर्व वृत्तांत तेण मातापिताने जुणाज्यों. ते सांभळी तेना मातापिता वराग्य पामी दीक्षा लड़ने स्वर्ण प्रमा महानंद कुमारे पोताना पेला वे सहोद्र वंघुने शोधी काढी धर्म प्रमाड्यों. पछी

पोतेयोग्य समये दीक्षा लड़ माहेंद्र देवलाकमां देवता थयो। त्यांथी चवीन सिद्धिने पामशै।
"आ प्रमाणे भन्य प्राणीओए जेमां दिशाओनो घणो संक्षेप कराय छै तेवा दिग्निरित वतने स्वीक्रारी कष्टमां पण पोतानी बुद्धि निश्चल राखी धनदत्त शेंडना पुत्र महानंद कुमारनी जेम ते वतनुं पालन करवुं।"

इत्यद्भित्पितोपदेश् संयहारूयायामुपदेश प्रासादयंथस्य वृत्ती दिग्विरति वतविषये त्रयोदशोत्तरशततमः प्रबंधः॥११३॥ ( २०२ ) ध्याख्यान ११४ मुं-भोगोपभोग नामे बीजां गुण वतं विषे.

# व्याख्यान ११४ मुं.

हवे भोगोपभोग नामें बीजं ग्रणव्रत कहे छे.

सकृत्सेवोचितो भोगो ज्ञेयोऽन्नकुसुमादिकः।
सुद्धः सेवोचितस्तूपभोगः स्वणीगनादिकः॥ १॥

#### व्याख्या

" एक वलत सेवंबा योग्य अन्न, पुष्प विगेरे तें भोग कहेवाय अने वार-, वार सेववा योग्य सुवर्ण, स्त्री विगेरे ते उपभोग कहेवाय छे. " आ भोगोपभोग नामनुं बीजुं वत, भोग्यी अने कुर्भथी वे प्रकारनुं है. तेमां भीग वे प्रकारनी हे. जे एक वार कोटामां क्षेपन करवा विगेरेथी भोगवाय ते भोग जेवा के, आहार। पुष्प विगरे अने जे वारंवार शरीरना वाह्य भागयीज भोगवाय ते उपभोग जेवा के सुवर्ण, ह्नी विगरे-आ भोगोपभोग वत भोगववा योग्य वस्तुओनुं परिमाण करवार्थी याय छे. कह्युं छे के-" जेमां यथाशकि भोगोपभोग वस्तुनी संख्या विगरेनुं परि-माण याय ते भोगोपभोग मान नामे वीजुं गुणवत कहेवाय छे. " आ नग-तमां भोगोपभोगनी वस्तुओ अपरिमित छे, तेथी श्रावक तेनुं परिमाण करवुं जोइए मुख्य वृत्तिए उत्सर्गे तो आवके आचित्त भोजीज थवुं जोइए, पण जो तेम न वनी शके तो सचित्त विगेरेनुं परिमाण बांघनुं. ते परिमाण वांधवा योग्य वस्तु आ अमाणे-साचित्त, द्रव्य, विगइ, उपान, तांवूल, वस्नू, पुष्प, वाहन, शय्या, विलेपन, ब्रह्मचर्य, दिशा गमन, स्नान अने भक्तपान-आ चौद प्रकारना नियमो करवाना छे. जे सजीव ते सचित्र कहेवाय छे. ते सजीव द्रव्य पूर्वाचार्ये कहेली गाथावडे जाणी लेवां. तेमां पिष्ट ( लोट ) नुं सचित्तपणुं आ प्रमाणे कहेलुं छे-आवण तथा भाद्रपद मासमां पांच दिवस सुधी चाळ्या वगरनो मिश्र पिष्ट रहे छे; आसो अने कार्तिक मासमां चार दिवस मिश्र रहे छे. मागशर अने पोष मासमा त्रण दिवस मिश्र रहे छे, माघ अने फालगुन मासमां पांच पोहार मिश्र रहे छे, चैत्र अने वैशाल यासमां चार पहार सुधी मिश्र रहे छे, अने जेठ तथा अज्ञाड मासमां त्रण प्रहर निश्र रहे छे-त्यार पछी ते अचित्त थइ जाय छे. पण जो चाळ्यो होय ती एक मुहूर्त पछी अचित्र याय छे. आचित्र यया पछी केटले काळेपाछो बगडे छे, ते विष यंथमां लखेलुं जोवामां आवतुं नथी. पण ज्यां सुधी तेना वणीदि वदलाय नहीं अथवा एल विगेरे जीवात पढ़े नहीं त्यां सुधी ते कल्पे छै. इवे जळने माटे साचित अने

अचित्रपणुं आ प्रमाणे छे. काचुं पाणी तो सर्वथा सचित्रज छे जो गृहस्य इंमेबा तेन स्यजी देवाने अशक्त होय तो तेणे एक अथवा वे घडा विगरेनुं परिमाण करबूं. पक्र जळ पण अमुक काळ सुधी अचित्त रहे छे-ते थिये लल्युं छे के, "अग्नि उपर त्रण जकाला आवे त्यारे जळ प्रासुक थाय, तेवुं जळ साधुने कल्पे. पण तेमां एटचुं विशेष के ग्लान विगेरेने माटे त्रण पोहोर उपरांत एक मुहूर्त सुधी ते राखी शकाय. ते अचित्र जळने मुकवानुं पण जो योग्य स्थान न होय तो ते एक मूहर्त्तनी अंदर पण सचित यह जाय छे. जो त्रिफला अथवा राख के चुना विगरेथी प्राप्तक कर्यु होय ते त्रण मुहूर्त ( छ घडी ) पछी प्राप्तक थाय छे एम श्रीजिनेंद्र प्रभुए कहुं, छे. अने प्राप्तक कर्या पछी पाछुं छ घडी ए ते तिवत थाय छे. एम रत्नसंच्य नामना ग्रंथमां लख्युं छे-वली कहुं छे के, श्रीष्म रुतुमां उष्ण जळ पांच महर पछी सचित्त थाय, शीतकालमां चार पोहोर पछी साचिच थाय अने वर्षा रुतुमां त्रण महर पछी सावित्त थाय; तेनो भावार्य एवो छे के रोगी ग्लान आदि साधुओने माटे राखेला प्रासुक जळनी बीष्प ऋतुमां पांच पोहोर पछी सचित्रता थाय. कारण के, ते रुत अतिरुक्ष छे. तेथी चिरकाळे जीवोत्पत्ति थाय छे. शीतकाळनी रुतु स्निग्य छे तेथी शिशा ऋतुमां चार पोहोर पछी जळ साचित्त थाय छे अने वर्षारुत अति स्निग्ध छे तेथी तेमां प्राप्तक जळ त्रण पोहोरे सचित्त थइ जाय छे. उपर कहेली मर्यादायी अधिक काळ सुधी जो राखवुं होयतो तेमां सार चुनो अथवा बकरानी सींडीओ नास-बाथी ते सचित्त थतुं नथी. आ प्रमाणे प्रवचन सारोद्धारना १३६ मां द्वारमां कहेलुं छे तेथी जाणी लेबु. इवे ते जळ वहारना आग्ने विगेरे शख़ना संपर्कधी वर्ण गंध विगेरे बदलाइने अचित्त थाय त्यारे बापरबुं, पण जे स्वभावे करी आचित्त यथुं होय ते वापरवं नहीं. महा झानिको पण बाह्य शखना योग विना अचित्त थयेखा जलने यहण करता नथी. कारण के, तेम करवाथी व्यवहार मर्वादा विचारतां घणा दोष लागवानी भय रहे छे. ते उपर एक कथा प्रसंग छे-

एक नसते श्रीवीर प्रमु घणा शिष्यो साथे विदार करता दता, मार्गमां एक अचित्त सरोवर तेमना जोवामां आव्युं, तेमां प्रस जीव के सेवाळ पण बीलकुल ज होती तथापि तेमणे पोताना तृपातुर शिष्योंने ते जळ पीवानी आज्ञा आपी नहीं. तेबीज रिते एक वस्तत विदार करतां घणा श्रिष्यो बहुज श्रुधातुर थया अने देद चिंता थी पीडित थया; ते वस्तते अचित तल्तुं भरेखुंगाडुं जोवामां आव्युं. तेमज बाह्य शक्त विना थयेल अचित स्थंडिल पण दीठी ते छतां ते तिल्ह बापरवानी के तेवा स्थंडिल उपर ठल्ले जवानी आज्ञा आपी नहीं श्रुत ज्ञाननुं प्रमाणपणुं बताबदाने माटे.

१ वडीनीति-स्थंडिल जबुं ते.

कियी सामान्य श्रुत ज्ञानी पण वाह्य शखना संपर्क विना जळ विगेरेनुं अचित्तपणुं स्वीकारे नहीं. अने केटलीएक अचित्त वस्तुओं पण निशुक्तपणे वापरे नहीं.-जेम के गळो सुकी होय तो पण ते उपर जळ सिंचन करवाथी ते सचिच थइ जाय छे. वळी एम सांभळ्युं छ के, उदरमांथी विष्टाद्वारा नीकळेला केटलाक सख्त चीभडानावीज पाक्या विना नीकळेला होवाथी उगी नीकंळे छे; एथी अचेतन वस्तुमां पण यतना करवी 'योग्य छे. आ संचित अने आ अचित्त विषेनी स्पष्टता वहु श्रुतना मुखयी निश्रयपूर्वक करीने पछी सातमुं वत ग्रहण करवुं. तेमां साचित्तादि सर्व भोग्य वस्तुओना नाम लड़ लड़नेज एना नियम करवो. जेम आनंद प्रमुख श्रावके करेल छे तेम. जे सर्वधा सिचित्त वस्तुनो त्याग करवा अशक्त होय तेणे प्रतिदित एक वे इत्यादि संख्याथी नियम करवा. ए प्रकारे जुदी जुदी वस्तु प्रदिदिन फेर बदल करतां सर्व सचित्तनुं श्रहण पण थइ जाय, अने तथी विशेष विशेष नियाय. पण जो नाम साथे अमुक अमुक वस्तु राखीने बांकीनी सचित्त वस्तुनो याविज्ञव नियम कयो होयता तथी वाकीनी वधी सचित्त वस्तुनी त्याग थइ जवाथी स्पष्ट रीते घणुं फळ थाय. ते विषे पूर्व-सूरिनुं वचत छे के, " जेओ पुष्प, फळ, रस, मदिरा, मांस, अने महिलानो स्वाद जाणतां छतां तेनो 'त्यार्ग करीने विराति याय छे तेवा दुष्करकारकने हुं बंदना करुं ं छुं. " सर्व सचित्त वस्तुना त्यागिवपे अवड परिव्राजकना सातसी शिष्योनुं दृष्टांत खववाई ( औपपातिक ) सूत्रमां तथा भगवति सुत्रमां कहेलुं छे ते आ -प्रमाणे-' अंवड परिवाजकना सातसो शिष्योए श्री वीर प्रभु पासे श्रावकना-वत ग्रहण कर्या इतां. ते मांस चित्रनो तेमज अदत्तादाननो सर्वया त्याग करेली होवायी तेओ वीजाना आपेला पासुक अंक जळनोज आहार करता इता. एक वसने यीध्यऋतुमां तेओ गंगाने कांडे 'फरता इता, "तेवामां तेमने अति तृपा लागी. तृषाथी अत्यंत धीडीत थया तो पण तेमणे यहण 'करेलो दढ नियम के-अमारे-कदिपण-सचित्त-अने अदत्त जल सर्वथा यहण करवुं नही - तथि तमणे समीप रहेला गंगाना जलने पण संचित्त तेमज अदत्त धारी महणे कर्युं नहीं. अने अहो, आ अप्कायजीव अमारा क्टूंबी होवाथी इणवा योग्य नथी ? आवुं चितवन करतां तेओ गंगानी रेतीमांज अनंशनं करी मृत्यु पामीने ब्रह्म लोकमां इंद्रसमान देवता थया.

आ दृष्टांत जाणी श्रावके सचित वस्तुनो त्याग करवा प्रयत्न करवो. अथवा प्रत्येक मिश्र वस्तु प्रमुखनुं परिमाण करवुं. ते विषे कहुं छे के, "जे निर्दोष आहार, छचित्त आहार अने परिमित आहारवंदे आत्माने धर्म मार्गे प्रवत्ति छे ते गुणवंत श्रावक कहेवाय छे." तेथी प्रथम कहें छा चौद नियम छीधा शिवाय एक दिवस पण निर्धक जवा देवो नहीं.

इसे द्रुव्यनी व्याख्या कहे छे—साचित्त अने विकृति (विगइ) शिवाय जे वस्तु मुखमां न खाय ते सर्व द्रुव्य कहेवाय छे. तेना नाम-खीचडी, रोटली, नि-विगता, मीदक, लापसी, पापड, चूरमुं, करंबी, अने शीर विगरे. कोइ द्रव्य घणा धान्यादिकथी निपजेलुं होय पण-परिणामां तरने पामी जवाथी ते एकज द्रव्य गणाय छे. अने एकजम्धान्यमांथी बनेला पूरी, शूली, घुघरी, रोटली, सात पडा, मांडा, मालपुता, ढोकळा, खाखरा, वडा, दहींथरा, विगरे जुदा जुदा नामवाळा अने जुदा जुदा स्वादवाळा होवाथी ते जुदा जुदा स्वादवाळा होवाथी ते जुदा जुदा स्वाद होवाथी तेमज परिणामांतरने पामेला नहीं होवाथी तेनामां वहु द्रव्यपणुं रहेलुं छे. अथवा वहु श्रुतनी आहाथी अन्यथा महीं रोवाथी तेनामां वहु द्रव्यपणुं रहेलुं छे. अथवा वहु श्रुतनी आहाथी अन्यथा मिले मुखमां नखाय छे-पण ते द्रव्यमां गणाय नहीं.

विगयना दुध, दहीं, घी, तेल, गोळ अने कडाईमां थयेलां सर्व पकान एम छ भेद पड़े छे.

बोंथी भेद उपानइ एटले पगरखानी जीड तथा कार्यनी पादुका. तेमां पण काष्ट्रनी पावडीथी घणा जीवनी घात थायं छे,-माटे-ते त्याग् करवा योग्य छे.

गंचमो भेद तांबूल एटले पान, सोपारी, काथो विगेरे स्वादिष्ट रूप द्रव्य. तिमां पत्र ते नागरंबल विगेरेना समजवा. नागवल्लीपत्र इंगेशा जळथी, भिंजेला रलाय छे तेथी तेमां लील, फुल, कुंथवा तथा इंडा प्रमुख घणा जीवोनी उत्पत्ति थात्र छे, अने तैमनी विराधना थाय छे. तेथी पाप भीरु पुरुषो तेनो रात्रे तो उपयोग कर-ताजनथी. तेम छतां जेओ उपयोग करें छे तेओ दिवसे सारी रीते शोधीने उपयोग करें छे. प्रत्येक सचित्त वस्तुमां एक शरीरे एक जीव होयछे पण फळादिकमां असंख्य जीवोनी विराधना थवानो संभव छे-ते विषे श्रीआचारांग सुत्रना प्रदेशा अध्ययनना बीजा उदेशानी वृत्तिमां कहुं छे के, "वादर एकेंद्रियमां ज्यां एक पर्याप्त जीव होय-छे त्यां असंख्य अपर्याप्त जीव होय छे, अने सूक्ष्ममां ज्यां एक अपर्याप्त जीव होय छे त्यां नियमथी असंख्य पर्याप्त जीव होय छे." तेमज श्री श्रह्मापां पण कहुं छे-के, "वनस्पतिमां ज्यां एक बादर पर्याप्त जीव होय त्यां तेनी निश्राप्त प्रत्येक वनस्पतिमां तो नियमा अनंता जीवो उत्पन्न थाय छे." एवी रीते नाग- स्वेलना एक पान विगेरेमां असंख्य जीवो हणाय छे अने तदाश्रित लीलफुलना संभवे तो अनंत जीवो हणाय छे, तेथी तेनो अवदय नियम (त्याग) करवो.

#### ( २०६ ) व्याख्यान ११४ मुं-भोगोपभोगनामे वीजा गुण व्रत विषे.

छंडा नियममां वस्त एटले पंचांग वेप-तेमां घोती, पोतीके रात्रिए पहेरवार्नुः वस्त्र विगेरे न गणवुं.

सातमा नियममां पुष्प जे मस्तेक अने कंडे पेहेरवाने योग्य छे, तेनो नियम करवो. कदि तेनो स्थाग कर्यो होय तो पण ते देव पूजामां कल्पे छे.

आठमो नियम 'वाहन' एटले रथ, पोठीया तथा सुलपाळ विगेरे. नवमो नियम शयन एटले खाटला विगेरे.

दशमा नियममां विलेपन एटले देहना भोगने अर्थे चंदन, फुलेल तथा असर-विगेरे-तेनो नियम करवो. तेनो नियम छतां पण देवपूजादिकमां ललाटे तिलक-करवुं, हाथे कंकण करवुं अने हाथ धुपवा विगेरे कल्पे छे.

अग्यारमा नियममां त्रहाचर्य एटले रात्रि दिवस संवंधी पोतानी विवाहित पत्नी आश्रि अन्नहा सेवननुं प्रमाण वांधवुं. मोकळापणुं टाळवुं.

बारमो नियम दिक्परिमाण जेनो अर्थ दिग्विरति वतमां छखायेछ छे. वळी-आगळ दशमा वतमां छखगुं.

तरमो नियम स्नान एटले तेल विगेरे चोळी आखे श्रिरे स्नान करवुं ते. तेतुं, प्रमाण करवुं.

चौदमो नियम भार एटले रांधेलुं धान्य, सुखडी विगेरे तेनुं त्रण शेर चार होर विगेरे प्रमाण कर्वुं, खडवु जा विगेरेनुं ग्रहण करवाथी घणा शेर पण धाय छे.

बा प्रमाणे चौद नियमो जेणे पुर्ने स्वीकार कर्या होय तेणे प्रतिदिन संक्षेपवा एटले पूर्वे जावजीवसुधीने माटे धारेला होय तेमांथी नित्य यथाञ्चिक्त संक्षेपवा एटले तेथी ओछा ग्रहण करवा. हंमेशा प्रातःकाळे जुदा जुदा स्पष्ट नाम लड़ने तेनो नियम करवो अने रात्रे तेनो संक्षेप करवो. आ प्रमाणे नियम धारवा विषे कुमार-पाळ राजानो प्रवंध छे ते आ प्रमाणे—राजा कुमारपाळ आ सातमा व्रतने विषे चौद नियम प्रतिदिन धारता हता. तेमां ते राजा दिवसे सचिचमां एक नागरवेलना पानज राखता. तेना पण आढ वीडा राखता हता अने रात्रे तो चतुर्विध आहारना पचलाण करता हता. वर्षाऋतुमां एक धीनी विकृति (विग्रः) ज छुटी, सर्व जातनी लीलोतरीने त्याग, तपमां सर्वदा एकासणुं, पारणा अने उत्तर पारणा शिवाय-दिवसे ब्रह्मचर्यः सर्वपर्वमां शील पाळबुं अने सिचत्त तथा विग्रहनो त्याग, इत्यादि नियमोमां तत्पर रहेता हता. भोगोपभोगमां जोके निःस्पृह हता तो पण राजधर्मना परवश्चपणाने लीचे परिमित अने निष्पाप भोगोपभोग आचरता हता. आ प्रमाणे वर्त्तवाथी तेणे पंनर कर्मादा नयी आवती आवकनो निषेध करी तेना लिखित पहाने पण पाडी नाल्या हता.

खपर ग्रमाणे भोगोपभोगमां विरक्त अने परद्रव्यमां निःस्पृह एवा परमाईत कुमारपाळे आ सातमुं वत ग्रहण कर्यु इतुं.

इत्यन्दिवनपरिमितोपदेश संग्रहाख्याया मुपदेशमासाद्येथस्य हैं? शु इत्यन्दिवनपरिमितोपदेश संग्रहाख्याया मुपदेशमासाद्येथस्य हैं? शु वृत्ती सप्तमन्नताविषये चतुर्दशोत्तरश्चततमः मबंधः ॥ ११४ ॥ १

# व्याख्यान ११५ मुं.

आ भोगोपभोग व्रतमां बावीश प्रकारना अभक्ष्यनो पण त्याग करवो जोइए. ते बावीश अभक्ष्यमां प्रथम चार महा विकृतिनं स्वरूप कहे छे.

मद्यं द्विधा समादिष्टं, मांसं त्रिविधमुच्यते । श्रीदं त्रिघापि त्याज्यंच, मृक्षणं स्याचतुर्विधम् ॥ १ ॥

#### व्याख्या

" मंद्य वे प्रकारंते कहेलुं छे, मांस त्रण प्रकारतं कहेवाय छे, प्रधु त्रण प्रकार एनं मानेलुं छे अने भाखण चार जाततं होय छे—ए सर्व त्याग करेवा योग्य छे. " आ चारे विकृतिओने अभक्ष्य जाणी विवेकी पुरुषोए त्यजी देवी. कारण के तेमां तत्समान रंग विगेरेथी जोवामां आवी शके नहीं तेवा अनेक जीवोनी उत्पत्ति थया करे छे. "

मद्य काष्ट अने पिष्ट्यी उत्पन्न थतुं होवायी वे अकारनुं छे—सर्व अभह्यमां प्रयम मद्यनुं महण तेने सर्वयी महा अनर्यना हेतु भूत जाणीने करेलुं छे, ते विषे शासमां कहुं छे के, "मद्य दुर्गतिनुं मूळ छे अने ते लेळा, लह्मी, बुद्धि, तथा धर्मने नाम करनारुं छे." वळी कहुं छे के "मद्य पानवडे उन्मत्त थयेलो पुरुष, बाळा, युवति, घुद्धा, बाह्मणी अने चंडाली—गमे तेवी परस्त्रीने पण भोगवे छे." एक वस्तत कृष्ण वासुदेवे श्रीनेमिनाथने पुछ्युं के, "स्वामी आ मारी नगरीनो विनाश शा चडे थये?" प्रमु बोल्या—"मदिरायी." ते सांभळी कृष्णे आस्वा नगरमांथी मदिराने कहावी नाली. एक बसते साम अने प्रयुम्न चंने दूर वनमां गया, त्यां मदिरा जोइने तेनुं पान कर्युं. पढी मद विव्हल यह तेमणे द्वैपायन तापसने षांध्यो ने मार्यों. तत्काळ ते तापसे "हुं यादवोनो तथा तेना नगरनो दारक थाऊं"

एवं नियाणं कर्युं. ते सांभळी रामकृष्ण तेनी पासे आव्या अने प्रणाम कर्यों. तापम बोल्यों के—हुं तमाग वे विना बीजा सर्वने इणीक्षः रामकृष्णे घणं समजाव्यों पणं, समज्यों नहीं. अनुक्रमें ते मृत्यु पामी अग्निकुमार देव थयों. तरतज ते क्रोधायमान यहने यदुपूरीने दहन करवा आव्यों ते समये नगरीना लोकोए वारवर्षसुर्धी आचाम्लें व्रत कर्युं, तथी ते तेमनो पराभव करी शक्यों नहीं. अन्यदा कोई लोकिक पर्वमां लोकोए आचाम्ल कर्युं नहीं एटले ते छळ पामी तेणे आखं द्वारकानगर वाळीं नाल्युं. राम अने कृष्ण जीवता वाहार नीकळ्या. रोहिणी, देवकी अने वसुदेव नगरनी मतोळीमां दवाई मृत्यु पामीने स्वर्गे गया. एम संभळाय छे के, " मद्येथी अंध ययेला एवा सांबे सर्व यादवकुलने हणी नार्थ्यं अने पितानी मगरीने पण बाळी नाखी. अर्थात् तेना कारण मूत थया."

मद्यना त्याग विषे पंचम काळमां उत्पन्न थयेला अंबागणिआ श्रानकनी

संबंध छे, ते शावकनी जेम मद्यनो त्याग करवोः

मांस त्रण प्रकारनुं छे. जलचर मांस, स्थलचर मांस, अर्न, खेचरमांस अथवर चर्म रुधिर अने मांस एवा पण त्रण भेद छे. मांस पण अत्यंत दुष्ट छे. कहुं छे के

### आमानुअ पकासुअ, विपचमानासु मंसपेसीसु। सययंचिय उववाओ, भणिओअ णिगोअ जीवाणं॥

"काचा मांसमां, पक्व मांसमां, रंघाता मांसमां अने तेनी पेशीओमां, तेना जेवा वर्णवाळा निगोदीआ (लीलफुल आश्री) अनंत जीवो निरंतर उत्पन्न थाय छे." वळी योग शास्त्रमां पण कहां छे के, "सणे सणे उत्पन्न थता असंख्य संमूर्छिम जीवोनी संतितवडे दुपित एवं मांस—जे नरकना मार्गमां पायेय समान छे, तेनुं कयो वुद्धिमान् पुरुप भक्षण करे ?" मांसमां अनंता निमोदीया जीव सणे सणे विसामा वगर पुनः पुनः उत्पन्न थया करे छे—आ प्रमाणे ते स्ट्रोकनी टीकाम्रां कहेलुं छे. वळी लौकिक शास्त्रमां पण कहां छे के, "शुक्र अने शोणितथी. उत्पन्न थयेलुं मांस विष्टारूप कहेवाय छे वळी ते पुरिपमांथी उत्पन्न थाय छे तेथी उत्तम पुरुषे तेनो त्याग करवो. "वळी "अग्नि, मधु, विष, शस्त्र, मद्य अने मांस ए छ वस्तु पंडितोए ग्रहण करवी नहीं, तेम आपवी पण नहीं." वळी स्मार्चलोको कहे छे के—पंडितोए ग्रहण करवी नहीं, तेम आपवी पण नहीं." वळी स्मार्चलोको कहे छे के—

न मांस मक्षणे दोषो, न मद्ये न च मैथुने। प्रवृत्तिरेपा भूतानां, निवृत्तिस्तु महाफला॥

१ छए विगयना त्याग सहित एकवार जमवुं ते ( आंविछ ) २ आ संवंध जाणवामां आव्यो नथी.

<sup>!!</sup>मांस भेक्षण करवामां, मद्य पीवामां अने मैथुन सेववामां कांइ दोष नथी, ए तो प्राणीमात्रनी प्रवृत्ति छै; जो तथी निवृत्ति राखे तो ते मोदुं फळ आपे छे. " आ स्त्रोकनो अर्थ आ प्रमाणे करवा अयोग्य छे. कारण के जे आचरवाथी दोष नथी लागतो, छतां तेथी निवृत्ति करवी ते गहा फळ आपे छे आवो अर्थ देखीतीज अघटित छे. अने तेवो अर्थ करवाथी तो निर्दोष एवा शुभ धर्मथी पण निवृत्ति कर-धानो प्रसंग आवे, तेथी ए श्लोकनो अर्थ आ प्रमाणे करवो योग्य छै-" माँस प्रक्षण करवामां अदोषपणुं नथी (मास भक्षणेऽदोषोन ) एवी रीते मद्य पिवामां अने मैथुन सेववामां पण अदीषपणुं नथी कारण के, ते मद्य मांस ने मैथुन प्राणीओनी उत्प-त्तिनुं स्थान छ अर्थात् तेमां असंख्याता ने अनुता जीवो उपजे छे. अहीं जीवोनी उत्यत्ति रूप प्रवृत्ति समजवी. तेथी भद्य, मांस ने मैथुनथी निवृत्ति करवी ते महा फळ बाळी छे. "

वळी, मांस आग्ने प्रमुख उपायथी पण आचित्त थतुं नथी; वीजी सर्व वस्तुओ चपायथी भासुक थाय छे पण मांस तो कदिएण थतुं नथी. एथीज तेने माटे उपर कहेली गाथामां (आमासुअ) एवं पद छे. वळी मांस शिवाय वीजी वस्तुओ अप्रि विगेरे शस्त्रथी अचित थाय छे पण अग्निथी संस्कार कराता मांसमां तो निरंतर-ते ध्यते पण निगोदीया जीवो उत्पन्न थया करेके तेथी उपर गाथामां [विपचमाणासु ] एंचु पद छे. वळी कहूं छे के, '' जे पुरुष सैंकडो क्रमिथी आकुछ, परु, रुधिर अने चरवीथी मिश्रित एवा मांसनुं भक्षण करे छे, ते पुरुषने शुद्ध बुद्धिवाळा पुरुषो श्वान

जेवोजं गणेछे. "

इवे मध त्रण प्रकारनुं छे माक्षिक [ मालीयी थये छुं ] कौतिक [ कुताथी थये हुं ] अने भ्रामर [ भमरीथी यये हुं ] आ त्रणे मकार हुं मध त्याग करवा योग्य छे. कहुं छे के, " मालीओना मुखनी लाळयी थयेलुं, अने लाखो जंतुओना नाश्यं। बनेलुं एवं शुद्र मध केजे नरकने आपनारुंछे, तेने बुद्धिमान् पुरुषो शामाटे स्वीकारे? पुराणमां पण कह्यं छे के,

सप्तयामेषु यत्पाप मित्रना भरमसात् कृते।

तदेतत जायते पापं, मधुबिंदु प्रभक्षणात् ॥ १ ॥ "सात गाम वाल्यायी जे पाप छागे तेटछं एक मधना विदुनुं भक्षण करंगाधी छागे छे. "

यो ददाति मधु श्राद्धे, मोहितो धर्भलिष्तया । स याति नरकं घोरं, खादकैः सह लंपटैः ॥ २ ॥ "जे धर्मनी इच्छाथी मोह पामी श्राद्धमां मध आपे छे, ते तेना खानारां छंग्छ पुरुषोनी साथे घोर नर्रकमां जाय छें." वळी कहुं छे के, "जे माणस औपधनी इच्छाथी मंधं खायं छे तें पर्ण थोडा कीळमां घणुं उम्र दु:खं पाम छे, केमके जीववानी ईच्छांएं भक्षणं करें छुं विष शुं तत्कांळ जीवितने शिक्षा नथी करतुं? अर्थात् करे छे."

ह्वे मालण चार प्रकारने छे. गायनुं, भेंशनुं, वकरामुं अने गाडरनुं-तेना छोप विषे कहुं छे के, "जेमां सूक्ष्म श्रीरवाळा प्राणीओं निरंतर उपजे छे एवुं मालण तेने सेवनारा पाणीओंने तेना पांपथी तत्काळ नरक गति पामे छे." छाश-मांथी बाहार काढीने राखेला मांखणमां एकं अंतर्मृहूर्त्तमा घणा सूक्ष्म जीवो उत्पन्न थाये छे तेवा माखणने विवेकी पुरुषो केम भक्षण करे ?

एवी रीते उपर कहें छी चार वीगईन अभहंय (भक्षण करवाने अयोग्य) जाणी धर्मझ एवा विवेकी पुरुषोए त्यजी देवी, कारण के, तेमां तत्समान वर्णवाळा तज्जा-तीय अनेक सूहम जीवो उत्पन्न यांय छे के जे आपणी जेवा सामान्य जीवोनी दृष्टिने अगोचर छे; अतीद्रिय झानीओ तेने जोई शके छे. कहां छे के—

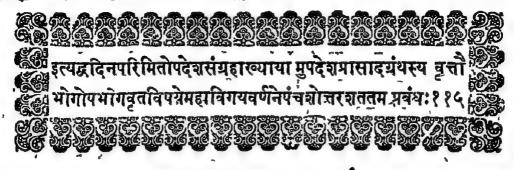
# मजे महुंमि मंसंमि, नवनीयंमि चउथ्यए। उच्वजंति अणंता, तच्वण्णा तथ्य जंतुणो ॥

44 मद्य, म्यू, मांस अने माखणमां तेना जेवा वर्णवाळा अनंता जीवो उपजे छे." अहि मद्य विगेरेना वर्ण जेवाज वर्णवाळा अनंता निगोद रूप जंतु उत्पन्न थाय छे एम समजवुं. एयी ते चार वीगई अभस्य छे. आ गाथानो अर्थ करतां कोईक एम विचार करे छे के, " निगोदीआ जीव तो सर्वत्र चौद राज्छोंकमां अवारितणणे उपजे छे, तेथीजो ते निमित्ते त्याज्य गणशुंतो सर्व वस्तुनोत्याग करवो जोईशें. माटे एनो अर्थ पुर्वे कर्यों छे तेवो चित्तमां वंध वसतो नथी; तेनो अर्थ एम संभव छे के, निगोदीआनी जेवा सूक्ष्म एटछे रसमां उत्पन्न थतां वेईद्री जीवोनी उत्पत्ती जाणवी. आवा कारणथी केटळीक प्रतमां ते गाथाना त्रीजा पादमां [अणंता ] ने बद्छे, असंखा ] एवो पण पाट देखाय छे. वळी महिरामां रसोत्यन्न जीवनी उत्पत्तिने ळीचे असंख्यात जीवपणुं श्रीहेमी नाममाळामां पण कह्युं छे "रसजामद्यकीटाद्याः" एटछे रसयी उत्पन्न थयेळाजीव ते महिरा विगेरेमां उत्पन्न थतां वेईद्रिय जीवो असंख्याता जपने. अनंता नहीं. वळी तेमणेज श्रीयोगशास्त्रमां कह्युं छेके, ''अंतमुंहुं र्च पछी तेमांजीवोनी उत्पत्तिछे.'' आ श्लोकमां जीवनी उत्पत्तिनो काळ प्रतिपादन क्योंछे तेथीनिगोदीयां जीवानी उत्पत्तिछे.'' आ श्लोकमां जीवनी उत्पत्तिनो काळ प्रतिपादन क्योंछे तेथीनिगोदीयां जीवानी उत्पत्तिछे. अं श्लोकमां जीवनी उत्पत्तिनो काळ प्रतिपादन क्योंछे तेथीनिगोदीयां जीवानी उत्पत्ति संभवती नथीं. कारणंक तेमनी उत्पत्तिनो

तो तेमां पूर्वेपण संभव छे, अने तेनेमाटे तो कांड काळनो नियम न्या. आउपस्थी एम जजाय छेके, चारमहाविगयमां निगोदना जीववडे भड़्य अभह्यपणुं नथी पण असंख्य एवा रसोत्पन्न जीववडेछे आ प्रसंग विचारवा योग्यछे. अत्र प्रसंगोपात् तेनो विचार दर्शाच्यो छे.

"उपर वतावेली चार विकृतिओने जे भृतीप्राणीओ त्यजेछे, ते श्रीजैनधर्मनाधा~

रक गृहस्थो देवतादिकनी संपत्तिने पामेछे."



#### व्याख्यान ११६ मुं. इवे बाकोना अभक्ष्य कहेळे. बहुजीवाकुलाभक्ष्यं, भवेदुंबरपंचकम् । हिम् विषं तथा त्याज्याः, करकाः सर्वमृत्तिकाः ॥१॥

#### व्याख्या.

"घणा जीवोथी व्याप्त एवा उद्वंबर विगेरे पांच जातिना फळो अभस्यछे, तथा वरफ, विष, करा अने सर्व जातनी मृत्तिकाओपण अभस्य होवाथी त्यांग करवा योग्यछे." तेनी भावाथ एवोछेके, उंबरडा विगेरे पांच जातिनाफळ मशल्यना जेवी आकृतिवाळा घणा सूक्ष्म जंतुओथी सर्वदा व्याप्त होवछे. तेथीते अभस्यछे. ते पांच जाति आप्रमाणे— वडनाफळ, पीपरनाफळ, उंबरडानाफळ, पीपुळाना टेटा अने काकोद्वंबरनाफळ. ए पांचे जातिना फळोनो त्याग करवो.

हिम एटले वरफ तेमां शुद्ध असंख्यात अपकायजीवो रहेलाले तेथी तेत्याज्यले. विष एटले सोमल, अफीण विगेरे. औषधीमयोगे निर्विष करेलुं होयतो पण ते मक्षण करवाथी उदरमां रहेला गंडोलक विगेरे घणा जीवोनो घात करेले तेथी अभक्ष्यले.

पाणीना करा पण असंख्यअपकाय जीववाळा होवाथी त्याग करवायोग्य छे. अहि कोई शंका करेके, 'एवीरीते गणशोतो जळपण अभक्ष्यथशे.' ते सत्यछे, पणक जळिवना जीवननो निर्वाह यतो नथी अने करा विना सुखे निर्वाह थई शके छे, तथी तेनो निषेध करेळोळे.

सर्व जातनी मृत्तिकाओं (माटीओं) पेटमां गयापछीपण देडका विगेरे पंचे-द्रियजीवोनी उत्पत्तिनी हेतुरुपछे तेमज महारोगादिकने करनारीछे तेथी ते त्याज्यछे. मृत्तिकाविषे सर्वज्ञातनी एशन्दनुं ग्रहण कर्युछे तथी खडी, गेरु, हारताळ विगरे तेना बीजा भेदनो पण त्याग जाणी छेत्रो. मीटुं पण अग्नि विगेरे शस्त्रोथी प्रासुक थयेलुं द्दोय तोज लेवुं, वीजुं नहीं. तेने अचित थवानो वीजो प्रकार पणछे. श्राद्धाविधिमां लखे छेके, "कोईपणसचित्त वस्तु सोयोजन उपरांत जवाथी तेने मळता आहारना परमाणुना अभावथी, नवनवा पात्रमां फरवाथी, पछडावाथी अने पवन तथा धूमाडो लागवाथी छवण प्रमुखना सचित्तपणानो विध्वंस थाय छे. " वळी हरिताळ, मणशील, पीवर, खजुर, द्राक्ष, अने हरडे ए वस्तुमांथी केटलीक वस्तु उपर प्रमाणे सो योजन दूर गया पछी ग्रहण कराय छे अने केटलीएक ग्रहण नथी कराती. तेमां गीतार्थ कहे ते प्रमाण समजवुं. स्वणादिक सो योजन गया पछी, केवी रीते अचित्त थाय १ ए प्रश्नना जवाबमां प्टलुंज कहेवानुं के, ज्यां ते उत्पन्न थयुं होय ते देशने योग्य तेने आद्वार मळवानो अभाव थवाथी, एक पात्रमांथी वीजापात्रमां वारंवार फेरववाथी, तेमज वायु, अग्नि [ तडको ] अने धूमाडो लागवाथी आचित्त थायछे. कहां छेके, शस्त्र त्रण प्रकारनांछे. स्वकायशस्त्र, परकायशस्त्र ने उभयकायशस्त्र. ते आप्रमाणे-खारु पाणीने मीट्रेपाणी मेळववाथी वंर्नेना जीवोनो विनाश थाय ते स्वकायशस्त्र, आधी मीजा जीवोने वाळे ते परकायशस्त्र अने जळ अग्नि भेळा थवाथी तेमज काची माटीने पाणी भेळा थवाथी वैनेनो विनाश थायते उभयकायशस्त्र. पीपर, लजुर, द्रास, इस्डे विगेरे पण लवणनी जेम सोयोजन उपरांत गया पछी आचेत्त थवानी संभवछे-पण तेमांयी केटलीक वस्तु परंपराए आदरेखे, अने केटलीक आद्रता नथी. एटलेकेपीपर - इरडे प्रमुख वस्तु अचित्त गणीने वपरायछे अ ने खजुर द्वाहा विगेरे वपराती नथी. तेज प्रमाणे लवण पण जो आग्निथी प्रासुकथयुं होय तोज वापरवं, अपनव होयतो बापरवं नहीं. कारणके, ते मृत्तिकारूप होवाथी अभक्ष्यछे.

हवे चौदमुं रात्रि भोजन नामनं अभक्ष्य कहे छे. चतुर्विधं त्रियामायामशनं स्यादभक्ष्यकम्। यावजीवं तत्प्रत्यारव्या घमेंच्छुभिरुपासकैः ॥१॥

#### व्याख्या.

''रात्रे चारे प्रकारनुं अञ्चन अभक्ष्य छे, तथी धर्मनी इच्छावाळा व्रपासकों ( श्रावकोए ) यावज्जीवसुधी तेना पच्चलाण करवा. " चार मकारनुं एटले अञ्चन, पान, खाद्य अने स्वाद्य ते चारेपकारतुं भोजन रात्रे अभक्ष्यछे. कारणके, ते समये तेमां घणा जीवो उद्भवेछे. तेविषे श्रावक दिनकृत्यमां कह्यं छे के,

तजोणिअ जीवाणं, तहा संपाइमाणयं। निसिभत्ते वहोदीद्यो, सञ्वदंसीहिं सञ्वहा ॥

"चारेपकारना आहारक्षप योनीथी उत्पन्न थता तेमज उपरथी पडता अनेक त्रसजीवोनो सर्वथापकारे सर्वज्ञोए रात्री भोजनमां विनाश दिवेलो छे."

साथवा विगेरे रांधेलापदार्थमां निगोदनी जेम उरणीकादि जीव उपजे छे तिथी तेओ ते योनिवाळा कहेवायछे. वळी संपातिम एटले उपरथी आवीने पडता पतंगीआ, फुदां, कुंथुवा, कीडि विगेरेनो पण रात्रे वधयतो सर्वज्ञ पुरुषीए जोयेस्रो छे. शीतयोनिवाळा त्रसजीवो भूमि, वस्र अने आहारादिमां रात्रे उत्पन्न थायछे तेथी रात्रे असंख्य जीवोनो घात कहेलोछे. वळी आकाशमार्गे एटले अगासीमांता दिवसना आढमा भागथी अपकाय जीवोनी वृष्टि थायछे ते प्रभाते चार्घडी दिवस चडे त्यांसुधी रहेके, तेथी जो आकाश स्थले वेसीने भोजन करे तो अनत जीवोनो पण घात थायछे. कारणके "जध्यजलं तध्यवणं " ज्यां जळ त्यां वनस्पति होयज एम सिद्धांतमां कहुंछे अने वनस्पती अनंत जीवात्मक पण होयछे.

वंळी रात्री भोजन करवाथी आलोक आश्री पण घणा प्रकारनी हानीनो संभव छे. भोजनमां कीडि आवी जाय तो बुद्धिने इणे छे, मिक्षका आवे तो वमन थाय छे, जु आवे तो जलोदर याय छे अने करोळीओ आवे तो कुष्ट रोग थाय छे. वळी रात्रे पात्र धोतां अने एहं नाखतां कुंथुवा विगेरे घणां जीवो हणाय छे-इत्यादि रजनी भोजनना दोष कहेवाने कोण समर्थ छे. रात्रि भोजनना दोष घणा छे, अने ते कहेवानुं आयुष्य थोडुं छे, तथापि संक्षेपमां तेना दोप कहुं छुं-

कोइ एक जीव छन्तु भव सुधी जीव हिसा करे तेट हुँ पाप एक सरोवरने शोषवाथी लागे छे, एकसो बाढ भव सुधी तेवा सरीवरने शोपनारने जे पाप लागे

तेटलुं पाप एकवार दावानळ लगाडनारने लागे छे, एकसो एक भव सुधी दव आ-पनारने जेटलुं पाप लागे तेटलुं पाप एक कुन्यापार करनारने लागे छे, एकसो चुंमाळीस भवसुधी कुन्यापार करवावडे जेटलुं पाप लागे तेटलुं एक कुकर्मीने लागे छे. एकसोचुमाळीसभवसुधीकुकर्मीने जेटलुं पाप लागेतेटलुं पाप एकवार खोटुं आळ आपनारने लागे छे, एकसो एकावन भवसुधी खोटुं आळ आपनारने जेटलुं पाप लागे तेटलुं पाप एकवार परश्लीगमन करनारने लागेछे, नवाणुं भवसुधी परस्तीगमन करनारने जेटलुं पाप लागे तेटलुं पाप एकवार राज्ञि भोजन करनारने लागे छे. आ अमाणे रत्नसंच्य नामना प्रथमां कहुं छे. तेनुं तत्व तो बहुश्रव जाणे छे.

वळी कहुं छ के, "जे बुद्धिमान पुरुषो सर्वथा रात्रे आहार वर्जे छे, तेमने एक मासे पक्षोपवासनुं फल थाय छे." ते माटे श्रावकोए यावज्ञीत सुधी रात्री भो-जननो त्याग करवो. दररोज रात्रे चतुर्विध आहारना पञ्चखाण करवा. जो चारे आहार त्यजवानी शक्ति न होय तो अगन तथा स्वादिमतो अवस्य त्यज्ञवा. अने स्वादिमते सोपारी विगेरे दिवसे सारी रीते शोधी राखी रात्रे यहण करवा. नहीं तो तेमां जस जीवोनी हिसानो पण दोप छे मुख्य रीते तो प्रातःकाले अने सायंकाले रात्रिनी निजकनी वे वे घडी आहारनो त्याग करवो. कहुं छे के, ''रात्रि भोजनना दोपने जाणनार जे प्राणी दिवसना मुखमां अने अवसानमां वे वे घडी छोडीने भोजन करे छे, ते पृण्यनुं भाजन थाय छे. " वळी " रात्रि भोजन करवाथी खुवड, काक, मार्जार, गीध, सावर, सुवर, सर्प, वींछी अने घोनो अवतार आवे. छे," आ प्रमाणे रात्री सोजननुं पारलीकिक फळ छे.

रात्री भोजनिविष रामायणमां पण दोष जणाव्यों छे, ते संवंध एवो छे के, छहमण अने सीनासिंहन रामचंद्र वन ग्रासमां गया हता, ते प्रसंगमां एक दिवस कुर्वर नगरनी वहार एक वडना वृक्षनी नीचे रात्री वासो रह्या हता. ते नगरना राजा महीधर ने वन्माळानाम एक पुत्री हती. ते छक्षमणनी छपर प्रथमथी रागी थयेछी हती ते छक्ष्मणनो वनवास सांभळी खेदयुक्त यह सती देवयोगे तेज बनमां तेज रात्रे गछे फांसो खावा आवी। आ देखाय जागृत रहेछा छक्ष्मणना जोवामां आव्यो. छह्मणे तेनी पासे जईने पुछ्युं एटछे तेणीए जे सत्य हतुं ते कही आप्युं: तत्काळ छह्मणे पात्र छेदी नाखीने तेनुं पाणियहण कर्युं. वनमाळा के जे शुभ छक्षण वाळी सुचरिता हती. तेणे पोतानी प्रतिज्ञा प्रमाणे छह्मणने योग्य वर जाणी पोतानी स्वामी कर्यों. पछी छह्मणे तेणीने जणाव्युं के, हमणा तमे पिताने घर रहों, ज्यारे हुं वनवास पूर्ण करी पाछो वळीश त्यारे तमने साथे छह जुईश तथापि ते

रागिरमणीए मान्युं नहीं. पंछी छक्ष्मणे स्नी, गायं, बाल हत्या विगेरे सोगन लीधा. तो पण तेणीए मान्युं नहीं. त्यारे लक्ष्मणे कह्युं के जे तमे कहो, ते सोगन हुं लखं. बनर्माला बोली के—' आ जगतमां रात्री मोजन करनारने जेटलुं पाप लो हुं पाले ने आंतुं तो मने लागे ' आवा जो सोगन ल्यो तो हुं सत्य मानुं, लक्ष्मणे तेवा सोगन लीधा. एटले तेणीए लक्ष्मणने मुक्त कथी.

उपरचा दृष्टांतमां वनमाळाए स्ती, गाय अने वाळहत्या करतां पण रात्रि भोजनतुं पाप बहु मोदुं मार्नीने छक्ष्मणने तेवा सोर्गनं अप्या हता, तेथी रात्रि भाजनतुं पाप घणुं उग्रछे, एम सिद्धथायछे. माटे सर्वभवी प्राणाओए अवस्य ते विवयम ग्रहण करवो.



# व्याख्यान ११७ मुं.

रात्रि भोजनरूप अभक्ष्य दुस्त्याज्य छे एवं धारी पुनः तेनो प्रतिबोध करवा माटे विवेचन करेछे. स्वप्रसमये गर्ह्य, आद्यं स्वभ्रस्य गोपुरम् । सर्वज्ञैरपि यत्त्यक्तं, पापात्त्यं रात्रिभोजनम् ॥ १ ॥

#### व्याख्या

"स्व अने पर शास्त्रमां निंदवायोग्य, नरकना प्रथम द्वाररूप अने सर्वजीए स्याजे हुं रात्रिभोजन पापरूपछे." आ श्लोकमां रच अने पर शास्त्रमां निंदित करे हुं एम कहुं हुं ते विषेत्र शास्त्रमां लखे हुं के, मासुक आहार होय अने महाज्ञानी पुरुषों कुं थवा विगेरे सूक्ष्मजीवोने पण जोई शके तेमहोय ते छतां तेओपण रात्रिभोजनने टाळे छे. किंद दीपक विगेरेना साधनथी कीं बिगेरे स्यूलजीवो देखी शकाय पण सूक्ष्मजीवनी दया नहीं पळावांथी मूळ ब्रतनी विराधना थाय माटे रात्रिभोजन निपेष्युं छे. तेविषे प्रशास्त्रमां पण लखे छेके,

. ( २१६ ) शात्र भोजनरूप अभक्ष्य तजवानी मंतिबोध करवा विषे.

मृते स्वजनमात्रेपि, सूतकं जायते किल । अस्तंगते दिवानाथि, भोजनं क्रियते किसु ॥ १ ॥

"मात्र स्वजन मृत्यु पामवायी सूतक छागे छे तो सूर्य अस्तपामतां भोजन करवुं केम घटे."

मद्यमांसाशनं रात्री, भोजनं कंदभक्षणं । ये कुर्वति वृथातेषां, तोर्थयात्रा यपस्तपः ॥

"जे मद्य पीने, मांसखाय, रात्रिभोजनकरे, अने कंदनुं भक्षण करे तेओनी तीर्थ यात्रा, जप अने तप सर्व वृथा थायछे." तेमज तेनुंकरेलुं एकादशीनुंद्रत, रात्री जागरण, पुष्करतीथनी यात्रा, अने चांद्रायण द्रत पण वृथा थायछे. एम पद्मपुराण मां कहुंछे. वळी भारतना अढारमां पर्वमां छखेछेके, हे युधिष्टिर! तपस्वीएतो विशेष करीने रात्रे जळपण पीनुं नहीं अने विवेकी गृहस्थे पण पीनुं नहीं. महाभारतमां कहुं छेके, "रात्रे जल रुधिर समान अने अन मांस समान थायछे, तेथी रात्रिभोजन करनार रुधिर अने मांसनुं भक्षण करेछे.

वळी अन्य शास्त्रमां लखे छे के, " रात्रे आहुति, स्नान, श्राद्ध, देवार्धन अने

दान करवां नहीं अने भोजन तो विशेषपणे नहीं करेंबुं. "

वळी प्रथम आक्षेत्रमां रात्रि भोजन नरकतुं आद्य द्वार छे. एम कह्युं छे ते विषे पद्मपुराणना प्रभासखंडमां छखे छे के,

चत्वारो नरकदारा, प्रथमं रात्री भोजनं । परस्रीगमनं चैव, संधानानंतकायिके ॥

"चार नरकना द्वार छे, प्रथम द्वार रात्रि भोजन, वीजुं परश्लीगमन, त्रीजुं द्वार बोळ अथाणुं अने चोथुं द्वार अनंतकाय (कंदमूळ) नुं भक्षण छे. "वळी आयुर्वेदमां कहुं छे के, " ज्यारे सूर्य अस्त पामे छे त्यारे हृदय कमल तथा नाभिकमल संकोच पामे छे, पथी रात्रे मोजन करवुं नहीं. तेमज तेम करवाथी सूक्ष्म जीवनुं भक्षण थइ जाय छे ते कारणयी पण करवुं नहीं. " स्कंद पुराणमां रुद्रे रचेला सूर्यनी स्तुति रूप कपाळ मोचन स्तोत्रने विषे छत्वे छे के,

एक भक्ताशनान्नित्यं, अग्नि होत्र फलं लभेत्। अनस्त भोजनान्नित्यं, तीर्थ यात्रा फलं लभेत्॥ १॥

" इंमेशा एक वार भोजन करवाथी आग्नेहोंत्रनुं फळ मळे छे अने जेओ सूर्यास्त पछी भोजन करता नथीं तेओने नित्य तीर्थ यात्रानुं फळ मळे छे. "- इत्यादि अनेक शास्त्र वचनोथी रात्रि मोजन पापात्मक छे, तेथी सर्व द्रव्यने जोनारा श्रीसर्वज्ञ पुरुषोए तेने त्यजी दीधेखुं छे, कारण के, तेओ सर्वज्ञ होवाथी रात्री समये भोजनमां उत्पन्न बता खुद्दम जीयोमो वय निवारवाने असमर्थ हता, अर्थात् तेवा अंतर्दिष्टिवाळा सर्वज्ञोए पन्न निविश्च कर्यु छे तो बाह्य दक्षिवाळा आपणे हो विश्लेष्यणे त्याग कर्या योग्य छे-ए तत्यार्थ छे. आ वत उपर त्रण मित्रनो प्रवंध छे ते आ वस उपर त्रण मित्रनो प्रवंध

कोइ नात्रमां एक आषक, बीजो मद्रिक अने त्रीजो मिध्यात्वी-एम त्रणे विणक भित्रो रहेता इता. एक वस्तते तेओए कोइ गुरु पासे आ प्रमाणे धर्म सांभळको-"रात्रे जळ पीत्रा करतां स्वादिम कावामां वमणुं पाप लागे छे, स्वादिमधी सादिममां त्रगणुं पाप लागे छे जने सादिम कती अक्षनमां त्रण गणुं लागे छे." चळी "रात्रे अंबकारमा सूक्ष्म जीवो दृष्टिस पडता नथी. तेथी जे रात्रे बनाव्युं ते दिवसे लाय को पज तेमे रात्रि भोजन सरखुं समजवुं" आ प्रमाणे रत्नासंच्य वंषमां लक्षेत्रं छे. आ प्रमाणे छतां जे अज्ञानी प्राणीओ कदाग्रहथी रात्रि भोजनने वर्जता मथी तेओ एडकाक्ष्म तथा मरुक्ननी जेम वहु दुःख पामे छे. ते एडकाक्षनो संवंध आ प्रमाणे छे—

#### एडकाश्रनी कथा.

दशार्णपुरमां धन्श्री नामे एक श्रावकनी पुत्री इती, तेनी धनदेव नामे पित इतो. कनश्रीए मांड मांड समजाबी एक दिवस धनदेवने रात्रिए दिवस चरि-मनुं प्रत्याख्यान कराव्युं. तेज रात्रीए कोई व्यंतर देवी धनदेवनी परीक्षा करवाने माटे तेनी बेननुं रुप छड़ भोजन आपवा आवी. धनश्रीए घणो वार्यो तो एण धनदेव भोजन करवा बेटो. तत्काछ देवीए छपडाक मारीने तेना छोचन बहार काढी नाख्या. पछी तेनी पत्नी धनश्रीए कायोत्सर्ग करीने कोई देवीने आराधी एटले ते देवीए आवीने कोइए तरतमां मारेछा घटाना नेत्र छावी तेने छगाडी दीया तेथी ते देखतो थयो. अने त्यारथी एडकाक्ष नामथी प्रसिद्ध थयो.

महकनी कथा श्राद्धदिनकृत्य वृहद् वृतियी जाणी स्रेवी.

आ प्रमाणे रात्रिभोजन संबंधी देशना सांभळी पेला आवक मित्रेतो कुला-चारने लीधे घणा नियमो यहण कर्या. बीजा भद्रिक मित्रे बहु विचारी ने एक प्रस्तुत नियमज यहण कर्यो. अने जे भिष्ट्यात्वी इतो ते जरापण प्रतिबोध पाम्पो नही. पेला बंने मित्रनुं कुटुंबपण अनुक्रमे ते नियममां तत्पर थयुं. इवे जे श्रावक इतो ते तो क्रमे क्रमे शिथिल यतोगयो. कोई कोईवार तजवा योग्य एवी दिवसनी आद्यनी तथा अंतनी वे वे घडीमां पण खावा लाग्यो अने छेवटे रात्रे पण भोजन करवा लाग्यो. एक वखते ते श्रावक अने भद्रिक वंने कोई राजकार्यमां जोडाया. सवारे जम्या विना गयेला ते सायंकाले पाछा घेर आवतां भोजननुं असूर पर् गयुं. सूर्य अस्त पाम्यो. पछी तेमना संबंधी अने गित्रोए घणो आग्रह कर्यो तो पण भद्रिके भोजन कर्युं नहीं. अने पेलो श्रावक ' रजु क्यां पुरेपुरी रात्री पढी छे ' एम बोलतो अंधकारमां पण निःशूकपणे भोजन करवा येटो. शास्त्रमां कह्युं छे के-

रयणी भोजने जे दोषा, ते दोषा अंधयारंमि। जे दोषा अधयारंमि, ते दोषा संकडंमि मुहे॥

"रात्रिभोजनमां जे दोप छ ते दोष अंधकारमां जमवाधी लागे छे अने अंधकारमां भोजन करवामां जे दोप छे ते सांकडा मुखवाळा पात्रवडे खावापीवाधी लागे छे." आप्रमाणे कहां छे. त्यारे पछी रात्रीए अंधकारमां जमतां महान् दोष लागे तेमां शुं कहेवुं ?

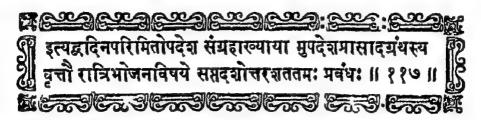
इवे पेलो श्रावक भोजन करवा वेटो तेना भोजनमां तेना मस्तकमांथी जु पडी, तेनुं भक्षण करवाथी तेने जलोदरनो भयंकर न्याधि थयो जेथी ते पंचत्व पानी गयो. त्यांथी ते मार्जारं योनिमां आन्यो. ते भवमां अद्युभ ध्यानवडे पृत्युपामी पेहेली नरके गयो. पेलो मिध्यात्वीपण रात्रे सर्पना विपदाळा अन्नेन जमवाथी पृत्युपामी मार्जार थयो अने त्यांथी पेहेला नरकमां उत्पक्ष थयो.

भद्रकतो जीव मृत्यु प्रामिन सौधर्म देवलोकमां देवता ययो. जे श्रावकमो जीव हतो ते पेहेली नारकीमांथी नीकली एक निर्धन ब्राह्मणने घर श्रीपुंज नामे पुत्र थयो. अने जे मिण्या दृष्टि हतो, तेपण नारकीमांथी नीकली तेनोज अनुज बंधु थयो. आहे भद्रिकना जीवे अवधि ज्ञानवडे तेनी उत्पत्ति जाणी त्यां आवी नियम मंगनुं फळ जणावीने तेमने प्रतिवोध आप्यो. ते उपरथी ते बनेए सर्व अभक्ष्यना नियभो ग्रहण कर्या. ते बंनेना माता पिता ब्राह्मण अने मिण्यात्वी होवा थी तेमणे तेमना कदाग्रहनो निग्रह करवाने माटे सर्वथा भोजन निषिद्ध कर्युं. बंनेने उपरा उपरी त्रण लंधन थई. त्रिजी रात्रे पेला सौधर्मदेवे ते नगरना राजाना उदर मां पीडा उत्पन्न करी. ते अनेक उपायोथी शांत थई नहीं त्यारे ते देवे जणाव्युं के, 'रात्रि भोजनना नियमवाला श्रीपुंजना हस्त स्पर्श्यी राजानी पीडा शांत थशे.'

१ बीलाडो ययो.

तत्काळ मंत्रीओए श्रीपुंजने त्यां वोलाव्यो. ते उंचे स्वरे वोल्यो के, 'जो मारूं वत सत्य होयतो आ राजानी पीडा शांत आओ.' आ प्रमाणे कही तेणे राजाना शरीर ने करबी स्पर्श कर्यो एटले तत्काळ राजा व्यथा रहित थयो. राजाए प्रसन्न थईने तेने पांचसो गामनुं आधिपत्य आप्युं. श्रीपुंजे सर्वस्थले पोताना नियमनो महिमा फेलाव्यो. अनुक्रमे आयु पूर्ण करीने श्रीपुंज अनुज वंधु साथे सोधम देवलोकमां देवता थयो. त्यांथी च्यवी अनुक्रमे ते त्रणे सिद्धिपदने पामशे.

व्रतात्तमात्राञ्चि धर्मपूर्णता निमित्तमुख्यं परिणामसंगतं । समद्रकोपासकयोः प्रबंधतः विचार्यतत्वं निशिभोजनं त्यज ॥ 'मात्र व्रत छेवाथी कांई धर्मनी पूर्णता नथी, पण तेमां दृढता साथे शुभ परिणाम राखवा ते मुख्य छे. आ इक्तीकत उपर भद्रक अने श्रावक ए वे मित्रनो भवंभ छे ते उपरथी तत्वने विचारीने रात्रि भोजननो त्याग करो."



व्याख्यान ११८ मुं.

हवें बाकीना अभस्य विषे कहे छे. अनंतकायसंघाने बहुबीजं च मक्ष्यकम् । आमगोरसिमश्रं च द्विदलं सूक्ष्म सत्वजम् ॥ १ ॥ तुच्छफलं च वृंत्ताकं रसेन चलितं तथा । अज्ञातफलमेतानि ह्यभक्ष्याणि द्विविंशतिः ॥ २ ॥

#### व्याख्या

" १५ अनंतकाय, १६ वोळ अथाणा, १७ वहु वीज वाळां फळ, १८काचा गोरसे मिश्र एवा द्विदळ के जेमां सूक्ष्म जंतु उपजे छे, १९ तुच्छ फल २० वृंताक, २१ चित्र रस वाळी वस्तुओं अने २२ अजाण्या फळ ए प्रमाणे वावीश अभक्ष्य जाणवा.

अनंतकाय एटले साधारण वनस्पति, तेनुं भक्षण अनंत जीवनो घात थवामां हेतु रूप छे, तेथी ते अभक्ष्य छे तेनुं स्वरूप आगळ कहेवाशे.

संधान एटले लींबु, आंवली, बीली विगेरेनुं वोळ अथाणुं. ते अनेक जीवोनी जिएपतिनुं निमित्त छे, तेमज लवणवाळां शाक राइ साथे मिश्र करेलां त्रण दिवसगी वधारे रहे तो अभक्ष्य थाय छे एवो व्यवहार प्रवर्ते छे. परंतु झारमां नालेला लींबु विगेरेनो वर्ण गंध रस विगेरे बदलाय तो त्रण दिवस तडके रालेला पण अनाविण थाय—एम वृद्धो कहे छे.

वहु वीज एटले पंपोटा, अंजीर विगेरे. दाडम विगेरे फळोनी जेम अंतरपड वन-रना केवळ वीजवाळा फळो, तेओमां प्रत्येक वीजे जीवनो घात थाय छे. अने जे फळ वहु वीजवाळुं होय पण अंदर पड होय जेवा के दाडिम टिडोरा विगेरे ते अहभय नथी.

आम गोरस, एटले उना कर्या विनाना दुघ, दहींने छाश-तेमां जो द्विदल मिश्र थाय तो तेमां केवळी गम्य सूक्ष्म जंतुंओ उपजे छे. शाल्लमां द्विदलनुं लक्षण आ प्रमाणे कहुं छे—" जेने पीळवाथी तेल नीकले नहीं अने पीळतां वे दळ ( दाळ ) जुदा पडे ते द्विदळ कहेवाय छे, एरंडी राइ विगेरेने पीळवाथी वे दळ थाय छे पण तेमांथी तेल नीकळे छे माटे ते द्विदल न कहेवाय." आवां कठोळनी साथेटाढांदुध, दहीं के छाश खावां नहीं, ते विपे परशाल्लमां पण लखे छे के—

### गोरसं माषमध्येतु मुद्गादिसु तथैव च । भक्षमाणं भवेत्रुनं, मांस तुल्यं च सर्वदा ॥

"अडद अने मग विगेरे कठोळमां गोरस भेळवीने भक्षण करे तो ते मांस मुल्य थाय छे." तेथी घोळवडां एटले काचा दहींमां नाखेला वडा अभह्य छे. पण जो मयम काची छाश के दहींने गरमकरीने पछी तेमां द्विदल निष्णव पदार्थ नाखे तो ते दोप ग्रक्त नथी एम वृद्धो पासेथी सांभळ्युं छे. आ वातने केटलाएक दुंदीयादिक मानता नथी पण ते तेमनो दुराग्रह छे. जेम विचार संरक्त निर्युक्तिमां कह्युं छे के, 'जो विया जातना वृक्षनी यिष्ट अने अंकोल वृक्षनी घाणी करावीन तेमां सेलडी पीले तो तत्काळ संमूर्किम माछलांओ उत्पन्न थाय छे.' तेवी रीते अदि पण जाणवुं. वळी कह्युं छे के, "मग तथा अडद दिगेरे द्विदल काचा गोरसमां पडतां तत्काळ त्रस जीव उत्पन्न थाय छे, तेमज वे दिवस उपरांतना दहींमां पण त्रस जीव उपले छे." कोइ ठेकाणे 'तिदिणुवारें ' एटले चण दिवस पछी एवी पाट छे, ते योग्य लागतो नथी. कारण के वे दिवस व्यतितथयेलुं दहीं अभक्ष्य छे. एम अधिगशास्त्रमां कह्युं छे. आटला उपरथी काचा गोरस साथे द्विदल मिश्र थवाथी

तेमां अनेक सूदम जीव उपजे छे. एम सिद्ध याय छे तेथी ते अभस्य जाणवुं. ए प्रथम ऋोकनो अर्थ यथो.

ह्वे तुच्छ फर एटले पहुडां, जांबू, बोर, कोटां विगेरे. उपलक्षणथी तुच्छ पुष्प तथा पत्रनुं पण प्रहण कर्त्नुं. आहें पुष्प ते केरडा विगेरेना लेवा अने पत्र ते वर्षाकाळमां बती तांदळजा विगेरेनी भाजी लेघी. तथा कोमळ मग चोलानी सींगो पण प्रहण कर्वी कारण के, तेमां घणां जीवो हणाय छे अने स्ति थती नथी.

इवे वृंताक के जे कामोद्दीपक अने निद्रा वर्षक होवाथी दूषित छे. ते विषे लोकिक शास्त्रमां पण लखे छे. "शिव पार्वतीने कहे छे, हे प्रिये ! वृंताक, कार्लींगडा अने मूळा विगेरेनो भक्षण करनार मृद्ध पुरुष अंतकाळे मने संभारत्रे नहीं." वळी "शास्त्रने जाणनार पुरुषे, वृंत्ताक, घोलावृंत्ताक, मूला अने रातामूला वर्जवा, एम मनुए कहेलुं छे." आ प्रमाणे भारतना शांतिपर्वना प्रथम पादमां लखे छे.

वळी रसभी चलित एटले बेस्वाद थयेलां, वासी द्विदल, पुछा, वडां अने रांधेला कुर विगरे. ते शिवाय बीजुं पण कोहेलुं सर्व अन्न त्यजी देवुं, कारणके ते वहु जीव संसक्त थई जायछे. कहुं छे के, ''तेवुं अब संचय करवाथी मिथ्यात्व वधे छे, वापरवाथी विराधना थायछे अने तेयां डंदर विगेरे घणी जातना समुर्छिम जीवो उपजेछे, इत्यादि घणां दोष थाय छे." एनो भावार्थ एवो छे के, तेवुं अस जो रात्रे वासी राल्युं होय तो ते जोईने वीजा मिध्यात्व पामे छे अने केटलाक निंदा करें छे के, "जुओ आ श्रावक! केवो संचय करनाराछें!" वळी तेवी रीते वासि राखवाथी संयमनी पण विराधना थायछे, तेमज तेवा साधुवा विगेरेने राखी मुकवा थी करोळीयानी जाल तथा वीजा सूक्ष्म माणीओनी जाति तेमां उपजे छे. पोळी, मालपुवा विगरे वासी राखवाथी तेमां लालीया जीव उत्पन्न थायछे. तेवा आहार नी अभिलाषा करवा उंदर आवे छे, अने तेना करडवानो अवाज सांभळी मार्जार विगेरे त्यां आवी तेमनुं भक्षण करी जायछे. इत्यादि घणां दोप थामछे. ए प्रमाणे श्रीवृहत्कल्पनी टीकामां कहेलुं छे. लालीया जीव द्वीद्रिय जातिना छे, एम वृद्ध संपदाय छे. केटलाएक ढुंढकादि आ चळीत रसने पण अभस्य मानता नथीं ते अयुक्त छे. कारण के, रोटली विगेरेमां ते प्रत्यक्ष जणायछे. उपलक्षणथी काळाति ऋम थयेला पक्वानने पण चळीत रसमां गणवं. ते विषे एम लख्युं छे के, '' जे दिवसे पक्वान कर्यु होय त्यारथी वर्षा कालमां पंनरदिवस सुधी कल्पे, न्नीत काळमां एक माससुधी कल्पे अने उष्ण ऋतुमां विश दिवससुधी कल्पे. मुनि त्यां सुधी ते ग्रहण करे. " केटला एक एम कहे छे के, ज्यां सुधी वर्ण, गंध, रसादि

वगड्युं न होय त्यां सुधी कॅल्पे छे. वली आद्रा नक्षत्रथी आंवानो रस, अने वे दिवस पछीनुं दहीं अने छात्र पण सेववा योग्य नथी— आ प्रमाणे भक्षाभक्ष्यनो विचार संपदायथी जाणी लेवो.

वळी अजाण्युं एटले जेनी जातिके नाम जाजवामां न होय तेवां फळ, पत्र, पुष्प अने मूळनो त्याग करबो. तें विषे ब्रह्मांड पुराणमां लखे छे के, अभह्यतुं भक्षण करवाथी कंठ रोग विगेरे थायछे. शातातप ऋषिना रचेला शास्त्रमां पण कह्युं छे के, अभह्यतुं भक्षण करवाथी हृदयमां कृमि उत्पन्न थायछे.

उपर प्रमाणे सर्व मळीने वाविश्व प्रकारना अभक्ष्य छे. ए वीजा श्लोकनो अर्थ कहो. उपर कहेळा सर्व अभक्ष्य पापरूप छे, तथी श्रीजिनेंद्रना आगमना मर्मने जाणनारा व्रतधारी गृहस्थोए इंद्रियोने वश करीने सर्वदा सेववानहीं.



# व्याख्यान ११९ मुं.

चित्रतस एटले वासी अन्न विगेरे अभक्ष्य कहां छे. पण ते बाळ गोपाळ विगेरे सर्वथी त्याग करबं अशक्य छे माटे पुनः तेन्नं वर्णन करे छे.

रसैः चिलतंनिः स्वादं द्वयाक्षाणां योनिस्थानकं। पर्युषितं कुत्सितान्नं भक्षणा दुःखमासदेत ॥

चित्रतस एटले " रसयी चित्रत थयेलुं, निःस्वाद थयेलुं, वेइंद्रिय जीवोनी जरपत्तिनुं स्थानक, वासी रहेलुं, अथवा कोही गयेलुं अन भक्षण करवाथी प्राणी दुःसने प्राप्त थाय छे." आ अर्थने दृढ करवाने नीचे प्रमाणे दृष्टांत छे—

कनकपुर नामना नगरमां जिन्चंद्र नामे एक श्रेष्टी हतो. तेने शीलवती नामे पत्नी हती. ते उभयथी गुणसुंद्र नामे एक पुत्र थयो हतो. ते बाल्यवयथी.

र्थी रहित हतो. एक वखते तेनी माताए तेने कहुं के, वत्स ! तुं वासी भोजन कर नहीं; केमके वासी भोजन करवाथी देहमां धाधर, करोळिया, अने त्वचा विकार विगेरे तथा वात संबंधी अनेक रोणो थशे, वळी बुद्धीनुं हीनपणुं थशे. ते साथे त्रस जीवनी हिंसा लागशे. ते संबंधी विशेष दोपो जाणवा होयतो श्री समयामृतसूरिनी पासे जईने जाणी लेजे. तेणे उद्यानमां रहेला ते गुरुपासे जईने तेना दोष पुछ्या. एटले गुरु बोल्या के, तूं सुभाग नगरमां जा. त्यां शाबर नामे एक चंडाल छे, ते तने एना दोष कहेशे. गुणसुंदर सुभागनगरे गयो, त्यां थावर चंडालनुं घर शोधी तेने वासीना दोष पुछ्या. थावरे कहुं के, हुं कहीश. पछी ते चंडाळे एक गृहस्थनी दुकानेथी शाळ, दाळ विगेरे सीध तेने अपाव्युं, तेणे छीधुं अने ते कोई क्रपणने घर मूल्य आपीने रंघाव्यं. ज्यारे ते भोजन करवा देढो त्यारे ते क्रूपणनी स्त्रीए पुछ्युं के, तमे क्यांथी आव्या छो ? गुनखुंदरे पोतानो सर्व वृत्तांत जणाव्यो. ते उपरथी ते स्त्रीए पोताना भाई तरीके ओलख्यो. वीजे दिवसे गुणखंदर जवाने तैयार थयो, पण ते स्वीए आयहथी रोक्यो. पछी तेणीए पोताना खुन्य पति पासे शाळि विगेरे सार्छ मोजन रांचवा मार्ग्यु; एटले तेणे कह्युं के, 'वाल अने तेल लई जईने भोजन कराव्य, बीजुं नहीं मळे ' पण ते स्त्रीए तो बीजी दुकानेथी घी खांड विगेरे लाबी गुणसंदरने माटे घेवर विगरे करवा मांख्या. ते वातनी तेना पतिने खबर पडी एटके ते वह सेद पाम्यो अने क्रोधथी तेणे वासी अन खाधुं. तेथी ते तत्काळ हृद्य फाटी ने मृत्यु पाम्यो. स्वीए जाण्युं के, में मारा भाईने भोजन करवा राख्यों तथी आ बन्युं, पण तेणीए आ बात कोईने जणाबी नहीं. कारण के जो ते बात बहार पहे तो ते अपुत्र होवाथी वधुं द्रव्य राजा छइ जाय. आवा भयथी ते वात कोईने जणा-ज्या वगर तेणीए श्रेष्टीना शवने घरमां खाडो खोदीने दाटी दिधुं. पछी तेणीए पोताना बंधुने गुप्त रीते ते वात जणावी अने कहुं के, भाई! तुं अहीं रहीने तारा बनेवीना चार कोटी द्रव्यनो व्यापार कर्य अने श्रेष्टी विषे कोई तने पुछे तो तारे कहेवुं के, ते दरीआ बाटे व्यापार करवा गया छे. जो तेने जीवतो कही शुं तो मारे सौभाग्यवतीनो वेष रखाशे अने जो मृत्यु पामेलो कहेशुं तो विधवापणुं भोगववुं पडशे. तथी शोक के रुदन कांई करवुं नहीं. केमके तेम करवाथी उल्रंट नुकशान है " आवा भगिनीना वचनथी गुणसुंदर त्यां रही दुकाने वेसीने व्यापार करवा लाग्यो

हवे पेछो चंडाछ गुणसुंदरने अच अपावी घर गयो. भोजन समय थतां तेनी स्त्रीए 'आ आजेज रांध्युं छे. 'एम कठोर अने असत्य वचन कही, ते चंडाळने वासी भोजन खावा आप्युं. ते साथे वावीश पोहोरनी छाश पण आपी. ते समये कांईक अंधकार पण थयो हतो. चंडाळे ते वासी छे एम जाण्युं पण धुधार्त्त होवाथीं

पोताना नियमने गण्यावगर तेणे खाधुं. तेथीं शूलना रोगवडे गाढ निद्रामां मृत्यु पाक्षीं अने गुणसुंदरनी वेनना उदरमां पुत्रपणे उत्पन्न थयो. (जे रात्रे शेठ जीवता इता.)

केटलाक दिवसो गया पछी गुणसुंदर मावंगना पाडामां गयो. त्यां यावर मावंगने घर शोकयुक्त आकंद सांगळी तेणे, कोईने पुछयुं, एटले तेणे यावर चंडाळ नुं मरण जणाव्युं. ते सांभळी गुणसुंदर खेद पाम्यो अने 'अरे! तेने अकस्मात् शुं ययुं? तेना मरण पामवाथी मारो संदेह पण भाग्यो नहीं.' एम विमासवा लाग्यो. पछी ते स्वदेश जवाने तेयार थयो पणतेनी बहने पोताने पुत्रनो जन्म यता सुधी रोक्यो.

एक दिवस गुणसुंदर होटे वेटो इतो तेवामां कोई स्त्रीए आवीने तेने कहूँ के, तने तारो भाणेज तेडावे छे. ते विरूपय पाधीने घर गया. त्यां तरतना जन्मेला वाळकने दीटो. तेणे कहां के, तुं थावर चंडाळने घेर जा, त्यां तरतना जन्मेला वालकने यावरनी स्त्री मारी नाखे छे, तेने वचाव्य. सुंदरे त्यां जई चंडालीने कहां के. अरे ! शामाटे हिंसा करे छे? चंडाळी वोछी-श्रुं करुं, आ पुत्र ज्यारे उदरमां व्याच्यो त्यारे तमारो भित्र मृत्यु पाम्या अने घरमां अत्यंत दारिद्र आन्युं.' पछी सुंदरे तेने घणुं द्रव्य आपीने ते पुत्रने मृत्युयी बचान्यो. पछी ते घर आव्यो एटले तेनो भाणेज बोल्यो के- मामा, तमारो संदेह भप्न थयो ? मामाए कहूं, भंग थयो नथी. त्यारे ते बोल्यो- हुं थावर चंडाळनां जीव छुं. ते तारा जेवा साधमीनी भक्ति करवाथी अने अभस्यनी नियम पाळवाथी अहि चार कोटी द्रव्यनी स्वामी थयो छुं. तेमां पण मे किंचित् विराधना करी इती तेथी ते भवमां हुं शूकरोगना महान्याधिथी मृत्यु पाम्यो इतो. अने जे तारा बनेली श्रेष्टी लोभयी तेमज वासी अन्ननुं भक्षण करवाधी मृत्यु पामीने थावर चंडालने घेर पुत्रपण अवतयों छे, माटे हवे तमेपण जाजथी अभस्य खोवाना नियम अंगीकार करो. " आ प्रमाणेनी इत्रीकत जाणवायी निःसंदेह थयेलो सुंद्र तरतज ते नियम लई पोताने नगरे आव्यो अने सर्व वृत्तांत पोतानी माताने जणाव्यो. ते सांथली तेनी माता हर्प पामी. कह्यं छे के,

# अधमा सान्वया छुना मध्यमा द्रविणार्जनैः। उत्तमा रुष्यति माता तैस्तैः सुकृत कर्मभिः॥

" अधम माता, पुत्रनो वंश वधवाथी राजी थाय छे, मध्यम माता पुत्र द्रव्य कमाय तेथी हर्ष पामे छे अने उत्तम माता पुत्र अनेक मकारना सुकृत करे तेथी हर्ष पामे छे."

गुणसुंदरे एक वलत गुरु महाराजने पुछ्युं के—स्यामी ! आपनी आज्ञा प्रमाणे करवाथी मारो संदेह तो दूर थयो पण मारा वाळक भाणेजने वाचा श्री रीते

शह १ गुरु घोल्या के, ते चंडाळे अंत समये पोताना मित्र कोइ व्यंतर देवने पुछ्छुं हतुं के, मित्र ! सुंदरनो संशय माराथी भग्न थयो नहीं, तेनुं मारे शुं करवुं १ देवे कहुं के, तुं पेळा छपण श्रेष्टीने घरे ज्यारे जन्मीश त्यारे हुं तारा मुखमां प्रवेश करीने तेनो संशय दूर करीश. एथी तेने वाळपणे पण वाणी थइ हती. आ प्रमाणे सांभळी सुंदर श्रावक धर्म पाळी, प्रांते मुनिधर्मने पण स्वीकारी अंते स्वर्गने प्राप्त थयो.

"उपर कहेला चरित्रना तत्वने विचारी अने जेमां सर्व इंद्रियोनी पद्धता माप्त थाय छे तेवुं सन्मनुष्यपणुं मेळवी भवित्राणीओ वासी अने कोहेला अन्ननो त्याग

करवारुप वतने ग्रहण करो."

हत्यन्दिनपरिमितोपदेश संग्रहाल्याया मुपदेशमासादंग्रथस्य ११ वृत्ती चलितरस अभस्य विषये एकोनविशोत्तरशततमः भूषे प्रविद्याल्य स्थित्त । ११९॥

### व्याख्यान १२० मुं.

हवे अजाएया फळ संबंधी ग्रण दोष कहे छे. फलान्यज्ञातनामानि पत्रपुष्पाण्यनेकधा ॥ ग्रुरुसाक्ष्यात्मसौरूयार्थ त्याज्यानि वंकचूलवत् ॥ १ ॥

#### व्याख्या.

ा जेना नाम जाणवामां न होय तेवा अजाण्या फळ, पुष्प अने पत्रीने आत्मसुखने माढे गुरुनी साक्षीए बंकुचूल नी जेम त्यजी देवा."

वंकचूलनो मर्वेध आ प्रमाणे-

#### वंकच्लनी कथा।

हींपुरी नाम नगरीमां विमल्यशा नाम राजा हतो. तेने पुर्पचूल अने पुष्पचूला नामे पुत्र पुत्री हता. तेमां पुष्पचूल मछतिथी वलवान अने उद्धत हतो, तेथी लोकमां वंकचल एवा नामथी प्रख्यात थयो हतो. तेनी रंजाडथी कंटाळीने प्रजाप राजाने फ्रीयाद करी, राजाए कोष पामी तेने नगरीनी वहार काढी मुक्यो. तेना अनुरागथी तनी स्त्री अने तेनी वहेन पुष्पचूला तेनी पाछळ गयां. अर्ण्यमां जतां भिष्ठलोकोए तेने पोतानो राजा कर्यों.

एक वसते ते सिंहगुहा नामनी पाळमां कोई आचार्य पर्धार्या. तेमणे वर्षाकाळना चारमास रहेवाने माटे वंकचूळनी पासे स्थाननी याचना करी. वंकचूळे
कां के, जो अहिं रहेवुं होयतो मारी सीमामां धर्मोपदेश करवो नही, मौन रहेवुं,
सूरिए कहंं के, ते अमारे मान्य छे, पण ज्यांसुधी अमे रहीए त्यांसुधी तमारे जीवहिंसा करवी नहीं. वंकचूळे ते स्वीकांग्री चार मास पछी विहार करवानो समव
आज्यो एटळे आचार्य वंकचूळने जणाज्युं. कहंं छे के, "साधु, पक्षी, अमरनां टोळां,
भीकुळ अने मेघ एक ठामे रहेता नथी." सूरिनी साथे केटळेक सुधी वंकचूळ वळाचवा गयो. ज्यारे पोतानी सीमा पूरि थवाथी ते उभो रह्यो त्यारे सूरि वोल्या के, हे
भद्र! तुं आटला अभिग्रह छे- १ अजाण्या फळ खावा नहीं, २ सात आठ पगना
पाछा हटीने कोइनी उपर या करवा, ३ राजानी स्त्रीने सेववी नहीं, अने ४ कागडानुं मांस खावुं नही. आ नियम सुगम लागवाथी वंकचूळे ग्रहण कर्या. पछी ते गुरुने
नमीने पोताने घेर गयो.

एक समये वंकचूल वींजा चोरोनी साथे कोई साथने लुंटीने अरण्यमां पेटो. ते वखते सर्वने क्षुपा लागी. वीजा चोरलोकोए क्षुप्रात्तिथई किंपाकना फळ खावा अने वंकचूले अज्ञात फळनो अभिग्रह होवाथी ते फळनुं नाम न जाणवाना कारण- थी खाधा नहीं. वीजा चोर मृत्यु पामी गया कारणके किपाकना फळ विषयय होब छे. ते जोई वंकचूले विंचार्यु के, अहो, नियमनुं फल केवुं उत्तम!

पछी ते त्यांथी रात्रे पोताना घरमां आव्यो, त्यां पोतानी पत्नी साथे एक पुरुष्ने स्तेलो जोयो. एटले कोपथी तेने मारवाने तैयार थयो. त्यां गुरुष आपेलो नियम याद आववांथी सात आठ पंगला पालो हठ्यो. तेथी हाथमां डगामेलुं खड्ग द्वार साथे अथडायुं, तेना अवांजंथी तिनी वेन जागीउठी अने घोली के, तुं कोण छे र स्वर उपरथी वेनने ओळखीने तेणे पुछ्युं के, आवो पुरुपवेश केम लींथो छे? नेणीए कह्युं के, पुरुपनो (तारो) वेश लईने नटनुं नृत्य जोवा सभामां गई हती. त्यांथी पाली फरतां थाकी जवांथी वेश बद्द्या विना एमने एम मारी भाभी साथे सुई गई हती. ते सांभळी तेणे पोताना नियम देनारा गुरुनी मशंसा करी.

एक वसते पेला सृरिना विषयो त्यां आव्या, तेमने नमी वंकचूले श्रीजिन-मासाद कराववा विषे धर्मदेशना सांभळी तेथी तत्काळ तेणे तेज पंछीमां चंमें पंचतीं नदीने तीरे एक जिनमासाद कराव्यो. तेमां श्रीवीर मगवंतनी स्थापना करी. 'अनुक्रमे ते तीर्थ थयुं. ए 'तीर्थनी यात्रा करवाने कोई विणक स्त्री साथे त्यां 'आव्यो. चर्मणवती नदी उत्तरवाने ते दंपती वाहाणमां वेटां. मासादनुं शिखर जोतां ते विण-

कर्नी स्त्री चंदनादिक उत्तम द्रव्यो सुवर्णना कचोळामां छईछईने तेनी सामे नाखवा लागी. एटलामां ते विणकस्त्रीना हाथमांथी कचोळुं नदीमां पड़ी गयुं. ते जोई विण-क वोल्यो-अरे भद्रे! वहु खोटुं थयुं-आ कचोळुं राजानुं छे, आपणे घराणे राल्युं छे, तेमां अमूल्य रत्न जडेलाले, इवे हुं तेने शुं उत्तर आपीश? पछी ते विणकनी आज्ञाथी कोइएक माछी ते लेवा नदीमां पड्यो. अंदर शोधतां श्रीपार्श्वनाथना विव ना खोळामां रहेलुं ते कचोलुं तेणे दीढुं. ते लईने तेणे वर्णिकने आप्युं. ते रात्रे खला सीने स्वप्न थयुं के, नदीमां पुष्पमाळा नाखवी, ते माळा जे स्थाने स्थिर थाय तेनीं नीचे श्री पार्श्वनाथजीना विवनी शोध करवी, अने ते एक विवज छइने वंकचूछने आपवुं. खळासीए ते प्रमाणे कर्युं अने श्रीपार्श्वनाथजीनुं विंव काढीने वंकचूळने आप्युं. तेथी घणी खुशी थई तेणे ते माछीने पुष्कळ दान आप्युं. अने श्रीवीरप्रभु-ना प्रासादनी वहार मेंड्पमां ते विवने तेणे स्थापित कर्यु. पछी नवीन चैत्य वंधावी तेमां स्थापवाने माटे ते विव लेवा मांडशुं, घणा पुरुषोषु मळीने प्यत्न क्यों, पण ते विव त्यांथी चलित थर्युं नई। त्यांज रह्युं. अद्यापि पण ते त्यांज छे. त्यार्पछी एक दिवस पेळा माछीमारे आवीने कहुं के, हे स्वामी ! वीजुं एक विव अने सुव-र्णनो रथ नदीमां ते स्थानके छे. एटले वंक चूले सभा वर्चे पुछ खुं के, आ बंने विंव विषे कोई कांइपण हकीकत काणे छे? एटले एक वृद्ध पुरुषे कुहुं के, "देव, पूर्वे गजापाळ नामे राजा शञ्चना सैन्य साथे युद्ध करवा गुग्रा हता, ते समये शञ्चना भये-थी ते राजानी राणी पोतानुं सर्वस्व अने आ वे विव सुव्णिरथमां राखीने आ चर्म-णवती नदिने जलदुर्ग धारी तेमां एक वहाणमां रही हती. एवामां कोइ दुर्जने आवी-ने तेने कहुं के, राजा मृत्यु पाम्या. ते सांभळतांज तेणीए ते विंव तथा रथ सहित वहागज आक्रमण करवावडे जळमां डुवाडी दीघुं. पोते जिनध्यानथी मृत्यु पामीने देवता थयेल हो, नहीं तो आ विवनी महिमा कोण करें ? ते वे विवमांथी एक विंव तमे लाव्या छो अने वीजुं एक विंव त्यां ज रहेल जुणाय छे. " आ प्रमाणे सांयळी ते विव लेवाने माटे वंकचूळे अनेक उपाय कुर्या पण ते निकळ्युं नहीं, एम संभळायछे के, ते विव अद्यापि त्यांज छे अने वर्षमां पुक दिवस दर्शन आपे छे. श्री वीरप्रभुना विवनी अपेक्षाए श्रीपार्श्वनाथना विव वहु नाना होवाथी श्रीवीर मभुनी आगळ ते वाळकरूप छे एवं धारी त्यांना मेवाड़ी भिल्ल विगेरे लोकोए तेनुं चेख्नण पार्श्वनाथ एवं नाम पाडयुं. ते सिंहगुहा पछीने ठेकाणे अनुक्रमे मोटुं त्तगर वसेलुं छे. अद्यापि श्रीवीर भगवंतनी तथा चेल्लणपार्श्वनाथनी यात्रा करवा अनेक संघो त्यां आवी तेमने आराधे छे.

" एक वलते वंकचूल उज्जयिनी नगरीमां घोना पुच्छे वळगीने राजाना भंडारगृहमां पेटो. त्यां ते राजानी मुख्य पटराणीना जोवामां आव्यो, एटके तेणे कोप करीने पुछयु के, तुं कोण छुं? तेणे कहुं के, हुं चोर छुं. राणीए कहुँ के, भय पामीश नहीं. मारी साथ संगम कर्य. वंकचूले कहुँ के, तुं कोण छुं ते वोली के, हुं राजानी राणी छुं, चोरे कहुं के जो तुं राजपतनी हो तो मारी माता छो माटे हुं पाछो जाऊं छुं. ते सांभळी राणीए नखबडे पोतानूँ शरीर विदारण करीने पोकार कर्यों, एटले तत्काळ रक्षकपुरुषोए आवीने वंकचू-छने बांधी लीघो. आ वधी इककित गुप्त उभेला राजाए सांभळी. तेथी राजाए चितन्युं के, अहो, स्त्रीचरित्र केवुं दुर्छक्ष छे! प्रातःकाळे रक्षको तेने राजानी पासे सभामां लइगया. राजाए तेना वधन छोडाव्या. एटले ते नमस्कार करीने आगळ वेठो. राजाए पुछछुं के तुं मारा मंदिरमां केम पेठो इतो ? यंकचूल वोल्यों के, देव! हुं चोरी करवाने पेठो हतो, त्यां मने देवीए दीठो, एटले ग्तीपाइओ पासे पकडाव्यो. वंकचूले पेली नीच वार्ता कही नहीं, तेथी राजा घगो ख़ुशी थयो अने तेने पुत्र करीने राख्यो. राजाए पटराणीने मारवा मांडी त्यारे विकचूले तेने वचावी. आवीं रीते प्रत्यक्ष नियमोनुं फळ देखी वैकचूल मनमां वार्श्चार विचारवा लाग्यो के, अहो, नियमोनुं फळ केवुं उत्तम छे.

एक वसते राजाए तेने कोईनी साथे युद्दें करवा मोकल्यां. त्यां वे शान्नसैनिकोना गाद महारोधी घायल थयों. राजदेवको तेन राजा पामे लड़ आन्या. राजाए तेना औपध माटे घणा वैद्योन एकटा कर्या. वैद्योए का-गडाना मांसनुं औपध वतान्युं, पण वंकचूले तेनी नियम करेलो होवायी ते औपधनी इच्छा करी नहीं. पछी राजाए तेनी मित्र जिनटासने नजी-कना गामथी वोलान्यों. जिनदास उज्जेणीए आवतो हतो त्यां मार्गमां वे देवीओने कटन करती तेणे दीटी. श्रेष्टीए पुछचुं के, भद्रे! कम रुवोद्यों? ते वोली के, भद्र! अमे वंने भर्चा वगरनी सौधमें देवलोक निवासी देवीओं छीए. काकपक्षीनुं मांस न खाय तो वंकचूल अमारो पति थाय तेम छे. पण तमारा वचनथी जो ते नियमना भंग करको तो ते दुर्गतिने पामशे अने अमे भर्चार विनानी रहेशुं, एथी अमे रुदन करीए छीए. ते सांभळी जिनदास बोल्यो के-देवी! रुदन करी नहीं, हुं तेने विशेष दृद करीश. पछी जिनदास उजेणी आन्यो अने राजानी प्रेरणा छतां वंकचूलने तेणे कर्युं के, ' मृत्यु आवे ते सारुं, दारिद्रनो संगमथाय ते सारुं, पण ग्रहण करेला वतनो भंग कर्युं ते सारुं नहीं. '' इत्यादि वचनोथी वंकचूल विशेषपणे वतमां दृद थयों. अने

छेवटे मृत्यु पामी अच्युतकल्पमां देवता थयो. चयारे जिनदास त्यांथी पाछो बळ्यो त्यारे पाछी पेली वंने देवीओने मार्गमां रुदन करती तेणे दीठी एटले पुछयुं के, भद्रे! इवे केम रुवोछो? में तेने मांस मक्षण करवा दीधुं नथी. ते वोछी के, भद्र! ते नियमनी अधिक आराधना करवाथी अच्युत देवलोकमां देवता थयो, एटले अमे तो भर्तार विनानीज रही. ते सांभळी जिनदास पोताने घर गयो. त्वार्यी आ दींपुरी तीर्थने निर्माण करनार वंकचूल अधिक मल्यात थयो.

" जेम श्री वंकचूल चोर छतां अंगिकार करेला नियमोने दृदपणे पाळवाथी अच्युतकल्पने पाम्यो, तेम अन्य भव्य प्राणीओ पण सर्व अभक्ष्यनो त्याग करवाथी अत्यंत सुखनी पृष्टिने पामेछे. "



ब्याग्मो स्तंत्र समाप्त.



# श्री उपदेश प्रांसादे नवम स्तंज प्रारंज.

व्याख्यान १६१ मुं. सातमा वतनी अंतर्गत अनंतकाय स्वरूप.

प्रसिद्धा आर्यदेशेषु, कंदा अनंत कायिकाः। द्वात्रिंशः संख्यया ज्ञेया, त्याज्यास्ते सप्तमे वते ॥ १ ॥

#### व्याख्या.

" आ आर्यदेशमां, कंद विगेरे वत्रीश प्रकारना अनंतकाय प्रमिद्ध छे, ते सातमा व्रतमां त्याग करवा योग्यछे. ?? कंद प्रमुख अनंतकाय वत्रीश प्रकारना छे, ते आ प्रमाणे-१ सूरण कंद, २ वज्रकंद, ३ लीली इळदर, ४ लीलुं आदु, ५ लीलो कचुरो, ६ सतावरी. ७ विल्लाली (वरियाली कंद ), ८ कुंआर, ९ थोर, १० गलो, ११ लसण, १२ वंशकारेला, १३ गाजर, १४ लुणीनी भाजी, १५ लोहीनी भाजी, १६ गिरिकणींका, १७ पत्रना कुंपलीआ, १८ खरसुओ, १९ येगी, २० लीली मोथ, २१ लोण रुखवली, २२ विञ्चहुडा, २३ अपृत वेल, २४ मुळा (कांदा), २५ भूमिमांथी नीकळता वीलाडीना टोप, २६ विद्ळना अंकुरा २७ दक्कवय्युलो, २८ सूथरवछ. २९ पहुंक, ३० कोमळ (काची) आंवली, ३१ आलु कंद, ३२ पिंडालु-आ वधा नामे करी अनंतकाय छे. ते शिवाय वीजा लक्षणवडे अनंतकाय छे. आ सर्व कंदजाति अनंतकायिक छे. तेओना प्रसिद्ध भेद नामथी कहें छे. १ सूरण कंद, प्रसिद्ध छे. २ वज्रकंद, प्रसिद्ध छे. ३ आर्द्र ( लीली ) इळदर. ४ आद्रकेंद, शृंगवेर ते लोकमां ' आदु ' एवा नामथी प्रसिद्ध छे. ५ आर्द्रकचूरक. ६ शतावरी. ७ विद्धरिका एक जातनी मासिद्ध वेल छे. ८ कुमारी एटले कुंवार. ९ थोर. १० गडुची एटले गळो. ११ लशुन ते लसण, १२ वंश कारेला. १३ गाजर. १४ छवणक एक जातनी वनस्पति छे, जेने वाळवाथी सिंवजका (साजी) उत्पन्न यायछे. १५ छोडक एटले कमिलनीनो कंद. १६

गिरिकार्णिका एक जातनी वेछ. १७ कुंपलीआ-पात्रा-ते प्रौद्ध पत्र पेहेलां वीज उगवाने समये जे अंकूरा थायछे ते वधा लेवा. आई शिष्य शंका करेंछे के, " शास्त्रमां कहुं छे के, 'सर्व किश्लय-कुंपलीआ उगती वस्तते अनंत काय कहेलांछ 'ते वाक्य तो तमें सत्य कर्यु पण अन्यत्र शास्त्रमांज कहेलुं छे के, " जोवियमू छे जीवो सोविय पत्ते पढमया एति " एट छे जे मूळनो जीव छे ते पण प्रथम उगतों पत्रमां आवेछे. ए वान्यनुं समाधान शुं ? एक टेकाणे सांधी छो तो बीजे ठेकाणे तुटेछे. " गुरु कहेछे तेनो उत्तर सांभळ, उतावळो न था. जे वीज छे तेनो जीव वर्षाकाळ तथा पृथ्वी विगेरे सामग्री पामीने उगवानी अवस्थामां तेनो ते रहेछे अथवा वीजो पण होयेछे. वीज ने मूळप्रथम पत्रमां एक जीवपणुं कहेलुंछे, ते अमे पण जाणीए छीए. पण कहुं छे के, वीजमां मूलपण उत्पन्न थईने ते वीजनो जीव अथवा बीजो जीव ते पछी थनारी उगवानी अवस्थाने उत्पन्न करेछे. उद्भव चलते किश्रलय-कुंपलीयांनी अवस्थामां जरूर अनंता जीवो उत्पन्न यायछे तेथी ते मूळना जीव पोतानी स्थितिना क्षयथी विनाश पामी तेज जीव अनंत काय-पणाने प्राप्त करी ज्यांसुधी प्रथम पत्र थाय त्यांसुधी वंधेछे एटले तेमां विरोध आवतो नथी. केमके किसलयमां अनंत कायपणु अने एक कर्नापणु वंने होयछे. कटेलाएक आचार्यो प्रथम पत्र ए शब्दथी वीजनी पेहेली उगवानी अवस्थाज कहें छे. पछी ते प्रत्येक हो के साधारण हो. सार ए छे के सर्व प्रकारना किञ्चलय अनंत कार्यिक छे. १८ खरसुंओ. १९ थेग ते गोपीकंद. २० लीली मोथ. २८ छवणनो वीजो पर्याय अमर नामना वृक्षनी त्वचा ते त्वचा शिवाय तेना चीजा अवयव लेवा नहीं २२ वावीशमो भेद खिलोडा ते प्रसिद्ध छे. २३ तेवी-शमो भेद अमृतन छीछे. २४ चोवीशमो भेद मूळाछे. ते विषे भारतमां पण लखेछे के,

पुत्रमांसं वरं जुक्तं न तु मूलक जक्तां। जक्तणात्ररकं गच्छे घर्जनात् स्वर्गमोप्नुयात ॥

"पुत्रनुं मांस खादुं सारुं पण मूळानुं भक्षण करदुं सारुं नहीं. जो मूळा खायतो नरके जायछे अने तेने वर्जवार्थी स्वर्भे जवायछे. " वळी कहुं छे के.—

रक्तमूलकमित्याहु स्तुष्टवं गोमांस नक्षणं। श्वेतं तिविधिकोतिय मूलकं मिदरोपमं॥

" हे कुंताना पुत्र, जे रातो मूळोछे ते गायना मांस जेवोछे अने श्वेत मूळोछे ते मदिरा जेवोछे. " वळी:कह्युं छे के- यस्मिन् यदे सदान्नार्थं, कंदम्खानि पच्यते । स्मशानतुल्यं तद्देश्म, पितृज्ञिः परिवर्जितं ॥

" जेना घरमां इमेशां खावाने माटे कंदमूळ रंघायछे, तेनुं गृहश्मशान जेनुं छे अने पितृओं तेने त्यजीदेछे."

२५ पचवीशमोभेद भूमिरुह एटले छत्रकनोछे ते वर्षाकालमां पृथ्वीने फोडीने उगी नीकळेले, तेने बीलाडीना टोप कहेले. २६ छवीशमो भेद विरुद्ध एटले अंकृरित थयेला द्विदल धान्यनो छे. २७ सत्तावीशमो भेद दकवाथलानो छे ते एक जातनुं शाक थाय छे. २८ अठावीशमो भेद शूकर नाम वालनो छे, तेमां धान्यवाल लेवा नहीं. २९ ओगणत्रीशमो भेद पल्पंक जातना शाकनो छे. ३० त्रीशमो भेद कोमल आंवलीनो छे. ३१ एकत्रीशमो भेद आलुकंदनोछे. ३२ वत्रीशमो भेद पिंडालु नाम कंद जातिनो छे. आ प्रमाणे वत्रीश प्रकारनाज अनंतकाय जाणवा नहीं पण सिध्धांत युक्तिथी ते शिवाय वीजा पण जाणी लेवा. कहुं छे के, "जेनी नसो, संधीओं अने गांठो गुप्त होय, जेना भांगता सरखा ककडा थाय अने जे छेचा थकां पण पाछां जंगे ते साधारण शरीर कहेवाय. अने तेथी विपरीत ते प्रत्येक शरीर कहेवाय ते एक शरीरमां रहेल अनंत जीवोने श्वासोश्वास तथा आहार विगरें सर्व एकसाथेज होयछे, तेने दुःख पण अनंतुछे. ते साधारण वनस्पति कहेवायछे, तेना सोयना अग्र जेटला भागमां पण अनंत जीवो कहेलाछे, तेथी विपरीत लक्षण जेनामां होय प्रत्येक वनस्पति कहेवायछे. आ विषे घणुं कहेवानुं छे पण ते लोकप्रकाश ग्रंधरीं तथा वनस्पति सप्ततिथी जाणी लेवुं.

लोकिक शास्त्रमां (३८११७२९७०) आटली संख्यानो एक नार कहेलोछे. वीजे देकाणे त्रण कोड एकाशी लाख बार इजार एकसोने सीतेर (३८११२१७०) आटली संख्यानो एक नार कहेलोछे. एक एक जातिना एक एक पत्रादिकनी जुटीजुदी गणत्री करतां अदार भार वनस्पति थायछे एम कहेलुं छे. ते आ प्रमाणे:—

चार भार पुष्प, आठ भार फळ ने छ भार वेलो, एम अणे मळीने अढार भार वनस्पति थायछे एम शेपनामे कहेलुंछे. अथवा पक्षांतरे एम पण कहुंछे—चार भार कहु, वे भार तिक्त, जण भार मिष्ट, जण भार मधुर, एक भार क्षार, वे भार कषाय, एक भार विपसहित, वे भार विपरहित, एम अढार भार छे. अथवा छ भार कंटक, छ भार सुगंधी अने छ भार गंधरहित, एम पण अढारभार कहेलाछे, वळी एम पण कहुंछे के, चार भार पुष्पवग्रनी वनस्पति, आठ भार फळवग्रनी वनस्पति, अने छ भार फळ अने फुलवाळी वनस्पति एम अढार भार वनस्पति छे.

जे अनंत काय छे ते अभक्ष्य छे. कदि ते अचित्त थयेल होय तापण ते महण करवा योग्य नथी, तेमां जे सुंढ विगेरे छे ते याह्य छे. आ प्रमाणे अनंत कायनुं स्वरूप जाणी ते सातमा वतमां त्याग करवा योग्यले. माटे ते अनंत काय वस्तु भक्षण करवी नहीं. ए विषे धर्मरुचिनी कथा छे, ते आ प्रमाणे:—

#### धर्म रुचिनी कथा.

वसंतपुर नगरमां जित्र इत्रि नामे राजा इतो. तेने धारणी नामे राणी, इती. तेमने धर्मरुचि नामे एक पुत्र थयो इतो. एक वखते कोई तापस पासे दीक्षा छेवानी इच्छाथी राजा पुत्रने राज्य छपर वेसाडवाने छच्चक्त थयो. ते खबर सांभळी धर्मरुचिए पोतानी माताने पुछ्छुं के, माता! मारा पिताजी शामाटे राज्यनो त्याग करे छे! माताए कहुं, "पुत्र! आ राज्यलक्ष्मी शा कामनी छे! आ राज्यलक्ष्मी चपळ, नरकादि सर्व दुःखनी हेतुरुप, स्वर्ग तथा मोक्षना मार्गमां मुगलरुप, परमार्थे पापरुप अने आ लोकमां मात्र अभिमान करावनारी छे; एथी तारा सुइ पिता तेनो त्याग करी सर्व सुखनो साधक धर्म करवाने उच्चक्त थया छे. "ते सांभळी धर्मरुचिए कहुं के, हे जननी! ज्यारे एवी अधम राज्यलक्ष्मी छे स्यारे शुं हुं मारा पिताने एवा अनिष्ट छुं, के ते सर्व दोषनी मूमिरुप राज्यलक्ष्मी मने वळगाडे छे. आ प्रमाणे कही तेणे पण पिताची साथे दीक्षा लीधी अने सघळी तापसिकिया ते यथार्थपणे पाळ्या लाग्यो.

एक वसते अमावास्याने आगले दिवसे (चौदशे) एक तापसे उंचे स्वरं आघोषणा करी के, हे तापसो! आवती काले अमावास्या होवायी अनाकुट्टि छे. माटे आजे द्र्भ, पुष्प, सिमध्, कंद, मूळ तथा फळ ममुख लावी मुकवा योग्य छे. ते सांभळी धर्मरुचिए गुरु थयेला पिताने पुछ्युं, पिताजी! आ अनाकुट्टि एटले शुं! तेमणे कह्यं, पुत्र! लता विगेरेने छेदवां नही ते अमाकुट्टि कहेवाय छे. ते अमावास्यानो दिवस के जे पर्व गणाय छे ते दिवसे न करवं. कारण के, छेदनाटि किया सावद्य गणाय छे. ते सांभळी धर्मरुचि चितववा लाग्यो के, "मनुष्पादिकना श्रीरुची जेम जन्यादि धर्मथी गुक्तपणाने लीधे वनस्पतिमां पण सजीवपणं स्फुटपणे प्रतीत थाय छे. " त्यारे जो सर्वदा अनाकुट्टि थाय तो वधारे सारुं. आवृं चितवनारा धर्मरुचिने अमावास्याने टिवसे तपोवननी नजीकना मार्गे चाल्या जता केटलाएक साधुओं जोवामां आव्या. तेणे साधुओंने पुछ्युं के, शुं तमारे आजे अनाकुट्टी नथी, के जेथी आ बनमां प्रयाण करों छो? तेओए कह्यं के,

अमारे तो यावज्जीवित अमाकुट्टी छे. तेम कही साधुओ चाल्या गया. ते सांभळी उहापोह करतां धर्मरुचिने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न धयुं. तेथी तेने याद आव्युं के, हुं पूर्वभवमां दीक्षा छई, मृत्यु पामी, देवलोकनुं सुख अनुभवीने अहीं आव्यो छुं. पूर्वे में सर्वे वनस्पति जीवने अभयदान आप्युं हतुं, तो हवे आ भवमां पण तेनी हिंसा करवी मने योग्य नथी. आवुं विचारी ते प्रत्येक बुद्ध थयो. पछी तेणे वीजा कंदादिकनुं भक्षण करनारा तापसोने पण तेना पच्चखाण कराव्या.

मेषोष्ट्रहरूत्यादिजवेषु जक्षणं वद्धचादिकानां बहुषा विधायितम् । श्राध्यत्वमृत्वाय विधेहि रक्षणं तासां यथा धर्मरुचिर्मुनीं इवत्।। १॥

" वकरा, जंट, अने हाथी विगेरेना भवमां चछी प्रमुखनुं वहु प्रकारे भक्षण करेलुं छे. तो हवे श्राबकपणाने प्राप्त करीन हे जीव! ते वछी विगेरेनुं रक्षण कर, के जेथी धर्महाचे मुनींद्रनी जेम उत्तम फळ प्राप्त थाय. र "

भोगोपभोग जतना विश अतिचार छे तेमां प्रथम भोग संबंधी पांच अतीचार कहे छे. सचित्तस्तेन संबंधः संमिश्रोऽनिषवस्तथा। इष्पक्काहार इत्येते न्नोगोपन्नोगमानगाः ॥ १॥

" सचित्त, सचित्तनी साथे संवंधवाळुं, भिअ, अपक्व अने दुष्पक्व, आ पांच प्रकारनी वस्तुओनो उपभोग करवा ते भोगोपभोग वतना पांच अतिचार छे. " तेमां सचित्त ते कंद विगेरे जाणवा तेनो नियम छेनार कोई मनुष्य अना-भोगपणे तेनुं भक्षण करे ते पेहेछो सचित्त अतीचार जाणवो. धान्यनुं सचित्त-पणुं एटला काळ सुधी छे के ज्यांसुधीमां वीज निर्वीज थइ जाय के जे बाववाधी पुन: अंकुरित न थाय. ते विषे कह्यं छे के, " जव, गोधुम, अने शाली, ए च्रण वर्ष पछी निर्जीव थाय छे, तिल अने द्विदल-ए पांच वर्ष पछी निर्जीव थाय

छे. अलसी, कोसंबो, कोदरा विगेरे सात वर्ष पछी निर्जीव थाय छे. " जघन्यथी अंतर्मुहूर्त पछी योनि-बीजनो विध्वंस गाय छे. तथा सेटुक-कपास ते त्रण वर्ष पछी निर्वीज थाय छे. इत्यादि सिचत्रनो विचार सूत्रथी जाणीने एना अतीचारनो त्याग करवो. १

सिचत्तनी साथ संबंध प्रतिबध्ध वस्तु एटले वृक्षादिकनी साथ संबंध-वाळो तत्काळ ग्रहण करेल गुंदर विगेरे अथवा रायण, खजुर, केरी, अने खारेक प्रमुख तेमज सिचत्त वीज जेनी अंदर रहेल छे एवं पाकेलुं फळ ते पक्व छे तेथी प्राप्तुक छे माटे हुं तेनुं भक्षण करीश अने तेमां वीज अप्राप्तुक छे तेथी तेनो त्याग करीश. एवी बुद्धियी आखुं फळ मुखमां नाखे ते सिचत्त प्रतिबद्ध आहार-ए बीजो अतीचार छे. १

ज सिनतनी साथे भिश्र होय ते भिश्राहार कहेवाय. अथवा तिल भिश्र जव धान्य विगेरे भिश्राहार कहेवाय अथवा सिनतना संभववाळा अपक्व जव, अग्नियी संस्कार कर्या वगरनी कणिक विगेरे—तेने छोट छे एम जाणी अनित बुद्धियी आहार करे. पण जे पिष्ट (छोट) चाळ्यो होय ते अंतर्भृहूर्त पछी अनित्त छे अने चाळ्यो न होय ते मिश्र छे. कारण के, नहीं चाळवाथी तेमां धान्यना नखीया प्रमुख रहे छे तेथी तेनुं अपरिणतपणुं संभवे छे. मिश्रकाळनुं मान पूर्वे कहेलुं छे. तेवा आहारमां अनाभागादिवडे अतीचार थाय ते त्रीजो अतीचार छे.

अभिषव एटले अनेक वस्तुओना संधानथी उत्पन्न थाय ते अथाणुं, मदिरा, सुरको इत्यादि मांसनो प्रकार अथवा खांड विगेरे, अथवा तो सुरा थई शके एवा द्रव्यनो के तेवा वृक्षनो उपयोग-आ पण सावद्य आहारने छोडनाराने अना-भोगवडे आहारमां आववायी जे अतीचार थाय ते चोथो अतीचार छे.

दुपक्व एटले मंद पक्व एवी आहार-जेम के, अर्घो सेकेलो सायवो, चणा, जव, गोधुम, जाडा मांडा अने तिंडुरा प्रमुख फलादि, तेमां दुःपक्वपणाथी सचेतन-पणानो संभव छे अने पक्वपणाथी अचेतन छे ते छतां दुःपक्वने अचित्त घारी सचित्तना त्यागी एवा भक्षण करनारने जे अतीचार छागे ते पांचमो अतीचार छे.

वळी ते विषे श्राद्ध मातिक्रमण सूत्रमां " श्रापोखि इप्पोखि तुष्ठो सिह् '' इत्यादि गायामां कहेळ छे. तेमां अपनव अने तुच्छ औषधीनो आहार ते सिचत्तनी अंतर्गत जाणवो.—आ पांच अतीचार भोगोपभोग परिमाण मतनी अंदर जाणी लेवा. अने ते भोजन आश्री छोडी देवा आ विषे धर्मराजा नं उदाहरण छे, ते आ प्रमाणे:—

#### धर्मराजानी कथा.

कमलपुर नगरमां कमलसेन नामें राजा हतो. एक वखते तेनी पासे कोई निमित्तिओ आव्यो. तेणे राजाने कहुं के, वार वर्षनो दुकाळ पडशे. ते सांभळी राजा अने लोको नित्य चिंतातुर रहेवा लाग्या. तेवामां अशाडो मेघ अत्यंत वर्ष्यो. तेथी सर्वे अति हर्ष पाम्या. ते उपर एक काव्य छे.—

> तावन्नीतिपरा धराधिपतयस्तावत्त्रजाः सुस्थिताः तावन्मित्रकलत्रपुत्रपितर स्तावन्मुनीनां तपः । तावन्नीतिसुरीतिकीर्त्ति विमला स्तावच्च देवार्चनं यावत्त प्रतिवरत्तरं जलधरः कोणोतते वर्षति ॥ १ ॥

नावार्ध—ज्यांसुधी मितवर्ष पृथ्वीपर मेघ वर्षे त्यांसुधी राजाओं नीतिथी वर्ते छे, त्यांसुधी मजा स्वस्य रहे छे, त्यांसुधी मित्र, स्त्री, पुत्र अने पितानो संवंध रहे छे, त्यांसुधी मुनिओथी तपस्या थाय छे, त्यांसुधी नीति, रीति अने निर्मल कीर्ति प्रवर्ते छे अने त्यांसुधी ज देवपूजा पण थाय छे. १

पछी सर्व लोको पेला निमित्तिआनं उपहास्य करवा लाग्या. अन्यदा कोई चतुर्कानी युगंधर नामे मुनि त्यां पघार्या. राजा प्रमुखे तेमनी पासे आवी वंदना करीने पुछचुं के, हे गुरुमहाराज! आ निमित्तिआनं कथन केम खोटुं पडयुं र गुरुमहाराज वोल्या—राजन् ! पुरिमताल नगरमां प्रवर्देव नामे कोई गृहस्थ रहेतो हतो. तेनुं कुळ छिन्नभिन्न थई गगुं हतु. अने ते निरंतर अविरातिपणे सर्वभक्षी हतो. एक वखते कोई मुनिने जोइने तेणे पुछचुं, महाराज! मने कुष्टरोग थवांनु शुं कारण छे ? अने आ रोग शी रीते उपक्षमी जाय ? ते कहो. मुनि वोल्या-भद्र! तारो आत्मा आविरत होवायी असंतोषीपणाने लीघे तुं ल्यां त्यां जे ते वस्तु खातो हतो. तथी प्रवळ अजीर्ण थवाने लीधे तने कुष्टरोग उत्यन्न थयो छे. जो हवे विराति थई चतुर्विघ आहारनुं परिमित भोजन करीश तो तारा रोगनो क्षय थशे. मुनिना वचनथी तेणं त्यारयी एक अन्न, एक विगई, एक शाक अने प्रामुक जळ लेवानो नियम कर्यो. एम मितभोजी थवायी अनुक्रमे ते नीरोगी थई गयो. पछी जेणे धर्मनुं भाहात्म्य जाण्युं छे एवो ते निष्पापवृत्तिथी वेपार करतां अनुक्रमे कोटी परिमित

धनवाळी थयो. परंतु पोते भोगोपभोगथी पराङ्मुख यई नियमित आहारनुंज

भोजन करनार अने सुपात्रने दान आपनार थयो.

एक वस्तते दुकाळना वस्ततमां ते प्रवरदेवे लाखो महर्षिओने प्राप्तक घृता दिकनुं दान दीघुं अने लाखो साधमींओनो प्रच्छन दान आपीने उद्घार क्यों. एवी रीते यावज्जीवित अखंडितपणे वत पाळी छेवटे मृत्यु पामीने सौधर्म देवलोकमां

शकेंद्रनो सामानिक देवता थयो.

एक वखते ते देव स्वर्गना चैत्योंने नमस्कार करतां पोताना मृत्युने निजक वस्तते आ प्रमाणे विचारवा लाग्यो के, " ज्ञान दर्शनथी शुद्ध एवा श्रावकना कुळमां दास थवुं ते उत्तम छ पण मिथ्यात्वथी मोहित बुद्धिवाळा चऋवत्तीं थवुं ते उत्तम नथी , " आवी भावना भावतां त्यांथी चवीने आ नगरमां शुध्धद्वोध श्रावकने घेर विमला नामनी पत्नीना उदरमां ते उत्पन्न थयो. तेना जन्मथी ग्रंहचार विगेरे-ना योगथी दुष्काळ पडवानो इतो छतां नष्ट ययेल छे.

आवुं गुरुनुं वचन सांभळी राजा विस्मय पाम्यो अने राणी विगेरे परि-वारसहित ते शुद्धवोध श्रावकने घेर गयो. त्यां सर्व लक्षण संपन्न पुत्रने जोई राजा बहु खुशी थयो. पछी तेने पोताना खोळामां वेसारी राजाए आ प्रमाणे एक

श्चाक कहाी-

" मूर्तिमानिव धर्मस्त्वमित्यं इर्जिक् जंगजूत्। इति तस्यानिधा धर्म इति घात्रीज्ञता कता "॥ १॥

" हे बत्स, तुं जाणे मूर्तिमान् धर्म होय तेवी छुं अने तुं दुकाळनी भंग करनार छुं तथी हुं राजा तारुं नाम धर्म एवं पाइं छुं. " हवेथी हुं तारो कोट-बाळ छुं अने तुं धर्म राजा छे. आ प्रमाणे कही राजा घेर गयो. पछी ते धर्मकुमार यौवनमां घणी राजकन्याओ परण्यो. ते राजाना पुण्यथी निरंतर सुभिक्ष विगेरे थया अने सर्वत्र अद्वैतपणे हर्ष प्रवत्त्यों.

समिकत मूळ वार वतनो आराधक ते धर्मराजा अनेक भोग भोगवी अनुक्रमे दीक्षा छई तेज भवे केवलज्ञान प्राप्त करीने मुक्तिने प्राप्त थयो. आ प्रमाणे ते धर्मना वे भवनुं वृत्तांत सांभळीने जैन धर्ममां तत्पर एवा श्रावकोए सातमुं

वत अंगीकार करवुं.

इत्यव्दिवनपरिभितोपदेश संग्रहाख्याया मुपदेश प्रासाद

# व्याख्यान दिवस १२३ मो.

हवे कर्मादान संबंधी पंदर अतिचार कहे छे.

श्रंगारवन शकट, ज्ञाटकस्फोट जीविका। दंतलाकारसकेश, विष वाणिज्यकानि च ॥ १ ॥ यंत्रपीमा निर्लोठन, मसती पोपणं तथा। दवदानंसर: शोष, इति पंचदश स्यजेत् ॥ १ ॥

द्वावार्ध-अंगारकर्म, वनकर्म, शकटकर्म, भाटककर्म अने स्फोटककर्म, ए पांच मकारना कर्म वहे आजीविका करवी. दांत, लाख, रस, केश अने विपनो व्यापार करवो. यंत्रपीडा एटले घाणी विगेरे यंत्रो चलाववा, निलंखिन कर्म करबुं, कुलटा स्त्री विगेरेनुं पोपण करवुं, दावानळ मुकवो अने सरोवरने शोपबुं-ए पंनर कर्मादाननो त्याग करवो १-२.

हवे पंनर कर्मादाननुं विवेचन करे छे-उपरना श्लोकमां जे जीविका शब्द छे ते प्रत्येक कर्मादाननी साथे जोडवो.

१ अंगारकर्म-एटले काष्ट दहन करीने नवा अंगारा पाडवा-चुनो तथा इंटनी भट्टी करनारा तेमज कुंभार, लुहार, कलाल, सोनी अने भाडभुंजा विगेरेनुं कर्म ते अंगारकर्म कहेवाय छे. तंनाथी जे आजीविका करवी ते अंगार आजीविका कहेवाय छे. ए आजीविका मुख्यत्वे अग्नियी चाले छे. जे अग्नि द्या तरफ धारवाळुं (दशघारुं) खडू छे. कारण के, तेमां सर्व जगतने दहन करवानी शक्ति छे तेवी आजीविकामां 'छ जीविनकायनो ' वध थाय छे. तेथी ए व्यापार गृहस्थने त्याग करवा योग्य छे. ए पहेलो कर्मादान संवंधी अतिचार जाणवो.

र वनकर्म—वनस्पति संबंधी छेदेलां अने वगर छेदेलां पत्र, पुष्प, फळ, केंद्र, मूळ, तृण, काष्ट्र, अने वांस विगेरे लावीने वेचवा. तेमज वाग तथा वनकटी विगेरे करवा, ते 'वनकर्म' कहेवाय छे. तेनाथी आजीविका करवी ते 'वनकर्म आजीविका कहेवाय छे. ए आजीविका वृक्षने आश्रीने होवाथी तेमां वृक्षादिकना आश्रीत एवा त्रस प्रमुख जीवोनो वघ थाय छे. ए वीजो कर्मादान संवंधी अति-चार जाणवो.

१ सामीकर्म-गाडां अने गाडांना अवयवो पैडां विगेरे करवां, गाडां खेडवा अथवा ते वेचवा. ते ' शकटकर्म' कहेवाय छे. गाडां चलाववावडे आ-जीविका करवाथी मार्गमां रहेला षट् जीवनिकायनो वध याय छे. ए त्रीजो कर्मादान संबंधी अतिचार जाणवो.

४ नामीकर्म-इंट, वळद, पाडा, खचर अने घोडा विगेरेना भाडां करवां एटले भाडे आपी भार वहन कराववुं ते ' भाटककर्म ' कहेवाय छे. तथी भारवाहक प्राणीओंने बहु दुःख थाय छे. ए चोथो कर्मादान संबंधी अंतिचार जाणवो.

4 फोर्मीकर्म-जव, गोधुम, मग, अडद, अने चणा विगेरे धान्यनी करड कराववी, एटले धान्य छुटुं पाडवुं, साथवो करवो, दाळ कराववी, शालीने खंडावी चोखा करवा, तळाव, वापी अने कुवाने माटे पृथ्वी खोदाववी, हळ, खेडवुं, अने खाणमांथी कढावी पाणा घडाववा—ए 'स्फोटककर्म' कहेवाय छे. तेनाथी आजीविका करवी ते स्फोटक आजीविका छे. तेमां कणना दलन्यी वनस्पति काय जीवोनो, भूमि खोदवाथी पृथ्वी कायनो अने तेने आभ्याने रहेला त्रसादि जंतुओनो वध थाय छे. ए पांचमो कर्मादान संबंधी अति-चार जाणवो.

#### हवे पांच वाणिज्य संबंधी पांच अतीचार कहे छे.

१ प्रथम दृत्तवा शिज्य—एटले हाथीना दांत, हंस विगेरे पक्षीना रोम,
मृगरेना चर्म, चमरी मृगना पुच्छ, सावर विगेरेना कृंग, तेमज शंख, छीप, कोडी
अने कस्तूरी विगेरेना उत्पत्तिस्थाने जइ ते ते प्रकारना त्रस काय जीवोना
अंगादि प्रहण करवा ने तेनो ज्यापार करवो—ए 'दंतवाणिज्य कहेवाय छे.
कदि पाते ते जीवोनी हिंसा न करे पण तेना उत्पत्तिस्थाने ज्यापारीने आवेला
जोई भिल्ल विगेरे नीच लोको लोभथी तत्काळ हस्ती प्रमुख जीवोनो वध
करे छे अने तेना ज्यापारीओने जोईती चीजो लावी दे छे तथी ते त्याज्य छे.
ए छहो कर्मादान संवंधी अविचार छे.

२ वीजं खाक्ता वाि जय-एटले लाख विगेरे हिंसक वस्तुओंनो व्यापार. खाख मां त्रस जीवो घणा होय छे. वळी तेना रसमां रुधिरनो श्रम थाय छे. धावमी नी स्वचा अने पुष्प मदिरानुं अंग छे अने तेनो क्रष्टक घणा जीवोनी जित्या हेतुरुप छे. गळी घणा जीवोना घातथी थाय छ. मनिहास अने हमतासमां घणा माखी विगेरे जीवोनी हिसा थाय छे. पमञ्चास त्रस-जीवोथी न्याप्त होय छे. टंकणलार, साबु अने क्षारादिकमां प्रत्यक्ष महादोष जोवा-मां आवे छे. लाख विगेरेना दोषयुक्तपणा विषे 'मनुस्मृति ' मां पण कह्युं छे. '' लाख, गळी, तिल, क्षार, कसुंवो, दुध, घी, दहीं अने छाशने वेचनारो ब्राह्मण द्राष्ट्र कहेवाय छे. '' आ सातमो कर्मादान संबंधी अतिचार छे.

३ त्रीजं रसवाणिज्य अंटले मध, मदीरा, मांस, माखण, दुध, दहीं, धी, अने तेल विगेरे रस पदार्थोंनो न्यापार करवो ते. तेमां पण प्रथम कहेली युक्तियी दोपो जाणीलेवा. दुध विगेरेमां संपातिमं जीवोनो पण वध थाय छे. वे दिवस गया पछी दहीं अने छात्रमां महान् दोष छद्भवे छे. तेमां पण छात्र तो सोळ पोहोरनी अंदर पण गळीने पीवा योग्य छे. ते विष कह्युं छे के, "जो छास गळ्या वगरनी ग्रहण करे तो घणा दोप उत्पन्न थाय छे. कारण के, तेमां माखणनो योग होय तो तत्काळ जीवोनी उत्पत्ति थई आवे छे." घी अने तेलना न्यापारमां पण दुध्यानथी महा पाप लागे छे. कि वीजी रीते आजीविका चाले तेम न होय तेथी यी तेल वेचवा वडे आजीविका करवी पढे तो तेमां अशुभ ध्याननो त्याग करवो. कह्युं छे के, " अभिप्रायना वश्यी पापध्यान (दुध्यान) थाय छे, कांइ वस्तुना दर्शनथी थतुं नथी. आ विषय छपर विद्वानाए यृत तथा चर्मना न्यापारीनी कथा जाणी हेवी. ते आ प्रमाणे छे:—

एकज नगरना रेहेवासी कोइ वे वणिक आपाढ मासमां पीत पीताना व्या-पारने अर्थे देशांतर जतां मार्गमां कोइ मामे कोइ श्राविकाने घेर जमवा गया. श्राविकाए तेओने पुछ्युं के, तमे कई कई वस्तुनो व्यापार करो छो ? तेओए कहुं के, माता, अमारामां एक घीनो व्यापारी छे अने बीजो चामडानो व्यापारी छे. तेनी खरिदी करवा जइए छीए. ते सांभछी श्राविकाए विचार्यु के, जे घीनो व्यापारी छे तेना प्रणाम अत्यारे सारा वर्चता हुने. जेम के, '' जो मेघ सारा वर्षे तो गायो अने भेंसो दुध घणुं आपे एटछे घी सोंधुं थाय. '' आवा शुभ परिणामनुं चितवन तेने थया करे. अने जे चर्मना व्यापारी छे तेना मनमां अत्यारे पापी विचार वर्चता हुने. जेम के '' जो मेघ सारा वर्षे नही तो पशुओ घणा मरीजाय

<sup>&#</sup>x27;' १ उपर्थी पडे ते.

एटले चामडां सोंघां थाय. " -आवा परिणाम सारा नथी-आवुं विचारी ते श्रा-विकाए घीना व्यापारीने घरमां ज्यां चंदरवो बांध्यो हतो, तेनी नीचे वेसारी ज-माख्यो अने चर्मना व्यापारीने घरनी वहार उघाडा भागमां वेसारीने जमाड्यो. तेओ जमी रह्या पछी पोतपोताना काममां प्रवर्त्या. तेओ पोतपोतानुं कार्य करीने पाछा ते श्राविकाने घेर जमवा आव्या. जमवाने अवसरे श्राविकाए क्षेमने पथम करतां उल्लटी रीते वेसार्या. एटले घीना व्यापारीने वहार अने चर्मना व्यापारीने घरनी अंदर वेसार्यो. तेमणे श्राविकाने तेम करवानुं कारण पुछचुं. घीना व्यापा-रीए कहुं के, " हे माता ! प्रथम तमे जे हमारी वेडक करी हती ते योग्य हती, कारण के मने घीना व्यापारीने घरमां वेसायों हतो ते उत्तम व्यापारने लीधे योग्य हतुं. तो आ वखते आम उलटापणुं केम कर्युं ? " चामडाना व्यापारीए कहुं के, "माता ! आ वखते हुं चामडांनो अधम व्यापारी तेने घरमां वेसार्यो अने घीना उत्तम व्यापारीने वहार वेसार्थी-तेम विपरीतपणुं करवानो शो हेतु छे ? '' श्राविका वोली-" हे पुत्री! सांभळी, जे घीनो व्यापारी छे तेनी मनोवृत्ति हमणा अशुभ थइ छे, ते घी मोंघु थाय एम इच्छे छे. घीनुं मोंघापणुं पशुओने उपद्रव थवाथीन थाय छे. अने ते उपद्रव मेघ अने घास प्रमुखना अभावे थाय छे. अने चर्मना व्यापारीनी मनोवृत्ति हाल सारी छे. ते हाल चर्मने मोंघा थवाने इच्छे छे. अने चर्मनुं मोंघा-पणुं पशुओना आरोग्यथी थाय छे. हे भद्र ! आवो विचार करीने में तमारा वंनेना आसननुं विपरीतपणुं करेलुं छे. कारण के, हुं श्राविका छुं. गुणी विना वीजाने मान आपती नथी. एथीज में ए प्रमाणे कर्युं छे. '' आ वृत्तांत सांभळी तेओ प्रतिवोध पाम्या अने पापव्यापार छोडीने गुभ व्यापारमां प्रवत्त्यां.-आ कथा सांभळी गृहस्थोए रसवाणिज्यनो त्याग करवी. आ आठमो कर्माटान संवधी अतिचार छे.

४. चोथुं केञ्चावा शिज्य-एटले दासी दास विगेरे माणसोनो , अने गाय ममुख पशुओ तथा पक्षीओनो विकय करवो ते. आ नवमो कर्मादान संबंधी अतिचार छे.

५. पांचमुं विषवाशिजय-एटले कोश, कोदाळी, अने लोढाना हळ विगेरेनो तथा अनेक प्रकारना शस्त्रोनो व्यापार आदि शब्दथी वच्छनाग, तथा सोमस विगेरे विषनुं पण यहण करवुं. बाह्म अने विष प्रत्यक्षपणे जीवितने हणनारा जो-वामां आवे छे. तेथी तेनी व्यापार पापरुप छे. अन्य मित पण विपादि वाणि-ज्यनो निषेध करे छे:---

१ गुलामी धंधो.

# कन्या विक्रयिण श्रेव रस विक्रयिण स्तथा। विष विक्रयिण श्रेव नरा निरयगामिनः॥ १॥

" कन्यानो विक्रय करनार, रस पदार्थनो विक्रय करनार, अने विपनो विक्रय करनार पुरुषो नरके जाय छे."

आ द्शमों कर्मादान संवंधी अतिचार जाणवोः---

श्रंगारकर्म प्रमुखानि पंच, कर्माणि दंतादिक विक्रयाणि ॥ विद्याय शुद्ध व्यवसायकश्च, गृद्धी प्रशस्यो जिनशासनेस्मिन् ॥१॥

"अंगारकर्म विगेरे पांच कर्म अने टंनवाणिज्य विगेरे पांच वाणिज्यने छोडी शुद्ध व्यवसाय (व्यापार) करनार गृहस्थ (श्रावक) आ जिनशासनमां प्रशंसा करवा योग्य छे."

<b>ෑදෑ පිළිපිපිපිපිපිපිපිපිපිපිපිපිපිපිපිපිපි</b>	337
इत्यव्द्दिनपरिमितापदेश संयहाल्याया मुपदेशमासाद	4(0)) 4(0))
कु वृत्ती त्रयाविशत्युत्तरभततमः	40)
प्रवंधः ॥ १२३ ॥	4513
الله و و و و و و و و و و و و و و و و و و	ê îst

# व्याख्यान १२४ मुं.

पंनर कमीदानमां छेखा पांच अतिचार कहे छे.

११. अग्यारमुं यंत्र पिलिए। कर्भ—गंत्रपाँडा एटले शिला (छीपर), खारणीओ, मुजल (सांवेलुं), यंटी, रेंटीयो, निशातरो अने कंकपत्र (कांकसी) विगेरेनो विक्रय करवो—अथवा तेलनी पाणी चराववी, शेलडीना वाढ करवा, गोळ जमाववी, सर्सव, अलसी, होल, एरंडी विगेरेने पीलवावेड तेल काढ्युं, जळयंत्र (पाणि काढवाना रेंट) चलाववा—ते यंत्रपीडा संवंधी कर्भमां अनेक त्रस जीवोनो पण वध थाय छे. तेज कारणथी कह्युं छे के, खांडणी, पेपणी (यंटी) चुलो, जळकुंभी (पाणीआरुं) अने मार्जनी (सावणीं) ए पांच ग्रहस्थने हिसाना स्थान छे.

वळी तेलनी घाणी विगेरे महा पापना हेतु छै. ते विषे शिवपुराणमां पण कह्युं छे के, "हे राजा, जे तेलनी घाणी चलावे छे तेने तेमां जेटला तलनी

संख्या पीछाय छे तेटला हजार वर्ष सुधी रौरव नर्कमां रंधावुं पडे छे." तेमज " जे तलनो ज्यापार करे छे ते तलनी जेवा हलका थाय छे, तलनी जेवा शुद्र थाय छे अने तलनी जेम पीछाय छे. " तेमां पण फालगुनमास पछी तल पीछाववा, तल खावा के तलनो ज्यापार करवो तेमां मोटो दोष लागे छे. कारण के, ते समये तेमां त्रस जीवनी उत्पत्तिनो संभव छे. ते विषे कह्युं छे के, "फालगुनमास पछी तल के अलसी राखवी नहीं, तेमज गोळ तथा टोपरां विगेरे पण राखवां नहीं. कारण के, वर्षाकाळमां तेमां जीवोत्पत्ति थवाथी घणा जीवोनी हिंसा थाय छे. " तेथी ते समय उपरांत तल राखवा नहीं. तलनो ज्यापार दु:खदायक छे एम जणाववा माटे तलना ज्यापारी तिल्लाहनी कथा कहे छे:—

#### तिखन्नदूनी कथा.

पृण्वीपुर नामना नगरमां गोविंद नामे एक ब्राह्मण रहेतो हतो. ते हंमेशा तलनो न्यापार करतो हतो तेथी तेनुं तिल्जिट एवं नाम प्रसिद्ध थयुं हतुं. तेने एक स्वेच्छाचार्रा श्ली हती. तेणे तलनी वलारमांथी छानी रीते पांच मुडा तल वेची तेना पैसामांथी पोताने मनगमता भोजन, वश्ल अने आभूण मेळन्यां अने दुर्व्यसन सेववा लागी.

एक वस्त ते स्ति विचारवा लागी के, जो मारो पित आ तल वेचवानी वात जाणशे तो मने हेरान करशे. माटे प्रथमथीज तेनो कांइक जपाय करी राखुं. आ प्रमाणे विचारीने एक वस्त ते तिल्मष्ट रात्रे पोताना शालिना क्षेत्रनी रक्षा करवाने गयो हतो ते अवसर जोइने ते स्तिए नगरनी वहार जह पिशाचणीनुं रूप कर्युं. ते दिवसे मुनिपित नामे राजांप ग्रुनिनी वारमी प्रतिमा वहेवाने माटे हेमंतऋतुमां तेज वनने विषे कायोत्सर्गे रह्या हता. ते दिवसे संध्याकाले गायो चारीने नगरमां आवता गोनालो ते मुनिने जोइ तेमने शीत न लागे तेवा इरादा-थी पोताना वस्त ते मुनिने ओहाडी पोतगीताने घर गया हता. पेली स्त्री ते मुनिनी आगल आवी, मुल उपर काजल लगाडी, काला वस्त्रो पेहेरी, हाथमां उपाई खड़ लइ अने माथे वळती सघडी लइ भयंकर शब्द करती करती शालिना क्षेत्रमां रहेला पोताना पति तिलमष्ट पामे गइ अने वोली के, " अरे तिलमष्ट! हुं भुखी छुं माटे तारुं भक्षण करीश. जो तारे जीववानी इच्छा होय तो तारी तलनी वलारो मने अर्पण कर." तिलमष्ट भयथी विद्वल थइ तेना पगमां पडीने वोल्यो के, " हे माता! जाओ मारी वखारना वघा तल भक्षण करो."

आवुं चरित्र करीने ते स्त्री पाछी ज्यां मुनिपति मुनि काउसगाध्याने रहेला इता त्यां आवी. तेणे विचार्युं के, मारुं आ चरित्र आ मुनिए जोयुं छे, तेथी ते सवारे लोकोनी आगळ कही देशे माटे ज्वळता अधिथी तेने वाळी नार्त्वं-आवं चिंतवी मुनिना शरीर उपर रहेला बस्तो सळगावीने ते पोताने घेर गई, अने असलवेष धारण कर्यों. मुनिपात मुनि तो प्रवळ आयुष्यने लीवे जीवना रहा. तेमणे अग्निना प्रवळ उपद्रवमां पण गुभध्यान छोडचुं नही. ते वखते तेमणे चिंत-व्युं के, अहो, आ अग्नि तो जड एवा गरीरना पुद्गळोने वाळे छे. पोतानं घर दूर छतां वीजानुं घर वळतुं जोइने ता मृदपुरुप शोक धरे छे हे चेतन ! तारुं घर तो ज्ञानादि गुणरुप छे, तेने यत्नथी जमतारुप जळवडे सिचन कर, के जेथी तेने कोधरुप अग्निनी ज्वाळा लागे नही. आवा गुभध्यानमां तत्पर एवा ते ग्रुनि-ना मुखनुं अवलोकन करवा सूर्यनो उदय थयो. सर्वत्र प्रातःकाल थयो एटले पेला गोवाळीआओ त्यां आव्या. तेमणे मुनिनी तेत्री स्थिति जोइने ते नगरना दुःचिक नामना श्रेष्टीने ते वात जणावी. कुंचिक गेठे श्रद्धंकारी श्रावीकाने घरेथी लक्ष-पाक तल लावीने तेवडे मुनिना देहने निरागी कर्युं. पेलो तिल्लाह रात्रे घेर आदी सुइ गयो. पण तेने भयथी ज्वर आव्यो अने विचारमां पड्यो के, अरेरे! मारी तलनी वधी बलारों गइ. इवे हुं गुं करीश. आम विचारतां तेनुं हृदय फाटी जदार्थी ने मृत्यु पाम्यो. यणा भव मुधी ते तलमांज उत्पन्न थयो. पाये करीने एम जाणवु के, जे आ भवमां घांची थइने तल पीलवानुं काम करे छे ते मर्राने तलमां उत्पन्न थाय छे अने तेणे तलपणे पीलेला जीवो तेने तिलयंत्रमां पीले छे. आम विचारी श्रावकोए तल पीलवानो व्यापार छोडी देवो. इत्यादि यंत्रपीलण कर्म ते अग्यारमो कर्मादान संबंधी अतिचार जाणवो.

१२. वारमुं निलंठएा कर्म-ते गाय विगरेना कान, कांवल, शींगडा, अने पुंछ छेदवा, तेने नाथवा, आंकवा, नपुंसक करवा (खासी करवा), वाळवा, तेमज डंट प्रमुखनी पीट गाळवी-ए नीलंछनकर्म कहेवाय छे. ते प्रमाणे करवाथी गाय, वळद, अश्व अने डंट विगरेने घणी कदर्थना थाय छे तेथी तेनो त्याग करवो. ए वारमो कर्मादान संवंधी अतिचार जाणवो.

१३. तेरमं द्वदान कर्म—ते अरण्यमां एक भागनो दाह करवाथी वनचर प्राणीओ सुखे चरे अने जुनुं घास वाळवाथी नवा अंकुरानी पेदास वधे एटले गाय प्रमुखने घणो चारो थाय अथवा वृष्टि पेहेलां जो क्षेत्रमा दव मुक्यो होय तो पछी तेमां घणा धान्यनी निष्पत्ति थाय. एवी इच्छाथी लोभ वृद्धिवडे ते प्रमाणे करे. वळी भिछ प्रमुख पुण्यबुद्धियी कहे छे के, अमारा श्रेयने अर्थे धर्मदीपोत्सवी करवी एटले डुंगर उपर दव सळगावचो. तेम वळी कोइ कौतुकथी पण दव सळगावे छे. तथा केटलाक हुताञ्चणीमां मोटो अग्नि सळगाववाथी घणुं पुण्य माने छे. परंतु आवा दव लगाडवायी कोटीगमे जीवोनो वघ थाय छे. पांचमा अंग श्री न्नगव-तीजीमां गणधर महाराजाए प्रभुने पुछचुं छे के, " हे स्वामी ! जे माणस अग्निने वधारे सळगावे तेने वधारे पाप, के जे जळ के घूळवडे अग्निने बुझावे तेने वधारे पाप ? " प्रभुए कहाँ के, " हे गौतम ! जे अग्निने वधारे ते क्षिष्टकर्म वांधे अने जे वुझावे ते अक्षिष्टतर ( घणा हळवा ) कर्म वांधे-तेथी श्रावके दव मुकवा संवंधी कर्म करवं नहीं. आ तेरमो कर्मादान संवंधी अतिचार जाणवी.

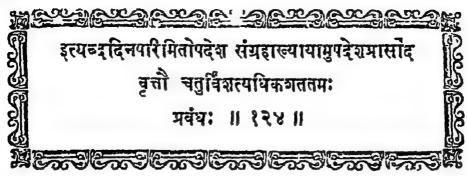
१४. चौदमुं शारशोषण कर्म-सरीवर विगेरेने शोषवामां जळचर प्राणी मत्स्य विगेरेनो तेमज छ 'जीवनिकायनो 'वध थाय छे. माटे ते कर्म पण त्यजी देवुं. ए चौदमो कर्मादान संवंधी अतिचार जाणवी.

१५ पंदरमुं असतिपोषण कर्म-पैसा कमावाने माटे दुःशील दासीओ राखवी. शुक, सारिका, मोर, मार्जार, कुकडा, मांकडा, श्वान अने डुझर विगेरेनुं पोषण करवुं- ए 'असतीपोषण 'कहेवाय छे. कारण के, एवा जीवो जो अशुभ अन्नपानथी पोषण पामवावडे पुष्ट थाय छे तो उंदर, सज्ञा विगेरे घणा जी-बोनी हिंसा करी पोताने सुख करनारा थाय छे. आवं विचारी तेमनुं पोषण करवं नहीं. तेमनुं पोषण करवाथी पापनी वृद्धि थाय छे. तोपण तेओने अभयदान तो आपवुं. ए पंनरमो कर्मादान संबंधी अतिचार जाणवो.

आ प्रमाणे पंनर कर्मादाननो त्याग करवो. श्रीनगवतीजी अंगमां श्रा-वकने पंनर कर्मादाननी सर्वया निषेध कहेली छे, ते उत्सर्गिक जाणवी. कहुं छे के, 66 जे पुण्य धर्मने वाधा करनारुं होय अने यश आपे तवुं न होय तेवुं पुण्य घणां लाभवाळुं होय तोपण पुण्यार्थी पुरुषोए ग्रहण करवुं नही. " परंतु कदि वीजो थंधो यइ शके तेम न होय, अथवा दुष्काळ पडेलो होय अथवा राजानी आज्ञा यह होय-इत्यादि कारणोथी जो ते निदित व्यापारोनो सर्वथा त्याग यह शके नही-तेमाथी कोइ कार्य करनुं पडे तो श्रावक अपवादरुपे करे. पण पोताना आत्मानी निदा करतो सतो सश्गपणे करे. महाराजा सिद्धराजे करेला सोरटदेशना स्वामी सज्जन दंडनायके जेम ते देशनी पेदाशनुं सर्व द्रव्य रेवताचलमां पुण्यरुपे वा-पर्य इतुं तेम.

#### (२४६) व्याख्यान १२५ मुं-पाप व्यापार निषेधे द्रव्यवृद्धि उपाय.

" आ प्रमाणे प्रथम कहेला पांच अतिचार परिभोगथी अने पंनर कर्मादा-नथी-एम वीश अतिचार थायछे तेनुं उपर प्रमाणे स्वरुप जाणी; सुझ पुरुषोए आ सातमुं व्रत आचरबुं."



# व्याख्यान ११४ सुं-

पूर्वे पापव्यापारनो निषेध कह्यो त्यारे कया प्रकारे द्रव्यवृद्धि करवी ? ते कहे छे.

जिह्नत्वा खर्कमीणि, न्याववृत्ति मसुंचकः । शुद्धेन व्यवसायेन, इव्यवृद्धिर्श्वजेत् गृहि ॥ १ ॥

" खरकमोंने तजीने, न्यायवृत्ति मुक्या शिवाय, गुद्ध व्यवसायवि गृहस्थ द्रव्यवृद्धि करे." खरकमें एटले निर्द्यजनोने उचित एवा कोष्ट्रवाळ, गृप्तिपाळ (जेलर) अने सीमपाळ विगेरेनी नोकरी-के जे अत्यन्त पापव्यापारवाळी छे ते श्रावके न करवी. अने सज्जनोने स्तुति करवा योग्य एवी न्यायवृत्ति राखवी-शुद्ध निष्टा राखवी.कारण के परमार्थे तो द्रव्य उपार्जननुं हेतु न्यायवृत्तिज छे. कहुं छे के:-

सुधिरषार्जने यत्नं कुर्याद्रयाय परायणः। न्यायएवान पायेय सुपाय संपदां यतः॥

" ढाह्या मनुष्यो न्यायपरायणपणेज द्रव्य उपार्जन करवानो यत्न करे छे. कारण के संपदा मेळववानो कप्ट विनानो उपाय न्यायज छे." उपलक्षणथी देव, ज्ञान, पाखंडी अने पासध्याना धनवडे, तेमज देश, काळ अने जाति विगेरेने अन् नुचित एवा व्यापार करवावडे जे द्रव्य मेळवर्त्नुं ते पण अन्यायवृत्ति छे.

देवद्रव्य तो व्या ने लेवुं ते पण महान् दोपने आपनारुं छे. ते विषे लोकिन-

शास्त्रमां पण कहां छे के-

## देवइव्येण या वृद्धि, ग्रुंरु इव्येन यध्यनं । तद्भ कुलनाशाय मृतोपि नरकं व्रजेत्॥

" देवद्रव्यथी जे द्रव्यवृद्धि करवी अने गुरुद्रव्यथी जे धन मेळवर्तुं, ते धन कुळना नाशने अर्थे थाय छे, अने ते द्रव्यनो मेळवनार मृत्यु पामीने पण नरके जाय छे." आ विषे एक महाज्ञारतमां दृष्टांत छे, ते आ प्रमाणे-पूर्वे श्रीरामचंइजी ना राज्यमां एक चखते कोइ श्वान राजमार्गमां वेटो हतो. तेने कोइ ब्राह्मणे कांकरा-चंडे मार्थों. एटले ते श्वान रोप करी पोताने निरपराधे मारनार ब्राह्मणना बस्त्रनो छेडो मजबूत पकडीने वोल्यो के-अरे विम! तें मने निरपराधीने केम मार्यों ? ते समये ए कौतुक जोवाने घणा लोको एकत्र मळ्या. अने तेमने न्यायसभामां लड्ड गया. राजा रामचंद्रे श्वानना मुखथी वधी इक्तिकत सांभळी पेला ब्राह्मणने दंड करवा योग्य गणी श्वानने पुछचुं के, 'आ तने मारनार ब्राह्मणनो शो दंड करुं ?' श्वान बोल्यों के-ते दुष्टने कोइ महादेवनों पूजारी करो. राजाए पुछचुं के, एवो दंड आपवानुं शुं कारण ? श्वान वोल्यो-" महाराज, आजथी सातमे भने हुं कोइ महादेवनी पूजारी हतो. ढंमेशा महादेवनी पूजा करी रखे देवद्रव्य खावामां आवे एवा भयथी हुं हाथ थोइने भोजन करतो हतो. एक वखते एवुं वन्युं के, कोइ पर्व-नो दिवस आन्यो एटले महादेवनुं लिंग दुध, दही अने घृतवडे पूरवामा आन्धुं. पछी महादेवनी पलाळ करवा वखते जामी गयेछुं घी मारा नखमा भराइ रह्युं. मोजन करती वखते उष्णताने लीधे ते घी ओगळी गयुं ते अजाणे मारा खावामां आवी गयुं. ते देवद्रव्य भक्षणना दुष्कृत्यथी हुं सात भवधी श्वाननो अवतार पा-म्या करं छुं. आ भवे तमारा प्रभावथी जातिस्मरण थतां मने मानुषीवाणी प्राप्त थइ छे. " आ वात सांभळी ते ब्राह्मणे श्वानने प्रसन्न करी ते शिवाय कोइ वीजो दंड कराववा प्रार्थना करी.

आवी रिते अजाणपणे पण जो देवद्रव्य खावामां आवे तो दु:खनुं कारण थाय छे, तेथी विवेकी पुरुपोए पोतानी शक्ति ममाणे देवद्रव्यनुं रक्षण करवुं. आ वृत्तांत सांभळी अनेक रिते अन्यायवृत्ति छोडी देवी, यशोवमा राजानी जेम क्यारे पण नीति छोडिनी नहीं.

## यशोवर्मा राजानी कथा.

कट्टयाणकटक नामे नगरमां यशीवमी नामे राजा राज्य करतो हतो. ते न्याय आपदामां सदा तत्पर रहेतो. छोकोने न्याय आपदाने माटे तेणे पोताना

गृहना द्वार उपर एक न्यायवंटा बांधी इती. एक वखते तेना राज्यनी अधिष्टात्री देवी राजा यगोवर्मानी न्यायवृत्तिनी परीक्षा करवाने एक गायनुं रुप अने तेनी साथे एक तत्काल जन्मेला वाल्डानुं रुप करीने राजमार्गमां वेटी. ते वखते यशो-वर्मा राजानो पुत्र पोताना वाइनने वेगथी दोडावतो त्यां आव्यो. वेगने लीधे तेनी गाडी वाछडानी उपर थइने प्रसार थइ गइ, तेथी ते वत्स मृत्यु पाम्यो. ते जोइ गाय मोटे स्वरे रुद्न करवा लागी अने अश्रुधारा छोडवा लागी. कोइए गायने सूचना करी के, राजद्वारे जइ फरीयाद करीने न्याय मेळव. एटले गाय त्यां गइ अने तेणीए शींगडाना अयभागधी पेळी न्यायधंटा वनाडी. राजा यशोवमी ते वखते भोजन करवा वेठो हतो. तेणे घंटानो जब्द सांभळी सेवकोने कहुं के, "कोण घंटा बगाडे छे? तपास करों. " सेवकोए जोड़ने कहुं के, " महाराज, कीइ नथीं, आप भोजन करी ल्यो. "राजा वोल्यो-" निर्णय कर्या शिवाय केम भोजन याय." एम कही भोजननो थाळ छोडी राजद्वारनी दोढीए आवीने जोयुं तो त्यां बीजुं कोइ जोवामां आव्युं नहीं पण पेली गायने दीठी. एटले कहुं के, "हे धेनो ! शुं तारों कोइए पराभव कर्यों छे ? कर्यों होय तो ते मने वताव्थ." ते सांभळी गाय आगळ चाली एटले तेनी पछवाडे राजा चाल्यो गाये पेलो मृत्यु पामेलो पोतानो वाछडो ज्या पड्यो इतो त्यां छइ जइ ते वताव्यो. ते जोइ गजाए सर्वनी वच्चे कहुं के, " जेणे आ वत्म उपर गाडी हांकी होय, ते गारी आगळ हाजर यह जाओ." वधा ते वाक्य सांभळी रह्या पण कोड प्रगट थयुं नही. एटले राजाए प्रतिज्ञा करी के, ज्यारे आ वार्चा स्फुट थंशे अर्थात् आनो गुन्हेगार मळशे त्यारे हुं भोजन करी. श. " राजाने एक लांघण थइ एटले बीजे दिवसे पातःकाळे राजकुमारे आवीने जणाव्युं के, हे देव ! तेमां हुं अपराधी छुं, तेथी जे योग्य लागे ते दंड करो. पछी राजाए नीतिशास्त्रने जाणनारा विद्वानोने एकटा करीने पुछचुं के, आ राजकुमारने शो दंड आपवो जोइए? " नीतिवत्ताओए कहां—" महाराजा, राज्यने योग्य आ एकज पुत्र छे, तेने शो दंड होय!" राजा बोल्यो- " राज्य कोनुं! अने पुत्र कोनो ! मारे तो नीतिज मोटी छे स्रोमनीति मां कहां छे के, पोतानो पुत्र होय तोपण तेने अपराध प्रमाणे दंड आपवो जोइए. तेथी जे तेने योग्य दंड होय ते कहो. " आना राजाना वचनो सांभळी ते विद्वानों मांथी एक वोल्यो के-नीतिमां एम कहुं छे के, अ बीजाने जेवी व्यथा करे तेवी व्यथा तेने करवी. कारण के, " जे जेवुं करें तेने तेवुं करवुं जो इए. " ते सांभळी राजाए पोतानी गाडी मंगावी अने पुत्रने वोलाबी कहुं के, हे पुत्र ! तुं अही सुइजा. ते विनित पुत्र तत्काल

सुइ गयो. राजाए सेवकोने कहां के, आ कुमारनी उपरथी गाडी वेगवडे पसार करो. कोइ तेम करी शक्युं नहीं उछटा सर्वे राजाने वारवा छाग्या. ते छतां राजा तेमनुं नहीं मानीने पोते गाडी उपर बेसी पुत्रना चरण उपरथी जेवामां गाडीने पसार करवा जता हता, तेवामां देवीए प्रकट थइ राजानी उपर पुष्पनी वृष्टि करी अने गाय के वत्स कांइ जोवामां आव्युं नहीं. देवी वोछी—हे राजन्! में तारी परीक्षा करवा माटे बधी रचना करी हती. प्राणिय एवा एकनाएक पुत्रथी पण तने न्याय वहाछो छे, एम सिद्ध थयुं छे माटे घन्य छे तने, तुं निर्विन्ने राज्य कर्य.

आ प्रमाण न्याय संवैधी दृष्टांत मनमां धारण करीने गृहस्थे-एटले श्रावक न्यायवृति छोडवी नहीं शुद्ध व्यापारवडे द्रव्यनी वृद्धि करवी. ते शुद्ध व्यापार चार प्रकारनो छे. १ यथार्थ वोलवुं. २ वंचना (ठगवा) वगरनी किया करवी. ३ अपायनुं प्रकाश न करवुं (चाडी न खावी). ४ सद्भाव (मैत्रीभाव) राखवी. तेमां जे प्रथम 'यथार्थ वोलवुं ते आ प्रमाणे—"धर्म तथा अधर्मने जाणनारा भावश्रेष्ट पुरुषो वीजा ठगाय तेवुं 'न वोले; इंमेशा सत्य अने मधुर वचनज बोले छे. तेमा पण धर्मने पीडा करे तेवुं तो कदिपण वोलेज नही, कमळश्रेष्टी विगेरेनी जेम.

वीजो प्रकार जे ' अवंचिका क्रिया ' एटले जेथी वीजाने व्यसन-दुःख थाय तेवा हेतुवाळी मन, वचन अने कायाना व्यापारहप चेष्टा न करवी, ते अवंचिका क्रिया. जेम के, " जे गुद्ध धर्मनो अर्थी होय ते प्रतिह्नप विधि वहे ' तेमज खोटां ज्ञाजवा, काटला विगेरेथी ओछुं वधतुं लेवा देवावह वीजाने छेतरे नुही. "

त्रीजो प्रकार 'अपाय प्रकाश करवा नहीं 'एटले जे अशुद्ध व्यापार कर वाथी भावी अनथ थाय; जेवा के, राजदंड अने नरकमां पडबुं विगेरे तेवा अशुद्ध व्यापारने प्रकाश करवा नहीं अर्थात् तेवी कोइनी चाडी खाइने पोताना धनने वधारवुं नही.

चोथो प्रकार 'मैत्रीपणानो भाव राखवो ' एटछे सारा मित्रनी जेम निफ्कपटपणे वर्त्तवुं. दंभथी कोइने छेतरवुं नहीं. एवी रीते न वर्त्ततां जे प्राणी गायना
जेवा मुखवाळी अने वायना जेवा आचरणवाळी वृत्तिथी व्यवहार करे छे ते कोइनो
विश्वासपात्र थतो नथी अने पापनुं भाजन थाय छे. आ प्रमाणे जाणीने शुद्धवृत्तिथी
प्रव्यनी वृद्धि करवी. गृहस्थोने दरेक कार्यनी सिद्धि द्रव्यथी थाय छे, परंतु धमथी
अविरुद्ध व्यापारवंडे वैभवनी वृद्धि करवी. ए सर्वनो भावार्थ छे. " देश, जाति,

१ वेचवानी वस्तुमां भळी शके तेवी ओछी किमननी वस्तु मेळववी.

अने कुळना घर्मनी नाश करनार कुबुद्धिने छोडी देवाथीज नीतिमां तत्पर धवाय छे अने तेवा नीतिवान्पणाथीज उत्तम उपासक- ( श्रावक ) शुभ संपत्तिने अने व्यापारनी शुद्धिने प्राप्त करे छे. "

> इत्यन्दित्नपरिमितोपदेश संयहारूयाया मुपदेशप्रासाद वृत्तौ पंचविश्वत्युत्तरशततमः प्रवंधः ॥ १२५॥ अक्टिंश स्टिल्लिस्टिल्लिस्टिल्लिस्टिल्लिस्टिल्लिस्टिल्लिस्टिल्लिस्टिल्लिस्टिल्लिस्टिल्लिस्टिल्लिस्टिल्लिस्टिल्लिस्टिल्लिस्टिलिस्टिल्लिस्टिल्लिस्टिलिस्

# व्याख्यान ११६ मुं.

शुद्ध व्यापार केवी रीते थाय ? ते कहे छे. निंदायोग्यजनेः साद्धें कुर्यान्न ऋयविक्रयो। इव्यं कस्यापि नो देयं साक्षिणं जूषणं विना॥ १॥ जावार्थ:—

" निंदा करवा योग्य छोकोनी साथे खरीदी के वेचाणनुं काम करवुं नहीं अने साक्षी राख्या विना के घराणा विना कोईने द्रव्य आपवुं नहीं "

#### विस्तरार्थः-

"निंदा करवा योग्य छोको जेवा के, नट, धूतारा, वेश्या, कछाछ, कसाई, माछी, वागुरिक (वाघरी), राजद्रोही अने पूजारा विगरे, तेमनी साथे गृहस्थे ऋयविऋय (खरीदी के वेचाण) न करवा. तेमज शक्षधारी पुरुषोनी तथा राजा विगरेनी साथे अलप पण व्यवहार करवाथी प्राये कांईपण गुण यतो नथी. केमके जेने पोताने हाथे द्रव्य आपीने पाछुं मागता भय उत्पन्न थाय तेनी साथे व्यवहार करवामां श्रुं शुभ फळ थाय श कहां छे के, " ब्राह्मण साथे अने शक्षवारीनी साथे श्रेय इच्छनार विणके कदिपण व्यवहार करवो नहीं."

वळी जे जुगार अने घातुर्वाद प्रमुखधी द्रव्यनी ईच्छा करे छे, तेओ मेंसना कुचडायी पोतानुं घर घोळुं करवाने ईच्छे छे. किद तेवा प्रकारणी के अशुद्ध व्यन्त्र करवाथी छाभ प्राप्त थाय तो ते छाभ छांवो काळ रहेतो नथी. कहां छे के, कि खोटा माप अने खोटा तोछथी जे कांई द्रव्य उपार्जन थाय छे ते तपेछा पात्र उपर मुकेंछां जळना विंदुनी जैम नाश पामतुं जोवामां पण आवतुं नथी. "

वळी घणा लोकोनी साक्षी वगर कोईने द्रव्य आपवुं नहीं. तेमज न दीढेलुं अने परीक्षा कर्या वगरनुं करीयाणुं छेवुं करवुं नहीं. अने छेवुं त्यारे पण घणा लोकोना समुदाय समक्ष लेवुं के जेथी कदि वांधा विगेरे कष्ट पडे तो ते जोनारा साक्षीओ सहाय आपे. साक्षी राखीने आपेकुं द्रव्य वा कोई वस्तु पुनः काळां-तरे पण प्राप्त थाय छे. ते उपर एक विशक्तं दृष्टांत कहेवाय छे, ते आ प्रमाणे:-

## धूर्त विशकनुं द्रष्टांत.

कोई धनाढ्य घूर्च वणिक विदेशे जतो हतो. मार्गे चालतां एक अरण्य आव्युं. तेमां चोरलोकोनी भाड मळी. तेणे वणिकने जुहार करी तेनी पासेथी द्रव्य मार्युं. विणके कहुं, कोई साक्षी राखीने वधुं द्रव्य खुशीथी ल्यो. कोई अ-वसरे मने पाछुं आपजो अने मने मारशो नही. चोरोए विचार्यु के, आ विणक मुन्ध (भोळों) जणाय छे. पछी तेमणे कोई बीलाडाने साक्षी राखी तेर्नु सर्व द्रव्य हुईने तेने छोडी मुक्यो. ते वणिक अनुक्रमे ते चोरलोकोना गामठाम विगेरे जाणी लईने पोताने गाम गयो. केटलेक काळे ते चोरलोको घणी वस्तुओ लईने तेना गाममां आव्या. विशक्ति तेमने ओळखीने पोते आपे छुं द्रव्य माग्युं. चोरोए आनाकानी करवा मांडी एटले परस्पर कलह यई पड्यो. छेवटे न्यायाधीश आगळ तेओ गया. न्यायाधीशे पुछ्युं के आ वातमां कीई साक्षी छे १ एटले पेलो विणक कोई काळा वीलाडाने लई आवी पोतानी काखमां राखीने बोल्यो के, आ वी-लाडो साक्षी छे. चोरलोकोए कहुं के, अमारे ते साक्षी जोवो छे, के ते केवो साक्षी छे ? विशक चोरोने ते बताव्यो एटले चोरलोको बोली उठ्या के-नही, आ तां काळी छे अने ते तो कावरो इतो. आ प्रमाणेना तेना वचनो सांभळी ते-मना मुखनीज कबुलात जाणी न्यायाधीशे तेमनी पासेथी वळात्कारे सर्व द्रव्य लईने पेला विश्वने अपान्युं. आ दृष्टांत उपरथी साक्षी राखवानुं फळ जाणी कोईने साझी विना गुप्त रीते कांईपण द्रव्य आपवुं नहीं के मुक्बुं नही. तेमज कोईने अछं-कार (घराणुं) लीधा विना अंगऊघारे द्रव्य आपद्वं नहीं. कारण के, तेम कर-वाथी कदिएण मूळ धननो नाश न थाय. कहुं छे के, "धननी रक्षा करवामां परायण एवा पुरुषे नटने, वेश्याने, जुगारीने अने जारपुरुषने ऊधारे द्रव्य आपर्व नहीं. " तेमां पण मुख्य रीते गृहस्थोए वधारे किंमतनुं घराणुं राखीने द्रव्य आ-पर्वुं योग्य छे. नहींतो मागती वस्वते क्रेश, विरोध, धर्मनी हानि, लांघण, धरणुं घालीने वेसवुं अने सोगन खावा विगेरे अनेक अनर्थ करवा पडे छे. तेमां किंदे सोगन खावानो वखत आवे तोपण जेमतेम सोगन खावा नहीं. तेमां पण विशेष

(२५२) व्याख्यान १२६ मुं-द्रव्य आपवा विषे पूर्व मुनीओए कहेलुं दृष्टांत.

करीने देव, गुरु, ज्ञान, धर्म अने तीर्थयात्रा विगेरेना सोगन कटीपण खावा नहीं. ते विषे पूर्वविद्वानो कहे छे-'' जे मूढ पुरुषो खोटा के साचा चैत्यना सोगन हे छे, ते वोधि वीजनुं वमन करे छे अने अनंत संसारी थाय छे."

वळी जो काद लांघण करवाथी कार्यसिद्धि याय तेम लागे तो पोते जाते लांघण करवी, पण बीजा बाळ वृद्ध प्रमुखने लांघण कराववी नहीं. कारण के, ढंढणाऋषिए एक क्षणनात्र पंनरसो जीवोने लांघण करावी हती, तथी तेमने छ मास सुधी आहार मळ्यो न हतो इत्यादि अनेक दोपनी लत्पत्ति पोतानी वुद्धियी विचारीने वधारे किंमतनुं घराणुं राखी द्रव्य आपतुं. आ विषे हितशिक्षा माटे पूर्व मुनिओए एक दृष्टांत कहेलुं छे, ते आ प्रमाणे:—

# पूर्व मुनीओए कहेलुं दृष्टांत.

जिनद्त्त नामना कोइ श्रेष्टीने मुग्ध ( भोळो ) एवा नामे पुत्र हतो. स्व-भावे पण ते मुग्ध हतो. पितानी पासे पुष्कळ द्रव्य होवाथी ते निश्चित रहेतो हतो. एक वखते जिनदत्तनो अंतकाळ आव्यो. एटले तेणे पोताना पुत्रमां भोळापणानो गुण जोइ गुढार्थ वाक्योथी आ प्रमाणे शिक्षा आपी.—" हे वत्स ! १ थर्नी आस-पास दांतनी वाड करवी. २ वीजाने धन आप्या पछी मागवुं नही. ३ माथे जरा पण बोजो उपाडवो नहीं. ४ इंमेशा दिवसने सफळ करवो. ५ स्त्रीने स्थंभ साथे वांधीने मारवी. ६ मिष्टान भोजन करतुं ७ सुखे शयन करतुं ८ प्रत्येक गामे घर करतुं. ९ दुरवस्था आवे त्यारे गंगा अने यमुनानी वच्चे खोदबुं. जो ए वावतमां कांइ शंका पडे तो मारा मित्र सोमदत्त श्रेष्टीने पुछबुं. अने १० मत्येक क्षेत्रे धन वाववुं." आ प्रमाणे कही श्रेष्टी जिनदत्त मृत्यु पाम्यो. त्यारपछी पितानी शिक्षाना गृढ अ-र्थधी अजाण एवो ते पुत्र ते प्रमाणे करवाथी निर्धन थइ गयो. एटले मुंझाइने पाटलीपुत्र नगरमां पोताना पिताना मित्र सोगदत्त श्रेष्टीने घेर गयो. श्रेष्टीए तेने मुन्य जाणी घणी वार खोटी करीने पछी चोळा प्रमुखनुं भोजन पीरस्युं. ते क्षुधा पीडित होवाथी सुखडीनी जेम खाइ गयो. पछी नामु मांडवा विगेरेमां घणी रात्रि निर्भमन करावी एटले ते मुग्ध वगासां खावा लाग्यो अने अंग मरडवा लाग्यो. एटले तेने मांकणवाळी माची मुवा आप्यो. जेमां ते तत्काळ निद्रावश थइ गयो. श्रेष्टीए ब्रह्ममुहुर्ते ( चार घडी रात्रि वाकी होय त्यारे ) तेने जगाड्यो मुखे प्रातःकाळे कडीने पिताए कहेडी शिक्षानो भावार्थ पुछचो, एटले श्रेष्टीए कहुं-सांभल, "घर-नी आसपास 'दांतनी वाड करवी " एटले सर्वनी आगळ हितकारी अने प्रिय वचन वोलवुं, के जथी पोताना मुखमां रहेला दांतनी पोतानी फरती वाड थाय छे. कहुं छे के,

जीप्रामें श्रमृत वसे, विषत्री उनके पास; एके बोढ्ये कोमी ग्रुण, एके कोमी विनाश ॥ १॥

जिन्हामां अमृत अने विष बंने वसे छे. एक बचने कोडोगमे गुण थाय छे, अने एक बचने कोटीगमे विनाश थाय छे. (इति प्रथम शिक्षार्थः ) १

"वीजाने धन आप्या पछी मागवुं नहीं " एट छे सवायुं के दोढुं घराणुं राखीनेज द्रव्य आपवुं के जेथी तेनी पासे मागवा जवुं पडे नहीं. ते पोतानी मेळेज देवा आवे. आ प्रमाणे " द्रव्य आप्या पछी मागवुं नहीं " एवी वीजी शिक्षानों भावार्थ छे. २.

"माथे वोजो उपाडवो नहीं 'ए शिक्षानों भावार्थ एवी छे के, माथापर करज संबंधी भार राखवो नहीं. ते विषे श्री जिनागममां कह्युं छे के, "जे प्रमाणे निर्वाह यई शके ते प्रमाणेज वचन वोलवुं अने अर्थे मार्गे छांडवो पढें नहीं तेटलों भार उपाडवो." वळी करज कापवामां पण विलंव करवो नहीं. कयो मूटपुरुष आ लोक अने परलोकना पराभवना कारणक्ष्य ऋणने क्षणमात्र पण घारण करें. कह्युं छे के, "धर्मना आरंभमां, करज फीटाडवामां, कन्यादानमां, द्रव्यनी प्राप्तिमां, शत्रुनो घात करवामां, अभिने बुझाववामां अने रोगने शमाववामां कालक्षेप करवो नहीं." तैलनुं मर्दन, करजनुं फीटाडवुं अने कन्यानुं मृत्यु—ए तत्काळ तो दुःखक्ष्य लागे छे पण परिणामे सुखक्ष्य छे. " आ भवमां जो करज आपे नहीं तो भवां-तरमां तेनो सेवक अथवा पाडो धईने अवतरबुं पढें छे. वळी करज राखवाथी बंनेने परस्पर भवांतरे वैरवृद्धि प्रमुख पण थया करें छं.

एवी एक कया छे के, जावम श्रेष्टींने पूर्वना रुण संबंधे एक पुत्र थयो हतो. ते नढारा स्वमथी सुचवेलो अने मृत्युयोगमां उत्तक थयो हतो तेथी श्रेष्टीए तेने नदींना तीर उपर रहेला कोई वृक्ष नीचे छोडी दीधो. ते वखते ते वाळक मयम रुदन करी पछी इसतो इसतो वोल्यो के, "हे श्रेष्टी! हुं तमारी पासे लाख सोनैया मागुं छुं, ते आयो, नहीं तो तमने अनर्थ मान्न थशे." एटले श्रेष्टीए तेने पाछो घरे लइ जइने तेना जन्मोत्सव विगेरेमां पुष्कल द्रव्य खर्च्यु. पष्टींने दिवसे लक्ष सोनैया पूरा खर्चाइ गया एटले ते मृत्यु पामी गयो. एवी रित बीजो पुत्र त्रण लाख पूरा खर्च करावी मृत्यु पाम्यो. त्रींजो पुत्र सारा स्वमाथी सूचित आव्यो. तेणे

(२५४) व्याख्यान १२३ मुं-द्रव्य आपवा विषे पूर्वमुनिओए कहेलुं दर्शत.

कहुं के, "मारे तमारा ओगणीश लाख सोनैया देवा छे." ते पुत्रनुं नाम जावम पाड्युं. तेणे माता पिताने निमित्ते धर्मकार्यमां तेटलुं द्रव्य खर्चवानो निर्णय कयीं. पछी काइमीर देशमांथी नव लाख सोनैया खर्ची श्रीऋषभ, पुंडरीक अने चके. श्रिरीनी मूर्तिओ लइ आव्यो. एक लाख सोनैया खर्ची तेनी प्रतिष्टा (अंजनशला का) करावी. ते पछी अद्वार वाहाणे करी असंख्य द्रव्य उपार्णन कर्युं. ते द्रव्यवहे श्रितंज्य उपर लेप्यमय विवहता ते उत्थापी तेने स्थाने मिश्रमय विवनी प्रतिष्टा करी.

आ कथा सांभळीने धर्माधी पुरुषे ते भवमांज ऋणनो संवंघ मुक्त करवो. धोतानो देवादार माणस जो करज आपवाने असमर्थ होय तो 'जो शक्ति थाय स्तो आपजे, नहीं तो मारे धर्मस्थाने हजो 'एम तेनी आगळ कही देवुं, पण ऋणनो संवंध चिरकाळ राखवो नहीं. आ प्रमाणे वंने जणे परस्पर विवेक करवो. आ प्रमाणे प्रसंगोपात कहेळी वार्ताधी जाणवुं के, ऋणनो भार माथापर राखवो नहीं. (इति तृतिय शिक्षार्थः) ३.

"दिवसने सफळ करवो" ए शिक्षानो भावार्थ एवो छे के, गृहस्यें दर-रोज कांईपण द्रव्य पेदा करवुं. केमके गृहस्थनो दिवस तेयी सफळ थाय छे. कह्युं छे के, "विणक, वेश्या, किव, भाट, चोर, जुगारी अने ब्राह्मण जे दिवसे नवा द्रव्यनो लाभ थाय नहीं, ते दिवसने निष्फळ माने छे." गीत, नृत्य अने निदा विकथा विगेरे करवावडे दिवस गळाववाथी दिवस सफळ थतो नवी. (इति चतुर्थ शिक्षार्थ:) ४.

" स्त्रीने स्थंभ साथे वांधीने मारवी" ए शिक्षानो भावार्थ एवो छे के, स्त्रीने -छोकरांवाळी थया पछीज शिक्षा करवी घटे तो करवी के जेथी ते पुत्रादिकना स्ने-इह्तप स्थंभ साथे वंधायेळी होवाथी ताडन करवाथी पण कांई विपरीत करी शकती

नथी. ( इति पंचम शिक्षार्थः ) ५.

"मिष्टान्न भोजन करतुं "ए शिक्षानो भावार्य एवो छे के, ज्यारे सारी पेटे धुना लागे त्यारे खातुं. तेने नखते जे कांइ भोजन करीए ते सर्व मिष्ट लागे छे. कांइ पक्तानज भिष्ट कहेनाता नथी. गइकाले तें जे भोजन कर्यु ते इलकुं भोजन इतुं तोपण तने केंबुं मिष्ट लाग्युं इतुं. तेम इंमेशा ज्यारे धुना लागे त्यारेज भोजन लेंबुं. श्रावकना पांत्रीश गुणोना विनरणमां कह्य छे के,

श्रजीर्षे जोजन त्यागी, काले जोक्ताच सात्म्यतः।

" अजीर्ण होय त्यांसुधी भोजननो त्याग करे अने वखतसर पोताना शरी-रने अनुकुळ भोजन करे. " पूर्वे करेलुं भोजन अपन्त छतां नवुं भोजन करनाथी चणा रोग थाय छे. वैद्यकशास्त्रमां कहुं छे के, "मळमां अने वायुमां दुर्गीध छुटे, विष्टा अपच्या जेवी आवे, श्वरीर भारे लागे, अन्न उपर अरुचि थाय अने अशुद्ध ओट्कार आवे—ए छ अजीणना स्पष्ट चिन्हों छे." तेथी अजीण सते भोजन छोडी देवुं अने भुख लागे त्यारे वखतसर खावानी लोलुपता छोडीने भोजन करवुं. केंद्रें हें के,

कंग्नादिमति क्रांतं, सर्वे तदशनं समं । क्रणमात्र सुखस्यार्थे, लौड्यं कुर्वीतनो बुधाः ॥ १ ॥

" गळाथी नीचे उतर्या पछी वधुं भोजन सरखुं छे. माटे मात्र झाणिक सु-खने अर्थे प्राज्ञ पुरुषोए लोलता करवी नही. "

जिन्हें प्रमाणं जानिही, जोजने वचने तथा। अतिज्ञकमितिचोक्तं, प्राणीनां मरणप्रदं ॥ १॥

"हे जीव्हा! तूं भोजन अने वचनमां प्रमाण राखजे. कारण के, अति क-रेलुं भोजन अने अति वोलेलुं वचन प्राणीओने पृत्युदायक थई पडे छे." धुधा लागी होय ते वखते खाथेलुं विष पण अमृत जेवुं थाय छे. एवी एक वार्ता छे के, कोइ राजा वखतसर भोजन करतो हतो तेने रोगी करवाने माटे कोइ वैद्ये रसोइ-आने शिखडाव्युं के, तारे कांइ भिष करीने रसोइ करवाना चखतमां विलंब करी राजानो भोजन वखत चल्लंघन कराववो. रसोइआए तेम कर्युं. राजाए रसोइमां विलंब थशे एम जाणी भीनी कणिकमां घी गोळ मिश्र करी खाइ लीधुं अने तेवी रिते भोजननो वखत साचवी लीधो. तेथी ते खाधेलुं राजाने पची गयुं, अजीर्ण न थयुं तेथी पेलो वैद्य विलखो थयो. आ प्रमाणे प्रसंगोपात जणावेली हकीकतथी जाणबुं के ज्यारे धुधा छागे छे त्यारे गमे तेबुं भोजन पण मिष्ट लागे छे. ६.

" सुखे शयन करवुं " ए शिक्षानो भावार्थ एवो छे के, ज्यारे वरावर निद्रा आववा लागे त्यारेज सुबुं; अन्यथा सुबुं नहीं. काले में जो मांचो आप्यो तेंमां तने केवीं सुखे निद्रा आंवीं हती. तेवी रीते महेनत करीने ज्यारे निद्रा आवे त्यारे

सुवानी टेव पाडवी. ७,

" गामेगाम घर करवुं " ए शिक्षानो भावार्थ एवो छे के, मत्येक मामे मैत्री करवी के जेथी ज्यां जइए त्यां पोताना घरनी जेम सर्व भोजनादि साध्य थाय. ८.

" दुरवस्था आवे त्यारे गंगा अने यमुनानी वचे खोदवुं " ते शिक्षानो भा-वार्थ एवो छे के, गंगा यमुना नदी नहीं पण तारे घेर गंगा अने यसुना नामनी वे गायोनी कोढ छे, तेनी वचे खोदवुं. त्यां तारा पिताए द्रव्य डाटेडुं छे. ९.

#### (२५६) व्याख्यान १२७ मुं-शुध्य व्यवहार विषे विशेष हितदिक्षा.

" पत्येक क्षेत्रे धन वाववुं" तेनी अर्थ एवो छे के, क्षेत्र एटले धर्मस्थान, तेमां धन वाववुं के जेथी महत्फळ प्राप्त थाय. लोकमां पण 'एक गणुं दान अने स- हस्त्र गणुं पुण्य 'एवी कहेवत छे. खात्रना ढगलावाळा क्षेत्रमां धन नाखवुं, एम एनो अर्थ न समजवो. वळी साधमीं हुए क्षेत्रमां धन वाववुं, एटले तेमनी साथे ज्यवहार करवो ए योग्य छे, कारण के, किंद तेनी पासे द्रव्य रही जाय तोपण तेनो उप-योग धर्मकार्यमांज थाय. पण नीचमाणसरुप क्षेत्रमां धन नाखी देवुं नहीं. १०.

आ प्रमाणे पिताए आपेली शिक्षानो गूढार्थ सांभळी संशय रहीत थयेलो ते मुन्ध पुत्र ते प्रमाणे वर्त्तवाथी पाछो धनवान्, सुखी अने माननीय थयो. एवी रीते यथायोग्य वीजाओए पण शिक्षा लडने शुद्ध व्यापार करवो.

" एवी रीते मुख पुत्र पिताए आपेली शिक्षानो गूढार्थ जाण्या वगर दुःखी थयो अने पाछळयी तेनो भावार्थ समजी शु॰घ न्यवहार करवाथी सुखी थयो, तेम वीजाओए पण ते दृष्टांतनो सार समजी शुध्य न्यवहार करवो."

## ठ्याख्यान १५७ मुं.

शुद्ध व्यवहार विषे बीजी विशेष हितशिक्षा कहे छे. कार्वण्याचातिराटित्वं न क्वर्यादर्थ मर्जकः । माया बुद्धं च सर्वत्र संत्यजे द्वयवसायवान् ॥ १ ॥

#### जावार्थ:-

" द्रव्यनी वृद्धि करवाने ईच्छनारा व्यापारिए कृपणपणुं अने अति राडीया-पणुं अथवा कंकाराीपणुं करवुं नहीं अने सर्व देकाणे कपटवृद्धिनो त्याग करवें।."

#### विस्तरार्थः-

" द्रव्य उपार्जन करवाने ईच्छनारा पुरुषे क्रपणता करवी नही. क्रपणता क-रवाथी जुवनज्ञानु केवछीना जीवे सोस्नदत्तना भवमां पोताना मामाना पुत्र-नी पासे द्रव्य मागवा जतां छांघण करीने कोटी रत्न छीधां हतां. पछी शेप रहेछां पांच रत्नने माटे पाते अने तेना मामानो पुत्र सात दिवस सुधी मुख्या रहा। तमां तेना मामानो पुत्र मृत्यु पामी गयो. आ वार्ची छोकमां प्रसरी तेथी कोई तेनी

साथे न्यवहार करतुं नही. एक वखते ते पांचसी गाडां छड्ने वनमां काष्ट छेवा गयो. त्या एकाकी वृक्ष छेदतां कोई गुहामांथी व्याघ्र नीकळ्या अने तेनुं भक्षण करी गयो त्यां मरण पामीने ते एकेंद्रियपणाने प्राप्त थयो. एवी रिते छपणपणाथी ते सर्व दिक्ताओमां घणुं भम्योः पण पुण्यथी अधिक द्रव्य तेने माप्त थयुं नहीं, माटे

गृहस्थे कुपणपणुं छोडी देवुं. अही कोई शंका करें के, द्रव्यने ज्यां त्यां वेरी नाखवाथी तेनी स्थिरता शी शिते याय ? तेना उत्तरमा कहेवानुं के, गृहस्थे अर्चित्य स्थळमां तेने राखवुं पण अवसरे कुपणपणुं करवुं नहीं. ते विषे एक वार्त्ता कहेवाय छे के, " कोई श्रेष्टीने घर नवी पुत्रवधू आवी. ते एक बखते पोताना सासराने दीवा उपरथी पडेला तेलनो छांटो उपान उपर चोपडतां देखी विस्मय पामी अने विचारमां पडी के, आते मारा सासरानुं कुपणपणुं इशे, के कांई वीजो हेतु इशे ? आवो संदेह पड वाथी तेनी परीक्षा करवा माटे तेणीए खोटो मिष करीने कहुं के, 'मारुं माध दु:खे छे. 'पछी सुई जईने घणो पोकार करवा लागी. सासराए तेने माटे घणा चपाय करवा मांख्या पण मटछुं नहीं. एटले तेणीए कह्युं कें, मने पेहेलां आ प्रमाणे थतुं त्यारे साचामोतीनुं चूर्ण करी तेनो माथे लेप करवाथी मारी पीडा शमी जती. ते सांभळी सासरो खुशी थयो अने तत्काळ मोती मंगावीने वटाववा मांड्या. एटले ते पुत्रवधू हर्प पामी वेटी थई, अने पोताने पडेला संदेहनी वात कही वतावी. ते सांभळी श्रेष्टीए कहुं के, "जे कुमार्गे पडेली एक कोडीने पण एक इजार सोना-महोर जेवी गणी शोधे छे अने अवसरे कोटी द्रव्य वापरवामां पण छुटो हाथ मके छे, तेनो संवंघ टङ्भी कदिएण छोडती नधी. "

वळी द्रव्यना अर्थीए अति क्षेत्र के क्रोब करवी नहीं. कारण के, समागुण रुक्मीनी वृद्धि करनारी छे. कत्रुं छे के,

होम मंत्र बलं विषे, नितिशास्त्र बलं नृपे।

राजा बलमनायानां, विषाग्पुत्रे क्तमावलं ॥ १ ॥

ब्राह्मणोने होमने मंत्रनुं वळ होयछे, राजाने नीतिशास्त्रनुं वळ होयछे, अनाय जनोने राजानुं वळ होयछे अने विणकने क्षमानुं वळ होयछे. " वळी कहुं छे के, "अर्थनुं मूळ प्रियवचन अने क्षमा छे; कामनुं मूळ वित्त, शरीर अने वयछे. धर्मनुं मूळ दान, दया अने दम छे; अने मोक्षनुं मूळ सर्वे अर्थनी निवृत्ति छे. "

एवी वार्ता छे के, एक वखते लक्ष्मी अने दारिइने परस्पर पोताने रहेवा विषे विवाद थयो. तेओ वंने इन्द्रनी पासे गया. प्रथम दारिद्रे इन्द्रने कहुँ

के, आ लहमी माराथी धीहे छे, तेथी ते सर्व टामें भम्या करे छे. अने हुं निर्भय छुं, तेथी क्यां जडं छुं त्यां स्थिरयइने रहुं छुं. इन्द्रे लक्ष्मीने पुछचुं के, तुं क्यां रहे छे ? लक्ष्मी वोली:—

ग्रुरवो यत्र पूज्यंते, वित्तं यत्र नयार्जितं । श्रदंतकलहो यत्र, तत्र शक्रवसाम्यहं ॥

" ज्यां गुरु-विडिलनी पूजा थाय छे, ज्यां न्यायथी द्रव्य मेळवाय छे अने ज्या परस्पर कळह थतो नथी, त्यां हुं वसृंछुं. " पछी इन्द्रे दारिद्रने कहुं, तुं क्यां रहे छे ! एटले ते वोल्युं:—

द्युतपोषी निजद्देषी, घातुर्वादी सदावसा । ष्ट्रायव्यय मनावोची, तत्र तिष्टाम्यहं हरे ॥

" ज्यां जुगारनुं पोषण थाय, ज्यां स्वजननो द्वेष थाय, ज्यां घातुर्वाद थतो होय, ज्यां सदा आळस रहेलुं होय अने ज्यां आवक तथा खर्चनी तपास थती न होय, त्यां हुं वसुंखुं." पछी इन्द्रे कद्युं के—ज्यां क्षेश—कंकाश न होय त्यां छहमीए रहेवुं अने ते शिवाय वीजे स्थळे दारिद्रे रहेवुं. आ प्रमाणे ठराव करी आ-पीने तेमनो विवाद भांगी नाख्यो.

आ वार्ता सांभळीने तेमांथी एटलो सार लेवो के उत्तम श्रावके शांतियीज कार्य साधवुं, क्रेंग्रंथी नहीं. कह्युं छे के, जेओ घणा तीक्ष्म अने घणां निष्ठूर होय- छे तेओ पण मृदुता राखवाथी वश थायछे. जुवो! कठोर एवा दांत दासनी जेम मृदुतावाळी जिन्हानी उपासना करे छे. " कोइनी पासे लेणुं मागवुं होय तो ते पण कोमळ अने घीरा वचनथी मागवुं. कठोर वचनवडे मागवाथी धर्म अने घशनी हानि थाय छे. किंद जो कोइ मोटा माणस साथे द्रन्यनी लेवड देवड यह गई होय को तेनी साथे नरपाशवडेज कार्य सिद्ध कर्वुं. कळह विगेरे करवा नहीं. कह्युं छे के, " उत्तममाणस साथे प्रणिपातथी काम लेवुं, श्रूरवीर साथे प्रपंचवडे काम लेवुं, निचनी साथे कांइक आपीने काम लेवुं अने सरखानी साथे पराक्रमथी काम लेवुं. "

वळी व्यापारीए सर्वत्र लेवड-देवडमां के पारका ग्राइक (घराक) वाळवा-मां, नामामां विपरित लखवुं के लांच लेवी इत्यादि माया-कपट अने परवंचना करवी नहीं. कहां छे के, '' जे प्राणी विविध उपायवडे माया रची वीजाने छेतरे छे, ते महामोहनो मित्र स्वर्ग तथा मोक्षना सुखयी पोताना आत्माने छेतरे छे." प्रायेकरीने माया-कपटरहितपणे कापड, सूतर, अने सोना, रुपा विगेरेनो वेपार करवी. अर्थात् जेम वन तेम अल्प पाप थाय तेवी रीते वेपार करवी. अहिं कोई शंका करे के, साधारण स्थितिवाळा व्यापारीने माया-कपट कर्या विना केवळ शुद्ध व्यापारथी निर्वाह शी रीते थाय? उत्तरमां कहेवानुं के, घणां कुडकपटथी जे द्रव्य उपार्जन कर्युं होय ते वर्ष-वे वर्ष पछी अंते राजा, चार, अग्नि, जळ के राजदंड विगेरेथी हराइ जाय छे, चिरकाळ स्थायी रहेतुं नथी. तेम देहना उपभोगमां के धर्मकार्ये वापरवामां पण उपयोगी थतुं नथी. कह्यं छे के,

> अन्यायोपार्जितं वित्तं, दशवर्षाणि तिष्टति । प्राप्ते चैकादशे वर्षे, समसं च विनश्यति ॥

"अन्यायथी मेळवेलुं घन दश्च वर्ष सुधी रहे छे, ज्यारे अगीयारमुं वर्ष प्राप्त थाय छ त्यारे ते समूळगुं नाश पामे छे." ते प्रमाणे सागरश्रेष्टी, पापबुद्धि, अने रंकश्रेष्टी विगेरेने वन्युं हतुं. तेथी जे माया—कपट रहितपणे वर्त्तवुं ते आ लोकमां पण प्रतिष्टानुं हेतु थायछे. विहार, आहार अने ज्यवहार ए त्रणे तपस्वीओना जोवायछे अने गृहस्थनो तो शुद्ध ज्यवहारज जोवायछे. वृद्धो पासेथी एवी पण एक वार्ता सांभळी छे के, पुश्चिक नामे श्रेष्टी मात्र पचवीश दोकडानो स्वामी हतो, अने ते हंमेशा साडावार दोकडा पेदा करी शुद्धवृत्तिथी गृहभार निर्वाह करतो हतो.

अहि कोई शंका करे के, केटलाएक न्यायर्थभेथी चालनारा दारिद्र प्रमुखना दुःख्यी पीडाता जोवामां आवे छे, अने केटलाएक अधर्मथी व्यापार करनारा अन्वर्य अने समृद्धि विगेरेथी सुखी देखाय छे. तो पछी शुद्ध व्यवहारनी प्रधानता क्यां रही ? तेना उत्तरमां कहेवानुं के, तेमां पूर्व कमना विपाकनी मुख्यता छे. आ भवना कमनी मुख्यता नथी.

कम चार प्रकारनुं छे. ते विषे श्रीधर्मघोषसूरि कहें छे के, पुण्यानुवंधी पुण्य, पापानुवंधी पुण्य, पुण्यानुवंधी पाप अने पापानुवंधी पाप—एम चार प्रकारनुं कर्म छे. जिनधर्मनी सम्यक् प्रकारे आराधना करनार स्नरतचक्री जेवाओनुं पुण्यानुवंधी पुण्य, अज्ञान कष्टवंड को शिक्षनी जेम समृद्धि पामवी ते पापानुवंधी पुण्य, ते भवमां पापना उदयथी दरिद्री थयेला एवा इसक्मुनिनी जेम वने ते पुण्यानुवंधी पाप, अने काळकहों। रिकादिकनी जेम थाय ते पापानुवंधी पाप समजवुं.

कोई माणसने पापानुबंधी पुण्यना उदयथी आ भवमां विपत्ति जोवामां आ-बती नथी तथापि परिणामे आगामी भवमां तेने अवश्य बिपत्ति प्राप्त थवानी-एम समजबुं. ते विषे एक एवी बार्ची छे के, कोई आवक अने जोर बंने पोत- (२६०) व्याख्यान १२८ मुं-माया-कपट करवा न करवानुं फळ.

पोताना घरमांथी साथे नीकळ्या. श्रावक चोरनी आगळ आगळ प्रभुना दर्जन करवा जतो इतो, त्यां मार्गे तेना पगमां कांटो वाग्यो अने पेला चोरने आगळ जतां एक कपीओ जड्यो तेथी ते हर्प पाम्यो. आथी श्रावक विचारमां पड्यो के, अहो ! अधर्मीने सारुं फळ अने धर्मीने हु:ख-आ केवी वात ? आ संदेह तेणे गुरु पासे जईने पुछ्यो. एटले गुरु वोल्या के, हे श्रावक! तारुं पप पगमां कांटो वागवाथी नाश पाम्युं अने ते चोरने आगळ जातां राजाना सुभटो पक्षडीने शूळीए घडावशे. क्षणवारमां तेमज वन्युं, अने ते पेला श्रावकना साभळवामां आव्युं. त्या-रथी ते श्रावक निरंतर शुद्ध व्यापारमां तत्पर थयो.

" आ प्रवंधने हृद्यमां उतारी द्रव्यनी हानिना हेतुह्म कृपणता विगेरे दो-भोने तजी दई हंमेशा शुद्ध व्यवहार राख्यों के जेथी द्रव्यनी वृद्धि थाय."

# व्याख्यान १२७ मुं.

माया-कपट करवातुं अने न करवातुं फळ कहे छे.
कूटस्य जल्पनं मोर्च्यं राज्ञां पुरो विशेपतः ।
दंजा कीर्तिश्रियो हीनिः तस्मात् श्रादः परित्यजेत् ॥ १ ॥

#### न्नावार्घः-

" कुड-कपटथी वोल्जुं नहीं, तेमां पण विशेषकरीने राजानी आगळ तो बोल्जुंज नहीं. दंभ करवाथी कीर्त्त अने लक्ष्मीनी हानि थाय छे. तेथी गृहस्थे ( श्रावके ) तेनो त्याग करवो."

#### विशेषार्थः-

लेवड-देवड विगेरेमां कपटथी बोलवुं नहीं. तेमज कोइनुं गुह्य वीजानी आ-गळ प्रकाश्चित करवुं नहीं. कह्युं छे के, " पोतानो अने पोतानी स्तिनो आहार, सुकृत, द्रव्य, गुण, द्रष्कर्म, मर्म अने मंत्र पटलां-कोइनी आगळ प्रकाश करवा नहीं." अही कोइ श्रंका करे के, आ श्लोकमां तो सत्यभाषण करवानो निषेध कयों। कारण के, उपरनी वावतमां कोइ पुछे तो तेनी आगळ मकाश न करवाथी असत्यज वोलवुं पडे तेथी तमे कूट-भाषण करवानो निषेध केम करो छो ? तेना उत्तरमां कहेवानुं के, कोइ आयुष्य, द्रव्य, अने घरनुं छिद्र विगेरे पुछे तो तेना उत्तरमां जुटुं वोलवुं नही पण तेने ' आवा प्रश्नथी शुं ?' एम कही माषासुमित ( वोलवानी युक्ति ) वडे प्रत्युत्तर आपवो. तेमां वळी राजानी आगळ तो कूट वचननो विशेष-पणे त्याग करवो. उपलक्षणथी गुरु-विडल प्रमुखनी आगळ पण जे यथार्थ होय तेज कहेवुं. कह्युं छे के, " मित्रनी आगळ सत्य कहेवुं, स्त्री पासे प्रिय कहेवुं, शत्रुनी आगळ अनुकूळ तथा सत्य होय ते कि हेवुं. " ते उपर एक वार्ता कहेवाय छे, ते आ प्रमाणे:—

दिल्लीशेहरमां महर्गाशिंह नामे एक शाहुकार हतो. ते सत्यवादी अनें शुद्ध व्यवहारवाळो छे एवी तेनी प्रशंसा सांभळी वादशाहे तेने वोलावीने पुछ्युं के, तारी पासे केटलुं धन छे ? महणिसहे जवाव आण्यो के, हुं चोपडा जोई लेखुं करीने आपने कहीश. एम कही घर आवी सारी रीते लेखुं करी वादशाह पासे आवीने कह्युं के "साहेव ! मारी पासे चोरासी हजार द्रव्य छे." वादशाहे विचार्युं के, में तेनी पासे थोडुं द्रव्य छे एम सांभळ्युं हतुं अने आ शाहुकारे तो वधारे कह्युं, माटे ते वरावर सत्य कहे छे. आयी खुशी थई राजाए महणिसहने पोतानो कोशाध्यक्ष धनाव्यो. तेथी जे सत्य होय तेज कहेवुं.

असत्य कहेवाथी दंभ कर्यों कहेवायछे, अने तेथी कीर्ति अने लक्ष्मीनी हानि श्रायछे. माटे श्रावके दंभ छोडी देवो. आ उपर ध्रानु हिनी कथा छे ते आ प्रमाणे:-

## धर्मबुद्धि तथा पापबुद्धिनी कथा.

जीमपुर नामना नगरथी पापबुद्धि अने धर्मबुद्धि नामे वे मित्र द्रव्य कमावाने माटे देशांतर गया इता. त्यां द्रव्य कपार्जन करी पाछा पोताने घेर त्वराथी आवता इता. कहुं छे के, " विद्या माप्त करीने घरे आवनारा शिष्योने अने देशांतरथी द्रव्य पेदा करीने घरे आवनारा व्यवहारीओंने एक कोश पण सो योजन जेटलुं लागे छे." आ प्रमाणे कतावळे चालतां पोताना गाम पासे आव्या एटले वोजो वधारे होवाथी तेओ केटलुंक द्रव्य गामनी वहार डाटीने घेर आव्या. कहुं छे के, " प्राज्ञ पुरुषे कोईने अल्प द्रव्य पण वतावनुं नही. कारण के, द्रव्य फ़ोवाथी मोटा मुनिनुं मन पण चळित थाय छे." वळी कहुं छे के, जेम जळमां मांस

पडे तो मत्स्य खाई जायछे, पृथ्वीपर होय तो हिंसकप्राणी खाई जायछे अने आ-काशमां होय तो गीध बिगेरे पक्षीओ खाई जायछे. तेम द्रव्यवान्ना द्रव्य विवे पण जाणी छेवुं. "

एक वखते पेला वे मित्रमांथी पापबुद्धि रात्रे जर्ने डाटेलुं द्रव्य काढी लह ते साडो कांकरायी पूरी घेर आव्यो. अन्यदा धर्मबुद्धिए पापबुद्धि पासे आवीने कहुं के, हुं द्रव्य विना दु:खी याउंछुं, माटे चालो पेलुं द्रव्य काढी लावीए. पापबुद्धि बोल्यो-चालो जइए. पछी बंने द्रव्य लेवा गया त्यां खाडो खोदीने जोतां द्रव्य रहीत जोइ पेलो दांभिक पापबुद्धि कपटथी माथुं कुटवा लाग्यो अने बोल्यो-" अरे! धर्मबुद्धि! आमांथी तुंज धन काढी गयो छे. " धर्मबुद्धिए कहुं के, "में लीधुं नथी पण तें लीधुं छे, अने आ लोटी माया करे छे; में तो दंभवृत्ति करवाना पचलाण लीघा छे. " आ प्रमाणे वाद-विवाद करतां वंने राजद्वारमां फरीयादे गया. वंने परस्पर एक बीजाना दूपण कहेवा लाग्या. ते सांभळी न्यायाधिकारीओए कहां के, तमे वंने दिव्य करी बतावो. एटले पापबुद्धि बोल्यो के-" तमे अमारो न्याय वरा-बर कर्यो नहीं. केमके न्यायमां प्रयम दिन्य होयज नहीं. कह्युं छे के, " प्रथम तो वाद-विवाद सांभळीने न्याय आपवो, अने जो ते वरावर न जणाय तो पछी सा-क्षीओं छड़ने न्याय आपवो, अने जो साक्षीनो अभाव होय तो पछी छेवटे दिन्य कराववुं-एम विद्वानो कहे छे. " आ वातमां तो अमारे ज्यां द्रव्य इतुं, ते वननी देवी साक्षी छे. ते जे चोर इशे तेनुं नाम आपशे. "अधिकारीओए कहां, ते वात सत्य छे. कहुं छे के, " जो वाद-विवादमां एक चंडाळ पण साक्षी मळे तो त्यां दिव्य कराववुं नहीं; तो ज्यां देवता साक्षी होय त्यां तो वातज शी करवी. " आ प्रमाणे न्यायाधिकारीओए मान्य करीने टराव्युं के, काले सवारे त्यां जइ वनः देवताने पुछवुं. '

पापनुद्धि घर आव्यो अने रात्रे पोताना पिताने कोइ खीजडीना वृक्षना कोटरमां गोपव्यो. पछी ते वृक्षनी आसपास सिंदूर अने तेल लगाव्युं. तेण पोताना
पिताने शीखडाव्युं के, अहीं ज्यारे वनदेवीने पुछवामां आवे त्यारे तमारे स्वर वदलावीने कहेनुं के, 'धर्मनुद्धि गोमुखो वाघ छे, तेणे आवीने धन काढी लीधुं छे.'
आम शिखवीने ते चाल्यो गयो. बीजे दिवसे धर्मनुद्धि, पापनुद्धि, राजा अने अधिकारी प्रमुख लोको वनमां गया. पछी वनदेवीनी पूजा करीने पुछचुं के, "हे
वनदेवता! आ द्रव्य कोणे लीधुं छे, ते कहो." एटले खीजडीना कोटरमांथी एवो
शब्द नीकल्यो के, गोमुखो वाघ भर्मनुद्धि द्रव्य लइ गयो छे." पछी अधिकारीओ
धर्मनुद्धिने कहेवा तत्पर थया के, आ द्रव्य तें लीधुं छे. तेवामां धर्मनुद्धिए सर्वनी

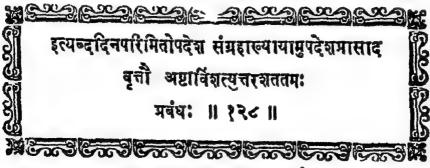
संमक्ष ते खीजडीना दृक्षने अभि लगाडयो. जैथी ते वृक्ष वळवा मांडचुं, एटले तेमांथी जेनुं अर्धुं अंग दग्ध थयेलुं छे अने जेनी आंखो फुटी गई छे तेनो पापबुद्धिनो पिता तेना कोटरमांथी नीकळ्यो. ते जोई अधिकारीओ आश्चर्य पामीने नोल्या के - " अरे ! श्रेष्टि! आ शुं! तें वृद्धावस्थामां आतुं पाप केम कर्युं? " श्रेष्टी बोल्यो— " आ पाप मने पुत्रे कराव्युं. " त्यारथी ते बंने लोकमां धर्मखुद्धि अने पापबुद्धि एवा नाम्यी मिसद्ध थया. राजाए दांभिक—पापबुद्धिनुं सर्वस्व लुंटी लड्ने तेने पोताना देशमांथी काढी मुक्यो. कह्युं छे के,

मायामविश्वासविद्यासमंदिरं, इराहायो यो कुरुते घनाहाया। सोनर्थसार्थं न पतंतिमध्यते, यथा बिमालो खकुमं पयः पिबन् ॥

" जे दुष्टहृद्यवाळो मनुष्य धननी आशाधी अविश्वासना विलासनुं मंदिरहर माया आचरे छे, ते दूधनुं पान करवा इच्छतो मार्जार जेम पोतानी उपर पडती छाकडीने जोतो नथी तेम पोतानी उपर आयी पडनारा अनर्थना समूहने जोतो नथी.

राजाए शुद्धधर्मी धर्मबुद्धिना घणां वलाण कर्या अने ते सुखी थयो.

" आ वंन मित्र (धर्मवृद्धि अने पापवृद्धि ) नी वार्त्ता सांभळीने गृहस्य व्रत-धारीओए दंभ छोडीने व्यवहार करवो, जेथी सोभाग्य अने छङ्भी प्राप्त थाय."



# व्याख्यान ११ए मुं.

शुद्धव्यापार विषे विशेष हितशिक्षा कहे छे. बाधां निष्यस्त्रिवर्गस्य न कार्या ह्यास्तिकेर्नरैः। विश्वस्त्रधातकार्यं च सुवृत्त्या दूषणं मतम्॥ १॥ न्नावार्षः—

" आस्तिक पुरुषोए धर्म, अर्थ अने कामने परस्पर बाधा याय तेम न करबुं, अने विश्वासवातनुं काम पण न करबुं, केमके ते सद्वृत्तिनुं दूषण छे."

#### (२६४) व्याल्यान १२९ मुं-शुध्यव्यापार विषे विशेष हितशिक्षा.

#### विशेषार्थ:-

त्रिवर्ग एटले धर्म, अर्थ अने काम-तेने परस्पर वाधा थाय तेम आस्तिक पुरुषोए करवुं नही. ते त्रणमां निःश्रेयस (कल्याण) सुखने साधनार ते धर्म कंहिवाय छे. सर्व अर्थ (प्रयोजन) नी निद्धि करे ते अर्थ कहेवाय छे. अने शब्दादि पांच इंद्रियोने प्रीति उपनावे ते काम कहेवाय छे. ए त्रणमांथी कोई पण एकने आसक्तिवडे सेववाथी वीजाओने वाघा थाय छे. अतिमुक्तकुमार तथा जंबु-स्वामीनी जैम कोई एकला धर्मनेज सेवे छे. अथवा म्लेच्छ कुळमां पण केटला-एक लघुकमीं थाय छे. ते विषे एक एवी कथा छे के, अहम्मद बादशाह दर-रोज सवामण पुष्पनी शय्यामां सूतो इतो. एक वखते कोई दासी कौतुकथी ते श-च्यामां सुई गई. तत्काळ ते निद्रावश थई गई. तेवामां वाहशाह अकस्मात् राजसभामांथी त्यां आवी चड्यो, अने दासीने सुतेली जोइ एक चानुक मारी. दासी इसती इमती वेठी थई अने पृथ्वी उपर एभी रही. वादशाहे आग्रहथी तेने हास्य करवानुं कारण पूछ्युं. एटले दासी वोली-" साहेत्र! आपे मने एक प्रहार कर्यो तेथी फुलनी शय्यामां थोडीवार सुवानुं मारुं पाप तो नष्ट थईग्युं, पण आप इंमेशा अनेक वृक्षीना फुली मंगावी तेनी शय्या कराविन तेपर निद्रा करोछी, ते पापनी दंड केटलों यशे ? ते विचारतां मने हास्य आवे छे. " दासीना आवां वचनो सांभळीने वादबाहे ते दिवसधी पुष्पबच्यामां सुवानुं छोडी दीधुं.

एक वखते तेज वादबाह 'चतुरंग सेना छई खगरनमां जतो हतो. मार्गमां कोई उंट मृत्यु पाम्युं तेथी सर्व सैन्य उमु थई रहां. ते जोई वादबाहे पुछ्युं के—सैन्य आगळ केम चाछतुं नथी? अमात्ये आवीने उंटना मृत्युनी वात कही. वादबाह मृत्युना तत्व विवे काईपण जाणतो नहोतो. तेथी पुछ्युं कें, मृत्यु एटछे शुं? अमात्योए कह्युं, स्वामी, काने सामळे नहीं, आंखे देखे नहीं अने खाय पीवे नहीं ते मृत्यु. राजा ते सांभळी विस्मय पान्यो. अने मृत्यु पामेंछा उंट पासे जइने कह्युं के—अरे पश्च ! उठ, खान पान कर्य. क्रोधर्यी आवी निद्रा न करीए. त्यारे बीजाओए कह्युं के, साहेव! आतो निर्जाव थयुं छे. एम कहीं घणी युक्तिओथी मृत्युनुं स्वरुप समजाव्युं, ते उपरथी वादबाह पोते विचार करवा छाग्यो के—अहो ! आवुं मृत्यु अणिंचतव्युं आवशे त्यारे आपणी कोण रक्षा करशे. एम विचारी तत्काळ सर्वनो त्याग करी पोतानी जातिनो श्रेष्ठ धर्म (फक्नीरी) स्वींकार कर्यो. ते उपर छोकोमां पण आ प्रमाणे कहेवत छे:—

#### दोदो.

# सोल तहस्स साहे लियां, तुरी अढारह लखा। साहेब तेरे कारणे, बोड्या सेहेर बुलस्क ॥

अन्य बाह्नोक्त आ संवंध उपयोगी जाणीने अहीं कहाो छे. जेम ते वाद-बाहे अर्थ अने कामनो त्याग करी अहिंसा, सत्य विगेरे धर्म स्वीकार्यो एवी रीते बीजाओए पण यथायोग्य प्रवर्त्तन करतुं.

कोई मंम्पाश्रेष्ट्रोनी पेढे एकला अर्थनेज साथे छे. पण ते अयोग्य छे. कारण के धर्म अने कामने चल्लंघन करीने चपार्जन करेला धननो उपभोग बीजाओं करे छे अने पापनुं भाजन पोते थाय छे. जेम सिंह हाथीनो वघ करनार पोते थाय छे अने तेना मौक्तिक अने दांत विगेरेनो स्वामी वीजो थाय छे. कहुं छे के,

## किटिका संचितं धान्यं, मिक्का संचितं मधु। क्रपणोपार्जिता जद्मनीः, परैरेबोपजूज्यते।।

" कीडीओनुं संचय करेलुं घान्य, मालीओनुं संचेलुं मध अने छपणे उपा-जैन करेली लक्ष्मी-तेनो उपभोग बीजाज करे छे. "

वळी कोइक एकछा कामनेज सेवे छे. अर्थ अने धर्मने सेवता नथी. विषयमुख्मां छुज्य एवा ब्रह्मदत्तचक्री विगेरेनी जेम. ते विषे छोकीक- शास्त्रमां पण एक वार्ता छे के, सवाछाख गामनो अधिणित अने दिष्ठीनो स्वामी पृष्ठुराज चहुवाण कामासक्त यवार्थी राज्यभ्रष्ट थयो इतो. तेनी इकीकत एवी छे के, एक वखते पृथुराज पांगुराजाना अंतःपुरमांथी तेनी पुत्री संयोगिताने छ- छथी हरी गयो अने पोताना नगरमां आव्यो. पछी अत्यंत कामासक्त अने राज्य- विताथी रहित एवा ते राजानी वात कोई म्लेच्छ वादशाहना जाणवामां आवी. तेथी तत्काळ ते वादशाहे तेनापर चडाइ करीने सुखे सुखे तेनुं राज्य लई लीघुं अने तेनी वंने आंखोना पोपचां सोयदोराथी सीवी लई सोयदोरासहित लोढाना पांज-रामां पुर्यो त्यां ते महा दु:ख पाम्यो.

श्रीजैन आगममां पण एकला कामसेवन उपर आनंगरोन सोनीनो संवंध छे. शिळोपदेशमाळानी वृत्तिमां तेने स्त्रीनुं दासत्व करनारो वर्णव्यो छे. ते शिवाय रिपुनर्दन विगरेना संवंध पण कामासक्ति उपर कहेला छे. आ प्रमाणे धर्म, अर्थ अने काम संवंधी एकसंयोगी त्रण भांगा थाय छे.

हवे द्विक्संयोगी भांगा वतावे छे. एटले वेमां आसक्ति अने एकमां नहीं, एवी रीते पण त्रण भांगा थाय छे ते आ प्रमाणे-कोइ धर्म अने अर्थमां आसक्त होय छे, पण काममां आसक्त होता नथी. कुमारपाळराजानी जेम. कुमारपाळ धर्म प्राप्त थया पेहेलां घणी राजकन्याओ परण्या इता. पण व्रत लेवा वखते अल्प आयुष्यने योगे वीजी राणीओं मरण पामी हती अने एक भूयछदेवीज जीवती हती. व्रत लीधा पछी ते पण केटलेक काळे मृत्यु पामी. पछी तेमना वींतेर सामंतादिक वर्गे घणी विनंति करी के, हे प्रजापाळ महाराजा! पुनः पाणि ग्रहण करों. त्यारे कुमारपाळे कहुं के, इवे संसार वधारवाना उपायभूत पाणियहणना आयहर्थी सर्धु. मारे आजथी यावज्जीवित शीळवत हो, के जेथी वधी कियाओ सफळ थाय. सिद्धां-तमां कहुं छे के, "शीलथी वत, दान, तप अने नियम विगेरे भले प्रकारे आचरेला थायछे. " सामंतोए कह्यं, "राजन्! पटराणी विना मांगलिक उपचारी शी रीते थाय. वीजा लोकोनी जेम राजाओ राणी वगरना क्यांइ सामळ्या नथी, तेम जोया पण नथी. " राजाए कहां, अरे ! श्रीमांगेय ( भीष्म पितामह ) ने केम मुली जाओ छो ? जेमणे जन्मधीज पाणियहण कर्युं नहोतुं. पछी कुमारपाळे सामं-तादिकथी परवरेला गुरु पासे जइने तेमने मुखे ब्रह्मवत अंगीकार कर्युं. त्यारथी मं-त्रीओ राजधर्म संवंधी मांगळिक उपचारो-आरात्रिक अने मंगळपदीप करवाने अ-वस्रे राणी भूयछदेवीनी सुवर्णनी मूर्ति करावीने राजानी पडले मुकता इता. ब्रह्म-चर्य ग्रहण कर्यु ते वखते गुरुए कुमार्पाळने राजि बिनुं विरुद आप्युं इतुं.

आ प्रमाणे ते महापुरुषने युक्त छे; पण व्यवहारमां रहेला यहस्थने केटलीक वखत कामपीडावडे परस्री विगेरेनो उपद्रव याय छे.

कोइ धर्म अने कामनेज सेवे छे, अर्थने सेवता नथी. अर्थात् द्रव्योपार्जन करवानी चिंता करता नथी. पण एवी रिते धर्म अने कामनी सेवा करनारने करज वधे छे अने माननी हानि थाय छे. तेथी गृहरथे प्रयत्नथी धन उपार्जन करवु. कहुं छे के, " एवं कोइपण कार्य नथी के जे अर्थ विना सिद्ध थाय, तेथी मितमान् पुरुषे यत्नथी अर्थने साधवो."

आ संवंधमां एवी एक वार्ता छे के, एक धनदत्त नामे मिध्यात्वी श्रेष्टी इतो. ते धर्मबुद्धिथी ब्राह्मणोने दान आपतो अने वारंवार ज्ञातिनुं पोषण करतो. वळी कन्यादान, गोदान इत्यादि दानो आपतो. तेमां तेणे एक लाख द्रव्य खर्ची नाल्युं अने नवुं धन उपार्च्युं नही. वळी कामनी लोलुपतामां पण तेनुं घणुं धन गयुं. तथी ते निर्धन थइगयो, अने अपमानने प्राप्त थयो. पछी ते पोतानो धर्म वेचवाने

माटे सायवानुं भातुं छइने देशांतर चाल्यो. मार्ग कोई वनमां भोजन करवाने वेटो. तेवामां कोई मासस्यणी मुनि त्यां पवार्याः धनदत्ते तेने दान आप्युं. पछी तेणे पोताना घारेला कोई गृहस्यने घर जह पूर्वकृत धर्मने वेचवा माग्यो. ते गृहस्ये पोन्ताना पूर्वजोना कहेवाथी धनदत्तने कधुं के, जो पेला मुनिदर्शननुं फळ मने आप्य तो हुं तने मुखे माग्युं द्रव्य आपुं. ते सांभळी धनदत्त तेनो जनाव पण न आपतां तत्काळ पोताना घर तरफ चाली नीकळ्यो मार्गमां अरण्यनी अंदर जंबराना फळ पज्या हता, ते पोटकीमां वांधीने घर आव्योः मुनिदानना पुण्यथी मुनिनी भक्ति करनार वनदेवताना प्रसादवडे ते सर्व स्वर्णमयी थइगयाः पछी ते आवक प्रमाणे खर्च करवा लाग्यो अने उत्तम श्रावक थयोः आ वार्ता सांभळीने गृहस्थे यथायोग्य आचरण स्वीकारवुं.

कोइ अर्थ अने कामनीज सेवा करे छे, धर्मने सेवता नथी. सागर श्रेष्टी अने धनळ श्रेष्टीनी जेम. परंतु अधर्मीतुं परिणामे कांइपण कल्याण थतुं नथी.

कोइ धर्म, अर्थ अने काम. ए त्रणेने सेवता नथी. पण तेओ ए त्रणथी अतीत एवा चोया वर्ग (मोक्ष) ना आराधक होय छे. तेथी तेवा मुनिमहाराजाने ए भां-गाना स्वामी पोतानी मेळे जाणीलेवा.

कोई धर्म, अर्थ अने काम-ए त्रिणेने सेवे छे. ए भांगाना स्वामी अज्ञय-कुमार अने सुदाला विगेरेने जाणी छेवा.

आ प्रमाण सांभळीने त्रण वर्गमांथी कोइने पण वाधा करवी ते एइस्थने योग्य नथी. कह्युं छे के, " जे एइस्थना धर्म, अर्थ अने कामनी सेवा वगर शून्य दिवसो जाय छे ते लुहारनी धम्मणनी जेम श्वास लेय छे छतां जीवता नथी एम समजवुं. ',

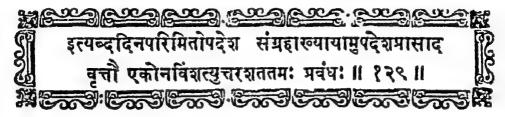
जो दैवयोगे त्रण वर्गमां परस्पर मितवंत्र यवानो संभव छागे तो उत्तर अचरने पीडा थतां पूर्व पूर्वनी वाधानो त्याग करवो. जेमके, कामने वाधा थती होय तो धर्म अने अर्थने वाधा न थाय तेम करवुं. कारण के जो धर्म अने अर्थ होय तो काम प्राप्त थवो सेहेछो छे. अने काम अने अर्थने वाधा थती होय तो थवादईने पण धर्मने धारण करवो. कह्युं छे के, "धर्म सिद्ध होय तो अर्थ अने काम पण सिद्ध थाय छे." नीतिशास्त्रमां पण कह्युं छे के, "आवकमांथी एक भाग भंडा-रमां राखवो, एक भाग वेपारमां रोकवो, एक भाग धर्ममां अने पोताना उपभोगमां वापरवो अने एक भागवडे सर्वनुं भरण-पोपण करवुं." वळी सिंदूरप्रकरणमां पण कह्युं छे के,

#### (२६८) व्याख्यान १३० मुं-विश्वासघातनी विशेष व्याख्या.

## त्रिवर्गसंसाधनमंतरेण पशोरिवायुर्विफलं नरस्य । तत्रापि धर्म प्रवरं वदंति न तं विनायद्जवतोऽर्ध कामौ ॥

" धर्म, अर्थ अने कामना साधन वगर पशुनी जेम मनुष्यनुं आयुष्य निष्फळ छे, तेमां पण धर्मने सर्वथी श्रेष्ट कहेलो छे. कारण के, धर्म विना अर्थ तथा काम सिद्ध थतां नथी."

" आ प्रमाणे धर्म, अर्थ अने कामने परस्पर अवाधावी शुद्धपणे आराधन करनार सुवुद्धिपुरुष अनुक्रमे स्वर्ग अने मोक्षनुं सुख प्राप्त करे छे."



# व्याख्यान १३० मुं.

उपरना व्याख्यानमां कहेला श्लोकना पाछला बे पदनी विशेष व्याख्या करे छे. " विश्वस्त घातकार्थं च सुवृत्त्वा दूषणं मतं "

" कोइनो विश्वासघात करवो ते शुद्धव्यवहारना दूपणरूप जाणवुं. "
विश्वासीने छेतरवामां महापाप छे. ते पाप वे मकारनुं छे. गुप्त अने प्रकट.

शुप्तपाप पण वे मकारनुं छे— अद्धप अने महत् लोटां तोलां ने लोटां माप विगेरेनुं पाप ते अद्धप अने विश्वासघात विगेरेनुं पाप ते महत् मकटपाप वे मकारनुं छे—

कुळाचारथी अने निर्ळज्जपणा विगेरेथी. कुळाचारवहे गृहस्थोने आरंभ ममुखमां पाप थायछे अने म्लेच्छादिकने हिंसा प्रमुखमां पाप थायछे ते अने निर्छज्जपणा विगेरेथी यतिवेशमां हिंसादि पाप मगटपणे करवाथी अनंत संसारीपणुं थायछे. कारण के, ते भवचननी चड्डाह (निंदा) नुं कारणभूत छे. कुळाचारथी मकटपाप करवामां थोडो कर्मवंध छे अने गोप्यमां अति तीत्र कर्मवंध छे. कारण के, ते असत्यमय होवाथी तेवी रीते वीजाने छेतरवामां मोटुं पाप लागे छे. ते विषे विस्ने मिरानी कथा छे, ते आ प्रमाणे—

#### विसेमिरानी कथा.

विशाळानगरीमां नंद नामे राजां हतो. तेने विजयपाळ नामे पुत्र, बहुश्रुत नामे अमात्य अने ज्ञानुमती नामे राणी हती. राजा, राणी जपर एवा आसक्त हतो के तेने सभामां पण पासे वेसारतो. एक वखते मंत्रीए विश्वित्त करी के, "' हे देव! सभामां राणीने पासे राखीने वेसवुं ते अनुचित छे कहुं छे के, "राजा, अग्नि, गुरु अने स्त्री जो अति पासे रह्या होय तो विनाश करें छे अने अति दूर रह्या होय तो फळ आपता नयी तेथी तेमने मध्यम भावयी सेवता." तेम करतां जो आपनी पासे राखवानी ईच्छाज होय तो राणीनुं रूप चित्रावीने ते चित्र पासे राखो." राजाए मंत्रीना वचनथी तेम कर्यु. ते विपे किरातार्जुनीय काव्यमां कहुं छे के, " जे पोताना स्वामीने सारी रीते साची शिखामण आपे नहीं, ते मित्र के मंत्री शेनो ? अने जे पोताने अणगमतुं सांभळे पण नहीं, ते स्वामी पण शेनो ? तेथी जे राजा अने मंत्री सदा परस्पर अनुकूळ होय, तेमनी साथेज सर्व संपत्तिओ प्रीति करे छे."

एकदा राजाए ते चित्र पोताना झारदानंदन नामना गुरुने बतान्युं गुरुए पोतानुं पांडित्य दर्शाववाने कहुं के, "राणीने डाबा साथळमां तिल छे, ते आ चित्रमां कर्यो नथी." ते सांभळी नंदराजाने शंका थई के, आ मारी राणीनो जार इशे. ते उपस्थी तेणे मंत्रीने आज्ञा करी के, आ गुरुने मारी नखाबो. प्रधान विचारीने काम करें तेवो हतो, तेथी तेणे शारदानंदनने पोताने घेर गुप्तपणे राख्यो.

एक वलत राजकुमार शिकार करवाने माटे वनमां जतां कोई डुक्करनी पछन्वाडे दोड्यो. ते घणे दूर चाल्यो गयो सायंकाळ थई जवाथी राजकुमार सरोवर-मांथी जळपान करीने व्याघ्रादिकना भयथी कोई वृक्ष उपर चडी गयो. ते वृक्ष उपर एक वानर रहेतो हतो, तेना शरीरमां ते वृक्षनो निवासी कोई व्यंतर पेटो. तेथी ते वानर मनुष्यवाणीथी वोल्यो के, 'हे कुनार! नीचे व्याघ्र आवेलो छे, पण तुं मारा उत्संगमां सुखे सुइजा. ' कुमार विश्वास राखीने सुतो. नीचे रहेला व्याघ्रे तेनी घणी याचना करी तोपण वानरे तेने आप्यो नहीं. थोडी वार पछी कुमार जाग्यो एटले वानर ते कुमारना उत्संगमां सुइगयो. पेला वाघे कुमारने कह्युं के, ' अरे कुमार! ए वानरनो विश्वास शुं राखेछे । कह्युं छे के, '' नदी, नखवाळां प्राणी इत्यादिनो विश्वास करवो नहीं. " वळी एम पण कहेवायछे के, '' क्षणमां रुष्ट अने कुणमां तुष्ट तेमज क्षणे क्षणे रुष्ट तुष्ट थनारा अने जेमनुं चित्त स्थिर नथी तेवाओनो

१ गुरुमां विनाश तेमनो अविनय, अनादर यईजाय ते समजवी.

प्रसाद पण भयंकरछे. " माटे तुं एने मुक्ती हे. ' क्षुधानुर वाधना आवां वचनधी राजकुमारे ते कपिने पडतो मुक्यो. वानर पडतो पडतो अंतराळ भागे वीजी जाला साथे वळगी पडीने वोल्यो के -अरे कुमार ! तुं तारा करेला विश्वासघातरूप कर्मने जाणेछे ? आम कहीने ते वानरना शरीरगां रहेला व्यंतरे पातःकाळे तेने गांडो करी-दीघो. एटले ते 'विलेमिरा, विसेमिरा' एम बोलतो वनमां चोतरफ भमवा लाखो. तेनो घोडो भयथी त्रास पामी पोतानी मेळे शेरिरमां राजानी आगळ गयो. घोडांन एकलो आवेलो जोई राजाए कुमारनी शोध करावी अने तेन वनमांथी शोधीने घरे लाव्या. पछी तेनुं घेलापणुं मटाडवा राजाए घणा उपाय कयी पण तेने कांई गुण थयो नहीं. एटले राजा पोताना गुरु शारदानंदनना गुण संभारी तेने मराची नाखवा माटे पोताना आत्मानी निदा करवा लाग्यो. पछी राजाए कुमारने साजो कर-नारने अर्धु राज्य आपवानो पडो वगडाव्यो. त्यारे मंत्रीए कहुं के, मारी पुत्री आ विषे कांईक जाणेछे. राजा पुत्रने लई तत्काळ मंत्रीने घेर गयो. त्यां पडदानी अंदर रही शारदानंदन गुरु आ प्रमाणे श्लोक बोल्या:-

विश्वासप्रतिपन्नानां, वंचने का विद्य्यता । अंकमारुह्य सुप्तानां, इंतुं किं नाम पौरुपम् ॥ १ ॥

ज्ञावार्थः- " विश्वास पामेलाने छेतरवामां चतुराइ वानी ? अने खोळामां सुतेलाने मारवामां पराक्रम शानुं ? " ए श्लोक सांभळी कुमारे पेलो ' वि ' अ-क्षर मुकी 'से मिरा, से मिरा, ' एम बोलवामां डयुं. गुरुए पछी पहदामांथी चीजो श्लोक कहो।---

> सेतुं गत्वा समुद्भय गंगासागरसंगमे। ब्रह्महा मुच्यते पापैर्मित्रइोही न सुच्यते॥ १ ॥

न्नावार्थः- " समुद्रना सेतु (किनारा) उपर अने गंगासागरना संगम उपर जवाथी ब्रह्महत्या करनार पापमुक्त थाय पण मित्रद्रोही पापमुक्त न थाय. "

आ श्लोक सांभळी कुमारे वीजो अक्षर 'से 'मुकी 'मिरा, मिरा' एटलुं वोलवा माडचुं. पछी पडदामांथी पाछो नीचेनो श्लोक कहेवामां आन्योः—

मित्रद्रोही कतन्नश्च, स्तेयी विश्वासघातकः।

चत्वारो नरकं यांति, यावचं इदिवाकरों ॥ ३ ॥ जावार्थ-"मित्रद्रोही, कतन्नी, चोरी करनार अने विश्वासघाती ए चार जण ज्यांसुधी मूर्य चंद्र रहे त्यांसुधी नरकमां रहे छे. आ श्लोक सांभळी कुमार

त्रीजो अक्षर 'भि' मुकी मात्र 'रा, रा ' एट हुं कहेवा लाग्यों. पछी पहदामांथी पछो एक श्लोक कहेवामां आव्योः—

राजंस्त्वं राजपुत्रस्य यदि कल्याणिमञ्चिति । देहि दानं सुपात्रेषु गृहो दानेन शुध्यति ॥ ४ ॥

त्रावार्ध-'हे राजन्! जो तुं तारा पुत्रनुं कल्याण इच्छतो हो तो सुपात्रमां दान आप्य. कारण के, गृहस्थ दान आप्याथी शुद्ध थाय छे." आ श्लोक
सांभळी राजकुमार तदन स्वस्थ थईगयो. अने वनमां वनेलो सर्व वृत्तांत तेणे कहीं
वताव्यो. ते सांभळी पडदा तरफ जोईने राजा बोल्यो के, ''हे पुत्री! तुं गाममां रहेले छतां आ वानर, वाघ अने मनुष्यनुं वन संबंधी वृत्तांत तें केवी रीते
जाण्युं?" ते सांभळी पडदामां गृप्त रहेला शारदानंदने नीचेनो श्लोक कहों—

देवग्रुरुप्रसादेन जिञ्हाये मे सरस्वती। तेनाइं नृप जानामि ज्ञानुमत्वास्तिलं यथा॥१॥

नावार्ध:- "देव गुरुना प्रसादथी मारी जिन्हाना अब उपरे सरस्वती वसे छे तेथी हे राजा! यानुमती राणीना तिल्रनी जेम हुं बधुं जाणी शकुंछुं."

आ श्लोकथी राजानो पूर्व संदेह दूर थयो, एँटछे राजा अने गुरु परस्पर ह्वथी मळ्या.

आ वृत्तांत सांभळीने श्रावकोए स्वामी, विश्वासी, देव, गुरु, मित्र, वृद्ध अने वाळकनो द्रोह तथा थापण ओळववी इत्यादि महापाप सर्वथा विशेषपणे वर्जवा.

" एवी रीते श्रावके शुद्धव्यवहारमां छागता सर्व दूपणो तजी देवा के जेथी आ छोक अने परछोकमां निरंतर यशस्वीपणुं माप्त थाय."

भू इत्यव्दित्परिभितोपदेश संग्रहाल्यायागुपदेश प्राप्ताद है वृत्तो त्रिश्च तुत्तरशततमः प्रबंधः ॥ १३०॥

# व्याख्यान १३१ मुं.

उपरना प्रबंधोमां अतिचारोसहित बीजुं गुणवत कहां. इवे अन्धेदंडपरिहार नामे त्रीजुं गुणवत कहे हे. शरीराद्यर्थदंमस्य प्रतिपक्ततया स्थितः। योऽन्थेदंमस्तत्त्यागः हतीयं तु गुणवतम्॥१॥

#### नावार्थः-

" शरीरादिने अर्थे थता ' अर्थदंस ' ना मतिपक्षी अनर्थदंसनी त्याग करवो ते त्रीजुं गुणवत कहेवाय छे "

#### विस्तरार्थः-

जेनाथी प्राणी अनर्थ एटले प्रयोजन विना पुण्यहण धनना अपहारवर्ड दंडाय अने पापकर्मथी लेपाय ते झनर्धदंद्र कहेवाय छे. तेना मुख्य चार प्रकार छे, ते अ प्रमाणे—" आर्च रौद्रहण अपध्यान, पापकर्मनो उपदेश, हिंसामां उपकारी याय

तेवी वस्तुनुं दान अने प्रमादनुं आचरण.

तेमां जे अपकृष्टक कहेतां नटारुं ध्यान ते आपध्यान कहेवाय छे. ध्यान एटले अंतर्मुहूर्त्त सुधी मननी स्थिरता अथवा एकायता. श्री ठाएांग सूत्रमां कहेलुं छे के, अंतरमुहूर्त्त पर्यंत चित्तनी एकायता ते छद्मस्थनुं ध्यान अने योग निरोध ते केवळीनुं ध्यान. ? ते अपध्यान आर्त्त अने रीड एवा वे भेदवाळुं छे. तेमां पण आर्तध्यान चार प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे-अनिष्ट एवा शब्द, रूप, रस अने गंधादि प्राप्त थवाथी त्रणे काळमां पण तेवां न मळे तो ठीक एवी तेना वियोगनी चिंता करवी ते आर्त्तध्याननो पहेलो भेद. इच्छित शब्दादिक मेळवीने त्रणे काळ पण तेनो विच्छेद-वियोग न थाय एवं चितवन ते आर्तव्याननो वीजो भेदः रोगादिकनी वेदना माप्त थये ते क्यारे जशे एवी तेना वियोगनी चिता ते आर्चध्याननो त्रीजो भेद अने भोगवेला कामभोगनुं स्मरण करवुं ते आर्त्तध्याननी चोथो भेदः अथवा आवश्यक निर्श्वित्तमां आवेला ध्यानशतकनी वृत्तिमां तो कहुं छे के-इंद्र तथा चक्रवर्ती विगेरेना रुपादिक अने समृद्धि सांभळीने अथवा जोईने तेनी पार्थना करनारुं अधम निदान के ॰ नियाणुं करवुं के, 'आ तपना अथवा दान विगेरेना प्रभावथी हुं देवें-द्वादि थार्ड' ते आर्त्तध्याननो चोयो भेद जागवो. आहं कोइ शंका करे के, ए ध्यान अधम केम कहेवाय ? तेना उत्तरमां कहवानुं के, ते ध्यान अत्यंत अज्ञान मयपणाथी थायछे तेथी ते अधमध्यान कहेवाय छे. केमके ज्ञानी शिवाय वीजाओनेज सांसाः रिक वैभवमां आभेलाप थायछे.

ध्यान आत्मवृत्तिवाळुं होवाधी अलक्ष्य छे पण ते लक्षणोधी जणायछे. आर्त-ध्यानना आ प्रमाणे चार लिग के॰ चिन्ह छे. आफ्रंइन एटले मोटा शब्दधी रुदन करवुं, ज्ञोचन एटले नेत्रमांथी आंसु पाडवा, परिदेवन एटले दीनता करी वारंशर क्रिप्टेभाषण करवुं अने तामन एटले छाती कुटबी-आ चार लिग इष्ट वियोग अने अनिष्ट संयोगधी यती वेदनावडे उत्पन्न यायं छे. आ ध्यानधी तिर्यंचनी गति माप्त थाय छे.

श्रीआवर्यकसूत्रनी वृत्तिमां श्रीहरिज्ञ इसूरिए कहुं छे के, "आ-र्त्तध्यानथी तिर्यचगति प्राप्त थाय छे, रौद्रध्यानथी नर्कगति प्राप्त थाय छे, धर्मध्या-नथी देवगति प्राप्त थाय छे अने शुक्रध्यानथी मोक्षगति प्राप्त थाय छे."

आर्चध्यानथी संजती नाम साध्वी गृहगोघा (घरोळी) थइ हती. ए ध्यान देशिवरात नामे पांचमा गुणठाणा सुनी होय छे ए ध्यानथी नंदम शिकार श्रेष्टी मंडुक के० देडकापणुं पाम्यो हतो अने सुंदर श्रेष्टी चंदनघो थयो हतो. एवी रीते आर्चध्याननुं फळ जाणवुं.

बीजुं रोड् नामनुं अपध्यान आर्त्तध्यानथी विशेष क्रूर अध्यवसायवाळुं छे.
ते पण चार प्रकारनुं छे. एकेंद्रियादि प्राणीओने ताडन करवुं, वींधवुं, वंधन करवुं,
आंकवुं अने तेमना प्राणनो वियोग कराववो. वळी खड़, शक्ति, भाला विगेरेथी,
तेमज वीर, सूत, पिशाच के मूउ विगेरेना प्रयोगथी अने विष प्रयोगथी अथवा मंत्र,
तंत्र के यंत्रादिकथी मनुष्यादिकने मारीनाखवानुं क्रोथथी चितवन करवुं ते हिंसानुबंधि नामे रौद्रध्याननो प्रथम भेद छे.

चाडी करवी, अघटतुं वचन—चकार मकारादि बोलवुं, पोताना गुणनी अ-धिकता करी वीजाना दोष प्रगट करवा, तेमज पोताने इच्छित एवा राजानो जय सांभळी वीजा राजाने माटे रौद्रवुद्धियी कहेवुं के "ठीक थयुं, आपणा राजाना खड़मांज जय छे, के जेना एक प्रहारवडे आटलाने मारी नाल्या." इत्यादि वार-चार बोलवुं अथवा तेवुं चितवन करवुं ते मृबानुबंधि नाम रौद्रध्याननो वीजो भेद हैं।

तीवरोषथी द्रव्यना स्वामीओना मरणादिवडे परद्रव्य इरग करवानी सगव-हता थवा विगेरेनुं चिंतवन करवुं ते स्नेयानुर्बंधि नामे रौद्रध्याननो त्रीजो भेद छे.

पोताना द्रव्यनी रक्षा माटे सर्वत्र शंका पामी शत्रु विगेरेने इणवा विगेरेना अध्यवसाय करवा ते संरक्षणानुबंधि नामे रोद्रध्याननी लोशो भेद छे.

ध्यानद्यातकामा कहुं छे के, करवुं, कराववुं, अनुमोदवुं, अने तत्संवंधी वारंवार चिंतवन कर्याकरवुं-एम चार प्रकारनुं रौद्रध्यान छे. अविरत-सम्यग्दाष्टि अने देशविरति श्रावकोए सेवेछुं-चिंतवन करेछुं एवुं ते दुध्यीन अश्रेयकारी, पापक्ष अने निद्वा योग्य छे. एना चार छिंग (चिन्ह) छे ते आ प्रमाण-पू, यतावेछ हिंसाप्रमुख चारेने विषे ज एक वार आद्र करवो ते प्रथम छिंग. ए चारेमां वारं- वार प्रवृत्ति करवी ते बीजुं लिंग. कुश्चास सांभळीने अथवा अज्ञानयी दिसात्मक यज्ञ विगरेमां धर्मबुद्धियी प्रवर्त्तवुं ते त्रीजुं लिंग. मरणांत सुधी काळशोक रिक कसाईनी जम दिसादिक थकी निवृत्त न धवुं ते चोथुं किंग. अथवा विचारामृत संग्रह नामना ग्रंथमां कधुं छे के, "रीव्रध्यानयी मृत्य पामेको तंड्रद्ध जातिनेह मत्स्य, हिसादि दुष्कर्म कर्या विना पण असंख्य दुष्कर्मवर्षे पराभव करनारा एवा दुरंत नरकमां जाय छे." रीव्रध्यान जपर कुरुक्त अने ज्ञकुरुक्त नामना वे महाश्व- चनी कथा छे ते आ प्रमाणे—

कुरुम अने जकुरुम मुनिनी कथा.

कुणाला नगरीना दरवाजानी साळ पासं कुर ने ऊब्रु नामना ने मुनि कायोत्सर्गे रहा इता. तेमना प्रभावधी 'तेभांने जळनो उपसर्ग न याय 'तेम घारी मेघ नगरनी बहार वर्षतो इतो. ते इकित जाणीने लोकोए एकढा थर तेमने ऊपद्रव करवा मांड्या अने कहेवा लाम्या के, "तमारा बंनेना महिमायी नगरमां बरसाद यतो नथी तेथी अमने घणी परिताप रहे छे, अने ए अमारे मोटा अरिंड्ट— विद्युरुप छे. माटे तमा अहींथी नीकलो." या प्रमाण वारंवार कहेवाथी ते बंनेना ध्यानमां भंग थयो अने ते लोकोनी उपर राद्रिध्यान उत्पन्न थर्यु. तेथी ते बंने आ प्रमाणेनो श्लोक बाल्या—

वर्ष मेष कुणालायां, दिनानि दश पंच च। नित्यं मुशलधाराजियेया रात्री तथा दिने ॥

ज्ञावार्ध—"रे मेघ! कुणालानगरीमां पुश्चक्षाराए जेवो रात्रीए तेवोज दिवसे पंदर दिवस सुधी वरण." आटलुं कहेतांमांज मेघ वरसवा लाग्यो. ते एंटलो षष्यों के तेना जळ प्रवाहमां आखं नगर तणाईने समुद्रमां चाल्युं गयं. तेमां ते बंने मुनि पण अशुभ ध्यानमां वर्तता सता तणाई गया. ए प्रमाण ते बंने मुनि द्रव्ययी अने भावधी दुषीने नरके गया.

"आर्तादि अपध्यानयी मेघनी वृष्टि करावीने क्षमारहितपणे आत्मा नगरने

तणाबी ने बंने मुनि अनर्थदंडवडे नर्कगतिने प्राप्त थया.

ङ्ग् । १३९ ॥ १३९ ॥ १३९ ॥ १३९ ॥ ४४९ ॥ ४४९ ॥ ४३९ ॥ ४३९ ॥ ४३९ ॥ ४३९ ॥ ४३९ ॥ ४३९ ॥ ४३९ ॥ ४३९ ॥ ४३९ ॥ ४४९ ॥ ४४९ ॥ ४३९ ॥ ४३९ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥ ४४ ॥

## व्याख्यान १३२ मुं. अनर्थदंडना नीजा भेदो कहे छे.

अनर्थदंडनो बीजो भेद पापकर्मनो छपदेश करवो ते छे; जेमके, 'हे-जमां खोदो, इळ विगेरे तैबार करो, बळदने पलोटो (दमो), शतुओने मारो, कन्यानो विवाह करो. ' इत्यादि बीजाने छपदेश देशो ते पापोपदेश छे. आगममां सांभळ्युं छे के, ऋष्णवासुदेव अने चेमा महाराजाने पोताना बाळकोनो बि-बाह करवानो पण नियम हतो.

अनर्यदंडनो त्रीजो भेद दिसामां उपयोगी याय तेनी बस्तुओं आपनी ते छे. दिसामां उपयोगी उपकरणो जेनां के, गाडुं, श्रस, घंटी, सांबेहं, खारणीओ, दातरहुं, करवत, छरी, कांकसी, कोदाळी, रेचक औषध, प्रणना क्रिमनो अने गर्भनो नाश्च करे तेनां मूळीयां तथा क्षार विगरे कोइने आपना ते पापनंघना हेतु छे. ते विषे एक नार्ता छे के, द्वारिकानगरीमां धन्वंति अने वेतरणी पण औषधादिमां घणी धीनाईसा करतो, तथापि ते कोइपण रोगी मुनिने निद्रिंष औषध आपतो. एक बसते कृष्णवासुदेने निमानाध्य प्रमुने पुछचुं ''हे स्वामी! बैद्योनी भी गति बाय? छोकमां कहेनत छे के,—

कवी चीतारो पारधी, बळी विशेषे जट्ट;

'कवि, चित्रकार, पार्शि, भट्ट, अने गांधी-ए नरके जाय छे अने तेमने चैच मार्ग बताने छे. " आ नगरीमां धन्वंतिर अने वेतरिण नाम ने नैद्य रहे छे, तेमनी श्री गिति थशे ? ' प्रभु बोल्या—" राजन्! पहेलो सातमी नर्कना अमितिष्टान पायहे उत्पन्न यशे अने बीजो आरंभ करे छे पण ते करतां मनमां कांइक बीहे छे तेथी मरण पार्मीने वनमां वानर थशे त्यां कोइ मुनिने पगे कांटो वागेलो जोइ, जातिस्मरण चत्पन्न थतां श्रल्योध्धारिणी भौषधीवहे तेमने साजा करशे. पछी मुनि तेने धमोंपदेश आपशे. ते सांभळी पूर्वना पायक्रत्यने आळोवी त्रण दिवस सुधी अनशन करी सहसार देवलोकमां देवता यशे. पेलो धन्वंतिर वैद्य पट्काय जीवनी हिसाथी वारंवार अमितिष्टानपायहे उत्पन्न थशे. अने वनस्पत्यादिकमां एक कोडीने अनंतमे भागे देवाशे. " आ प्रमाणे अनर्थदंडनो त्रीजो भेद जालबो.

प्रमादनुं आचरण ते अनर्थदंडनो चोथो भेद छे. प्रमाद-प्रद्यादि पांच प्रकारना छे. तेने अंगीकार करवा ते अनर्थदंड छे. ते विषे आगममां कह्युं छ के,—

मकं विसय कसाया, निद्दा विकद्दाय पंचमी जिलाया। एए पंचपमाया, जीवं पामंति संसारे॥

"मद्य, विषय, कषाय, निद्रा अने विकथा-ए पांच प्रमाद जीवने संसा-रमां नाखेछे." मद्य एटछे मदिरा-उपलक्षणथी आथो, मांस, सुरको अने ताडी विगेरेनुं ग्रहण करवुं. मद्य लोकीक अने लोकोत्तर यंनेमां निंच छे. कहुं छे के, "मद्यशी मोहित थयेल बुद्धिवालो पुरुष गायछे, भमेछे, यद्वातद्वा बोलेछे, रावे छे, दोंडेछ, जेने तेने पकडेछे, क्षेत्र करेछे, मारेछे, इसेछे, खेद पामेछे अने पातानुं हित समजतो नथी." वळी "संबोधिस्तित्तरी" नी वृत्तिमां कहुं छे के, "मद्यशी मदोन्मत्त थयेला कृष्णना पुत्रोना दोपथी एकसो ने वत्रीश कुळकोटी यादवोनो द्वारकानो दाह थवावडे क्षय थयो. "तेमां छप्पन कुळकोटी यादवो नगरमां रहेता हता अने वोंतेर कुळकोटी यादवो नगरनो वहार रहेता हता. तेओमां जेमणे चारित्र अंगीकार करवुं कबुल कर्युं तेमने नेमिनाथ प्रमु पासे मुकीने वाकीना-ओमां जेओ द्वारकाथी दूर गया हता, तेमने पण खेंची लावीने अग्नमां होमी दीघा हता. कुळकोटीनी संख्या एवी रीते छे के, कोई एक याहवना घरमाथी एकसो आठ कुमार नीकळे एवा कुळने एक कुळकोटी कहेवाय, एम वृद्धो पासेथी सांभव्य छे. तत्व तो बहुश्रुत जाणे. आ प्रमाणे पहेलो मद्य नामे प्रमाद जाणवो.

विषय ते जञ्दादिक पांच मकारे छे. कहां छे के, "जेनुं चिच विषयथी व्याकुळ होयछे तेवो पुरुप, पोतानुं हित के आहित जाणतो नयी, तेथी ए जीव अनु-चित कम करीने आ दुःखयी भोला संसारह्म अरण्यमां चिरकाळ भटकेछे." ए बीजो विषय नाम प्रमाद जागवो.

कष पटल ससार तेनो आय के॰ लाभ जेनाथी थाय ते कषाय कहेवाय. तेना चार प्रकार छे, तेनुं विशेष स्वरुप आगळ कहेवामां आवशे. आ कषाय नामे प्रमादनो त्रीजो भेद जाणवी.

निड़ा एटले उघ, ते पांच मकारनी छे जे निद्रामांथी सुले जगाय ते निद्रा, जेमांथी दुःले जगाय ते निद्रानिद्रा, उभाउभा आवे ते प्रचळा, चालताचा. इता आवे ते प्रचळाप्रचळा अने वासुदेवथी अर्द्ध वळवाळी के जेमां दिवसे चितवेटो अर्थ साथे छे ते स्ट्यानिर्द्ध, ए ममाणे निद्राना पांच भेद छे.

स्त्यानिंद्ध-निद्रानी पूर्व कथित व्याख्या कर्मे ग्रंथनी चूर्णीमां कहेली छे.
पण तेटछुं बळ वज्रऋषभनाराच संययणनी अपेक्षाए समजवं. ते शिवाय तो वचिमानकाळना युवानोथी आठ गणुं बळ होय एवे। कर्मग्रंथनी वृत्तिनो अभिप्राय
छे. जितकळपनी वृत्तिमां एम छखे छे के, "स्त्यानींद्ध निद्रानो उदय थाय त्यारे
आति संक्षिष्ट परिणामथी दिवसे जोपछा अर्थने उंघमां ने उंघमां उठीने साथे छे.
अने तेनुं वासुदेवथी अर्द्ध वळ होयछे. ते निद्रानो वियोग होय त्यारे पण ते मनुज्यमां बीजा पुरुषोथी त्रगणुं के चोगणुं बळ होयछे. आ निद्रा नरकगामी जीवोनेज होयछे. " आ निद्रा विषे सहाद्भाष्यनी २३४ मी गाथामां घणां दृष्टातो
कहेला छे. ते गाथामां कह्यं छे के—" थीणद्धीनिद्रा उपर मांस, मोदक, हाथीदांत, कुंभार, अने वडवृक्ष, एम पांच उदाहरणो जाणवा. ते उदाहरणो आ प्रमाण-

कोइ कणवी मांसभक्षी इतो. तेने कोइ स्थिवर साधुए प्रतिबोध प्रमाडी दीक्षा आपी. अन्यदा कोइ टेकाणे पाडानो वध थतो तेना जोत्रामां आन्यो. तेथी तेनो अभिछाप करतो ते सुइगयो. रात्रे तेने स्ट्यान ई निद्रानो उदय थइ आन्यो. तेथी तेणे उमा थइ कोइ टेकाणे जइ बीजा पाडाने मारी तेनुं मांस भक्षण कर्यु अने बाकी नुं जे वध्युं, ते साथ छावी उपाश्रयमां मुकीने सुइ गयो. प्रातःकाळे तेणे गुरुने कह्युं के, में आबुं स्वप्न जांयुं छ. त्यां तो पेछुं मांस बीजा साधुआना जो- बामां आन्युं तेथी तेमणे जाण्यु के, आ साधुने रात्रीए स्ट्यान ई निद्राना उदय थयेछो जणाय छे. पछी संघे मळी तेनी पासेथी ओघो मुइपत्ति विगेरे मुनि। छग छइछी युं अने तेने विसर्भन करी दीघा.

कोइएक साधु श्रावकने घेर मोदक के० छाडु जोइ तेनी अभिछाषा करतो सुई गयो. रात्रे तेने स्त्यानिंद्ध निद्रानो उदय थयो, एटले उठीने ते श्रावकने घेर गयो, अने तेना कमाड भांगी ते मादक खाइ बाकीना उपाश्रये छावी पात्रामां नाखीने सूइगयो. सवारे उठीने तेणे पण स्वप्न आन्यानुंज गुरुने कह्युं, पण पात्रां पंडिलहतां तेमा मोदक दीठा एटले गुरुप स्त्यानिंद्ध निद्रा आवेली जाणी विसर्जन करी दीधो.

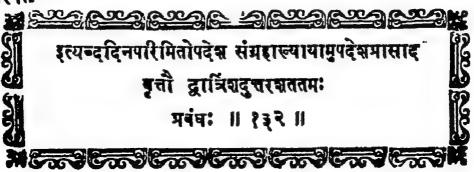
कोइएक साधुने हाथीए वहु खेद पमाड्यो. त्यांथी कोइ प्रकारे नाशीने ते उपाश्रयमां आव्यो, अने ते हाथी उपर मनमां कोप करतो सुइगयो. रात्रीए तेने स्त्यानिंद्ध निद्रानो उदय थतां ते मुनि नगरना कमाड भांगी, ते हाथीने मारी, तेना दांत खेंची काढी पोताना स्थानमां छावीने सुइगयो. प्रभाते ते इकीकत जा-णवामां आवतां तेने संयमने अयोग्य जाणी गुरुएं काढी मुक्यो. कोर कुंगरे मोटा गच्छमां दीक्षा लीधी. एक वलते स्त्यानाई निद्रानी चदम थतां पूर्व जेम माटीना पिंड तोडतो इतो तेम तेणे साधुओना शिर तोडीने कवंग (भड) नी साथे एकांतमां मुकी दीघा. बीजा केटलाएक मुनिओ त्यांथी खसी नया ते बच्चा. मातःकाळे ए देखाव जोर संघे ते साधुने गच्छथी दूर कर्यो.

नया ते बच्या. प्रातःकाळे ए देखाव जोई संघे ते साधुने गच्छियी दूर कर्यो.
कोई साधुने जवा आववाना पार्गमां एक वडनुं वृक्ष बहु दु खदायक चागतुं इतुं. एकदा रात्रे स्त्यानिद्ध निद्रा आवतां ते वडने ऊखेडी पाताना ऊपाश्रव पासे नालीने ते सुर्गयो. सवारे एवं स्वप्न दींठानुं आलोचतां बीजा मुनिना जाणवामां ते वृत्यांत आव्युं. एटले तेना साधुचिन्हो छीनशी लड़ने संघे तेने गणनी वहार कर्यो. आ श्रिवाय बीजा दृष्टांतो पण निद्यी ह्यसूत्र्यमांथी जाणी होवा.

निद्रामां घणा दोषो छे. निद्रा सर्व गुणनो घात करनारी, संसारने वघारनारी अने ममादने उत्पन्न करनारी छे. मुनि अने घमिष्ट माणसने तो निद्रारहितपणुंजे मेट छे-श्री ज्ञगवती सूत्रमां वीरमभुनी सप्यातरी अने मृगावती आविकानी
नणंद ज्ययंतीए ममुने प्रश्न कर्यों छे के, "हे भगवंत! सुनुं सारूं के जागनुं सारूं?"
ममुए कहुं के, "केटकाएकने सुनुं सारूं छे अने केटकाएकने जागनुं सारूं छे.
जे अधमी ने अधम मनुष्यो अधमनदेज आजीवीका करता सता विचरे छे, तेवा
जीव सुता सारा छे. केमके एवा जीव सुता सता घणा प्राणीओने, प्रतोने, सत्योने दुःस देनारा यह सकता नथी. वळी एवा जीवो सुता सता पोताने, परने अने
वेनेने अधममां—हिंसादि कार्यमां प्रवर्षानी शकता नथी. तेथी तेओ सुता सारा छे.
अने हे जवाती! जे जीवो धर्मो छे अने धामिक प्रवृत्तिनाज करनारा छे, एवा जीवो
जानता सारा छे. "इत्यादि जाणी छेनुं. (एवा रीते वळवान्।णुं, दुर्वळपणुं, वदुर्रणुं अने आळसुपणुं इत्यादि विवे एग जाणी छेनुं. ) आ प्रमाणे निङ्ग नामे
प्रमादनो कोयो भेद जाणवो.

" बौद पूर्वधर मुनि एण निद्राहर प्रमादना योगथी पूर्वोनं विस्मरण पामी आइने घणा काळ सुधी निगोदमां जइने बसे छे. तथी निद्राहर प्रमादनो अवस्य

त्याग करवो. "



# व्याख्यान १३३ मुं.

हवे 'विकथा' नामे पांचमो प्रमाद कहे छे.

राज्ञा स्त्रीणां च देशानां, जन्नानां विविधाः कथाः । संग्रामकपसद्वस्तुस्वादाद्या विकथाः स्मृताः ॥ १ ॥

## नावार्धः-

"राजाओंना युद्धादिनी ते राजकथा, स्त्रीओना रूपादिकनी ते सिक्या, देशनी उत्तम वस्तुओनी ते देशकथा अने भोजनना स्वाद विगरेनी ते अक्तस्या-ए प्रमाजेनी विविध कथाओं ते विक्रद्या करेवाय छे. "

#### विस्तरार्थः-

राजाओना युद्ध विगेरेनुं वर्णन ते राजकथा. जेमके, "आ राजा भीमनी जेम युद्ध करनारों के ते चिरकाळ सुधी राज्य करो." अथवा "आ राजा दुष्ट के ते पृत्य पामो." इत्यादि. स्नीनी कथा एटके तेना रूपनी निंदा अथवा प्रश्नंसा करवी ते. जेम के,

विजराजमुखी गजराजगित, तरुराजविराजितजंघतटी । यदि सा दियता हृदये वसति, क जपः क तपः क समाधिरिति॥

"या सीनुं मुख चंद्र जेवुं छे, तेनी बाल गजेंद्रना जेवी छे, अने तेनी जंधा कदळीना स्तंभ जेवी छे; एवी स्त्री जो इदयमां बसे तो पछी जप, तप अने समाधि बा कामनी छे?" तेनी निंदा आ प्रमाणे—"आ सीनी गति ढंट कोवी छे, स्वर कागडा प्रेवो छे, पेट लांबुं छे, नेत्र पीळा छे, माठा शीळवाळी छे, अने कटु भाषण करनारी छे तथा अभागिणी छे. तेवी स्त्रीयी शुं सुख मळे?" बळी स्त्री संवंधी देत्र, जाति, कुळ, रूप, नाम, पहेरवेत्र अने परिजननी कथा करवी ते पण स्तिकथा. तेमां देत्र संवंधी स्तिकथा आ प्रमाणे—" लाटदेशनी खीओ मधुरभाषी अने रतिकियामां निपुण होय छे." इत्यादी. जाति संवधी खींकथा आ प्रमाणे—' विधवा ययेली बाद्यणनी स्त्रीओने धिकार छे, के जेओ जितती मर्या जेवी छे, अने केटलीक बीजी जातिनी स्त्रीओने धन्य छे, के जे सदा अनिंदित रहे छे." इत्यादि. कुळ संवंधी स्त्रीकथा आ प्रमाणे—'' अहो! सोलंकी राज्यवंशनी पुत्रीओनं साहस जगतमां सर्वथी आधिक छे, जेओ पतिनी अणुमानीती होय तोपण पति मृत्यु पाम्ये तेनी पाछळ

अग्निमां प्रवेश करें छें " इत्यादि. रूप संवंधी स्नीकथा ते के जेमां स्नीना स्वरूपनुं वर्णन करवामां आवे. नाम संवंधी स्नीकथा आ प्रमाणे—''जेवुं स्नीनुं नाम तेवुं
परिणाम'' एम कहे. नेपथ्य (वेश) संवंधी स्नीकथा आ प्रमाणे—'' ते स्नीना
रूप, यौवन अने पहेरवेशोन धिक्कार छे के जे युवान पुरुपोना नेत्रने आनंददायक
यतां नथी. " परिजन संवंधी स्नीकथा आ प्रमाणे—'' आ स्नीनो दास दासीनो
परिवार डाह्यो अने विनीत छे—" इत्यादि स्त्रीक्ष्यानो त्याग करवो.

देशकथा आ ममाणे-जेमके, "माळवदेश रमणीय छे, के जेमां सारा धान्य अने सुवर्ण थाय छे; अने ज्यां काटिमेखळा पण सोनानी पेहेराय छे. गुर्जरभूमि दुर्गम अने ऊम सुभटनाळी छे. लाटदेश तो भीळ्ळोकोथी भरपूर छे. काश्मीरमां मूर्ख-ता वहु छे; अने कुंतलदेश सुखमां स्वर्ग जेवो छे." आ प्रमाणे देशकथा सद् दुद्धिवाळा पुरुपोए दुर्जनना संगनी जेम छोडी देवी.

भक्तकथा—एटले भोजनना स्वाद विगेरेनी कथा, ते आ प्रमाणे—जेमके, "आ पुरुषे विवाहादि कार्थमां घणी उत्तम रसोइ करी हती. तेमां जे ज्ञाक भाजी बनान्या हता, तेनो स्वाद तो हजु दाढमांज छे." अथवा "आणे करेला पक्वान विगेरे तो बाळीदेवा जेवाज हता. एक पापड विना वीजुं वधुं खराव कर्युं हतुं." इत्यादि.

शा प्रमाणे चार प्रकारनी विकथा जाणवी. संबोधसत्तरी नामना प्रक-रणनी वृत्तिमां सात प्रकारनी विकथा कहेली छे—तेमां जपर कहेली चार अने बीजी जण प्रकारनी विकथा आ प्रमाणे—श्रोताना हृदयने मृद्ध बनावी दे ते पेहेली मृद्धी-कथा, के जेमा पुत्रादि प्रजानी कथानुं प्रयानपणुं होताथी ते करुणा जरपन्न करे तेवी होयछे—जेमके—"हा.पुत्र! हा वत्स! अमने मुक्तीने तुं प्रअविलत अग्निमां क्यां पद्यो." हत्यादि. बीजी दर्शान होदिनी कथा—जेमां कुतीर्थीओना झानादि-कना अतिशयपणानी प्रशंसा करवामां आवे छे—जेमके, "बुद्धनुं शासन सूक्ष्म अर्थने जणावनारुं होताथी श्रवण करवा योग्य छे." इत्यादि. त्रीजी चारित्र हो-दिनी कथा— जेमां त्रत यहण करेला अथवा व्रत लेवाने तत्पर थयेला पुरुपना चारित्र संवंधी विचारनो भेद करवामां आवे छे. जेमके, "केवळी विनाना आ काळमां चारित्रनो शुद्ध के अग्रुद्ध भाव कोण जाणे छे माटे चारित्र लेवुं नकामुं छे." बळी " आज तो चारित्र लड़ने मात्र देहने पीडा करवानी छे. कारण के गिरिना शिखर जपरथी पडवुं सहेलुं छे पण चारित्र पाळवुं सहेलुं नथी." वळी एम कहे के,

## काले प्रधायबदुले, दंसणनाणेहिं वहुए तीण्यं। वुव्यिणं च चरित्तं, तो गिहिधम्मो वरं काल ॥ १॥

" बहु प्रनादवाळा आ काळमां दर्शन अने ज्ञानवडेज शासन पवर्ते छे, चा-रित्र तो विच्छेद पाम्युं छे, तेथी हाल तो गृहस्थनो धर्म अंगी कार करवो तेज श्रेष्ट छे "

आ प्रमागे पूर्वोक्त चारमां बीजी त्रण विकया मेळवरायी सात प्रकारनी विकया थाय छे. पण आहं मयाळाना श्लोकमां तो आवश्यकादि सूत्रमां प्रसिद्ध चार विकया होताथी चार प्रकारनीज कहेली छे. विकथा उपर एक रोहिए। नामनी सीनी कथा छे ते आ प्रमाणे:—

### विकथा उपर रोहिणीनी कथा.

कुंडनपूरी नामनी नगरीमां सुन्नइ नामे एक श्रेष्टी रहेतो हतो, तेने रोहिएि। नामे एक दाळविषवा पुत्री हती. तेणीए गुरु पासे अध्ययन करीने कम्मपयडी वि-गेरे मंथो पोताना नामनी जेवा कंडे कर्या हता. ते हंमेशा त्रिकाळ जिन पूता अने बे काळ आवश्यक करवा छोडती नहोती. अने नित्य भणवाथी ते एक छाख करता विशेष स्वाध्यायनो पाठ करनारी थइ हती.

अहं अंतरंग एवं वन्यं के, चित्तरुप नगरमां रहेनारा मोहराजाने तेना कुनेय नामना दूने जणाव्यं के, 'महाराज, एक रोहिएा) नाम स्नी तमारा वारंवार अवगुण गायछे. अने तमारा पुत्र राग अने द्वेपनी, तमारा मिथ्यात्व नामना मंत्रीनी, अने अहार पापस्थानस्त्रा सभासदोनी घणी निंदा करे छे.' ते सांभळी मोहराजा पोतानी सभा समस रुदन करतो गद्गद् वाणीए बोल्यो के, 'अरे! मारी सभामा—मारा परिवारमां कोई एवो नथी! के जे मारी आज्ञाने खंडन करनारी रोहिणी के जे मारा वैरी चारित्रवर्मने मळवाने उत्सुक्त छे तेने वशकरीने मने सोंपी दे?' आ प्रमाणेना मोहराजाना वचनो सांभळीने एक खुणे वेटेळी मोहराजानी स्त्री कुट छि नी सखी विक्या नामे बोगिनी वोळी—'हे स्वामी! आवा स्वल्प काममां आपने खेद करवो योग्य नथी. केमके तमारा एक एक सेनके सम्यकत्व, व्रत अने श्रुतथी पूर्ण थयेळा एवा जीवोने पण पोताना गुगोथी पाडी दीघा छे. तेओ अद्यापि आन चरणनी पासे रजनी जेम रक्षळे छे. तेमनी संख्या पण कोइ जाणतुं नथी. ते विषे जोवानुशास्तननी वृत्तिमां कहेळुं छे के, "मोहना प्रभावथी अनंता श्रुत केवळीओ पण पूर्वगत श्रुतने मूळी जइ मृत्यु पामीने अनंतकायमां गयेळा ने रहेळा

छे. "ते माटे हे राजा! आ बीचारी रोहिणी तो कोणमात्र छे; आ प्रमाणे कहीं मोहराजाए आपेली आशिष ग्रहण करीने विकाद्याए रोहिणीना मुखमां अने चि-त्यां प्रवेश कर्यो. तेथी रोहिणी तत्काळ धर्मना सर्व कार्यमां विकथा करवा लागी अने बीजानी पासे कराववा लागी. एक वखते साधुओए अने साध्वीओए तेने शिक्षा आपी के, हे श्राविके, तने सुझातने पर्शनेदा ने विकथा करवी योग्य नथीं. कहां छे के,

### यदिच्छिति वशीकर्त्तुं जगदेकेन कर्मणा। परापवाद सस्येज्य-श्चरंति गां निवारय ॥

"जो एकज कर्मधी आ जगत्ने वश करवाने तुं इच्छतो होतो पर्तिदारुष धासने चरती एवी तारी वाणीरुप गायने, तेमांथी निवृत्त कर्य. " ते सांभळी रोाई-णीने कोध चढ्यो. एटले इळवे इळवे मोहराजानुं सर्व सैन्य तेनी पासे आव्युं अने विकथानी प्रशंसा करवा लाग्युं. पछी तो रोहिणी विकथा करवामां एटली बधी मशगूल थइ गइ के, तेणीए सर्व पठन पाठनादि पण छोडी दीधुं.

एक वस्ते राजमार्गे जतां रोहिणी राजानी राणीना दोप कहेती हती. ते राणीनी दासीए सांभळ्या एटले तेणीए राजाने ते वात कहीं. राजाए राोहणीना पिताने वोलावीने पुळ्युं के, हे श्रेष्टी, तारी पुत्रीए मारी राणीनुं कुशीलपणुं क्यां जोयुं अने शी रीते जाण्युं? श्रेष्टी वोल्यो—हे स्वामी! ए पुत्रीनो स्वभाव दुष्ट छे. पछी कोप पामेला राजाए तेने नगरमांथी किंगदी मुकी. अरण्यमां दुःसनो अनुभव करीने ते मृत्यु पामी अने अपरियहिता व्यंतरदेवी यहे. त्यां वीजा देवता- ओए करेलुं दुःस अनुभवी त्यांथी चवीने एकेंद्रियादिकमां अनंतकाळ भमी. छेवटे तेनो जीव ज्ञुवनज्ञानुं केवळी थयो.

" आ प्रमाणे विकथा करनारा प्राणीओने घणुं दुस्तर दुःख यायछे, तेने जाणीने भव्य प्राणीओए वैराग्यादिवहे वंधमुक्त करनारी सत्कथा इंमेश्चा करवी. अने विकथाने छोडी देवी."

भू स्वतंत्र स्वतंत्य

## व्याख्यान १३४ मुं.

वळी सामान्यथी अनर्थदंडनो प्रमादाचरण नामनो चोथो भेदज विशेषे कहेळे.

जीवाकुलेषु स्थानेषु, मज्जनादि विधापनस् । रसदीपादिपात्राणि, आलस्यात् स्थग्यते निह् ॥ १ ॥ जल्लोचं नैव बभ्राति, स्थाने महानसादिके । सर्वमेतत्त्रमाद्स्या, चरणममिषीयते ॥ १ ॥

#### न्नावार्थः-

"जीवृथी भरपूर पुना स्थानमां स्नान विगेरे करे, रस पदार्थीना तथा दीपक विगेरेना पात्रोने भालसथी द्रांके नहीं. अने रसोड़ा विगेरे स्थानोमां चंदुरवा वांधे नहीं. ए सर्व प्रमादनुं आचरण कहेवाय छे."

#### विस्तरार्थः-

जीवयी भरपूर एवा स्थान एटले जेमां ळील, फुल, कीडीओ, मंकोडा तथा कुंयुवा प्रमुख छकाय जीवोनी हिंसा थाय तेम होस देवी भूमि विगेरेमां स्नान करवुं योग्य नथी. एकाद्शीपुराणमां कह्यं छे के,

गृहेचैवोत्तमंस्नानं जलंचैवसुशोधनात्।
ततोत्वंपांमवश्रेष्ट गृहेस्नानंसमाचरत् ॥ १ ॥
कुपेह्रदेघमंस्नानं नद्यामेवचमध्यमं।
वाप्यांचवर्जयेत्स्नानं तटाकेनैवकारयेत्॥ २ ॥
पीड्यंतेजंतवोयत्र जलमध्येव्यवस्थिताः।
स्नानेकतेततःपार्थ पुएयंपापंसमंत्रवेत् ॥ ३ ॥

जल गळीने घरे स्नान करवुं ते उत्तम स्नान छे तेथी हे पांडव श्रेष्ट! तमारे घरे स्नान करवुं. १ क्वा, अने धरामां स्नान करवुं ते अधम स्नान छे; निदीमां स्नान करवुं ते मध्यम स्नान छे, अने वापी तथा तळावमां स्नान करवुं ते तो तदन योग्य नथी. २ ज्यां स्नान करवाथी जळमां रहेला जंतुओ पीडा प्राप्ते, त्यां स्नान करवाथी हे पार्थ ! पुण्य अने पाप सरखुं थायछे. ३ वळी ब्रह्म मपुराएमां पण कह्युं छे के,

(२८४) व्याख्यान १३४ मुं-उल्लेच वांधवा उपर मृगसुंदरीनी कथा.

क्वानं तीर्थे घृतिस्तीर्थे, दानं तीर्थे मुदाहतं, तीर्थाणामिपयत्तीर्थे विशुद्धिर्मनसःपरा ॥ १॥

" ज्ञान तीर्थ छे, धेर्य तीर्थ छे, अने दान पण तीर्थ छे; परंतु ते बधा तीर्थीनुं पण तीर्थ मननी उत्छ्रष्ट ग्रुद्धि छे. " विष्णुपुराणामां पण कहुं छे के, '' जळ-स्वभावयी पिवत्र छे. तेने पण जो अग्निवडे उष्ण कर्यु होयतो तेनी पिवत्रतानी वातंज भी करवी. तेथी पंडितजनो उष्णजळवडे ग्रुद्धि करवी तेने वस्ताणे छे." मनस्मृतिमां कहुं छे के, " अंतर्गत दुष्टचित्त तीर्थस्नान करवाथी शुद्ध थतुं नथी. ते तो संकडोवार जळथी घोषेला मिदराना पात्रनी जेम अपिवत्रज रहेछे. १ प्रथम शोच सत्य, वीजुं शौच तप, त्रीजुं शौच इंद्रियोनो निग्रह अने चोथुं शौच सर्व प्राप्पी उपर दपा करवी ते छे. त्यार पछी पांचमुं जळशौच छे. २." वळी नागरखं-ममं पण कह्युं छे के, " दृष्टिथी पिवत्र (जोषेला) स्थाने पण मुकवो, बह्मथी पिवत्र (गळेलुं) जळ पीवुं, सत्यथी पिवत्र (साचुं) वचन वोलवुं अने मनथी पिवत्र आचरण करवुं."

हते ग्रहस्थे जो स्तान करवुं होयतो दिवसे यतनापूर्वक करवुं; रात्रे करवुं नहीं. मूळश्लोकमां आदिशब्द छे तथी पिशाव अने दस्त पण निर्जीव भूमिकाएज करवुं. इत्यादि पोतानी बुद्धिथी समजी लेवुं.

वळी रसपदार्थ एटले घी, तेल, दुध, दही, छास, अने जळ विगेरेना पात्रो तेमज दीवो अने आदि शब्दथी भोजन विगेरेना पात्रो आळसधी ढांके नहीं. अर्थात् ढांकवावडे जीवरहा करे नहीं ते प्रमादाचरण जाणवुं.

वळी महानस के॰ रसोडा विगरे स्थान उपर उछेच के॰ चंदरवी वांघे नहीं ए पण प्रमादाचरण कहेवाय छे. कारण के, गृहस्थे शयन, भोजन अने पाक करवाना स्थान उपर तेमज जलना, तथा देव, गुरु अने धर्मना स्थान उपर अवस्य उछेच वांघवा जोइए. कारण के, रसोडा विगरे स्थळे चंद्रवी वांघेल न होवाथी जीव वधना वहु दोपनो संभव छे. ते उपर एक दृष्टांत छे ते आ प्रमाणे:-

# उद्धेच बांधवा उपर मृगसुंदरीनी कथा.

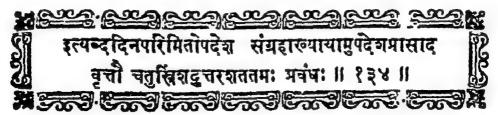
श्रीपुर नामना नगरमां श्रीषेषा नामे राजा हतो. तेने जाणे वीजो देव-राज (इंद्र) होय तेवी देवराज नामे एक पुत्र थयो हतो. ते कुमार देवयोगे यौ-वन वयमां कृष्टा थयो. सात वर्ष सुधी घणा उपायो कर्या पण ते रोग मध्यो नहीं. छेवट वैद्योप तेने तजी दीधो. पछी राजाए गाममां एवो पडो वगडान्यों के, "जे आ कुमारने नीरोगी करशे तेने हुं मारुं अर्धु राज्य आपीश." ते शहरमां यज्ञों त्त नामना एक श्रेष्टीने शीलादिवतमां आसक्त एक पुत्री हती, तेणीए पटहने निवारी पोताना हाथना स्पर्शमात्रथी राजकुंवरनो कोढ मटाड्यो. राजाए ते वंनेनुं पाणी ग्रहण करान्युं, अने विवाह उत्सव करी, पुत्रने राज्य उपर वेसारीने पोते दिक्षा ग्रहण करी.

एकदा ते नगरे पेिटलाचार्य पधार्या. तेमने बंदना करवा माटे राजा अने, राणी गया. देशना सांभळीने तेमणे पोतानो पूर्वभव पुछ्यो. गुरु वोल्या—" वसंत-पुर नगरमां देवद्य नामे एक ज्यागरी हतो. तेने धनेश्वर विगेरे चार पुत्रो मिध्यात्वी हता. ते अरसामां मृगपुर नामना नगरमां जिनद त नामे श्रेष्टीने मृगर्सु-दरी नामेपक पुत्री हती. तेणे त्रण अभियह छीधा हता के, "जिनेश्वरनी पूना करीने अने मुनिन दान आपीने जमवुं अने रात्रे जमवुं नहीं." एक वखते ज्यापार करवाने माटे पेछो धनेश्वर श्रेष्टिपुत्र मृगपुरे आज्यो. तेणे जिनदत्त आवकनी पुत्री मृगमुदरीने दीडी. तेथी ते तेनी उपर रागवाळो थयो. पण ' हुं भिध्यात्वी छुं, तेथी आ कन्यांने पिता श्रावक मने ते कन्या आपश्चे नहीं ' एवं विचारीने ते कपट श्रावक थयो. अने कोइ रीते तेना पिताने समजावी ते कन्याने परणीने पोताने घेर छाज्यो.

त्यां धर्मनी ईर्ष्यांथी तेणे मृगसुंदरीने जिनपूजा करवानो निवेध कयों. तेने जिनपूजा कर्या क्षियाय जमवानो त्याग होवाथी त्रण उपवास थया. तेणिए कोई मुनिमहाराजाने ते विषे पुञ्चं. पुटले गुरुए लामालाभ विचारीने कहां के, "तं चुला धपर चंद्वनो बांध अने भावथी पंचतीर्थनी स्तुति करी, पांच साधुने नित्य दान दे, के तेथी तने तारा अभिग्रह प्रमाणे फळ यग्ने." तंणीए ते श्रमाणे कर्युं. परंतु तेना सासरा विगेरेए चुला उपर चंद्वओं देखीने धनेश्वरने कहां के, आ तारी खिए कां-इक कामण करेलुं छे. ते सामळी धनेश्वरं केणीए वांधेला उल्लेचने बाळी नाल्यो. पूर्वी रीते सात उल्लेच बाळी नाल्या. पूर्वी गृगसुंदरीए पुनः बीजो उल्लेच वांच्यो. ते पण धनेश्वरे बाळी नाल्यो. एवी रीते सात उल्लेच बाळी नाल्या. पूर्वी गृगसुंदरीए कहां के 'जीवद्या माटे.' त्यारे तेना सासराए कोध्यी कहां के, 'चंद्रुवा वांध्या होय तो तारा वापने घेर जा.' ते बोली के—' तमे बधुं कुदुंव साथे आवीने मने मारे. पियर मुकी जाओ.' पछी सर्वे तेने मुकबा चाल्या. मार्गमां कोई गाम आइंगुं, त्यां सासराना पक्षना कोई

सगाए सर्वनी मेहेमानगित करवा माटे तेमने जमाडवाने रात्रे रसोइ करी. जमवाने अवसरे मृगसुंदरीने घणुं कह्युं तोपण ते जमवा उठी नहीं एटले बीजापण जम्या नहीं तेयी जैने घर रांध्युं इतुं तेना घरना द्या जम्या. तेओ सर्वे रात्रीमां मृत्यु पामी गया. मातःकाले मृत्युनुं कारण तपासनां रांघवाना पात्रमां सर्प जोवामां आन्यो. सर्वेए विचार्यु के, रात्रे रांघवा माटे ययेला घुमाडायी आकुळ व्याकुळ थयेलो सर्प अक्षना पात्रमां पट्यो इत्रं. पछी सर्वेए मृगसुंदरीने खमावी. मृगमुंदरी बोली के, 'आ कारण माटेज में चुला उपर चंदरवा बांध्यो इत्रो. अने रात्रे हुं भोजन करती नयी तेनुं कारण पण अहीं प्रत्यक्ष तमे जोयुं छे.' ते सांभली सर्वेने प्रतिबोध ययो. पछी तेणीए सर्वेने जीवितदान आप्युं छे एम मानीने सर्वे तेने कुळदेवीनी जेम मानवा लाग्या. अने ते गामधी सर्वे पाछा पोताने घर आव्या. अनुक्रमे मृगसुंदरीने घनेश्वर धर्मनी आराधना करीने स्वेंग गया. त्यांथी चवीने तमे राजा अने राणी ययाछो. '' हे राजा! तें पूर्वभवे सात चंदरवा वालो नाल्या इता तेथी आ भवमां सात वर्ष सुधी तने कोढनो व्याधि रह्यो हतो. '' आ प्रमाणे पोतानो पूर्वभव सां- मळीने ते बंनेने जातिस्मरण थयुं. पछी पुत्रने राज्य सोंपी पोटिलाचार्य पासे दीक्षा स्ट्रने ते बंने स्वेंग गया.

" उपरनी कया सांभळीने जे धार्मिक श्रावक शयनस्थाने, पाणीयारामां अने रसोडा विगेरेमां भावयी चंदरवा वांधे ते उत्तम देवलोकने पामे छे."



# व्याख्यान १३५ मुं. वळी बीजां प्रमादाचरण दर्शावेछे.

अव्रतप्रत्ययी बंधं, प्रत्याख्यानेन वारवेत्। सर्वेत्रयत्नतः कार्यं, तथा द्युतादिसेवनम्॥ १॥ कुत्द्खान्नृत्यप्रेक्षां, कामग्रंथस्य शिक्षणम्। सुधीः प्रमादाचरणं, एवमादि परित्यजेत्॥ २॥

### न्नावार्थः-

"व्रत लीया विना अविरित्तपणाथी ने कर्मनो वंघ पडे छे तेन पचल्लाण लेवा-वडे निवारवी. सर्व कार्य यतनाथी करवुं. अने नुगटा विगेरेनुं रमवुं, कुतूहलथी नृत्य जोवुं, अने कामग्रंथनुं शिखवुं इत्यादि प्रमादाचरण सद्वृद्धिवाळा मनुष्योए छोडी देवुं."

विस्तरार्थः-

अविरतिवहे थतो कर्मनो वंध पचलाण करीने निवारनो. देव, मनुष्य, तिधून अने नारकी— ए चार गतिक्ष्य आ अपार संसारने विषे भ्रमण करता प्राणीओए जे जे देह, आयुष्य भोगवीने अस्थि, छोइ अथवा काष्ट्रक्ष पूर्वे छोड्या छे,
ते शरीरवहे क्यारे क्यारे वीजा जीवोना वधक्ष्य अनर्थ थाय, त्यारे त्यारे अथम मुकेळा देहनो स्वामी जे जीव तेणे अन्य भवने प्राप्त कर्यो छतां पण तेनी सत्तानो
त्याग कर्यो नथी एटछे ते देहने नोसराव्या नथी तथी त्यां सुधी तेनावडे यता थता
पापथी छिप्त थाय छे. एटछे क्यां ते गयो होय त्यां ते पाप अविरतिवहे आने छे.
ए तत्वार्थ छे. ते विषे श्री ज्ञावती सूत्रना पांचमा शतकना छहा छहेशामां कहुं
छे के, 'हे भगवंत! कोई मनुष्य धनुष्यमांथी वाण छोडे अने तेनावडे जीव हणाय
तो ते पुरुषने केटछी कियाओ छागे? भगवंत उत्तर आपे छे के-हे गौतम! जे
पुरुष धनुष्यवहे बाण छोडे छे तेने पांच कियाओ छागे छे. कायिकी, अधिकरणकी, प्रद्रेषकी, परितापकी अने प्राणातिपातिकी. अने जे जीवना देहथी ते धनुष्य
विगेरे निपज्या होय छे ते जीवने पण ते पांच कियाथी स्पर्ध थयेछा कहेनाय छे."

अहि कोइ शंका करे के, "जेण बाण मुक्युं, तेने तो ते कियाओं छागु पढे पण बीजा जीवोने शी रीते छागु पढे ! केमके ते तो मात्र कायरुप छे. अने तेनुं अचेतनपणुं छे. वळी जो एम कहेशों मात्र शरीरथी पण क्रिया छागे तो सिद्ध थए छा जीवोने पण प्रथम मुकेछा देहने छीने बळात्कारि बंध थवो जोइए. कारण के, सिद्ध थये छा जीवनो देइपण कोइ ढेकाणे जीव घातनो हेतु होय. वळी जेम धनुष्य विगेरे पापना कारणों छे तेम ते जीवना देइथी थये छा पात्रदंड विगरे जीव रक्षाना पण हेतु छे. तो ते पुण्यना कारण होवाथी तेनु पुण्य पण ते जीवने छागबुं जोइए. एवी रिते बरोबर न्याय थवो जोइए. "तेना उत्तरमां कहे छे के, " अहि तो अविराति-पणाना भावथी बंध थाय छे अने सिद्ध थये छा जीवोने तो सर्व संवर होवाथी विराति छे तेथी तेमने बंध थवानो संभवज नथी. तथा पात्रादि जेना देइथी थये छा छे ते जीवोने ते संबंधी विवेकादिकनो अभाव छे माटे तेने पुण्यनो बंध थतो नयी. अन

थवा श्रीभगवंतना वचन होवाथी सर्व सत्य छे; एम जाणवं. " तेथी अन्य भवांतरे शस्त्रादिक्ष थयेला देहनुं पण अधिकरणपणुं छे एम जाणीने अवश्य जेनो जेनो त्याग-थइ शके तेम होय तेना तेना प्रत्याख्यान करवा ए भावार्थ छे.

वळी यत्नथी सर्व क्रियाने छोडी देवी. एटले के पोताना कार्यने मारे करेतुं होय पण कार्य समाप्त थयं वळतुं इंथगुं पछी ग्रुझावी नाखतुं. अहि कोइ शंका कर के, ' अग्निने बुझाववामां पण दोप छे तथी केन बुझावाय?'ए बात खरी छे पण अग्नि दश मोढावाळुं शस्त्र होवाथी तेनावडे बीजा त्रसादि जीवोनो वथ थाय छे ते न थवा माटे तेने बुझावबुं जोइए.

वळी शोध्यावगरना इंथगा, छाणा, धान्य अने पाणीनुं वापरबुं, मार्गमां इरिन्साय के लिलां घान विगेरे जपर चालबुं, नकामा पुष्प अने पात्रां विगेरे तोडवां, भींत मांहेथी खेंचवानी भूगल करवी, यतना वगर कमाडे अर्गला आपवी, अप्रासुक लवण के काचुं मीढुं वापरबुं, नकामा वृक्षनी शाखा तथा मृत्तिका चोळवी, वख्नमां रहेला जू विगेरे जीवाने जोयावगर धोवीने आपवा अने श्लेष्य-गलफा-यूंक विगेरे नाख्या पछी घूलि के राखधी न ढांकवा इत्यादि सर्व किया प्रमादाचरण छे तेथी ते सप्रली किया यतनावगर करवी नहीं. गलफा विगेरेमां एक मूहर्त पछी घणा जीवोनी उत्पत्ति थाय छे श्रीलोकप्रकाश शंथमां कहां छे के,:—

पुरिषे चप्रश्रवणे, श्लेष्मितिंधाणयोरिष । वांतेषित्तेशोणितेच, शुक्रेमृतकलेवरे ॥ १ ॥ पुषेस्रोपुंससंयोगे, शुक्रपुर्गलविच्युतौ । पुरिनर्द्धमनेसर्वेष्य पवित्रस्थलेषुच ॥ २ ॥

"१ विष्टामां, २ पिशावमां, ३ श्लेष्य-गलफामां, ४ लीटमां, ५ वमनमां, ६ पित्तमां, ७ रुधिरमां, ८ वीर्यमां, ९ मुडदामां, १० परुमां, ११ स्त्रीपुरुवना संयोग्यमां, १२ वीर्यस्तिलत थयेलामां, १३ नगरनी खालमां अने १४ वीजां सर्व अपित्रत्र स्थलोमां-गर्भेज मनुष्य संवंशी ए वस्तुओंने विषे एटले पूर्वोक्त १४ स्थानकमां अंत- मुंहूर्त्तना आयुष्यवाला, एक आंगुलना असंख्येय भाग जेवडा देहवाला अने सात के आठ प्राणने धारण करनारा असंख्यात सप्तृष्टिम मनुष्यो उत्पन्न थायछे." संयद्दिम् प्रानी टीकामां 'नव प्राणवाला जीव उत्पन्न थाय छे' एम कहेलुं छे. तथा श्रीम् पन्नविषासूत्रमां स्थामाचार्ये पण तेनप्रमाणे कह्युं छे. तथी श्लेष्यगलका विगेरिन यतनाथी ढांकवा.

वळी जुगार विगेरेनुं रमबुं-आदि शब्दथी सोगठावाजी, गंजीफा, सेत्रंज वि-गेरेनुं रमबुं. अथवा आदिशब्दथी सात दुर्व्यसन सेववा ते प्रमादाचरण छ तेथी तुने तजी देवां. कहुं छे के-'' जुगार, मांसभक्षण, सुरापान, वेश्यासंग, सीकार, चौरी अने परस्री सेवा-आ सात दुर्व्यसन कहेवाय छे. ते प्राणीने घोरातिघोर नरकमां लइ जायछे. " जुगार विगेरेना व्यसनथी प्राणीने प्राले प्राले विपत्ति प्राप्त थायछे-जुगार विपे एक कथा छे-ते आ प्रमाणे---

जुगार विषे पुरंदरराजानी कथा. सिद्धपुर नामना नगरमां पुरंदर नामे राजा हतो. ते सुंदर नामना कोई जुगारी साथे जुगार रमवा लाग्यो. ते जोइ एक वखते तेनी राणींए अमृत समान वाणीयी राजाने कहुं के, 'हे स्वामी! जुगारथी नळराजा अने पांडवी पगळे पन गले निदाने प्राप्त थइ दुःखी थया छे, तथी सर्थ जेम काचळीने छोडी दे तेम तथे। जुगारने छोडी दो. इत्यादि वचनोवडे वहु निवायों तोपण राजाए जुगार छोड्यो। नहीं एक त्रखते राजा तेना नाना भाई साथे जुगार रमता राज्य हार्यो. पाट हारवाथी अनुज बंधुए तेने नगरनी वहार काढी मुक्यो.

राजा, राणी अने एक कुमारने छइने अरण्यमां चाछी नीकळ्यो. मार्गे जतां कोई भीछनी साथे एवं पण कर्यु के, 'जो हुं जितुं तो तारी स्त्री छऊं अने हारुं तो माथुं आपुं.' आवुं पण करी जुगार रम्यो. तेमा राजा जित्यो. एटछे जाणे का-जळथी वनावी होय तेवी काळी अने दुर्भाग्यथी निर्माण करेळी होय तेवी कुरूपा भीलडीने लईने राजा आगळ चाल्यो. मांगे चालता नीच भीलडीने, विचार थयो क, 'आ राणी मारी सपत्नी (शोक्य) होवाथी मारी वैरिणी छे माटे तेने मारी नाखुं तों मुख थाय. ' एवो विचार करी जळ भरवानो भिष करी राणीने कुवा पामें छइ जइ कुवामां नाखी दीधी अने पुरंदरराजा पासे आवीने कहुँ के, तमारी राणी तो कोई वीजा पुरुषने छईने चाछी गई. राजा तेना वियोगथी घणो खेद ्पाम्यो. पछी भीलडी अने कुमारने लईने मार्गे चाल्यो. मार्गमां एक मोटी नदी आवी. भीलडी अने कुमार बंनेने एक साथे नदी ऊतारवाने असमर्थ होवाथी पन् थम भीलडीने लईने राजा नदीमां पेठो. त्या कोई मधर राजाने गळी गयी, ्भीलडी नदीमां तणाई जवायी मृत्यु पामी गई, राजाना भारशी मघर वधारे चाली शक्यों नहीं एटले कांठा उपर आवीने पड़्यो. दीमर लोकोए तेने प्कडीने चीर्यों, एटले तेना उद्रमांथी राजा नीकल्यों. तेने शतिळ पवन्यी संज्ञा आवी. एटले थीवर लोकोए तेने पोताने घेर दास करीने राख्यो. एक वखते राजा मत्स्य लेवाने नदीमां पेठो, त्यां नदीना पूरमां तणाई जवाथी मृत्यु पाम्यो.

अहि राणी कुवामां पड़ी हती तेने कोई मुसाफरीए कुवामांथी काढी. ते मुसा-फरोना सार्थपतिए तेने ते कोण छें १ एम पुछछुं एटले तेणीए पोतानुं वृत्तांत जे यथार्थ हतुं ते कही बताव्युं. तथी तेणे पोतानी पासे तेने बेन करीने राखी.

नदीने कांठे जे राजकुमार रहाो हतो तेने कोई विद्याधरी वैताट्य पर्वत उपर लई गई. अने तेने घणी विद्याओंनो पात्र करीने अनुक्रमे तेना पिताना राज्य उपर वेमार्योः

एक वस्ते पेलो सार्थवाइ सिद्धपुर नगरमां आव्यो. राणी पोतानुं नगर जाणी पुरुषनो वेष पेहेरी सार्थपितनी साथ सभामा गई. त्यां पोताना पुत्रने जो- इने हर्ष पामी. राजाए ते पुरुषवेषी स्त्रीने जोईने सार्थपितने ते कोण छे ? एम पुछ्युं. एटले सार्थवाहे तेनुं वधुं वृत्तांत कही संभळाव्युं. कुमारे हर्प पामी पोताना सभाजनोनी समझ तेना चरणमां प्रणाम कर्यों. अने पोतानी माताने सुखित्रलास-मय करी दीधी. पछी राजाए नगरमां जुगार विगेरे दुर्व्यसन वंध करवानों पड़ो वगडाव्यों. अने पोते पण अनर्थदंडथी विराम पामी स्वर्गे गयों.

"सपैकीडा जेवी चूतकीडाने कयो पुरुप करे, के जेने लीधे पुरंदरराजा पगले पगले विपत्तिने पाम्यो हतो. " जुगार रमवायी हास्य, वाचाटतां (वाचाळपणुं) अने कठोर भाषण विगरे दुर्गुणो अवस्य प्राप्त थायछे. अने तेथी वैरनी वृद्धि पण थायछे. पूर्वे कुमारपाळना प्रसंगमां चूतकीडा करतां तेनो वन्हेवी ''मारमुंडाने" एम हास्यमां बोलवायी मोटा अनथेने पाम्यानुं वर्णन आ ग्रंथमांज करेलुं छे. तेथी जुगार विगरे व्यसनो घणा दुःखने आपनारा छे. अने प्रमादाचरण छे एम जाणी तेने त्यजी देवा.

वळी कौतुकथी नृत्य जोवुं नहीं. उपलक्षणथी गीत, वेश्या विगरेनो नाच, भां-डभवाई अने इंद्रजाळ विगरे पण जोवा नहीं. केमके ते पापने उत्पन्न करनारा छे. तेमज कामग्रंथ जे कोकशास्त्र विगरे तेनी अंदर कहेला आसन, मंत्र, औषध अने कामोद्दीपन प्रयोग ते शीखवा नहीं. ईत्यादि प्रमादाचरणने धर्म पुरुषे छोडी देवा. ए वीजा श्लोकनो अर्थ पूर्ण थयो.

अनर्थदंगोऽपविचिंतनादिकश्चतुर्विधोऽत्र यथितः सदागमे । ततः प्रमादो गुणहानिहेतुको विशेषमुच्यश्चरमे गुणव्रते ॥ १ ॥ न्नावार्थः—

"उत्तम एवा जिनागममां अपध्यान विगेरे चारमकारनो अनर्थदंड कहेलो छे तेमां प्रमाद गुणनी हानि करवामां हेतुरूप छे तेथी छेल्ला गुणवतने विपे तेनो विशेषे त्याग करवो."

